WARBURG INSTITUTE
FBH 35

UNIVERSITY OF LONDON
WARBURG INSTITUTE

WARBURG
18 0187354 7

7
B
H
35

Kautukaratnabhandagara.

Brihat indrajal. (Grosses Zauberbuch) Bombay 1907.

UNIVERSITY OF LONDON
WARBURG INSTITUTE

ग्रन्थकर्तुः प्रार्थना.

धन्यहै उस परमात्माकी कारीगरी, चतुराई, और बुद्धिमत्ताको जो अपनी भृकुटीके विलाससे अखिल ब्रह्मांडको रचकर स्वकार्यमें नियुक्त रखता है जिसके अखंड नियम किसी कालमें भी चलित नहीं होते जिसकी अनुपम मायाका किसीको अणुमात्र भी ज्ञान नहीं होता. ऐसे परमात्माको शतशः सहस्रशः तथा कोटिशः धन्यवाद हैं.

उसकी कृपासे यह ग्रन्थभी आज समाप्तिको पहुंचा है यह चुटकला केवल दो घडी जीव बहलानेके लिये उत्तम है.

पाठकोंसे निवेदन है कि जहां कहीं कोई भूल रहगई हो उसको क्षमा करें तथा कोई नये चुटकले उन्हे मालूम हो तो वह भी सूचित करें ये इकठ्ठे करके द्वितीय भागमें रख दिये जावेंगे।

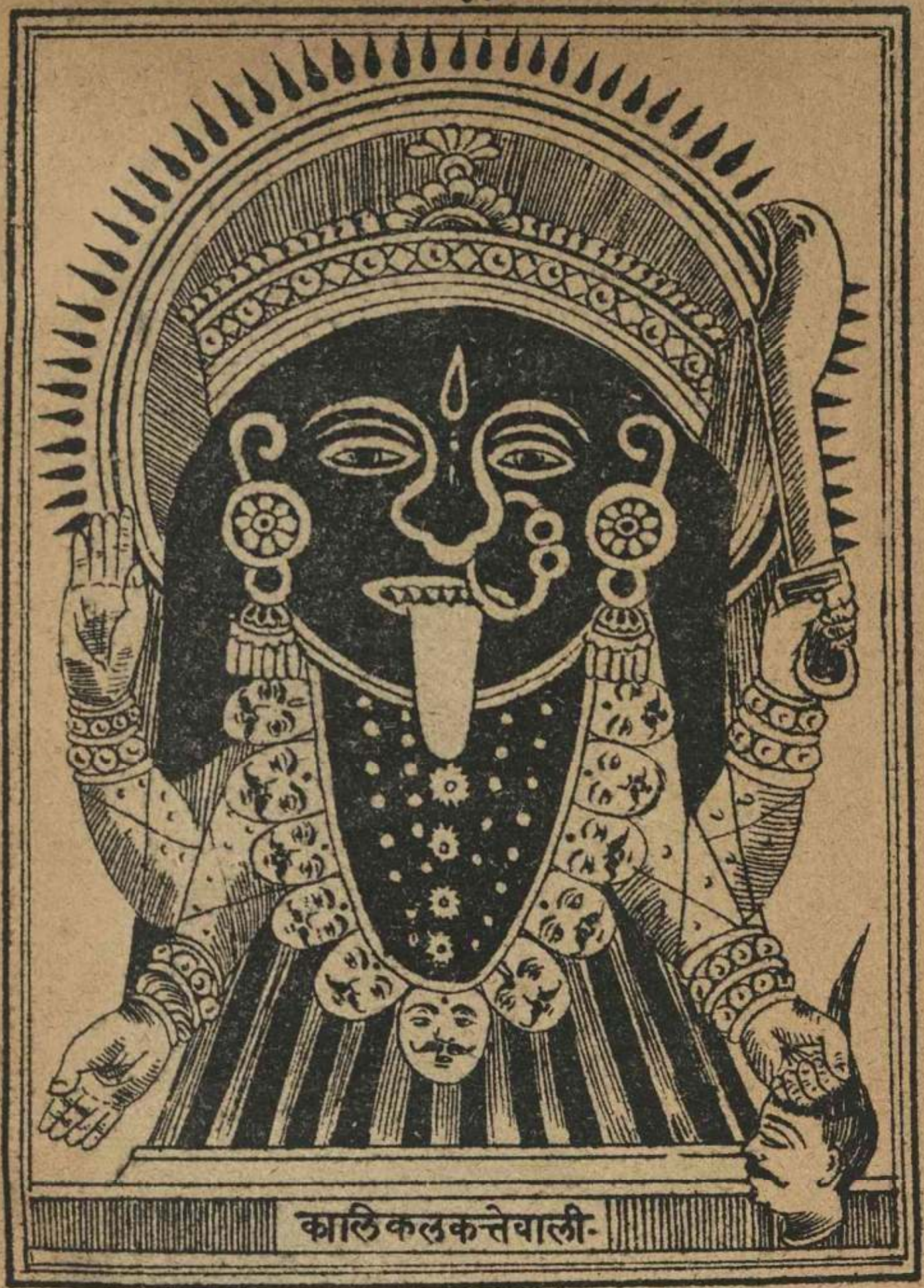
आपके शुभाभिलाषी—

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल.

पुस्तक मिलनेका पता--

पं० श्रीधर शिवलालजी
"ज्ञानसागर" छापाखाना,
बम्बई.

श्यामलाल श्रीकृष्णलाल
श्यामकाशी प्रेस,
मथुरा.



कालिकलकत्तेवाली-


भुवनेश्वरी


तारा


षोडशीदेवी


त्रिपुरभैरवी.


धुमावती


बगलामुखीदेवी


मातंग


कमलात्मका


बाजीगर


हनुमान्.


पंचमुखी हनुमान


सरस्वती


भैरव

अनुक्रमणिका।

विषय.	पृष्ठ.
प्रथमपादः	
मंगलाचरण	५
छःप्रकारकेकर्म	६
छःओंकर्मके लक्षण	,,
छःओंकर्मके देवता	७
छःकर्मकीदिशा	,,
छःओंकर्मकेऋतुविचार	८
प्रत्येक ऋतुमें कर्तव्यकर्म	,,
छःकर्मके कालविशेष	,,
छःओंकर्मकेवर्णभेद	९
षट्कर्मचक्र	,,
अथ दिशाशूल चक्रम्	१०
राशिदेखनेकी विधि	,,
राशिदेखनेका चक्र	११
राशिचक्र	१२
तिथिविचार	१५
सिद्धयोग चक्र	,,

विषय.	पृष्ठ.
मृत्युयोग	१५
योगिनीविचार	१६
आसनपरबैठनेकी विधि	,,
कूर्मचक्र	१७
चन्द्रदिशा चक्र	१८
चन्द्रास्थिति	,,
ऋणीधनीविचार	१९
कर्मविशेषमें हुंफट्का प्रयोग	२०
मंत्रोंका लिंगनिर्देश	२१
शुभकार्यकाचक्र	,,
रविवारके बैठनेका चक्र	२२
मंत्रकी प्रकृति	२३
तिथिशुभाशुभ संज्ञापालन	२५
तिथिवर्णन	२६
तिथिचक्र	,,
चन्द्रफलम्	२७
दिनरात्रिकाचौघडिया	२८

विषय.	पृष्ठ
राक्षस दीखै	७९
भूत दीखै	,,
विघ्न दूर करण विधि	,,
कुपितकोप्रसन्नकरनेका उपाय	८०
दूसरी विधि	,,
शत्रुका मुख बंद करना	,,
दूसरी विधि	,,
मनुष्य स्तम्भन	८१
सर्बजन वशीकरण धूप	,,
जुंआ दूर करनेका उपाय	,,
दूसरी विधि	८२
मक्खी दूर करनेका उपाय	,,
दूसरी विधि	,,
सिरकी गंज दूर करनेका उपाय	,,
दूसरी विधि	८३
शीशा आगसे भरा दीखै	,,
शीशीमें अंडा उतारना	,,

विषय.	पृष्ठ.
नीबू उछलनेकी विधि	८४
घरमेंसे चूहे भागें	,,
पत्थर तिरनेका तंत्र	,,
बिना आगसे ज्वारका भुनना	,,
दूसरी चालाकी	८५
हथेलीपर सरसों जमाना	,,
बालोंको सफेद करनेकी विधि	,,
दूसरी विधि	८६
तीसरी विधि	,,
कोयलेको रुपहरा करना	,,
मक्खी दूर करनेका उपाय	,,
जले हुए डोरेमें अंगूठा लटकाना	८७
हाथसे प्याजकी दुर्गन्ध जाय	,,
छापेकी नकल करना	,,
मक्खी दूर करना	८८

विषय.	पृष्ठ.
मूसे दूर करना	८८
दूसरी विधि	,,
खटमल दूर करनेका उपाय	,,
दूसरी विधि	८९
तीसरी विधि	,,
शुजाक खोनेकी विधि	,,
अदृष्ट होनेका उपाय	,,
आम लगानेका उपाय	९०
कमल उगाना	,,
ग्रहण दीखना	,,
जलमें न डूबै	,,
वशीकरणकी बुरकी	,,
पारेका कटोरा	९१
दूसरी विधि	,,
कपूरका ग्लासबनाना	,,
गंधकका कटोरा	९२
नौनका कटोरा	,,
दीमक दूर करनेका उपांय	,,
दूसरा उपाय	९३

विषय.	पृष्ठ.
दोकड़ी चीजोंका पानी करना	९३
रातमें दीखनेका उपाय	,,
दूसरी विधि	,,
दसमुख दीखना	९४
पांचमुख दीखना	,,
सुनहरी स्याही बनाना	,,
दो कडवी चीजोंको मीठी करना	९५
दृश्य और अदृश्य	,,
पांच प्रकारके रंग बदलना	९६
जलमें सूखा चलनेका उपाय	९७
शस्त्रस्तम्भन	,,
दूसरा उपाय	,,
हजार आंखका दीखने लगै	,,
स्त्रीरूप दीखै	९८
लालस्याहीबनानेकी बिधि	,,
बिना रंगतके दो जलोंका नीला करना	९९

विषय.	पृष्ठ.
तोपके समान शब्द करना	१५०
पत्थरपर सुनहरी मुलम्मा	१५१
बिछूभय निवारण	,,
भूतनिवारण	,,
काकवन्ध्याका उपाय	१५२
अत्यन्त भोजन करै	,,
भूख प्यास जाय	१५३
होठोंको सफेद करना	,,
हाथी दांत या सीप जोड़नेका सीमेंट	,,
लकडी जोडनेकी लहेई	१५४
संगमर्मर जोडनेकी लहेई	,,
मिट्टी मीठी लगे	,,
अदृश्य होना	,,
मेह रोकना	१५५
मनुष्य स्तम्भन	,,
पशुस्तम्भन	,,
सेनाका स्तम्भन	१५६
भूत उतारनेकी विधि	,,
मनुष्यकेमनकी वात जानना	१५६
पृथ्वीमें गडा धन दीखै	,,
दूसरी विधि	१५७
दांतके कीडे दूर करना	,,
दूसरी विधि	,,
तीसरी विधि	१५८
कानकी लौर बढाना	,,
दूसरी विधि	,,
बहरापन दूर करना	,,
दूसरी विधि	,,
दृष्टि बढानेका उपाय	१५९
आंखका जल बन्द होय	,,
बाणी सुधारना	,,
दूसरी विधि	,,
तीसरी विधि	१६०
तांबे पीतलको जलदी गलाना	,,
बालक कवि होय	,,
घृत	१६१

विषय.	पृष्ठ.
हाथकीवस्तु अदृश्यहोय	१६१
खेती नष्ट करना	१६२
मोतीको जिलह देनेकी विधि	,,
हीरेकी परीक्षा	,,
चांदीके गहनेसे कालेदाग दूर करना	१६३
जर्मनसिलवरबनानेकेविधि	,,
शत्रु भ्रमण करै	,,
शत्रुकी मन्दाग्नि करना	,,
वशीकरण विधि	,,
जुआमें जीतना	१६४
लड़ाई करना	,,
मंत्र	१६५
बेड़ी कटै	,,
प्रथम मासमें गर्भ रक्षा	,,
द्वितीय मासमें गर्भ रक्षा	,,
तृतीय मासमें गर्भ रक्षा	१६६
चतुर्थ मासमें गर्भ रक्षा	,,
पंचम मासमें गर्भ रक्षा	,,
छठे मासमें गर्भ रक्षा	,,
सातमें मासमें गर्भरक्षा	१६६
आठवें मासमें गर्भरक्षा	१६७
नवम मासमें गर्भरक्षा	,,
दशम मासमें गर्भरक्षा	,,
पसली और डबका का इलाज	,,
मरेहुए दीखै	१६८
भरा घड़ा खाली दीखै	,,
काले अक्षर सफेद हों	,,
पारेकी भस्म करना	१६९
हरताल बनानेकी विधि	१७०
तलवारको जौहरदार करना	१७१
किताबके किनारेपर सुनहरी छींटे	,,
रातमें दिनके समान चांदना होय	१७२
सर्व वशीकरण तिलक	१७३
भूतादिकका उतारा	,,
कटेरी खाना	१७४

विषय.	पृष्ठ.
बोतलमें अक्षर लिखना	१७४
बोतलमें दर्पण उतारना	१७५
बोतलमें पृथ्वी, समुद्र, हवा और आकाश	,,
वृक्षके पत्तों पर दीप दान	१७६
नीमकेपत्तोंकामीठाहोना	१७७
विना कल चांदीका मुलम्मा	,,
शब्दयुक्त गिल्लाबनाना	,,
एक गोली और दो आवाज	१७८
काजलकी विधि	,,
नीला रंग	,,
हरा रंग	१७९
सुरख रंग बनाना	,,
लाजबर्दी रंग	,,
तलवारपर नाम लिखना	१८०
लोपांजन	,,
उशवाकासार	,,
धनके खजानेसे सांप हटाना	१८१
धातके पात्रोंपर अक्षर लिखनेकी विधि	१८१
रक्त गुंजा कल्प	१८२
सोनेको सफेद करना	१८७
नजर दूर करना	१८८
मेंड़कका पैदा करना	,,
हथियारोंको काई नलगै	,,
लडके और लडकियोंकी गिनती बताना	१८९
पिस्सुओंका मारना	,,
रूपालका अंडा बनाना	१९०
जस्तेके समान लोहेको जल्दी गलाना	१९१
पानीमें आगकी गेंद	,,
साप निकालनेका उपाय	,,
रेशमी वस्त्रसे चिकनाई दूर करना	१९२
दूधकी पहचान	,,

विषय.	पृष्ठ.
मकानकी दुर्गन्ध दूर करना	१९२
वस्त्रसे चरबीका दाग दूर करना	१९३
गुलदस्तेको कई दिनतक हरा रखना	,,
पानीका अवगुण दूर करना	,,
मच्छर दूर करनेका सहज उपाय	,,
हिचकी दूर करना	१९४
आगसे जलेकी दवा	,,
अंधेरेमें विना दीपक उजाला	,,
वादलकी दूरी जानना	१९५
संखियाकाविषदूरकरना	,,
आकर्षण	,,
मरा मेडक बोलै	१९६
चार कोसकी बात सुनै	,,
स्वप्नमें प्रश्न मिलाना	१९६
अऊत पितृका दोष मिटै	१९७
थान गलै	,,
कपूरकी माला	,,
कस्तूरी बनानेकी विधि	१९८
केसर बनानेकी विधि	,,
आधाशीशी जाय	१९९
बवासीरका इलाज	,,
मुखका झांई दूर होय	,,
गर्भस्रावकी विधि	,,
सीमाका रस उडै	,,
चिमणी धुंएसे काली न होय	२००
लड़का या लड़की होनेकी पहचान	,,
पानी साफ करना	,,
सर्पके काटनेका इलाज	,,
संखियाका दर्पनाशक	२०१
मुखसे प्याजकी दुर्गन्ध दूर-करना	,,

विषय.	पृष्ठ.
दूसरा उपाय	२०१
गर्भ रहनेकी विधि	,,
सराबका नशा उतारना	२०२
मुर्गा लड़ें	,,
जाडेका जुर जाय	,,
बिना जामन दूध जमै	,,
रातमें भय न लगै	,,
भोजन करता हंसै	२०३
अफीम बानानेकी विधि	,,
बादामके सकलपारे	,,
अपनेआप हुक्का गुड़ गुड़ करै	२०४
स्त्री कपडे होय	,,
वर्तनको सुनहरी करना	,,
फूल प्रश्न	२०५
केवला	२०६
कंवल	,,
केतकी	,,

विषय.	पृष्ठ.
पास	२०७
पांडर	,,
कनईन	,,
वेली	,,
दुपहरिया दहवरगा	२०८
चम्पा	,,
सेवती	,,
सिंगार हार करना	,,
चमेली	२०९
जुही	,,
मालती	,,
अड़हुल	,,
इश्कपेच	,,
गुलबदादी	२१०
सूर्यमुखा	,,
नागेश्वर	,,
जटाधारी	,,
कोई	,,

विषय.	पृष्ठ.
कुसुम	२११
अकवन	,,
गुलाबवांस	,,
सेमर	,,
रूसा	,,
गुलाब	२१२
रूपमंजरी	,,
हथकन्दर	,,
गेरुआकपड़ारंगनेकी विधि	,,
किसमिसी रंग रंगना	,,
खाकी रंग रंगना	२१३
जोगिया कपडा रंगना	,,
जमुरदी रंग रंगना	,,
सरदई रंग रंगना	,,
चंदनी रंग रंगना	,,
आसमानी रंग	२१४
ऊदा रंग रंगना	,,
उन्नाबी रंग कच्चा	,,
उन्नाबी रंग पक्का	,,

विषय.	पृष्ठ.
अमौआ सेवती रंग रंगना	२१५
हुलासी रंग	,,
आवी रंग	,,
सुरमई रंग रंगना	,,
अव्वासी रंग	,,
सिंदरफी रंग	२१६
शरवती रंग रंगना	,,
पक्का शरवती रंग रंगना	,,
सुनहरारंग	,,
मजीठका रंग	२१७
सव्जकाई	,,
लाजवर्दी रंग	,,
हिनाई रंग	,,
बैंजनी रंग	,,
मूंगिया रंग	२१८
लालरंग	,,
वसंती रंग	,,
फीरोजई	,,
नारंगी रंग	२१९

विषय.	पृष्ठ.
धानी रंग	२१९
जाफरमानी रंग	,,
फाखताई रंग	,,
बादामी रंग	,,
फालसाई रंग	२२०
फूल गुलाबी	,,
चंपई रंग रंगना	,,
गुले अनार रंग रंगना	,,
कत्थई रंग रंगना	२२१
कर्पूरी रंग	,,
कासनी रंग	,,
कपासी रंग	२२२
गुलाबी रंग	,,
कोकई रंग	,,
काकरेजी रंग	,,
खसखसी	,,
जाफरानी रंग	२२३
तूसी	,,
तोतई रंग	,,

विषय.	पृष्ठ
पिसतई रंग	२२
पियाजी रंग	
अंगूरी रंग रंगना	
अमौआ सुरख	
अर्गवानी	२२५
नीला रंग रंगना	
काही रंग रंगना	
हाथी दांतको लालरंगना	
हाथीदांतको स्याह रंगना	२२६
विनामौसम फल फूल लगना	,,
मछलीके कांटे गलानेका उपाय	२२७
वशी करण	,,
अन्य वशीकरण	२२८
अन्य वशीकरण	,,
अदृष्टकरण तावीज	,,
उन्नाबीरंगकाकागज रंगना	२२९

विषय.	पृष्ठ
कागजको एक ओरसे-रंगना	२२९
कागज पर फीरोजी रंगत	,,
चित्रलोर करना	२३०
दीपकमें जवाहर दीखैं	,,
नावकी तवाही	,,
आंखमें पानी आनेका इलाज	२३१
लकडीके छेद भरनेकामसाला	,,
तांबा जमानेका मसाला	२३२
फैट सिमेन्ट	,,
भोजनके बर्तनोंका जोडना	,,
क्रोकस सीमेंट	२३३
कुठारी जोड़नेका मसाला	,,
अंडोंसे बना हुआ जोडनेका मसाला	,,
श्वासका उपाय	२३४
वमन करना	,,
नकसीर वन्द करना	,,
जीर्ण ज्वरका उपाय	,,

विषय.	पृष्ठ.
पसीना रोकना	२३५
बालजमनेका उपाय	,,
मूंगाबनानेकी विधि	,,
पीपल बनाना	,,
हरतारकी भस्म	२३६
मृगांगबनाना	,,
स्त्रीके पैर थमनेका उपाय	,,
मद्यपान छुड़ाना	२३७
हाजरात	,,
नहरुआ का उपाय	,,
छातीगई ठिकाने आवै	,,
जंगालबनानेकी विधि	२३८
,, दूसरी विधि	,,
,, तीसरी विधि	२३९
दो बासन आपसमें लडें	,,
ताबेका पानी बनाना	२४०
मुलम्मा करना	२४१
मैनमुद्रा	,,
मारगचलनेकागुटका	२४२

विषय.	पृष्ठ.
तृतीयः पादः ।	
पीर विरहनाका मंत्र	२४४
ज्वरहरण मंत्र	२४५
दूसराज्वरहरणमंत्र	२४६
सुखसे बालकहोनेका मंत्र	,,
दूसरा मंत्र	२४७
मंत्रधरनठिकानै आवै	,,
मोहन मंत्र	२४८
वशीकरण.	,,
हनुमानजीका झारा	२४९
आपकी देहरक्षाका मंत्र	२५०
बवासीरको मंत्र	२५१
दसरोगका झारा	,,
फलफूल बढानेका मंत्र	२५२
तिल्लीदूर करवाकौ मंत्र	,,
आकर्षण मंत्र	२५३
मंत्र कखराईका	,,
चौकीमुहम्मदावीरकी	२५४
नेत्रके दरदका मंत्र	२५५

विषय.	पृ
डाकिनी बुलानेका मंत्र	२५
डाकिनीकेचोटलगनेका मंत्र	२५
डाकिनीके दोष दूर करनेका झारा	२५
एकमुखी हनुमान कवच	२५
शतधारणा सरस्वतीस्तोत्र	२६
डाकिनीके वकरवायवेकौ मंत्र	२६
सिंहबांधनेका मंत्र	,,
सांप कीलनेका मंत्र	२६४
सांपखोलनेका मंत्र	२६५
दूसरा मंत्र	,,
ईश्वरादि क्रोधशमनकर्तामंत्र	,,
वशीकरण चामुंडा मंत्र	२६६
सैन्यस्तम्भन मंत्र	,,
अग्निस्तम्भन	,,
मंत्र हूकका	२६७
डाढके दरदका मंत्र	,,

विषय.	पृष्ठ.
पानवशीकरण मंत्र	२६८
वशीकरण मंत्र	२६९
वशीकरण अमल सुरमा	,,
मंत्र उच्चाटन	२७०
दूसरा मंत्र	,,
वैरी निर्बल होय	२७१
बैरीको जेरकरवाकौ मंत्र	,,
चोरी काढवाको मंत्र	२७२
टीडी दूर करवाकौ मंत्र	२७३
डाकिनी शाकिनीको मंत्र	२७५
आसेव उतारवाकौ मंत्र	२७६
पैर थामवाकौ मंत्र	२७७
दूसरा मंत्र	२७८
झारा राम रक्षाको	२७९
पक्षियोंकी चोंच बन्द करनेका मंत्र	२८१
बहुत दूध करनेका मंत्र	,,
भैरोंकी चौकीका मंत्र	,,
कीडा झाडनेका मंत्र	२८२

विषय.	पृष्ठ.
सर्वजन वशीकरण मंत्र	२८३
पुनर्वशीकरण मंत्र	,,
वशीकरण तैल मंत्र	२८४
वशीकरण फूल मंत्र	२८५
वशीकरण मंत्र	,,
वशीकरण मंत्र सुपारी	२८६
राजा वशीकरण मंत्र	२८७
वशीकरण धूप मंत्र	२८८
मंत्र वशीकरण विश्वावसु	,,
वशीकरण मंत्र कामदेव	२८९
पतिवशीकरण मंत्र	,,
सर्वजन वशीकरण	२९०
सभामोहिनी सिंदूर	२९१
त्र्यम्बक प्रयोग	२९२
अथ मंत्र वर्णन्यास	२९४
अथ ध्यान	,,
मृत संजीवनी	२९६
दूसरी विधि	,,
शुक्रोपासित मृतसंजीवनी विद्या मंत्र	२९७

विषय.	पृष्ठ.
अन्यप्रकारमृतसंजीवनी विद्या	२९७
मृतसंजीवनी मंत्रको ध्यान	,,
अथ मृत्युञ्जय प्रयोग	२९८
,, अथ ध्यानम्	,,
शूल रोगके नाश करनेका मंत्र	२९९
मंत्र मथवायका	३००
आधा शीशीका	,,
,, दूसरा मंत्र	३०१
यक्षिणीके सिद्ध करनेका मंत्र	,,
पुत्रदा यक्षिणीका मंत्र	३०२
महालक्ष्मी यक्षिणीका मंत्र	,,
शत्रु मोहनेका मंत्र	३०३
मंत्र नेत्र न दूखें	,,
जया यक्षिणीका मंत्र	३०४
अशुभनाशकयक्षिणीकामंत्र	,,
राज्यकरण मंत्र	३०५
महाराजकारक मंत्र	,,
कार्यसाधक मंत्र	३०५
वाचा सिद्ध होनेका मंत्र	३०६
विद्या मंत्र	,,
सरस्वती मंत्र	,,
वांछित फलदायकयक्षिणीका मंत्र	३०७
सुरसुन्दरी यक्षिणीका मंत्र	,,
सहस्त्रमुद्रा प्रयोग मंत्र	३०८
अमृतयक्षिणीका मंत्र	,,
कर्णपिशाचिनी मंत्र	३०९
हंसी यक्षिणीका मंत्र	३१०
कण्ठवेलका मंत्र	,,
मंत्र अदीठको	३११
आकर्षण	,,
मंत्र रक्षाकौ	३१२
मंत्र विच्छूको	३१३
तेलकोपानीहोयवाकोमंत्र	३१४
मंत्र आधाशीशीका	,,
आंखकौ दरद दूर करवाकौ मंत्र	३१५

विषय.	पृष्ठ.
मंत्र मूठ थामवाकौ	३१५
गर्भ थामवाको मंत्र	३१६
सर्व देह रक्षाको मंत्र	३१७
डाकिन भूत प्रेत उतारवाकौ मंत्र	,,
नाक थामवाको मंत्र	३१८
लोंग मोहनी मंत्र	३१९
भूत निवारवाकौ मंत्र	३२०
राक्षस निवारण मंत्र	३२१
चूडैल दूर करवाकौ मंत्र	,,
डाहिन छुडावाकौ मंत्र	३२२
ओला दूर करवाको मंत्र	,,
मंत्र जंजीराकौ	३२३
चढावाकौ मंत्र	३२४
व्याघ्रनिवारण मंत्र	३२६
शत्रुमुखस्तम्भन मंत्र	,,
शस्त्रस्तम्भन मंत्र	३२७
अग्निस्तम्भन मंत्र	,,
मंत्र दूसरा	,,
शत्रु बुद्धिस्तम्भन मंत्र	३२८
चौरगतिस्तम्भन मंत्र	,,
सर्वजन मोहन मंत्र	३२९
मोहन मंत्र	,,
सुखप्रसवका जल मंत्र	,,
भूतादिकनिवारणधूप मंत्र	३३०
नृसिंह मंत्र	,,
बालिदान मंत्र	३३१
अरिष्ट निवारण मंत्र	,,
रक्षा मंत्र	३३२
बन्धनमोचन मंत्र	,,
निगड भंजन मंत्र	३३३
हारभंजन मंत्र	,,
मच्छरादि निवारण मंत्र	,,
दूध बढानेका मंत्र	३३४
उच्चाटन मंत्र	,,
मंत्र मूठ चलानेका	३३५
मंत्र चोरी काढवाको	३३६
मंत्र मसानकेजगावाको	३३७

विषय.	पृष्ठ.
जादू दूर करवाको मंत्र	३३७
उच्चाटन मंत्र	३३८
विद्वेषण मंत्र	३३९
शत्रुको बहरा करवाकौ मंत्र	,,
शत्रुकोज्वरबुलावाकौ मंत्र	३४०
शत्रुके नाशकौ मंत्र	,,
शत्रुका सर्वनाशक मंत्र	,,
अग्निस्तम्भन मंत्र	३४१
पैर चलावाकौ मंत्र	,,
भूत प्रेतके मारवाकौ मंत्र	३४२
डाढके कीडाका मंत्र	३४३
डाढ पीडाका दूसरा मंत्र	,,
मंत्र डवकाको	३४४
आंखके फुली काटवाकौ मंत्र	३४५
घोडामारवाकौ मंत्र	,,
खेती नाश करवाकौ मं०	३४६
कुम्भारके बर्तन फोड़वाकौ	,,

विषय.	पृष्ठ.
धनुर्विद्याका मंत्र	३४७
सप्तदशाक्षरी धनुर्विद्या	,,
वागीश होनेका मंत्र	३४८
अत्यन्त भोजन करवाकौ मंत्र	,,
दूसरा मंत्र	,,
भूख दूर करवाकौ मंत्र	३४९
पादुका सिद्ध करवाकौ मंत्र	,,
सहस्रयोजन चलावाकौ मंत्र	३५०
मेह बरसावाकौ मंत्र	,,
धरतीमें गडा धन दीखवाकौ मंत्र	,,
दूसरा अंजन मंत्र	३५१
लोपहोनेका मंत्र	३५३
विष दूर करवाकौ मंत्र	,,
बीछूके विष दूरकरवाकौ मंत्र	३५४
विषनाशक जलपढवाकौ मंत्र	,,

विषय.	पृष्ठ.
विषदूरकरवाकौ पत्थर पढवाकौ मंत्र	३५६
विषनाशक अग्नि झारा	३५७
मंत्रऋद्धिकौ	३५८
नजर बांधवाको मंत्र	३५९
मंत्रजंजीराकौ	३६०
डाढके पीडाकौ मंत्र	३६२
परीरोग दूर करवाकौ	३६३
हाजरात करवाकौ मंत्र	३६४
ढाल रोपवाकौ मंत्र	३६५
गर्गोक्तज्वरहरणबलि	३६६
वशीकरणपुत्तलिका मंत्र	३६७
वैर करावाकौ मंत्र	,,
उचाटन मंत्र	३६८
काकवन्ध्याके पुत्र करनेकौ मंत्र	३६९
योगिनी सिद्ध करनेको मंत्र	,,
नटी साधन मंत्र	३७१
विभ्रमायक्षिणीका मंत्र	३७२
शत्रुके पांगला करनेको मंत्र	३७२
मंत्र सुई काढावाकौ	३७३
मित्रनमें लडाई करवाकौ मंत्र	,,
नजर दूर करवेकौ मंत्र	,,
मोहनी मंत्र	३७४
अग्निभय निवारण मंत्र	३७६
सिंह भय नाशक मंत्र	३७७
ग्रह दोष पीडा निवारण मंत्र	,,
भूत ग्रह निवारण मंत्र	३७८
वशीकरण मंत्र	,,
मृतवत्साके पुत्र जिवानेका मंत्र	३७९
शत्रुवशीकरण मंत्र	,,
व्याघ्रनिवारण मंत्र	३८०
मोहन पान मंत्र	,,
अदीठ काम मंत्र	३८१
मुर्दे सिद्ध करनेका उपाय	,,

विषय	पृष्ठ.
अघोर सुदर्शन मंत्र	३८२
मुर्दैके प्रोक्षणका मंत्र	३८३
पुष्पांजलीका मंत्र	,,
प्रणामका मंत्र	,,
पीठका मंत्र	३८४
इन्द्रपूजा विधान	३८५
इन्द्रके बलिदानका मंत्र	,,
अग्निपूजाका मंत्र	,,
अग्निके बलिदानका मंत्र	,,
यम पूजाका मंत्र	३८६
यमका बलि मंत्र	,,
नैर्ऋताधिपतिकी पूजाकौ मंत्र	,,
,, ,, बलि मंत्र	,,
वरुण पूजाकामंत्र	३८७
वरुण बलि मंत्र	,,
वायु पूजाका मंत्र	,,
वायु बलि मंत्र	,,
कुबेर पूजा मंत्र	३८८

विषय.	पृष्ठ
कुबेर बलि मंत्र	३८
ईशानपूजा मंत्र	'
ईशान बलि मंत्र	'
ब्रह्मपूजा मंत्र	३८
ब्रह्मा बलि मंत्र	'
अनन्त पूजा मंत्र	'
अनन्तपूजा बलि	'
बन्धन मंत्र	३९
वशीकरण फूल मंत्र	३९
दूसरा फूल वशीकरण	३९
मंत्र रीघनवायकौ	३९
मंत्र पीलियाकौ	'
मंत्र बवासीरकौ	३९
भूतादिकके झारवाकौ मंत्र	३९
अथ दूसरा मंत्र	'
भूतादिकके वकरानेका मंत्र	३९
बिसालीका मंत्र	३९

विषय.	पृष्ठ
नेत्रकी पीडाका मंत्र	३९८
डमरूपसली वायकामंत्र	३९९
प्रेत वशकरवाकौ मंत्र	४००
मंत्र पाणीपर चलावाकौ	,,
विच्छूके विष दूरकरवाकौ मंत्र	४०१
मंत्र पूतली वशीकरण	४०२
अथ मंत्र	४०३
मंत्र वशीकरण	४०५
दूसरे वशीकरणके मंत्र	,,
स्त्रीपुरुषवशीकरण	४०६
वस्तु लेलैनेका मंत्र	४०७
स्त्रीवशीकरण	,,
वशीकरण साबर मंत्र	४०८
दूसरा वशीकरण	४०९
मंत्र रक्षाको	,,
मंत्र कढाई बांधवाकौ	४१०
मंत्र बावले कुत्ताकौ	,,
मंत्र जाडेके ज्वरका	४११
मंत्र स्त्रीके पैर थामनैका	४१२
मंत्र मूठ मारवाकौ	४१३

विषय.	पृष्ठ.
नाजका ढेरउडावाकौमंत्र	४१३
भैरव सिद्ध प्रयोग	४१४
ज्वालामुखीका प्रयोग	४१६
अथ वशीकरणमाह	,,
अथ सेचन मंत्र	४१७
अथ उत्पाटन मंत्र	४१८
वशीकरण चूर्ण	,,
ग्राममें सुख मिलने का मंत्र	,,
स्पर्श वशीकरण मंत्र	४१९
विना प्रार्थना अन्नमिलनेका	,,
वशीकरण फूल मंत्र	४२०
नरनारियोंमें क्षोभकारक मंत्र	,,
भोजन मंगवानेका मंत्र	४२१
त्रैलोक्य वशीकरण भूत नाथ मंत्र	,,
मंत्र अगिया वेतालकौ	४२२
अग्नि शीतल करनेका मंत्र	,,
राज वशीकरण तिलक	४२३
शास्त्रार्थमें जीतनेकौ मंत्र	४२४
वेश्यावशीकरण मंत्र	,,

विषय.	पृष्ठ.
चिंचि पिशाची यक्षिणी	४६८
विचित्रा यक्षिणी	४६९
हंसी यक्षिणी	,,
मदना यक्षिणी	४७०
कालकार्णिका यक्षिणी	,,
लक्ष्मी यक्षिणी	४७१
शोभना यक्षिणी	,,
नटी यक्षिणी	४७२
पद्मिनी यक्षिणी	,,
सर्पोंके भागनेका मंत्र	४७३
विषनाशन मंत्र	,,
अदृश्यकरण मंत्र	४७४
अनावृष्टिनाशक मंत्र	,,
कुष्टीकरण मंत्र	४७५
बन्धनमोचन मंत्र	,,
वृष्टीकरण मंत्र	४७६
अथ ध्यानम्	,,
भोजनाकर्षण मंत्र	४७७
वशीकरण प्रयोगः	,,
दूसरा मंत्र	४७८
तीसरा मंत्र	,,
वेश्या वशीकरण	,,
अन्य वशीकरण	४७९
अन्य मंत्र	,,
अन्य वशीकरण	४८०
इति तृतीयः पादः ।	
चतुर्थः पादः ।	
राजवशीकरण मंत्र	४८१
राजाके कोपशान्तकरनेका उपाय	४८३
भवबन्ध विनाशन यंत्र	४८४
जूआमें जीतनेका यंत्र	४८५
एकान्तरज्वरनाशक	,,
आकर्षण यंत्र	४८६
सेनाके भगानेका यंत्र	४८७
ज्वरनाशक यंत्र	४८८
सर्पविषनाशक यंत्र	,,
चिलवाईदूर करवेकौ यंत्र	४८९
बाणिज्यार्थ वशीकरण	,,
जगद्वशीकरणयंत्र	४९०
वशीकरण यंत्र	,,
पत्नीताकौ यंत्र	४९१
यंत्रजूआमें जीतनेकौ	,,

विषय.	पृष्ठ.
दिव्यस्तम्भन यंत्र	४९१
यात्रास्तम्भनयंत्र	४९२
मुखस्तम्भन यंत्र	,,
अग्निस्तम्भन यंत्र	४९३
शत्रुनाशन यंत्र	,,
शत्रुनाशन यंत्र	४९४
सासससुरवशीकरण	,,
डाकिनी बकरावाकौ यंत्र	,,
प्रेत दूर करवाकौ यंत्र	४९५
भूत दीखवाकौ यंत्र	,,
यंत्रातिजारीकौ	,,
यंत्रपानीबन्दकरवाकौ	४९६
यंत्र बासन फोडवाकौ	,,
यंत्र आधाशीशीदूरकरवाकौ	,,
राजमेंसन्मान होयवाकौ यंत्र	,,
पन्द्रहके यंत्रकी विधि	४९७
विधि बर्णन	,,
सर्वकार्यसिद्धिका उपाय	४९८
कार्य्यके संकल्पकी गिनती	,,
रविवारकी प्रयोगविधि	५००
सोमवारकी प्रयोगविधि	,,

विषय.	पृष्ठ.
मंगलवारकीप्रयोगविधि	५०१
बुधवारकी प्रयोग विधि	,,
गुरुवारकी प्रयोग विधि	५०२
भृगुवारकी प्रयोग विधि	५०३
शनिवारकी प्रयोग विधि	,,
यंत्र लिखनेकी विधि	,,
पन्द्रहके यंत्रका मंत्र	५०५
यंत्र लिखनेकी कलम	,,
वशीकरण पतियंत्र	५०६
कालानल स्वामी वशीकरण यंत्र	५०७
अग्निनिवारण यंत्र	५०८
यात्रास्तम्भन यंत्र	५०९
आकर्षण यंत्र	५१०
तापन यंत्र	५११
मित्रदर्शन यंत्र	,,
वैरियोंके स्तम्भनका यंत्र	५१२
सर्वरक्षा यंत्र	५१३
डाकिनी त्रासन यंत्र	,,
बालरक्षाका यंत्र	५१४
एकांतरेका रामबाणयंत्र	५१५

यह पुस्तक सन् १८६७ आक्ट २५ मुजब रजिस्टर हक्क
छपावनारने अपने स्वाधीन रक्खा है.

भूमिका.

क्या महिमा है उस सर्वशक्तिमान् निर्विकार निरीह परमेश्वरकी कि, जिसने अपनी मायासे इतने बडे हाथीसे लेकर ऐसे २ छोटे जीवभी उत्पन्न किये हैं. जो विना सूक्ष्मदर्शी यंत्रोंके कदापि दृष्टिगोचर नहीं हो सक्ते. उसीने ऐसे २ फल-फूलभी उत्पन्न किये हैं, जिनकी रंगत, बनावट, सजधज देख-कर बुद्धि स्तब्ध हो जाती है. और बुद्धिभी आपनी बुद्धिम-त्ताका अभिमान विसार निराधार होकर इन सब बातोंका उसी परमेश्वरको आधार मानने लगती है। उसीने इस मनुष्यको अपनी सब सृष्टिमें उत्तमोत्तम बनाया है. जिनकी चालढाल रूप रंग, उठन बैठन, चेष्टा प्रकृति हसन बोलन, रुचि ग्लानि ऐसी भिन्नभिन्न बनाई हैं कि–न तौ वे कभी पहिले मिलीं न अब मिलती हैं और न आगेको मिलेंगी। कोई मनुष्य संसारकी विषयवासना, धन, स्त्री,पुत्रादिका बंधन तोडकर पर्वतोंकी गुह्य कन्दराओंमें निवास करताहै, कोई जटाजूट धारणकर भस्मपर भस्म लपेट परमहंस बन लंगोटीतक फेंक देता है,कोई न्यायकी पंक्तियोंको रट२नैयायिक बन जाताहै, कोई लट लिट्के रूप साधनेमें निपुण हो वैयाकरणकी पदवी धारण करताहै, कोई रा-जकीय कार्यवाही (पोलिटिकलमैटर्स) में रुचि बढाकर हवामें गांठ बाँधनेका दम मारताहै,किसीका मनमतंग बल,बुद्धि,विद्या, ज्ञान,नियम,हर्ष,लोकलाज और कुलकानकी मेंडको तोड नव-

बालाओंके रूप और शृंगारके समुद्रकी तरंगोंमें घुस वहावहा फिरता है, कहांतक कहूं कोई रसायनिक है, कोई मांत्रिक है, कोई तांत्रिक है. जितने मनुष्य हैं उतनीही उनकी भिन्न २ रुचि और प्रकृति है.

इन भिन्न २ रुचिवाले मनुष्योंका घडीभर जीव बहलानेके लिये यह कौतुकरत्नभांडागार नामक ग्रन्थ पैदा किया गयाहै इस ग्रन्थमें पांच पाद हैं. पहिलेमें मंत्र, मंत्रोंके सिद्धकरनेके विधि आसन, नियम, ग्रहादिक वर्णनहैं। द्वितीय पादमें भानुमती अर्थात् अनेक २ चमत्कृत् काम करनेकी विधि है। तृतीय पादमें अनेक प्रकारके वशीकरणादि मंत्र विधिसहित दिये गये हैं, चतुर्थ पादमें अनेक प्रकारके यंत्र और अनेक सिद्ध करनेकी विधिहैं,पञ्चम पादमें आत्मविद्या अर्थात् मैसमैरिजमहै,

इस ग्रन्थके संग्रह करनेमें साक्षात् शिवोक्त इन्द्रजालशास्त्र, कामरत्न, दत्तात्रेयतन्त्र, षट्कर्मदीपका, सिद्धनागार्जुनकक्षपुट, इत्यादि बहुतसे दुष्प्राप्य ग्रन्थोंसे सहायता ली गई है. बंगालेके कामरूप देशमें यह विद्या अत्यन्त उत्कृष्टतासे फैली हुई थी. वहांसे हमको अत्यन्त सहायता मिली है ॥

आपका चित्तविनोदक.

श्रीकृष्णलाल.

(मथुरा)

ओ३म्

श्रीहरिम्वन्दे.

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

कौतुकरत्नभांडागारप्रारम्भः ।

प्रथमः पादः ।

मंगलाचरणम् ।

यं ध्यायन्ति सुराऽसुराश्च निखिला यक्षाः पिशाचोरगाः
राजानश्च तथा मुनीन्द्रनिवहाः सर्वार्थदं सिद्धये ॥
भक्तानां वरदाऽभयप्रदकरं पाशांकुशाऽलंकृतं
चंचच्चामरवीज्यमानमनिशं सोऽहं श्रये शंकरम् ॥ १ ॥

एक समय कैलासकी रमणीय शिखरपर श्री उमानाथ ध्यानावस्थित बैठे हुए थे और भवानी शिखरोंपर किलोल करती थीं इतनेमेंही ये इनके ध्यानमें आया, कि संसारी जीव यद्यपि वेदादि-मंत्रोंको जानते हैं तथापि दुःखसे पीडित हैं इसका कारण शम्भुसे पूछूंगी । कुछ दिवसके अन-

न्तर जब शिवजी समाधिसे उठे तब पार्वतीने यही प्रश्न किया। शिवजी बोले कि हे प्रिये! यह तेरा प्रश्न परोपकारसे परिपूर्ण है मनुष्य मंत्र तंत्रोंको जानते हैं तथापि उनकी सिद्धिका उपाय पूर्ण रीतिसे नहीं करते इसीसे उनको सिद्धि नहीं होती इसलिये मैं अब तेरे सन्मुख प्रत्येक मंत्रकी विधि और उनके साधनका उपाय कहताहूं तू चित्त लगाकर सुन ये अत्यन्त गुह्य वार्त्ता है॥

छःप्रकारके कर्म।

कर्म छः प्रकारके होते हैं। शांतिकरण, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन, और मारण॥

छः ओं कर्मोंके लक्षण।

रोग, कृत्या और ग्रहादिकोंका निवारण शांतिकरण है। सम्पूर्ण मनुष्योंको वश करलेना वशीकरण है। चलते हुएको रोकना स्तम्भन है। जिनकी परस्पर अत्यन्त मित्रताहै उनमें वैर उत्पन्न करना

विद्वेष है। स्वदेशसे निकलकर दूसरे देशमें चला जाना उच्चाटन है। और जीवधारियोंके प्राण लेना मारण कहाता है॥

छः ओं कर्मोंके देवता।

शान्तिकर्म्मकी अधिष्ठात्री देवी रति है, वशीकरणकी सरस्वती, स्तम्भनकी लक्ष्मी, विद्वेषकी ज्येष्ठा, उच्चाटनकी दुर्गा, और मारणकी भद्रकाली है। जौनसा कर्म करना हो उसके आदिमें उसीका पूजन करै॥

छः ओं कर्मोंकी दिशा।

शान्तिकर्ममें ईशानदिशा, वशीकरण उत्तरमें, स्तम्भन पूर्वमें, विद्वेष नैर्ऋतमें, उच्चाटन वायव्यमें और मारण अग्निदिशामें। इसका तात्पर्य यह है कि जौनसा कर्म करना हो उसी दिशामें मुख करके बैठे॥

छः ओं कर्मोंके ऋतुविचार।

सूर्योदयसे लेकर प्रत्येक रातदिनमें दसदस घडीमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, सब ऋतु भोगजाया करती हैं। कोई२ यहभी कहते हैं कि दुपहरसे पहिले २ वसन्तऋतु, मध्यान्हमें ग्रीष्म, दुपहर पीछे वर्षा, संध्याके समय शिशिर, आधीरातपै शरद और प्रातःकालमें हेमन्तऋतु भोगतीहै॥

प्रत्येक ऋतुमें कर्तव्यकर्म।

हेमन्तऋतुमें शान्तिकर्म, वसन्तमें वशीकरण, शिशिरमें स्तम्भन, ग्रीष्ममें विद्वेष, वर्षामें उच्चाटन और शरदऋतुमें मारणकर्म्म करना उचित है॥

छः ओं कर्मके कालविशेष।

दुपहर पहिले वशीकरण, मध्यान्हमें विद्वेषण और उच्चाटन, तीसरे पहर शांतिकर्म और स्तम्भन, और सायंकालमें मारण कर्म करै॥

छः ओं कर्मोंके वर्णभेद.

वशीकरण आकर्षण और क्षोभमें लालरंगका चिन्तवन करै. जहर उतारने शान्तिकरने और पुष्टिमें श्वेतरंगका ध्यान करै, स्तंभनमें पीलारंग. उच्चाटनमें धूम्रवर्ण. उन्मादनमें वीरवधूटीकासा लालरंग और मारणकर्म्ममें कृष्णवर्णका ध्यानकरै.

षट्कर्म चक्र-

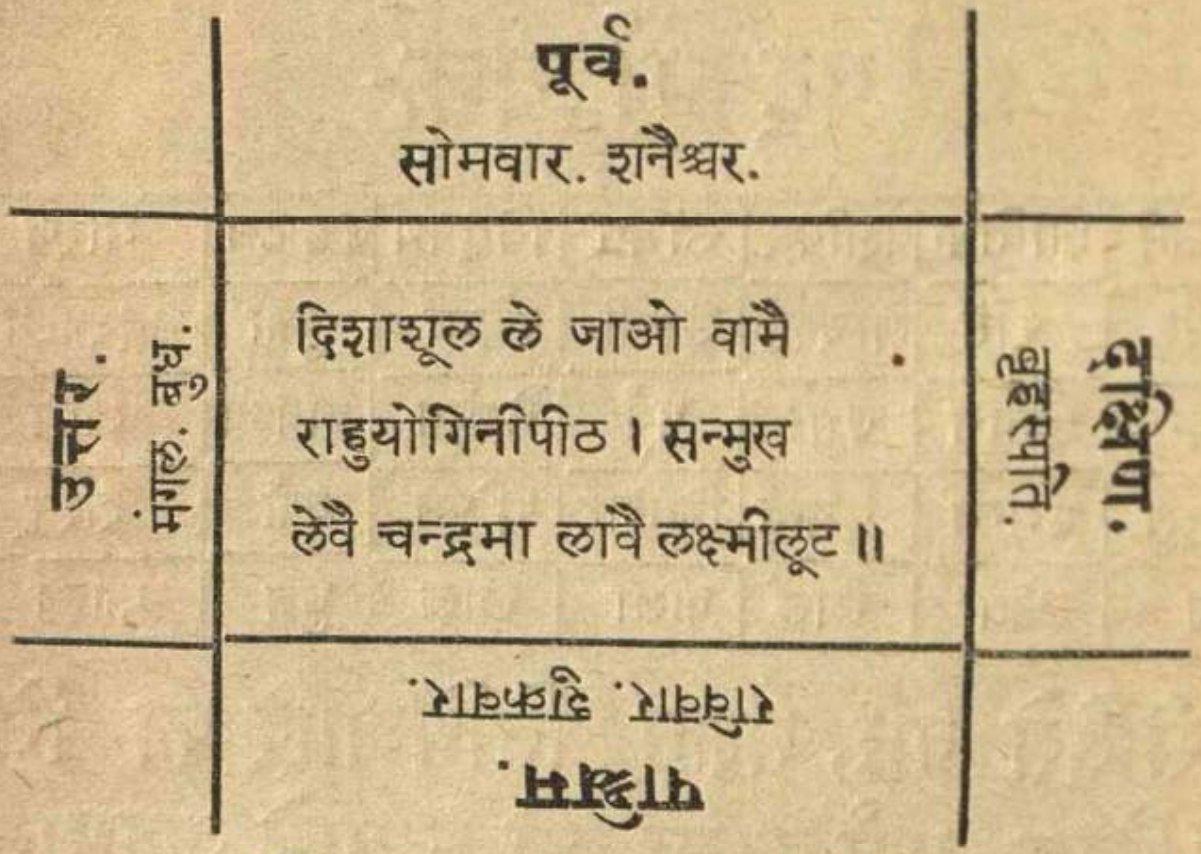
षट्कर्म	शांतिक	वशीकर	स्तंभन	विद्वेषण	उच्चाटण	मारण
देवी	रति	सरस्वती	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रकाली
दिशा	ईशान	उत्तर	पूर्व	नैर्ऋत	वायव्य	अग्नि
ऋतु	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्
रंग	श्वेत	लाल	पीला	लाल	धुम्र	काला

इसी रीतिसे वार, नक्षत्र तिथिआदि का निर्णय करके जैसा कर्म करना हो उसीके अनुसार करै जैसे शान्तिकर्म करनाहै तौ बृहस्पतिको करै, विद्वेषण क्रूरवार शनैश्चर आदि में करै इसी

प्रकारसे सब तिथि और नक्षत्रोंकाभी विचार कर लेना चाहिये ॥

अथ दिशाशूलचक्रम् ।

सोमशनिश्चर पूरववासा । रविशुक्र पश्चिमके पासा ॥ बुध मंगल उत्तरमें रहै । सुरगुरुमें दक्षिण दिशकहै ॥



राशि देखनेकी विधि ।

एकचन्द्रमामें सवादो नक्षत्र भोगाकरतेहैं और

हरएक नक्षत्रमें चार चरण होतेहैं इस हिसाबसे हर-एक चन्द्रमा ९ चरणोंतक भोगा करताहै और प्रत्येक चरणका एक २ अक्षर नियतहै। जिस मनुष्यकी राशि देखनाहो उसके नामका पहिला अक्षर इन नक्षत्रोंमें देखै जिस चन्द्रमाके भोग कालमें यह नक्षत्रहो वही उसकी राशि होतीहै। यह नीचे लिखे चक्रसे अच्छीतरह विदित होजायगा॥

राशि देखनेका चक्र.

राशी.	अक्षरोंका स्वामिनक्षत्र.		
मेष.	अश्विनीके चारचरण चू. चे. चो. ला.	भरणीके ४ चरण ली. लू. ले. लो.	कृत्तिकाका एक चरण आ.
वृष.	कृत्तिकाके पिछले ३ चरण ई. ऊं. ए.	रोहिणीके चार चरण ओ. वा. वी. वू.	मृगशिरके प्र० २ चरण वे. वो.
मिथुन.	मृगशिरके पि० २चरण का. की.	आर्द्राके ४ चरण कू. घ. ङ. छ.	पुनर्वसुके ३ चरण के. को. हा.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	१
चे	ऊ	की	हू	मी	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	२
चो	ए	कू	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	थ	३
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	जू	सा	झ	४
ली	वा	ङ	डा	मो	षा	रो	ने	भू	जे	सी	ञ	५
लू	वी	छ	डी	टा	णा	ता	नो	धा	जो	सू	दे	६
ले	वू	के	डू	टी	ठा	ती	या	फा	खा	से	दो	७
लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ढ	खी खूखे	सो	चा	८
अ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	खौ गागी	दा	ची	९
मेष	वृष भ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृ.	धन	मकर	कुंभ	मीन	ग
चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	संज्ञा

तिथिविचार।

तिथि पांच प्रकारकी होतीहैं जैसे नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, और पूर्णा। यदि शुक्रवारमें नन्दा, बुधमें भद्रा, मंगलमें जया, शनैश्चरमें रिक्ता, और गुरुवारमें पूर्णा तिथि होय तौ ये सिद्ध योग हैं। इससे अन्यथा मृत्यु योग कहतेहैं॥

सिद्धियोगचक्र

नन्दा	१।६।११।	शुक्र
भद्रा	२।७।१२	बुध
जया	३।८।१३	भौम
रिक्ता	४।९।१४	शनि
पूर्णा	५।१०।१५	गुरु

मृत्युयोग.

नन्दा	१।६।११।	र. कु.
भद्रा	२।७।१२	चं. शु.
जया	३।८।१३	बुध
रिक्ता	४।९।१४	गुरु
पूर्णा	५।१०।१५	शनि

सिद्धयोगमें काम करनेसे सिद्धि होतीहै मृत्यु योगमें करने से दुखदाई होताहै॥

विषय.	पृष्ठ.
नित्यज्वरका यंत्र	५१५
बुरे सुपनेका यंत्र	५१६
मसानदूर करनेका	,,
प्रीति उत्पन्न करनेका यंत्र	,,
प्रीति नाशका यंत्र	,,
छायाभस्म करनेका यंत्र	५१७
प्रीति नाशका दूसरा यंत्र	,,
बला दूर करनेका यंत्र	,,
नरनारी विद्वेषणयंत्र	५१८
शत्रुमारण यंत्र	५१९
उच्चाटन यंत्र	५२०
शान्तिक पौष्टिक यंत्र	५२१
दूरदेशज मारण	५२२
मानिनीआकर्षण यंत्र	५२३
मारण यंत्र	२२४
विघ्ननाशक यंत्र	,,
अन्य उच्चाटन	५२५
व्याघ्रादिसे बचनेका यंत्र	,,

पंचमः पादः ।

मैसमैरिज्मप्रारम्भः	५२८
मैसमरिज्मके भेद	५३०
क्यूरेटिवमैसमैरिज्मके लाभ	,,
मैसमैरिज्मकी अवस्था	,,
जाग्रत्अवस्थाका लक्षण	५३१
निद्राभ्रमणावस्थाका लक्षण	,,
परोक्ष दर्शिताका लक्षण	,,
प्रयोक्ताके कर्तव्य कर्म	५३२
योग्यपात्रोंके चिन्ह	५३४
प्रयोगकी पहिली रीत	,,
प्रयोगकी दूसरी विधि	५३५
,, तीसरी रीति	,,
सम्यक्प्रयोगकीपरीक्षा	५३६
प्रयोगकेउतारनेकी रीति	५३७
रोगनिवारकविधिमें कर्तव्य कर्म	
मैसमैरिज्मद्वारा चिकित्साकी विधि	५३८
गाँठियाकी चिकित्सा	५३९
श्वासचिकित्सा	,,
उदर रोगकी चिकित्सा	५४०

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्री ओ३म् ॥

कौतुकरत्नभांडागार.

अर्थात्

बृहदिन्द्रजाल.

प्रथमपाद

मथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल संगृहीत

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलालने

मुम्बईमें

"ज्ञानसागर" यंत्रालयमें मुद्रित कराया

सम्वत् १९६३ शके १८२९.

यह पुस्तक सन् १८६७ आक्ट २५ मुजब रजिस्टर हक्क
छपावनारने अपने स्वाधीन रक्खा है.

भूमिका.

क्या महिमा है उस सर्वशक्तिमान् निर्विकार निरीह परमेश्वरकी कि, जिसने अपनी मायासे इतने बडे हाथीसे लेकर ऐसे २ छोटे जीवभी उत्पन्न किये हैं. जो विना सूक्ष्मदर्शी यंत्रोंके कदापि दृष्टिगोचर नहीं हो सक्ते. उसीने ऐसे २ फल-फूलभी उत्पन्न किये हैं, जिनकी रंगत, बनावट, सजधज देख-कर बुद्धि स्तब्ध हो जाती है. और बुद्धिभी आपनी बुद्धिम-त्ताका अभिमान विसार निराधार होकर इन सब बातोंका उसी परमेश्वरको आधार मानने लगती है। उसीने इस मनुष्यको अपनी सब सृष्टिमें उत्तमोत्तम बनाया है. जिनकी चालढाल रूप रंग, उठन बैठन, चेष्टा प्रकृति हसन बोलन, रुचि ग्लानि ऐसी भिन्नभिन्न बनाई हैं कि—न तौ वे कभी पहिले मिलीं न अब मिलती हैं और न आगेको मिलेंगी। कोई मनुष्य संसारकी विषयवासना, धन, स्त्री,पुत्रादिका बंधन तोडकर पर्वतोंकी गुह्य कन्दराओंमें निवास करताहै, कोई जटाजूट धारणकर भस्मपर भस्म लपेट परमहंस बन लंगोटीतक फेंक देता है,कोई न्यायकी पंक्तियोंको रट२नैयायिक बन जाताहै, कोई लट लिट्के रूप साधनेमें निपुण हो वैयाकरणकी पदवी धारण करताहै, कोई रा-जकीय कार्यवाही (पोलिटिकलमैटर्स) में रुचि बढाकर हवामें गांठ बाँधनेका दम मारताहै,किसीका मनमतंग बल,बुद्धि,विद्या, ज्ञान,नियम,हर्ष,लोकलाज और कुलकानकी मेंडको तोड नव-

बालाओंके रूप और शृंगारके समुद्रकी तरंगोंमें घुस वहावहा फिरता है; कहांतक कहूं कोई रसायनिक है, कोई मांत्रिक है, कोई तांत्रिक है. जितने मनुष्य हैं उतनीही उनकी भिन्न २ रुचि और प्रकृति है.

इन भिन्न २ रुचिवाले मनुष्योंका घडीभर जीव बहलानेके लिये यह कौतुकरत्नभांडागार नामक ग्रन्थ पैदा किया गयाहै इस ग्रन्थमें पांच पाद हैं. पहिलेमें मंत्र, मंत्रोंके सिद्धकरनेके विधि आसन, नियम, ग्रहादिक वर्णनहैं। द्वितीय पादमें भानुमती अर्थात् अनेक २ चमत्कृत् काम करनेकी विधि है। तृतीय पादमें अनेक प्रकारके वशीकरणादि मंत्र विधिसहित दिये गये हैं, चतुर्थ पादमें अनेक प्रकारके यंत्र और अनेक सिद्ध करनेकी विधिहैं,पञ्चम पादमें आत्मविद्या अर्थात् मैसमैरिजमहै,

इस ग्रन्थके संग्रह करनेमें साक्षात् शिवोक्त इन्द्रजालशास्त्र, कामरत्न, दत्तात्रेयतन्त्र, षट्कर्मदीपका, सिद्धनागार्जुनकक्षपुट, इत्यादि बहुतसे दुष्प्राप्य ग्रन्थोंसे सहायता ली गई है. बंगालेके कामरूप देशमें यह विद्या अत्यन्त उत्कृष्टतासे फैली हुई थी. वहांसे हमको अत्यन्त सहायता मिली है ॥

आपका चित्तविनोदक.

श्रीकृष्णलाल.

(मथुरा)

ओ३म्

श्रीहरिम्वन्दे.

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

कौतुकरत्नभांडागारप्रारम्भः ।

प्रथमः पादः ।

मंगलाचरणम् ।

यं ध्यायन्ति सुराऽसुराश्च निखिला यक्षाः पिशाचोरगाः
राजानश्च तथा मुनीन्द्रनिवहाः सर्वार्थदं सिद्धये ॥
भक्तानां वरदाऽभयप्रदकरं पाशांकुशाऽलंकृतं
चंचच्चामरवीज्यमानमनिशं सोऽहं श्रये शंकरम् ॥ १ ॥

एक समय कैलासकी रमणीय शिखरपर श्री उमानाथ ध्यानावस्थित बैठे हुए थे और भवानी शिखरोंपर किलोल करती थीं इतनेमेंही ये इनके ध्यानमें आया, कि संसारी जीव यद्यपि वेदादि-मंत्रोंको जानते हैं तथापि दुःखसे पीडित हैं इसका कारण शम्भुसे पूछूंगी । कुछ दिवसके अन-

न्तर जब शिवजी समाधिसे उठे तब पार्वतीने यही प्रश्न किया। शिवजी बोले कि हे प्रिये! यह तेरा प्रश्न परोपकारसे परिपूर्ण है मनुष्य मंत्र तंत्रोंको जानते हैं तथापि उनकी सिद्धिका उपाय पूर्ण रीतिसे नहीं करते इसीसे उनको सिद्धि नहीं होती इसलिये मैं अब तेरे सन्मुख प्रत्येक मंत्रकी विधि और उनके साधनका उपाय कहताहूं तू चित्त लगाकर सुन ये अत्यन्त गुह्य वार्त्ता है ॥

छःप्रकारके कर्म।

कर्म छः प्रकारके होते हैं। शांतिकरण, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन, और मारण ॥

छः ओं कर्मोंके लक्षण।

रोग, कृत्या और ग्रहादिकोंका निवारण शांतिकरण है। सम्पूर्ण मनुष्योंको वश करलेना वशीकरण है। चलते हुएको रोकना स्तम्भन है। जिनकी परस्पर अत्यन्त मित्रताहै उनमें वैर उत्पन्न करना

विद्वेष है। स्वदेशसे निकलकर दूसरे देशमें चला जाना उच्चाटन है। और जीवधारियोंके प्राण लेना मारण कहाता है॥

छः ओं कर्मोंके देवता।

शान्तिकर्म्मकी अधिष्ठात्री देवी रति है, वशीकरणकी सरस्वती, स्तम्भनकी लक्ष्मी, विद्वेषकी ज्येष्ठा, उच्चाटनकी दुर्गा, और मारणकी भद्रकाली है। जौनसा कर्म करना हो उसके आदिमें उसीका पूजन करै॥

छः ओं कर्मोंकी दिशा।

शान्तिकर्ममें ईशानदिशा, वशीकरण उत्तरमें, स्तम्भन पूर्वमें, विद्वेष नैर्ऋतमें, उच्चाटन वायव्यमें और मारण अग्निदिशामें। इसका तात्पर्य यह है कि जौनसा कर्म करना हो उसी दिशामें मुख करके बैठे॥

छः ओं कर्मोंके ऋतुविचार।

सूर्योदयसे लेकर प्रत्येक रातदिनमें दसदस घडीमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, सब ऋतु भोगजाया करती हैं। कोई२ यहभी कहते हैं कि दुपहरसे पहिले २ वसन्तऋतु, मध्यान्हमें ग्रीष्म, दुपहर पीछे वर्षा, संध्याके समय शिशिर, आधीरातपै शरद और प्रातःकालमें हेमन्तऋतु भोगतीहै ॥

प्रत्येक ऋतुमें कर्तव्यकर्म।

हेमन्तऋतुमें शान्तिकर्म, वसन्तमें वशीकरण, शिशिरमें स्तम्भन, ग्रीष्ममें विद्वेष, वर्षामें उच्चाटन और शरदऋतुमें मारणकर्म्म करना उचित है ॥

छः ओं कर्मके कालविशेष।

दुपहर पहिले वशीकरण, मध्यान्हमें विद्वेषण और उच्चाटन, तीसरे पहर शांतिकर्म और स्तम्भन, और सायंकालमें मारण कर्म करै ॥

छः ओं कर्मोंके वर्णभेद.

वशीकरण आकर्षण और क्षोभमें लालरंगका चिन्तवन करै. जहर उतारने शान्तिकरने और पुष्टिमें श्वेतरंगका ध्यान करै, स्तंभनमें पीलारंग. उच्चाटनमें धूम्रवर्ण. उन्मादनमें वीरवधूटीकासा लालरंग और मारणकर्म्ममें कृष्णवर्णका ध्यानकरै.

षट्कर्म चक्र-

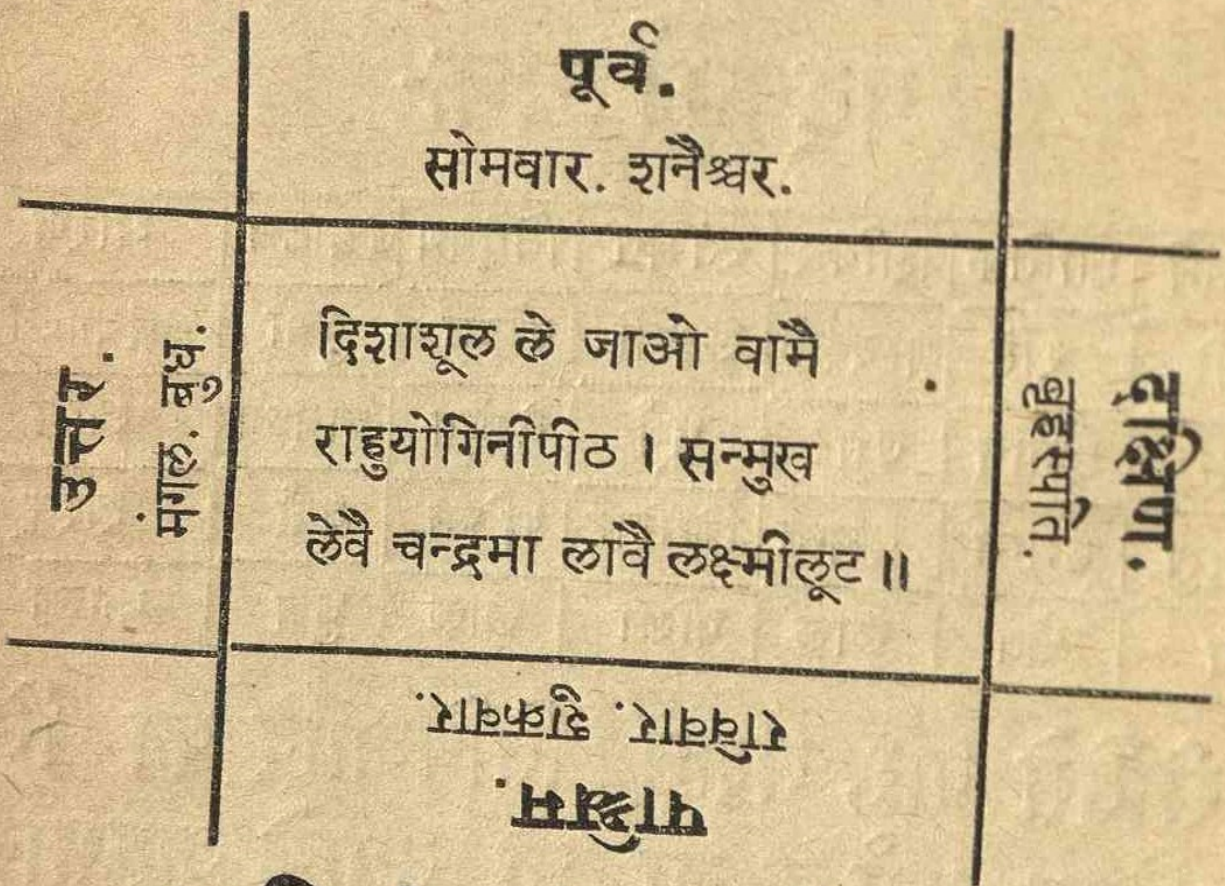
षट्कर्म	शांतिक	वशिकर	स्तंभन	विद्वेषण	उच्चाटण	मारण
देवी	रति	सरस्वती	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रकाली
दिशा	ईशान	उत्तर	पूर्व	नैर्ऋत	वायव्य	अग्नि
ऋतु	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्
रंग	श्वेत	लाल	पीला	लाल	धुम्र	काला

इसी रीतिसे वार, नक्षत्र तिथिआदि का निर्णय करके जैसा कर्म करना हो उसीके अनुसार करै जैसे शान्तिकर्म करनाहै तौ बृहस्पतिको करै, विद्वेषण क्रूरवार शनैश्चर आदि में करै इसी

प्रकारसे सब तिथि और नक्षत्रोंकाभी विचार कर लेना चाहिये ॥

अथ दिशाशूलचक्रम् ।

सोमशनिश्चर पूरववासा । रविशुक्र पश्चिमके पासा ॥ बुध मंगल उत्तरमें रहै । सुरगुरुमें दक्षिण दिशकहै ॥



राशि देखनेकी विधि ।

एकचन्द्रमामें सवादो नक्षत्र भोगाकरतेहैं और

हरएक नक्षत्रमें चार चरण होतेहैं इस हिसाबसे हर-एक चन्द्रमा ९ चरणोंतक भोगा करताहै और प्रत्येक चरणका एक २ अक्षर नियतहै। जिस मनुष्यकी राशि देखनाहो उसके नामका पहिला अक्षर इन नक्षत्रोंमें देखै जिस चन्द्रमाके भोग कालमें यह नक्षत्रहो वही उसकी राशि होतीहै। यह नीचे लिखे चक्रसे अच्छीतरह विदित होजायगा॥

राशि देखनेका चक्र.

राशी.	अक्षरोंका स्वामिनक्षत्र.		
मेष.	अश्विनीके चारचरण चू. चे. चो. ला.	भरणीके ४ चरण ली. लू. ले. लो.	कृत्तिकाका एक चरण आ.
वृष.	कृत्तिकाके पिछले ३ चरण ई. ऊं. ए.	रोहिणीके चार चरण ओ. वा. वी. वू.	मृगशिरके प्र० २ चरण वे. वो.
मिथुन.	मृगशिरके पि० २चरण का. की.	आर्द्राके ४ चरण कू. घ. ङ. छ.	पुनर्वसुके ३ चरण के. को. हा.

कर्क.	पुनर्वसुका १ चरण ही.	पुष्यके ४ चरण हू. हे. हो. डा.	आश्लेषाके ४ चरण डी डू डे डो
सिंह.	मघाके ४ चरण मा. मी. मू. मे.	पूर्वाफाल्गुनके ४ चरण मो टा टी टू	उत्तराफाल्गुनके १ चरण टे
कन्या.	उत्तराफाल्गुनके पि० ३ चरण टो. पा. पी.	हस्तके ४ चरण पू षा णा ठा	चित्राके २ चरण पे पो
तुल.	चित्राके २ चरण रा री	स्वातिके ४ चरण रू रे रो ता	विशाखाके ३ चरण ती तू ते
वृश्चिक.	विशाखाके १ चरण तो	अनुराधाके ४ चरण ना नी नू ने	ज्येष्ठाके ४ चरण नो या यी यू
धन.	मूलके ४ चरण ये यो भा भी	पूर्वाषाढके ४ चरण भू धा फा ढा	उत्तराषाढके १ चरण भे
मकर.	उत्तराषाढके ३ चरण भो जा जी	श्रवणके ४ चरण खी खू खे खो	धनिष्ठाके २ चरण गा गी

कुंभ.	धनिष्ठाके २ चरण गू. गे.	शताभिषाके ४ चरण गो. सा. सी. सू.	पूर्वा भाद्रपदाके ३ चरण से. सो. दा.
मीन.	पूर्वा भाद्रपदाके १ चरण दी.	उत्तराभाद्रपदाके ४ चरण दू थ झ ञ	रेवतीके ४ चरण दे. दो. चा. ची.

इनमेंसे अभिजित् नक्षत्रके जो चार चरणोंके (जूजेजोखा) चार अक्षरहैं इनकी गणनाभी मकरराशिमें होती है। यदि हमें गोविन्दकी राशि देखनाहै तो इसका पहिला अक्षर (गो) शत भिषानक्षत्रका पहिला चरणहै और इस नक्षत्रका स्वामी कुम्भहै तौ गोविन्दकी कुम्भराशि हुई इसीतरह सबकी देखलो। अब हम एक चक्र नीचे लिखतेहैं जिसमें अभिजितभीसंयुक्तहै और ऊपरके चक्रसे बहुत सहजभी है॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	१
चे	ऊ	की	हू	मी	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	२
चो	ए	कू	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	थ	३
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	जू	सा	झ	४
ली	वा	ङ	डा	मो	षा	रो	ने	भू	जे	सी	ञ	५
लू	वी	छ	डी	टा	णा	ता	नो	धा	जो	सू	दे	६
ले	वू	के	डू	टी	ठा	ती	या	फा	खा	से	दो	७
लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ढ	खी खूखे	सो	चा	८
अ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	खौ गागी	दा	ची	९
मेष	वृष भ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृ.	धन	मकर	कुंभ	मीन	ग
चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	संज्ञा

तिथिविचार।

तिथि पांच प्रकारकी होतीहैं जैसे नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, और पूर्णा। यदि शुक्रवारमें नन्दा, बुधमें भद्रा, मंगलमें जया, शनैश्चरमें रिक्ता, और गुरुवारमें पूर्णा तिथि होय तौ ये सिद्ध योग हैं। इससे अन्यथा मृत्यु योग कहतेहैं॥

सिद्धियोगचक्र

नन्दा	१।६।११।	शुक्र
भद्रा	२।७।१२	बुध
जया	३।८।१३	भौम
रिक्ता	४।९।१४	शनि
पूर्णा	५।१०।१५	गुरु

मृत्युयोग.

नन्दा	१।६।११।	र. कु.
भद्रा	२।७।१२	चं. शु.
जया	३।८।१३	बुध
रिक्ता	४।९।१४	गुरु
पूर्णा	५।१०।१५	शनि

सिद्धयोगमें काम करनेसे सिद्धि होतीहै मृत्यु योगमें करने से दुखदाई होताहै॥

अथ योगिनी विचार।

योगिनीका बास पडवाकों पूर्वमे, द्वीजको उत्तरमें, तीजको अग्निकोणमें, चौथको नैऋत्यमें, पञ्चमीको दक्षिणमें, छठको पश्चिममें. सप्तमीको वायव्यमें, और अष्टमीको ईशानमें होताहै। योगिनी पीठ और बांई ओरकी शुभफल दायक और दक्षिण और सन्मुखकी शुभ नहीं होती॥

आसन पर बैठनेकी विधि।

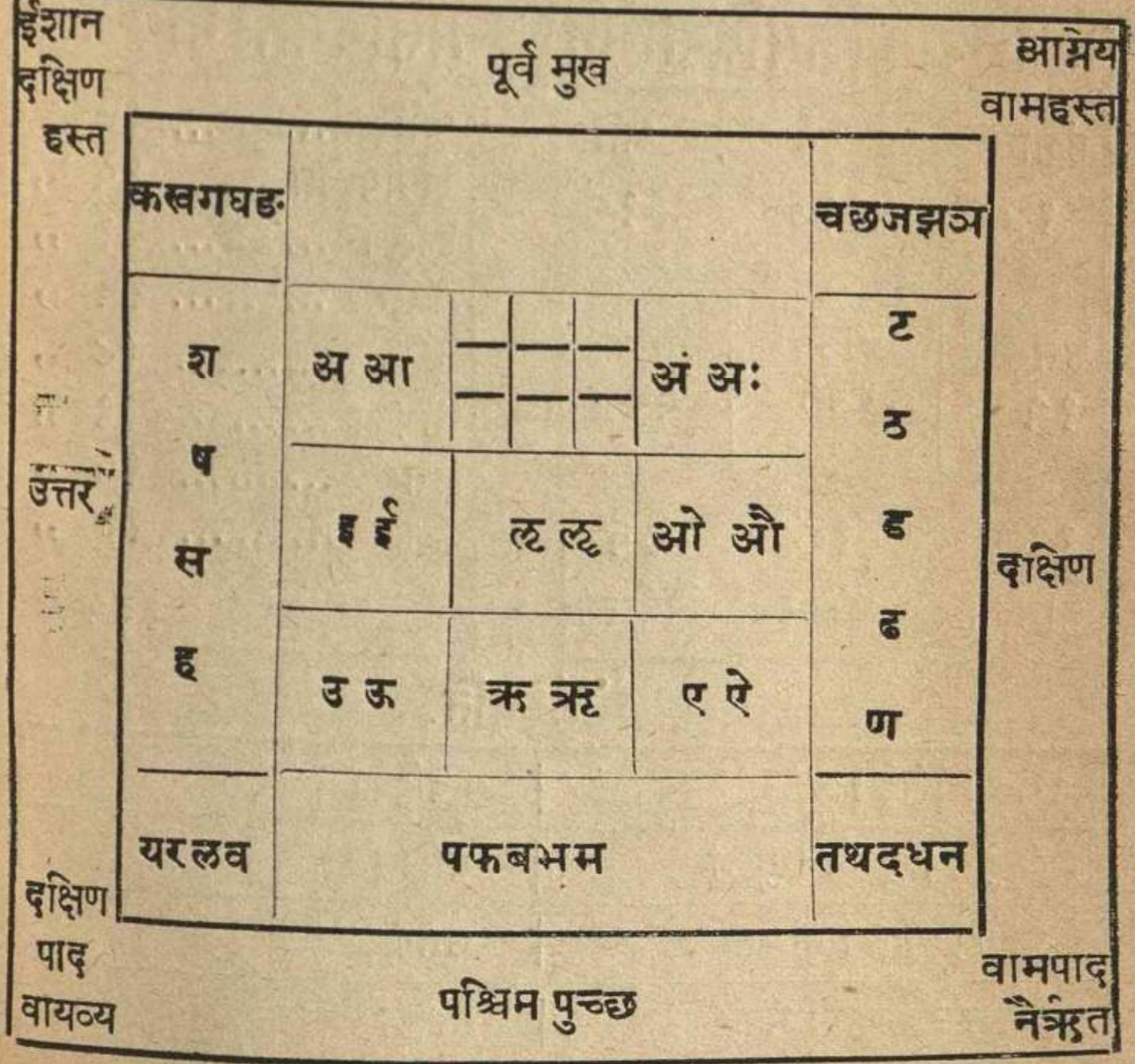
मंत्र जपनेके कितनेही प्रकारके आसन होते हैं जैसे कामकी सिद्धिके लिये यत्नकरनाचाहै वैसेही आसनसे बैठना उचितहै, जैसे पुष्टिकर्ममें पद्मासनसे बैठे, शान्तिकर्ममें स्वास्तिकासन, विद्वेषमें कुक्कुटासनसे, उच्चाटनमें अर्धस्वास्तिक आसनसे बैठे, मारण और स्तम्भन करनेको विकटासनसे और वशीकरण करनेको भद्रासनसे बैठे॥

वशीकरण करनेको मेढाके चर्मपर आकर्षण करनेको वाघम्बरपर, उच्चाटनकरनेको ऊँटके चर्मक

आसनपर, विद्वेष करनेको घोडेके चर्मपर, मारणमें भैंसके चर्मपर और छुडानेमें गजचर्मपर बैठे

बैठनेसे पहिले अपना आसन कूर्मचक्रकी रीतिसे बिछवावै ॥

कूर्मचक्र.



इस चक्रके अनुसार बैठनेसे कर्मकी सिद्धि शीघ्र होवै

चन्द्रदिशाचक्र.

चन्द्रमा एक राशिपर सवादो दिन रहताहै जिसकी १३५ घडी होती हैं इन एकसौ पैंतीस घडियोंमें चन्द्रमा आठों दिशाओंको भोगताहै परन्तु चन्द्रमा की स्थिति जिसदिशामेंहो उसीसेगिनना प्रारम्भ करै

ईशान	पूर्व	अग्नि
१४	१७	१५
उत्तर	सबघडी	दक्षिण
१५	१३५	२१
१९	१८	१६
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

पूर्वदिशा.....	१७ घडी
आग्नेयकोण	१५ ,,
दक्षिण	२१ ,,
नैर्ऋत्य	१६ ,,
पश्चिम	१८ ,,
वायव्य	१९ ,,
उत्तर	१५ ,,
ईशान	१४ ,,
	१३५

चंद्रस्थिति.

मेष । सिंह । धन	पर्वदिशा
मिथुन । कुम्भ । तुला	पश्चिम
कर्क । मीन । वृश्चिक	उत्तर
वृषभ । कन्या । मकर	दक्षिण

ऋणीधनी विचार।

वर्गोंके स्वामी.

नीचे लिखे कोष्टकसे वर्गों और उनकी शत्रुता मित्रताका ज्ञान होजायगा.

संख्या	वर्गके स्वामीका नाम	वर्गके अक्षर	शत्रु	मित्र	उदासीन
१	गरुड	अ इ उ ए	सर्प	श्वान	सिंह
२	बिलाव	क ख ग घ ङ	मूषक	सर्प	श्वान
३	सिंह	च छ ज झ ञ	मृग	मूषक	सर्प
४	श्वान	ट ठ ड ढ ण	मेष	मृग	मूषक
५	सर्प	त थ द ध न	गरुड	मेष	मृग
६	मूषक	प फ ब भ म	बिलाव	गरुड	मेष
७	मृग	य र ल व	सिंह	बिलाव	गरुड
८	मेष	श ष स ह	श्वान	सिंह	बिलाव

इस कोष्टकसे ऋणी धनी इस रीतसे देखा जाता है, कि दोनोंके वर्गकी संख्याको पृथक् पृथक् दो से गुणा करके इसकी वर्गसंख्या उसमें और

उसकी इसमें जोडदे और दोनोंमें आठका भागदे. जिसका अंक शेषमें अधिक हो वह ऋणी और जिसका न्यूनहो वह धनी। मतलब यह है कि अधिक अङ्कवाला न्यून अङ्कवाले को धन दे देगा॥ जैसे सेठ भगवान्दासके पास नन्दकिशोर नौकरी चाहताहै तो उसको मिलैगी या नहीं? अब देखो भगवान्दासकी वर्ग संख्या ६ छ और नन्दकिशोरकी पांचहै दोनों को दोसे गुना किया तो॥

६×२ = १२ और ५×२ = १०;

१२×५ (नं. वर्गसंख्या) = १७ ÷ ८ = १ शेष

१०×६ (भ. वर्गसंख्या) = १६ ÷ ८ = ० शेष

अब देखना चाहिये शून्यसे एक अधिकहै तौ भगवान्दास नन्दकिशोरको अवश्य नौकर रखलेगा.

कर्मविशेषमें हुंफट्का प्रयोग।

बन्धन, उच्चाटन, द्वेष और संकीर्ण कर्मकी

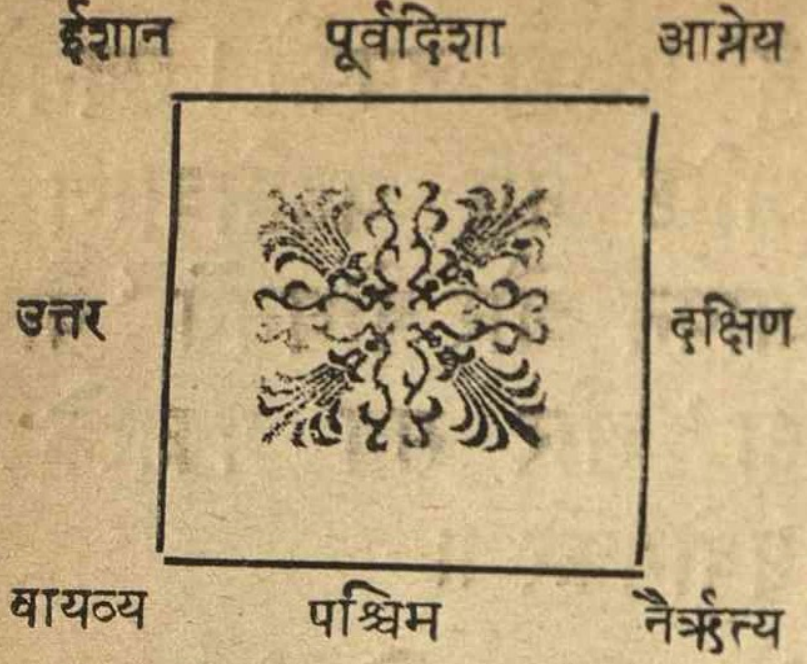
सिद्धिके लिये 'हुं' पदका जपकरै। छेदनमें 'फट्' पदका जपकरै अरिष्ट और ग्रहनिवारण करनेको 'हुंफट्' पुष्टिआयन और बोधनमें 'वौषट्' अग्निकर्ममें 'स्वाहा' और सब प्रकारके पूजनमें 'नमः' शब्द प्रयोगकरै ॥

मंत्रोंका लिंगनिर्देश।

मंत्र तीन प्रकारके होते हैं। स्त्रीलिङ्ग, पुँल्लिङ्ग, और नपुंसक। वह्निजायान्त(स्वाहान्त) मंत्र स्त्री हैं, 'नमः' अन्तवाले नपुंसक। और 'हुंफट्' वाले पुँल्लिंग जातिकेहैं। वशीकरण, शांतिकरणमें पुँल्लिंग; क्षुद्रक्रियाओंमें स्त्रीजाति और इनसे अन्यत्र नपुंसक जातिके मंत्रोंका प्रयोग करै ॥

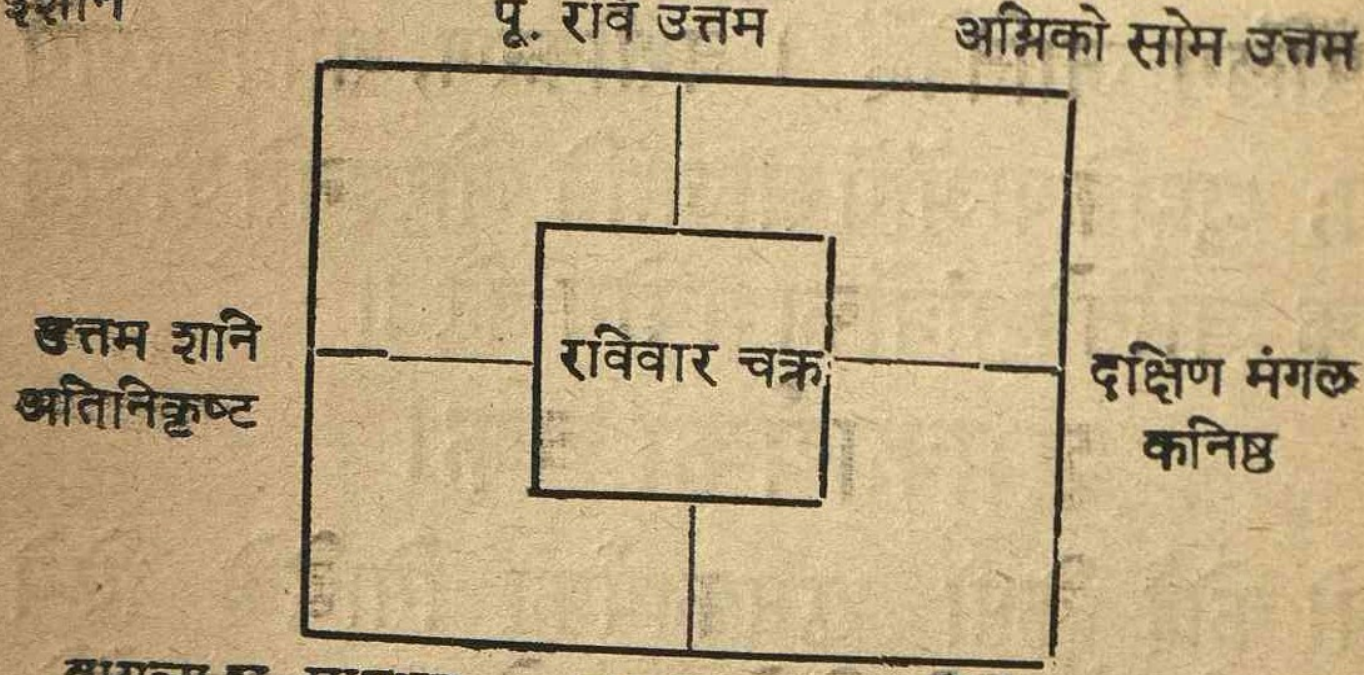
शुभकार्यका चक्र।

जो कोई किसी शुभकार्यकी सिद्धिके लिये मंत्रको जपै तौ नीचे लिखे. चक्रके अनुसार बैठे-



रविवारके बैठनेका चक्र।

जो रविवारसे प्रारंभ करै तौ नीचेके चक्रके अनुसार बैठनेसे कार्य्य शीघ्र सिद्ध होताहै ॥



इसी रीतिसे जैसे कार्यके लिये बैठना चाहै उसी ओर मुखकरके बैठे ॥

योगिनीचक्र.

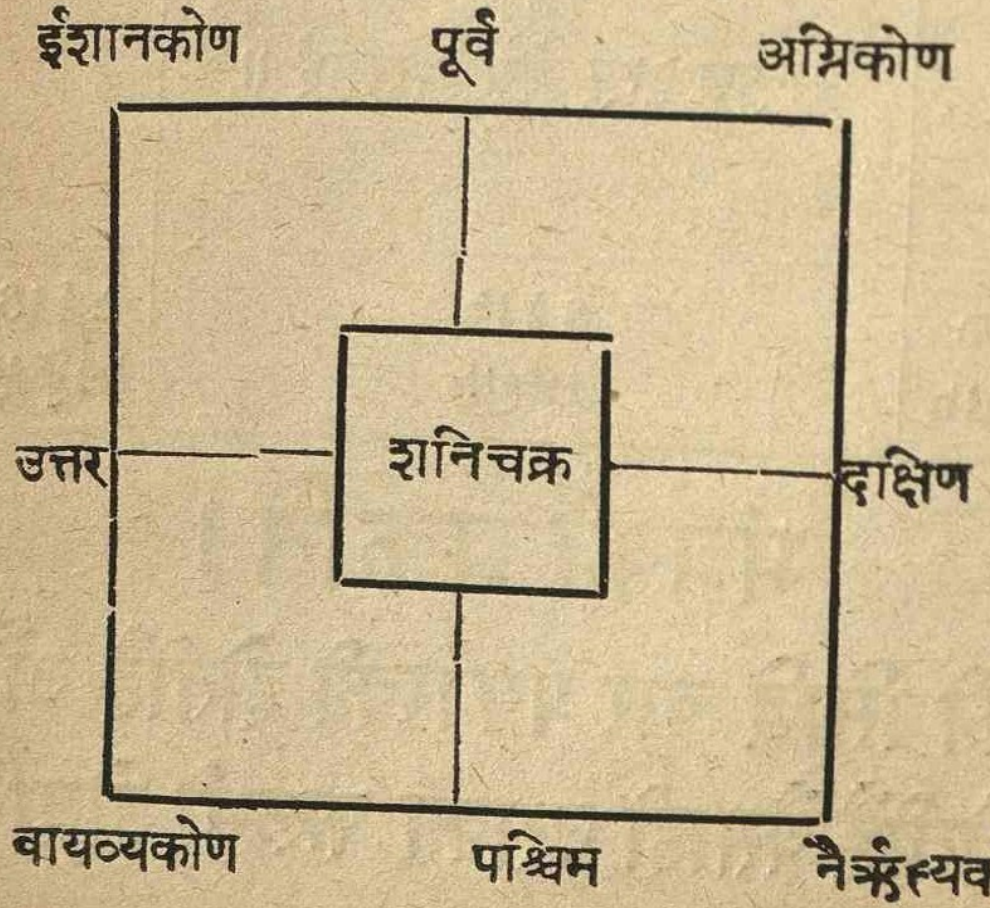
ईशान ३०।८	पूर्व १।९	आग्नि ३।११
उत्तर २।१०	बांयें जोगिन सुख की दाता । दहने बन अगनित भरलाता ॥ पीठ पिछाडी अभिमत दाई । सन्मुख मृत्यु देय दरसाई ॥	पश्चिम ५।१२
७।६	४।५	८।४

मंत्रकी प्रकृति ।

मंत्रकी सिद्धि चार प्रकारकी होतीहै और जैसी प्रकृति होतीहै वैसाही उसका फलभी होता है ॥

शत्रुता	साध्यता	सिद्धि	सुसिद्धि
यदि मंत्र की प्रकृति शत्रु भावमें हो तौ काम न बनै	यदि साध्य प्रकृति हो तौ बनै कामको बिगाड देवे	यदि सिद्धि प्रकृति हो तौ अवसर आनेपर कार्य सिद्ध होय	और सुसिद्धि प्रकृतिमें तौ कार्य बहुतही शीघ्र बनाता है

जो कार्यको अत्यन्त शीघ्र सिद्ध करनेकी इच्छा हो तौ मंत्रका जप शनैश्चर वारसे करै और पश्चिमको मुखकरके बैठे जैसे नीचे चक्रमें ज्ञान होगा ॥



अथ तिथिशुभाशुभस्वामिसंज्ञापालन.

तिथि	नाम	फल	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पालन
१	प्रति	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	काशीफल
२	द्वितीया	कार्य	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	बाबोल
३	तृतीया	आरो	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्तां	अशुभ	शुभ	तिल
५	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	राई
६	षष्ठी	अशुभ	स्कन्द	नंदा	मध्य	मध्य	तेल
७	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्य	मध्य	आंवला
८	अष्टमी	व्याना	शिव	जया	मध्य	मध्य	नारियल
९	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्य	मध्य	भोपला
१०	दशमी	धन	यम	पूर्णा	शुभ	मध्य	परवल
११	एकाद.	शुभ	विश्वे	नंदा	शुभ	अशुभ	पावटे
१२	द्वादशी	सर्वसि.	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	त्रयोद.	सर्व	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	चतुर्द.	उग्र	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	पौर्णिमा	पुष्टि	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	०	घृत
३०	आमा०	अशुभ	पितर	०	०	अशुभ	स्त्रीसंग

तिथिवर्णन।

कृष्ण पक्षकी नौ तिथियोंमें सूर्यका और शुक्ल पक्षकी नौ तिथियोंमें चन्द्रमाका अधिकार रहता है इसी रीतिसे कृष्णपक्षकी शेष छः तिथिमें चन्द्रमाका और शुक्लकी छः में सूर्यका अधिकार रहता है। इसीलिये सूर्यके अधिकारमें चर और चन्द्रमाके अधिकारमें स्थिरकार्य करना उचित है॥ चरकार्य उसे कहते हैं जो थोडी देरतक रहता है और स्थिर उसे कहते हैं जो बहुत कालपर्य्यंत उसी दशामें रहता है॥

तिथिचक्र.

चन्द्रतिथि		सूर्यतिथि	
शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष	शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष
१. २. ३. ७. ८. ९. १३.१४.१५	४. ५. ६. १०.११.१२	४. ५. ६. १०.११.१२.	१. २. ३. ७. ८. ९. १३.१४.३०

चंद्रफलम् ।

आद्ये चन्द्रःश्रियं कुर्य्यात् मनस्तोषं द्वितीयके । तृतीये धनसंपत्तिं चतुर्थे कलहं सदा ॥ पंचमें ज्ञान-वृद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् । सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे भवेत् ॥ नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् । एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ॥

१ जन्मका चंद्रमा कल्याण करता है	५ ज्ञानकी वृद्धि करै	९ धर्म और लाभदायक
२ मन संतुष्ट करता है.	६ लाभकारी	१० अभिलाषपूर्वक
३ धनसंपत्ति देता है	७राज्यमें सन्मान करावै	११ लाभदायक
४ कलहकारी है	८ मारक होताहै	१२ हानिकारी

दिनका चौघडिया							रात्रिका चौघडिया						
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
च	का	उ	अ	रो	ला	शु	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	च	का	उ	अ	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला

ग्रहदशा दृष्टि तथा वर्षसंख्या.

नवग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
विंशोत्तरीदशा	६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७
अष्टोत्तरीदशा	६	१५	८	१७	१९	२०	१०	१२	०
योगिनिदिशा	पि २	मं १	भ्रा ४	भ ५	ध ३	सि ७	उ ६	सं ८	०
ग्रहोकीएकपाददृष्टि	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	९।५	४	०
द्विपाददृष्टि	५।९	५।९	३।१०	४।८	३।१०	५।९	४।८	०	०
त्रिपाददृष्टि	४।८	४।८	५।९	४।८	३।१०	४।८	७	०	०
सम्पूर्णदृष्टि	७	७	४।८	७	९।५	७	३।१०	०	०
ग्रहोकेवर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	१६	४२	४२
एकराशिप्रमाण	मास १	दिन २।	मास १	मास ९॥	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८

कुम्भस्थापनविधि ।

शान्तिकर्ममें नौ रत्नोंसे अलंकृत करके सुवर्णका कलश स्थापन करै यदि सुवर्णका न होवे तौ चांदी अथवा तांबेहीका काममें लावे; अभिचारकर्ममें लोहेका कलश, उत्सादनमें काचका, मोहनमें रूपेका, उच्चाटनमें मिट्टीका कलश स्थापन करै यदि इनमेंसे कोई कलश न मिलै तौ तांबेहीका काममें लावै क्यौं कि तांबेका सब कामोंमें उत्तम फलदायक है ॥

माला निर्णय ।

वशीकरण मंत्रोंको मोती अथवा हीरेकी मालासे जपै आकर्षण मंत्रोंको गजमुक्ताकी मालासे विद्वेषण और उच्चाटन मंत्रोंको बहेडेकी मालासे, मारणमें अपने आप मरे हुए गधेके दांतोंकी मालासे, धर्मकामार्थकी सिद्धिके लिये

शंखमणिसे, सर्वकामार्थ सिद्धिके लिये पद्माक्षकी मालासे जपै, रुद्राक्षकी मालासे मंत्रोंका जपना सम्पूर्ण कामनाओंका देनेवालाहै।

मालाकी डोरका निर्णय।

शान्ति और पुष्टिकर्म्ममें कमलके तंतुकी डोर बनाकर दाने पोबै. आकर्षण और उच्चाटनमें घोडेकी पूंछके बालोंमें पोवै, मारणामें मनुष्यकी नसोंकी रस्सीमें पोवै, और बहेडे आदिकी माला रुईकी डोरमें पोवै॥

माला संख्या।

मोतीकी मालामें सत्ताईस मोती, बहेडेकी माला पन्द्रह और रुद्राक्षकी माला १०८ दाने की बनावै यह सब कामों में श्रेयस्करहै॥

जपकरनेमें उँगलियोंका नियम।

शान्तिकर्म स्तम्भन और वशीकरणमें अंगूठे

और बीचकी उँगलीसे मालाको फेरै, आकर्षणामें अंगूठे और अनामिकासे, विद्वेषण और उच्चाटनमें अंगूठा और तर्जनीसे, और मारणमें कनिष्ठा और अंगूठेसे मालाके दानें फेरै ॥

जपकी दिशाओंका नियम।

वशीकरण मंत्रको पूर्वकी ओर मुखकरके अभिचारकर्मको दक्षिणकी ओर, धनप्राप्तिकी इच्छासे पश्चिमकी ओर मुखकरके, और शान्तिकर्मको उत्तरकी दिशामें मुखकरके जपै उत्तरकी ओर मुखकरके जपनेसे आयुकी रक्षा, शान्ति और पुष्टिभी होतीहै ॥

मंत्रभेद।

मंत्र तीनप्रकारके होतेहैं १ वाचिक, २ उपांशु और ३ मानस। जिस मंत्रके उच्चारणको और लोग सुनते रहें वह वाचिक होताहै। जिसको कोई दूसरा न सुनै और होठ हिलते रहैं उसे

कोई दूसरा न सुनै और होठ हिलते रहैं उसे उपांशु कहते हैं। और जिसके उच्चारनमें दांत होठ कुछ न हिलें उसे मानस कहते हैं। अभिचारमें मंत्रको वाचिक रीतिसे जपना चाहिये, शान्ति और पुष्टिमें उपांशु और मानस मंत्रका जप मोक्ष के लिये करना चाहिये॥

होम करनेकी द्रव्य।

अब हम यहांसे उस सामिग्रीका अलग अलग वर्णन करते हैं जो अपना २ अभीष्ट कार्य साधनेके लिये हवन की जाती है॥

शान्तिकर्ममें दूध, घी, तिल और गूलर पीपलकी लकडीका हवन करै, अमरवेल और खीरका होम करै॥ पुष्टिकर्ममें घी और वेलपत्रका अथवा चमेलीके फूलोंका हवन करै, कन्याकी इच्छा करनेवाला खीरका हवन करै, लक्ष्मीकी इच्छा

करनेवाला कमलगट्टा, दही अथवा घृतप्लुतअन्न का हवन करै, समृद्धिके लिये घी विल्वफल और तिलका हवन करै। आकर्षन करनेको चिरौंजी और बिल्वफलका हवन करै, वशीकरनमें राई और लवणका होम करै, उच्चाटनमें कौएके पंख का, मोहनमें धतूरेके बीजोंका, और मारणमें रुधिर मिलेहुए विषका हवन करै ॥

यद्यपि हवन करनेकी औरभी अनेक विधि हैं परन्तु वे प्रत्येक मंत्रयंत्रके साथमें जुदी २ लिखी जायँगी.

होममुद्रा.

मुद्राहीन आहुतिको देवता अङ्गीकार नहीं किया करते हैं इसलिये मुद्रायुक्तही होम करना उचित है और जो दुर्बुद्धि अज्ञानसे मुद्राहीन होम करते हैं वह स्वयम् भ्रष्ट होजाते हैं ॥

होममें मुद्रा तीन प्रकारकी होती हैं यथा १ शूकरी, २ हंसी, और ३ मृगी। जो हाथको सकोडकर आहुति डाली जाती है उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं, जो कनिष्ठिकाको छोडकर डाली जाती हैं उसे हंसी और कनिष्ठा और तर्जनीके योगसे डाली जाती है उसे मृगी मुद्रा कहते हैं।

यंत्र सिद्धिके पूर्वकर्म.

जो मनुष्य नित्यप्रति इन यंत्रोंको लिखता रहता है उसके घरमें मृत्युभय. चोरभय. भूत, प्रेत पिशाचादि भय कदापि प्रवेश नहीं करसक्ते हैं। और उन यंत्रोंमें कभी अविश्वास न करै क्योंकि अविश्वास करनेसे उनका फल विपरीत होता है॥ प्रथम स्नानादि आन्हिक कर्मोंसे निवृत्त होकर एकान्त स्थानमें यंत्रोंको लिखै. तीन दिन तक विधिपूर्वक पूजा करता रहै, तीन रातक पृथ्वीमें

शयन करै। ब्रह्मचर्य्यसे रहे, तीसरे दिन मंत्रक
अधिष्ठाता देवता स्वप्नमें कह जायगा कि मंत्र
सिद्ध, साध्य सुसिद्ध अथवा ध्रुव है, यदि स्व
न होवे तो समझ लो कि असाध्य है इसप्रका
यंत्र मंत्रोंकी रीति सोचकर करनेसे ये तत्काल
यथावत् फल देने लगते हैं।

इति कौतुकरत्नभांडागारे

प्रथम पादः



॥ श्रीः ओ३म् ॥

कौतुकरत्नभांडागार.

अर्थात्

बृहदिन्द्रजाल.

द्वितीयपादः

मथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल संग्रहीत

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलालने

मुम्बईमें

"ज्ञानसागर" यन्त्रालयमें मुद्रित कराया.

सम्वत् १९६४ शके १८२९.

ईश्वरप्रार्थना.

लावणी.

धन्य कृति जगदीश तुह्मारी. अद्भुत लीला विस्तारी।
जगतरूप इहि नाटय भूमिमें रचना रच अनूपमारी ॥धन्य०॥
सूत्रधार हौ आप नटी माया रंगभूमि सृष्टि भारी।
वाह कृपाल जगतनियंता धरणीधर प्रभु उपकारी ॥ धन्य० ॥
तरुवर गिरिवर पशु अरु पक्षी वनस्पती है कृतिसारी।
दीन्ह नरनको बुद्धि विचक्षण घटघटमें न्यारी न्यारी ॥ धन्य०॥
कोई नर शृंगार मगन है कोई करुणारस भोगी।
कोई वीर हास्यमें विलसत कोई निरंजन योगी ॥
कोई मगन संगीत गीतमें कोई उदार धन दान करै।
कोई कृपण स्वप्न नहिं भोगै जोड २ वित कोट धरै ॥
कोई नास्तिक कोई आस्तिक पादुक पहर पितांबर धारी।
बाइबिल पढे कुरान पुरान अरु वेदकों करें विचारी ॥ धन्य० ॥
कोई जाटिल अरु कोई मुंडित शिखा सूत्र कोई पहरै।
कोई तिलक छाप कोई मुक्तमाल कोई मौंजीमें लहरै ॥
कोई चेतन मूरतको पूजत भेरी शंख चन्दन साधी।
कोई गिरि गुहा निरंजन योगी मोहकी तज आधी व्याधी ॥
इहि रीति विश्वम्भर हितकारी घट २ रचना न्यारी न्यारी।
चर अरु अचर जीव जंगममें व्याप रही सारी न्यारी।
धन्य कृति जगदीश तुह्मारी अद्भुत लीला विस्तारी ॥

ओ३म्

श्रीहरिम्वन्दे.

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

कौतुकरत्नभांडागार प्रारम्भः ।

द्वितीय पादः

नौकास्तम्भन.

भरणीके नक्षत्रमें काठ दूधिया लाय । पांचै अंगुलकी कील इक लम्बी लेय बनाय ॥ फेर नाव के छेदमें वाही देय लगाय । चलै नहीं कीये जतन वहीं रुकी रहजाय ॥

निद्रास्तम्भन.

मूल कटेरी लायकै महुवा सँग पिसवाय । जो कोई सूंघै इसे नींद न आवै ताय ॥

---

१ गूलर पीपल आदि दूध देने वोले वृक्ष ।

राजकुलमोहन ।

नीलकमल और गूगल लावै । उतनोही फि
अगर मंगावै ॥ सब अंगनकूं देयके इनकीधूनी
जाय । राजाकौकुल लखतही ततक्षण बस हो जाय ॥

दुर्जनवशीकरण ।

लाल चंदनसो लेयलिख भोजपत्रपैं नाम । ताहि
डबोवै सहतमें दुर्जन पूरै काम ॥

दूध नाशक ।

लकडी जामन पेडकी आठ अंगुलकी लाय
अनुराधा नक्षत्रमें ताकी कील बनाय ॥ पैनी कर
कै गाडिये घरमें ताकूंजाय । ताकी गैया दूधसों
ताही छिन हट जाय ॥

तेल रोकना ।

जब चित्रा नक्षत्र आवै । महुआकी एक कील
मगावै ॥ अंगुल चार होय परमान । जाघर होय

तेलकी खान ॥ तामें गाडै वाकूँ जाय ॥ तेल नष्ट ततछिन न व्है जाय ॥

सुगंधित तेल की विधि ।

नागरमोथा छटांकभर पानडी एक छटांक, छार छवीला आध पाव, बालछड आध पाव, लौंग एक तोला, बडी इलायची एक तोला, कपूरकचरी तीन तोला. कस्तूरी एक माशे, कपूर एक तोला, रत्नजोत एक तोला, इन सबको जौकुट करके दो सेर सरसोंके तेलमें डालकर छः दिन तक धूपमें रखलो फिर बहुत थोडी आंचलगाकर उसे छानलो और बोतलमें भरकर रखलो और आवश्यकताके समय काममें लाओं, यह बहुत सुगंधित तेल है।

इत्र बनानेकी सहज बिधि ।

गुलाबके ऐसे फूल लाओ जो अभी खिलनेको हों और उनको पानीके भरे हुए प्यालेमें छोंड दो

जब वे तैरने लगें तौ उनपर कोयले दहका कर रखदो इनकी गर्मीसें इत्रकी कुछ बूँद थोडीही देर में पानीपर आजांयगी इनको रुईके फोएसे उठा कर जिस कपडे पर लगाओगे महकने लगैगा.

पतंगकी डोरका मांझा।

हलब्बी काच बहुत महीन पिसाहुआ एक छटाक, करंड पत्थर तीस तोला, इमलीका गूदा तीन तोला, ग्वारपाठेका गूदा अवश्यकताके अनुसार इन सबको खरलमें डालकर खूब मिलाले और प्रथमही डोरपर मोमकी गोली सूंते फिर ऊपर लिखी हुई दवाका गोला बनाकर डोरको सूंतौ उसपर नदीकी बालू बुरक दो, सूखनेपर ऐसा अच्छा मांझा होजायगा कि बहुत जल्दी काटकरैगा।

चलता कोल्हू रुकै।

साबन टूक मँगवायकै स्याही देय लगाय।
डारे कोल्हू बीच तौ चलत चलत रुक जाय॥

घोडेका खेल।

काला जीरा पीसकै घोडा आंख लगाय। घोडाकूं दीखै नहीं अंधौ वह है जाय॥ वाकी आंख मठासै धोवै। फिर जैसीकी तैसी होवै॥

अश्वमारण।

जब अश्वनी नक्षत्र आवै, अश्वहाडकी मेख बनावै॥ सात अंगुल ताकौ परमान। गाडे शाला घोडा हान॥ ओं ३ पचपच स्वाहा। इस मंत्रका हजार जप करै॥

मछलीमारण।

पूर्वा फाल्गुनीमें करै झडबेरीकी मेख। गाडै धींवरके घरै अंगुल आठसु देख॥ नष्ट होय मछली सब वाकी। अद्भुत यह लीला है ताकी॥

ओंजले स्वाहा। ओंमास्त्यस्वाहा। इन दोनों मंत्रोंका फल समानहै किसीएकको सहस्रवारजपै॥

दूसरी विधि।

लाय मघानक्षत्रमें काठ भिलायौ आप। ताकी मेख बनाइयै सात अंगुलकी नाप ॥ धींवरके घर गाडै जाय। मछली तुरत नष्ट ह्वै जाय ॥

तीसरी विधि।

अंगुल एक आककी लकडी कृत्तिकामें घरलावै धींवरके घर वा तलावमें मछली रहन न पावै।

कुम्भारके वर्तन नष्ट करना।

लाय हस्त नक्षत्रमें अंगुल तीन कनेर। गाडै घरे कुंभारके फूटै वर्तन ढेर ॥

दूसरी विधि।

लाय नीमकी कील इक अंगुल पांच प्रमान ॥ पहिलै कीसी रीतिसें फूटें भांड सुजान ॥

शाक नष्ट करनेकी विधि।

गंधक चूरौ लायके जलमें लेय भिगोय। डारै जाके सागपै साग नष्टसो होय ॥

ताना बिगाडना।

लाय अश्विनी जामन कील। डारै घर कालीके छील॥ द्वादस अंगुल होय प्रमान। सूत नष्ट तत्कालहि जान॥

पानीका दूध करना।

अंडीकी मिंगी कढवावै। जलमें तिन्है खूब पिसवावे॥ बर्तन भीतर लेप लगावै। पतलौ पतलौ फेर सुखावै॥ जब कहिं कौतुक करनो होय हँडियामें भरवावै तोय॥ ताहि दिखावै खूब हलाय। जलको दूध दीख तब जाय॥

दूसरी विधि।

मलमल लाय महीन अति लेवै दूध भिजोय। छाया सूखी ताहिकर फेर भिजोवै सोय॥ सात-वार ऐसे करै करकै राखै पास। भरै घडामें गेरियै होय दूध जल जास॥

गंधकका तेल।

आंवलासार गंधकको एक काचकी शीशीमें भरकर दूसरी बोतलका मुँह उससे मिलादो और गंधकवाली शीशीको ऊपर और खाली शीशीको नीची करके बर्षाऋतुमें गड्ढाखोदकर घोडेकी लीद-के बीचमें गाडदो आठवें दिन लीद बदलदियाकरो बर्षाऋतुके पीछे जो निकालकर देखोगे तो नीचे-वाली बोतलमें तेल मिलेगा। गंधकका तेल खुजली आदि त्वचाके रोगोंको लाभदायक है. इसकी थोडी मात्रा विश्वचिकामेंभी गुण कारक है ॥

हरतारलका तेल।

तबकिया हरताल एक छटांक महीन पीसकर हाथभर लंबे चौडे कपडेपर लगादो और ऊपरसे आकका दूध डालदो इसी तरह नौदिनतक प्रति-दिन आकका दूध डालदिया करै। नौदिन पीछे कपडेके टुकडे कर करके एक आतिशी शीशीमें

भरदे और दूसरी बोतलका मुख उस आतिशी शीशीके मुखसे मिलाकर जोडदे और लकडीके पतले पतले छिलके रखकर आग लगादे ठंडा होने पर खोलले तौ नीचेकी शीशीमें तेल निकल आवैगा.

दूसरी विधि।

हरताल एक तोला, पारा नौ माशे, दोनों को महीन पीसकर जूचीके पत्तोंकी लुगदीमें रखकर पाताल यंत्रसे तेल निकालो, जानना चाहिये कि जूची एक छोटासा झाडदार पेंड गेहूंके खेतमें होताहै इसके पत्ते छोटे और मोटे होते हैं डालियों पर तिखूंटे फल होते हैं इसको चीरने पर दूध निकला करता है.

बिल्ली होनेकी विधि।

कृष्णपक्षमें जब शनि आवै। सीसकाट बिल्ली को ल्यावै। भरके मट्टी वाके बीच। बोयबीज

अण्डी जलसींच । फलतवृक्ष फल उनके लावै। मुखमें धरे सो बिल्ली भावै । काढे मुखसो उनको जबहीं । सूरत असल होयगी तबहीं ॥

स्यार होनेकी बिधि ।

ऊपरके बिधिके अनुसार । भांग बीज बोवै सिर स्यार ॥ उपजे पै फल मुखमें धरै ॥ सोई स्यार दिखाई परै ॥

सर्प होनेकी विधि.

कृष्ण सर्पके बीज मुख देय विनौला बोय। भर मट्टी गाडै कहीं जहां न जावै कोय ॥ रुई उपजि आवै जबैं काढ बिनोला लेय । कर बाती घर दीपमें करै उजेरो तेय ॥ फेर बिनोला राखि मुख जाघर बिच जो जाय । सब घरमें अरु आप हू सांपहि सांप लखाय ॥

जल जमाना ।

घडा बीच जल सेरभर धरे आगके पास । मु-

ठीभर डारे निमक तब हिय होय हुलास ॥ फिर उतनीही ले बरफ तामें देय मिलाय । एक घडीमें देखिये तबहीं जल जमजाय ॥

आगसे उंगली न जलै ।

दो०आर्सनिक दो भाग लै पारा लै इक घाल॥ अर्धा भाग कपूर ले, पीस मिलावै हाल ॥ इनको उँगली लेपकर, सीसो ले पिघलाय । गरम गरममें गेरिये, उँगली झुरसे नाय ॥

जलमें हाथ डालै और सूखा निकालै ।

घडा एक जलका भरलेवै गेरलायकोपुडियम देवे ॥ हाथ गेर तामें पुनि दीजे । भीजे नहीं सूखो ही लीजे ॥

अनेक प्रकारके रंग बदलना ।

दो० लकडी लाय पतंगकी, जलमें दीजै डाल॥ फेर अलग कर रखिये, ताकों रंगजु लाल ॥ सिरका

के फिर ग्लासमें, दीजै यह रंगडार। पीली रंगत होयगी, जैसे हार सिंगार॥

दूसरी रंगत।

दो०ता रंग कूँले डारिये, फिर फिटकरी नीर। काला रंगत होयगी, हँसनलगेगी भीर॥ याही जलमें डारिये, सिरका लोह भिगोय। अचरजकी यह बात है, लालरंग पुनि होय॥

एक हंडिया और तीन पेट।

दो०ग्लास एक मँगवायके, गाढा शरबत भरिये। ताके ऊपर दूध पुनि, धीरे २ भरियै॥ पोर्टवाइन मँगवायकै ताके ऊपर डारे। तीनों रंग जुदेही चमके लख सब होंय सुखारे॥

टूटाहुआफूलबहुतादिनतकहरारखना।

नमकनीर करिये तय्यार। तामें फूली दीजिये डार॥ बहुत दिनातक नहिं मुरझावै। जब देखौ तैसोही पावै॥

आज्ञाकारी अंडा।

कांच पात्रमें लीजिये, नमक तिजाब भराय॥ अंडा तामें डारिये, दीजै हुकम सुनाय॥ सुनत हुकम डूबन लगै, फिर उछलैं फिर डूब। हुकमसंग डूबै तिरै, करै तमासे खूब॥

घंटेभरमें पेंड लगाना।

तेल कसूम कढायकै, तुलसी बीज भिजोवै। आठदिना गाडै मट्टीमें जब चाहै तब बोवै॥ घंटा भरमें उगै पेंड यह, है अचरज अतिभाई। इन्द्रजालका होय तमासा, जो देखै सोइ हरखाई॥

दीवारमें आग लगाना।

मट्टीतेल शराब ये, दोनों लेय मिलाय। बाहरकी इक भीतपै, दीजै इन्हें पुताय॥ सब लोगनके सामने, देय अगनकी लोय। जलन लगैगी भीत सब, हरज कछू नहिं होय॥

आपनेआप आग पैदा होना।

ऊंट मेंगना एक मंगावै, ताहि अगन बिच खूब जरावै ॥ लाल सुरखहोजाय अँगारा, सहत बीच डोबै तिहिंसारा, ऐसें कररावै निजपासा। चाहै जब फिर करौ तमासा ॥ तोड मेंगना धरौ हवामें, अगन आप चेतैगी तामें ॥

पावरोटीका नाच।

चाहै ले अखरोट इक चाहै लेय बदाम। ताकी मींगी काढके करे फेर यह काम ॥ पारा गन्धक और फिर शोरा आवे लेय। तीनोंको सम भाग कर वाहीमें भरिदेय ॥ डारतही तंदूरमे अचरज अधिक लखाय। फुदक फुदक रोटी करे परे बाहरी आय ॥

लोहेको रूपा बनाना।

मेरिन ऐसिडमें कछू पारो लेय लगाय। कौतुक करने के समय लोह्यो टूक मगाय ॥ दे डबोय वा अरकमें लेके टुकडा लोह। काढतही अचरज यहै सो रूपे सम सोह ॥

सेजपर अग्निक्रीडा।

कपूर चीनियां हलदी लावे। इन्हे पानके रस घुटवावे। छोटी २ बत्ती करके। ले सुकाय छाया में धरके। खेल करनको जब मनआवे। इन्हे आगसे तभीचसावे। चसते इन्हें सेजपर डारे। अग्नी शय्या नाहिं पजारे॥

मेहसे दिया न बुझै।

फेन समन्दर गन्धक लावे। दोउनको समभाग पिसावे॥ रुई लपेट बनावै बाती। यह विद्या सबके मन भाती॥ दीपक जरयो बुझन नहिं पावे। मेह पवन कैसीहू आवे॥

बंबूलके कांटे चबाना।

द्रोण पुष्पके पत्र चबाकर रसको मुखमे राखैं। छिपकै करै काम यह सिगरे महादेव यह भाखैं॥आकै सन्मुख फिर बँबूलके कांटे खूब चबावै। हानि कछु

आपनेआप आग पैदा होना।

ऊंट मेंगना एक मंगावै, ताहि अगन बिच खूब जरावै ॥ लाल सुरखहोजाय अँगारा, सहत बीच डोबै तिहिंसारा, ऐसें कररावै निजपासा। चाहै जब फिर करौ तमासा ॥ तोड मेंगना धरौ हवामें, अगन आप चेतैगी तामें ॥

पावरोटीका नाच।

चाहै ले अखरोट इक चाहै लेय बदाम। ताकी मींगी काढके करे फेर यह काम ॥ पारा गन्धक और फिर शोरा आवे लेय। तीनोंको सम भाग कर वाहीमें भरिदेय ॥ डारतही तंदूरमे अचरज अधिक लखाय। फुदक फुदक रोटी करे परे बाहरी आय ॥

लोहेको रूपा बनाना।

मेरिन ऐसिडमें कछू पारो लेय लगाय। कौतुक करने के समय लोह्यो टूक मगाय ॥ दे डबोय वा अरकमें लेके टुकडा लोह। काढतही अचरज यहै सो रूपे सम सोह ॥

सेजपर अग्निक्रीडा।

कपूर चीनियां हलदी लावे। इन्हे पानके रस घुटवावे। छोटी २ बत्ती करके। ले सुकाय छाया में धरके। खेल करनको जब मनआवे। इन्हे आगसे तभीचसावे। चसते इन्हें सेजपर डारे। अग्नी शय्या नाहिं पजारे॥

मेहसे दिया न बुझै।

फेन समन्दर गन्धक लावे। दोउनको समभाग पिसावे॥ रुई लपेट बनावै बाती। यह विद्या सबके मन भाती॥ दीपक जरयो बुझन नहिं पावे। मेह पवन कैसीहू आवे॥

बंबूलके कांटे चबाना।

द्रोण पुष्पके पत्र चबाकर रसको मुखमे राखैं। छिपकै करै काम यह सिगरे महादेव यह भाखैं॥आकै सन्मुख फिर बँबूलके कांटे खूब चबावै। हानि कछु

नहिं होवै मुखमें खेल सबै यह भावै ॥

कपडेपर हवन करना ।

पीसै ब्रान्डी कपूरकूं कपडा लेय भिजोवै ॥ सात-वार ऐसेही कर ले छाया सूक जब होवै ॥ होमकरै निर्भय तब तापर कपडा दाग न लागै ॥ अचरज को यह काम आनौखो सुनै सो देखन भागै ॥

एकरंगसे अनेक रंगके कपडे रंगना।

अमियां गंधक नील मंगाकर काच पात्रमें राखै।छिपके करैकाम यह सिगरे, फिर अठगुन जल नाखै॥जबयैमिल एक होंय सब,तभीकरै यह कामा। कारबोनेट पुटास नील सम,गेर करै यह सामा॥कर तयार ऐसे या रंगकूँ. राखै अपने पासा ॥ कपडा स्वेत भिजोवे वामें, नीलरंग व्है जैहै खासा॥ पीला बस्त्ररंगौ जो उसमें, हरा होय तत्काला । लाल रंगका होय बेंगनी, देख हंसै सब लाला । लीलरंग

का कागज गेरत, अद्भुत होय तमासा ॥ लालरंग होजाय उसी दम दीखै कौतुक खासा ॥

जलते रुमालको सिरपर धरना ।

उत्तम तैल मँगाकर लीजै; सिरपर उसे लगाई ॥ घीकुवारका रस फिर लाकर मर्दन लेय कराई ॥ लेभिजोय रूमाल तेलमें, फिर तिहिं आग जरावै ॥ फिर ताकूं सिरपर रख लीजै, बालहु जरन न पावै ॥

नीबूके उछलनेका उपाय ।

नीबू एक कागजी लावै।ताकी तब दो फांक करावै ॥ पारा हलदी उसमें भरै । तब उसका मुख बन्दजु करै । तेज अगनकौ दीजै ताप । नीबूउछलन लागै आप ॥

मायारूपी पीलेअक्षर लिखना ।

सिट्रेट औफ ऐमोनिया, और तूतिया लाय । स्वच्छ काचके पात्रमें ले समभाग मिलाय ॥ नई लेखनी सों लिखें, अक्षर कागद स्वेत । लिखत समें

दीखें नहीं, दीखन कौ सुन हेत ॥ अगन तपावै वाहि जब दीखे अक्षर पीत। कागद सीतल होत ही मिटें अनोखी रीत ॥

मायारूपी हरे अक्षर लिखाना।

स्पिरिट औफ कौवाल्ट मिलावै, तासमान जल लेय। स्वेत पत्र नूतन कलम, चाहे जौ लिख लेय॥ कागद कोरौ सौ लगै, लिखतेही ततकाल। अक्षर दीखें, सबहरे, अगन तपायें हाल ॥ कागद सीतल होतही, फिर नाहिं कछू लखाय। सबकौ मन हर्षित करै, यह जादू दिखराय ॥

मायारूपी गुलाबी अक्षर लिखना।

जवाखार अरु ऐसिडहिं ले समभाग मँगाय ॥ एकसाईड औफ कोवाल्ट मंगावै, तीनों लेय मिलाय॥कौतुक करनेके समय, नई कलम मँगवाय। कागदपैं अक्षर लिखै, पर वे दीखैं नाय ॥ अगन

तपाये ही तुरत, रंग गुलाबी होय। या अचरजकूं देखके हरखेंगे सब कोय ॥

अग्नि भक्षण करना।

गुपचुप जिव्हा पर सुन भाई। लेय लिक्विड स्ट्राक्स लगाई ॥ तब फिर खेल दिखावै आय। देवै सबको मनहर्षाय ॥ जलत एक अंगार मँगाय। वापै गन्धक लेय मिलाय॥ तब जिव्हापर रक्खै वही। ऐसें जीभ जलैगी नांहीं ॥

अंडेका नाच और जलमें तैरना।

मुर्गा अथवा हंसको, अंडा लेय मँगाय। किंचित पारो देय भर, सूक्षम छेद कराय ॥ बन्द करै तब छेद कूँ, ऊपर मोम लगाय। जासे अंडा रस कहीं, बाहर निकल न जाय ॥ यह सब कर राखै जतन, पहले अपने पास। जान सकै नहिं कोय यह, पीछै करै तमास ॥ खेल करनके समय फिर. काच रकेबी लाय। थोडी आंच मँगायके, गरम

करावै ताय ॥ अंडाहूकूँ कर गरम, धरै रकैबी मांहिं। धरत २ नाचन लगै, देखै वही सराहि ॥ एक पात्र में गरम जल, फिर देवै भरवाय। छोंडै तब अंडा यही, सबकूँ वाहि दिखाय ॥ छोडतही तैरन लगै, अचरजकी यह बात। विस्मित सब देखन लगै धर होठनपै हाथ ॥

हाथसे शहतका छत्ता तोडनेका उपाय

बनतुलशीको अरक लै, पोतै सब निजअंग। वाहीको इक वृक्ष लै, राखै अपने संग ॥ या ढँग रंग जमायकै, छत्ताके ढिंग जाय। सूंघतही वा गंधको, मक्खी जांय पलाय ॥ तौडै तब आनन्द सों, छत्ताकों निजहाथ। मधु चाखनकी मित्र यह अजब अनौखी बात ॥

घरमें नौला दिखें।

मर्‌यो नकुल एक लायकै, ताके मुखके बीच। भरै बिनौला गाढ कहिं, देवै वाकों सींच ॥ जब

वामें लागै रुई, ताकी बत्ती मेल। दीपक साझ जराइयै, भरके अंडी तेल ॥ नौलाही दीखन लगें, इतउत सब घरमांहिं। महादेवने कह्यौ यह, होय अन्यथा नाहिं ॥ रविवारको करै यह कोई। सत्य सत्य यह झूंठ न होई ॥

आगसे मुख न जलै।

अकरकरा नौसादर लावै। मुखमें भरके खूब चबावै ॥ तिनके जलसौं कुल्ला करै। तब अंगार अपने मुख धरै ॥ मुखमें आग असर नाहिं होय। लख मानै अचरज सब कोय ॥

अग्निसे हाथ न जलै।

नौसादर अरुलाय कपूर। पीसै पानीमें भर पूर ॥ हाथन ऊपर लेप लगाय। छायामें फिर तिन्हे सुखाय ॥ हाथन ऊपर धरै अँगार। जले न नेक यही निरधार ॥

दूसरी विधि ।

लाय मुरहटी भांगरा, ले सम भाग मिलाय। पीस छान रस खेंचके, हाथन लेप कराय ॥ छाया हाथ सुखायकें, उनपर धरै अँगार। अचरज की यह बातहै, अग्निन सकै जार ॥

तिसरी विधि ।

लाय फिटकरी सांभरनोन। मुर्गीअंडा सिरका त्योन ॥ पारा अरु अफयून कतीरा ॥ पीसै सब सम भाग सुधीरा। फिर सिरकामें तिन्हे मिलावै। हाथन ऊपर लेप लगावै ॥ छायामें ले तिन्हैं सुखाई। अग्नि धरै फिर जरै न भाई ॥

चौथी विधि ।

काढ ग्वारपाठेको रसले। पाराडार हाथमें मसले॥ सूखे पै फिर अगन उठावै॥हाथनेक नहिं जरने पावै॥

पांचवी विधि ।

मेढकचर्बी और केंचुआ, ले समभाग मिलाई।

हाथन ऊपर मालिकै, तिनको लेवे अगन उठाई ॥

छठी विधि ।

अकरकरा अरु लाय धतूरा तिनके बीज कढावै। रस अंडीके पत्रको, काढ तिन्है वारीक पिसावै ॥ करके लेप हाथके ऊपर छाया; लेय सुखाई । निधडक अग्नि उठावे करपर डर दहशत कछुनांई ॥

बोतल चबाना ।

अदरकको रस काढके, धरले बरतन मांहीं । कच्ची सीसी लाय एक,पुनि डार अग्निके मांहीं ॥ लाल सुरख जब होय वह, तब ले ताहि कढाय । अदरखके रसमें तभी, लेवै उसे बुझाय ॥ ठंढी भये ट्टक कर ताके, सबके सन्मुख चावै । निधडक खेलकरै यह भाई, मुख बाधा नहिं आवै ॥

कागजसे लिखे अक्षर उडाना ।

नौसादर अरु लाय सुहागा, सेंधा नमक मिलावै । तीनोंले सम भाग, खूब बारीक इन्है पिस

वावै ॥ अक्षर ऊपर लेपकराके, धरैं धूपमें लाई । अक्षर सब ऊड जांय श्वेत कागज रहजाई ॥

चलनीमें जलनछनै ।

घीगुवारके अरकसे चलनीको लेपोत । सात वार ऐसे करै, होय बन्द सब सोत ॥ छाया सुखाकर चालनी, भरिये ता बिचनीर । एक बूंद टपके नहीं धन्य २ कह बीर ॥

विनाखूंटी खडाऊ पहरना ।

श्वेत चिरमिटी लायकै, पानीमें लेपीस । लेप खडाऊं पै करै, खेल अनौखौ दीस ॥ छाया इन्हें सुखायकै, राखे अपने पासा । खेल करनकी मनमें होवै, तब यह करै तमासा ॥ चरण धोय गीले रख-देवै, ऊपर इनके भाई । चलें खडाऊ सँग सँग, वाके अलग होन नहिं पाई ॥

गोलीसे परन्दा मारना ।

भर पारा वन्दूकमें, कर कपडाकी ओट । फैड हात बन्दूककी, जाय परन्दा लोट ॥ होत शब्द

पक्षी मरजावै । कपडामें कुछ दाग न आवै ॥

फुहारेंके जलमें अंडेका उछलना ।

अंडाको रस काढकै, करले खाली वाहि । न लके जलके ऊपरें, अधर छोड दे ताहि ॥ जल ऊपर अंडा नचै, गिरन न पावै सोय । करै खेल ऐसी जगह, हवा जहां नहीं होय ॥

कच्चे घडेमें पानी भरना ।

कच्चा घडा प्रथम इक लावै । घीगुवार रस त्यार करावै । भीतर घडा लेप पुनि लेई । छाया सुख ताकूं कर देई ॥ सातवार ऐसे ही कीजे । फिर तामें पाणी भरदीजै ॥ फूटै घडा नेकनहिं भाई । करै अकलसे खेल सदाई ॥

घडेको तोड दो और पानी न निकलै ।

ऊपरकी तर्कीबकर, छाल लिहसोडाकूट । गेरेपै पानी जमें, घडा जाय यदि फूट ॥

लोहेका तांबा करना।

नीलाथोथा घोलकर, लोहेपर मल देय। अपनी रंगत त्यागकें, तांबेकी सीलेय ॥

आगका खुद जलना।

चूना बिना बुझाही लावैं। फास्फोरस उसमें मिलवावै ॥ फिर इसको कपडामें नाखैं। पीतलके बर्तन पर राखै ॥ तापैं छिडको थोडौ पानी। आग जलैगी बिना जलानी ॥

शराबका दूध करना।

आओ अजब तमाशा देखौ। मदका दूध होय सो पेखौ ॥ बौर आमका पीस सुखा लो। मदमें थोडासा यह डालो ॥ देखो अजब तमाशा कैसा। होय शरावका दूधसम ऐसा ॥

अंडेका दर्पणपर खडा होना।

अंडा लेहु एक मँगवाई। नीचे एक सुराख कराई॥ खूब हिला दर्पणपर धरै। अंडा चिपक हलै न टरै ॥

कपडे पर आग जलाना ।

कांसीका इक प्याला लाओ । पेंदीपर कपडा बिछवाओ । कपडा तंग करो पुनि ऐसा । कपडा पेंदी मिल होय इकसा ॥ हलद कपूर शराब मँगाई । पीस छान गोली करवाई ॥ सूखे पै गोली पुनि भाई । उनमें देऔ आग लगाई । गोली जलती ऊपर डारे । अग्नी कपडा नाहिं प्रजारे ॥

जादूका साबुन ।

पानी तेल मँगायकै, लेवै खूब मिलाय । डारतही ऐमोनिया, साबन सभ जमजाय ॥

तोपके समान शब्द करना ।

कीम औफ टार्टार मँगावै । गंधक जवाखार पुनि लावै । तीनोंको सम भाग मिलावै । भर हुक्कामें आग लगावै । होय शब्द तोप सम भारी । होय चकित सुनके नरनारी ॥

बाल उडानेकी विधि।

राख ढाककी अरु हरिताल। कदलीनीर पीसियै हाल॥ लेप काम गृह कीजै नेक। रोम तहां नहिं रहि है एक॥

बाल दूर करनेका उपाय।

सात भाग चूना ले भाई। एक भाग हरताल मिलाई॥ लेप करो जलमें पिसवाय। सिरपै बाल न एक दिखाय॥

अफीमका नशा उतरना।

खाय अफीम भयो बेहोश। दूर कीजिये ताको दोष॥ पीस पत्र सीताफल भाई। लीजै तिनको अरक कढाई॥ लै यह अरक पिवावै ताही। नसा दूर ताको व्है जाही॥

नकसीर बन्द होय।

सूखो गोबर गाय मँगावै। ताहि महीन फेर

पिसवावै। सूखतही होय अचंभा। लोही नाक जायगो थंभा ॥

बिगडा घी सुधारना।

लीजै एक कढाव मँगाई। तामें दीजै घीव च ढाई। दीजे गांठ प्याजकी डार। नीचै दीजे आग प्रजार। गरमगरम घीव जब होय। दीजै फेंक गांठ तब सोय॥ उत्तम घीव होयगो भाई। जो करिहो तुम वही उपाई ॥

हरा खेत सूखनेका उपाय।

लावै गंधक ऊंटकटेरी। पीसपास कर राखै ढेरी॥ हरे खेतमें दीजै डार॥ खेतसूख होवै पतझार॥

कढाई गरम न होय।

तेल कढाई माहिं भर, मूत बैलको डार। गरम कडाई होय नहिं दीजै अगनप्रजार॥

दूसरी विधि।

लाय काठ तुलसी अरु साल। तिनमें

लगावै हाल ॥ गधा मूत्रमें इन्हैं बुझावै । चूल्हेमें फिर इन्हैं लगावै ॥ गरम होय नहिं नेक कढाई । जदपि कीजिये कोट उपाई ॥

अग्नि बिना दीपक जलै ।

लावै गंधक अरु हरताल । राखै पीस कपूर सँभाल ॥ करसों दीपक देय बुझाय । जाको गुल जर तौ रहिजाय ॥ तापै जो डारौ वह चूरन । जलिहै वह दीपक ताही छिन ॥ दीपक दीजै फेर बुझाय । ताही ढंगसूँ फेर जलाय ॥ जो दीपककौ गुल बुझ जाय । फेर जलै नहिं किये उपाय ॥

मरी हुई मछली तैरै ।

मरी हुई मछलीपर चुपडौ, तेल भिलावा भाई । जलपै तिरै नहीं यह डूबै, अदभुत देय दिखाई ॥

दिनमें तारे दीखनेका उपाय ।

काढै रस अगस्त पुनितामें, सुरमा स्वेत भिजावै ॥ पीस दिवस चौथे कर अंजन, दिनमें तारे जोवै ॥

सभा कानी दीखै।

उग्यो आंवरे वृक्षपै, करियै नीम तलास। लाय फूल फल मूल अरु, कर चूरन रख पास॥ बाती तिन्हैं लपेटकै, तेल नीमकौ डार॥ होय सभा बैठी जहां,दीजै दीयौ जार॥ या दीपककी चांदनी, जापै परिहै जाय।सोनर अस दीखन लगै,जैसे कानेराय॥

निद्रास्तम्भन।

दो तोले कौफी मँगवाय। आध सेर जलले औटाय। छानमेल मिसरी जो पीवै,जगै रातभर सो नहिं सोवै॥

शस्त्रस्तम्भन।

कृत्तिका होय नक्षत्र जब, लाय कैथ बन्दाक। ताहि शस्त्र लागै नहीं, जो मुखमें ले राख॥

दूसरी विधि।

मूल सुदर्शन हाथमें, जो कोई ले बांध। ताहि शस्त्र लागै नहीं, याहि जतन जो साध॥

तीसरी विधि ।

जबही शुभ नक्षत्तर आवै । ओंगाकी जड काट मँगावै ॥ जो शरीर पर लेप लगावै । शस्त्र चोटताही नहीं जावै ॥

बुद्धिस्तम्भन ।

ओंगा औ भांगरा लेई । सरसों सेत और सह देई ॥ जमीकन्द बच आक सफेद । लाय सुनौ इनका फिर भेद ॥ दो दिन लोहपात्रमें धरिये । पीस छान लुगदी फिर करिये ॥ तिलक लगाय जहां कहिं जाय । देखत बुद्धि नष्ट होय जाय ॥

गर्भस्तम्भन ।

मूल धतूरौ लाइयै, कृष्ण चतुर्दशि मांहिं । बांध कमर रति जो करै, रहै गर्भ पुनि नाहिं ॥

देहकी दुर्गंध जाय ।

कदंबपत्र अरु अर्जुन फूल । लावै और लोध

को मूल ॥ पीस करे उबटन जो कोई । तासु देह दुर्गंध न होई ॥

कपडाकी चिकनाई दूर करना ।

चिकनाईपै भुरकियै, सेलखडीकूँ पीस । वेला फेरौ अग्नि भर, चिकनाई नहिं दीस ॥

बूढा ज्वान होवै ।

सालंमिश्री मूसली फली मरोड मँगाय । जो पीवै गोदूधसंग, वृद्ध तरुण व्है जाय ॥

सिरके बाल काले करना ।

जपापुष्प अरु कीटी लोह । लाय आंवले पीसै सोह ॥ करै लेप वासों दिन तीन । काले बालजु महिना तीन ॥

बाल सफेद करना ।

बकरी दूध भिजोइयै, तिलकों ले दिन सात । तेल काढ शिर मसलिये, बाल श्वेत ह्वै जात ॥

बांझकी चिकित्सा ।

बीज गोखरूके पियै, निर्गुंडी रस डार। दिना सात वा तीन जो, होय गर्भिणी नार॥

सुखसै बच्चा होय ।

श्वेत सांठ जड राखिये, नारिमूत्रपथ माहिं। बालक तत्क्षण हौयगौ, लगै देर कछु नाहिं ॥

दूसरी विधि ।

औंगाकी जड लाइयै, अंगुल चार प्रमान। मूत्र मार्गके धरतही, बालक होय सुजान ॥

मरहम विवाईकी ।

बना हुआ मस्टर्ड २ ड्राम; ग्लिसराइन १ ड्राम स्परमैसीटाई १॥ डराम, थोडे गरम किये हुए खरलमें मिलावै, जबतक ठंढा हो बराबर घोटता रहै ठंडा होनेपर काममें लावै ॥

लैम्पपर चिमनी न चटकै ।

चिमनीको ठंढे पानीमें डालकर पानीके बर्तनको

पानी और चिमनी सहित आगपर रक्खै जब पानी उबलने लगे तब उतराकर अपने आप ठंढा होने दे. यह चिमनी लैम्पपर चढानेसे कभी न चटकैगी ॥

बिनाघावकी विवाई।

नौसादर १॥ भागको उमदा सिरका आधे भागमें खलकरै और उस विवाईपर मलै जिसमें घाव न हुआ हो ॥

दूसरी विधि।

तारपीनका तेल चौथाई पिंट. कपूरके टुकडे १ आउंस कैजपटका तेल २ ड्राम मिलाकर ऊपर लिखी रीतिसे लगावै ॥

अन्य विधि।

सलफेट औफ कौपर १ ड्रामकी ३ औंस पानीमें हल करके लगावै ॥

बोतलकी चिकनाई दूर करना।

पहिले थोडा सलफ्युँरिक ऐसिड डालदे फिर पानी भरकर बोतल बन्द करदे जिससे तेजाब उसके हरएक भागमें लगजाय फिर ठंडे पानीसे कईबार हिलाहिलाकर धोडालै इससे सब प्रकारकी चिकनाई दूर हो जाती है और किसी तरहकी गंध भी नहीं रहती॥

स्याहीकी बोतल साफ करना।

छोटे छोटे नाखून बोतलमें भरकर पानी वा सिरका डालकर खूब हिलावै अगर इससे साफ न हो तौ हाइड्रो क्लोरिक ऐसिडसे साफ करै और दो या तीनदफै साफ करके धाडाले॥

जलती लोहेकी संकलपर हाथ मारना।

हाथन पें लीजै मसल, घी गुवारकौ लुआव।
पकडे गरम जंजीर जो, नैंक ताप नहिं आव॥

अदृश्य अक्षर।

कागद एक श्वेत मँगवावै। चूनेसों अक्षर लिखवावै॥ सूखे पर दीखै कुछ नाहीं। कीजै तभी तमाशा व्हांही॥ बोरै कागद पानीमांहीं श्वेतवर्ण अक्षर है जाहीं॥

विना आग पानीका उबलना।

ग्लास लीजियै दो मँगवाय। पानीसों दीजै भरवाय॥ एक ग्लासमें सोडा नाखे। दूजेमें नीबू सत राखै॥ दोनो पानी लेय मिलाई। पानी उबलन लागै भाई॥

तसलेका पानी गायब।

धर इक ईट बीच तसलाके। और पास जल भरिये ताके॥ मोटी बत्तीका इक दीया। ऊपर ईट जलाओ भइया॥ औंधौ मटका तापै धरो। दिया ईट ताके बीच करो॥ धुआं सँग पानी उड जाई। भीतर मटकाके खिच जाई॥

बीछू पैदा करना ।

मिट्टीका इक कुलडा लाकर, गोवर भेस भरै। गधा मूत्र ऊपरसै डारै, तब यह खेल करै ॥ दही और बूरा थोडासा, येभी उसमें भरिये । जहां होय कूडा कर्कट कुछ वहां, गाडिकै धरिये ॥ दिना आठ बीते पै देखौ बिछू, पैदा होंई । बडे २ और विष-धारी, हर पै देखै जोई ॥

मुर्गा बांग न दे ।

मुर्गाके शिर तेललगावै।मुर्गा बांग दैन नहिं पावै॥

दूसरी विधि ।

मुर्गाकै गल बांधिये, एक ड्राम ले रांग । कंठ मुरगकौ जाय रुक, दैन न पावै बांग ॥

गधा न रेंकै ।

घी अरु तेल मिलाकर भाई । गर्दभ चूतड देहु लगाई ॥ जबतक लगा रहै वह तापै । रेंकन गधा नैक नाहिं पावै ॥

सौ योजनतक दृष्ट होय।

कृष्णपक्षकी चौदसें, सीस गीधकौ लाय। भर मट्टी गाडे कहीं, लहसन बीज बुवाय॥ पुष्य नक्षत्तर आवै जबही। फल अरु फूल लाईये तबही। काजल संग ताहि पिसवावै। घी मिलाय आंख नमें लावै॥ सौ योजनतक धरती चमकै। पुनि दिनमें तारा हू चमकै॥

प्रीति उत्पन्न करनेकी विधि।

मूल बिजौरा बीज धतूरौ, और प्याजको लावै॥ चूरण कर सूंघै जो इनकू, बश सोई हो जावै॥

बशीकरण तिलक।

लाय मनुजकी खोपडी. बीज धतूरे मेल। शहत कपूर मिलायकै, करै तिलकको खेल॥ चौपाई॥ पुरुष होय चाहैं हो नारी। देखत तिलक होय बश भारी॥ यह कापालिका योग अनौखौ॥ कह्यो वासिष्ठ होय नाहिं धोखौ॥

पुरुष वशीकरण।

गोरी सरसों तुलसिको, और धतूरो लावै। ओंगा अरु तिल तेल, इन्हे, खूब पिसावावै॥ करै समागम याहि लेप, सुन्दर जो नारी। दास समान होय पति वाको, तनमन सब दे हारी॥

अंधेरेमें पुस्तक पढै।

घीको दीपक लेय जलाई। घुघ्घूको कपाल मँगवाई॥ ताके ऊपर काजल पारै। आखिनमें ताकूँ पुनि सारै॥ होय अनौखी दृष्टि सु ऐसी पढें रातमें पुस्तक जैसी॥

मुरदेका जिलाना।

एक बूंद मुरदेके मुखमें, डारे तेल अंकोल। एक पहर पीछे यह, दीखै देवै मुरदा बोल॥

शिर अग्निके समान चमकै।

गन्धक ताल सिंदूर अरु, मनसिल ले सम भाग। रँग कपडा सिर बांधियै, चमकै जैसे आग॥

जलका दूध होना।

बड गूलर अरु आककौ लीजै दूध मंगाय। बर्तन भीतर लेपकर, दीजै ताहि सुखाय॥ जल मँगाय बर्त्तन भरौ, नीर दूध व्है जाय॥ महाकुतूहल देखकै, सभी सुखी व्है जांय॥

राक्षस दीखै।

तेल काढ अंकोलकौ, लेपै ताकूं अंग। भगें भयंकर रूप लख, एक न लागै संग॥

भूत दीखै।

दीप तेल अंकोलभर घरमें देय जलाय। भूत प्रेत दीखन लगें, देखै सो डर जाय॥

विघ्न दूर करना।

गौ मूत्र हरताल मँगावै। गंधक विष तामें मिलवावै॥ चूरन इनको लीजेकर। दीजे ऊपर अग्नीधर॥ विघ्न हटें धूनी सँग लाके। संकट विपत कटें सब वाके॥

कुपितको प्रसन्न करनेका उपाय।

भोजपत्रपै नाम लिख, गोरोचनसे लेय। दूध बीच ताकूँ धरै सभी क्रोध तज देय॥

दूसरी विधि।

जो कोई तुमपर होवे क्रोध। नाम लीजिये ताको सोध॥ तालपत्रपै लिखये आय। कांटेकी इक कलम बनाय॥ गाडकीचमें दीजै ताहि। क्रुद्ध प्रसन्न होयगो आहि॥

शत्रुका मुख बंदन करना।

चौलाईकी जड मँगवावे। चांदीको तावीज मढावै॥ मुखमैं धारियै ताकूं धाय। मूक होय अरिजाय पलाय॥

दूसरी विधि।

श्वेत चिरमिटीकी जडलाय, वाद समय मुखरखियै ताय॥ शत्रु जाय होय तब मूक। बोलै नहीं करै बहु चूक॥

मनुष्यस्तम्भन।

गोरोचन अरु केसर लाय। तामें घिसै महावर लाय॥ भोजपत्रपै लिख अरि नाम। बसमें रहै सो आठों जाम॥

सर्व जन बशीकरण धूप।

मेंढासिंगी बच अरु राल। खस चन्दन दीजै पुनि डाल॥ गेरइलाची छोटी दीजै। ये छःओं सम भाग करीजै॥ कूटकाट पास रखलीजै। अंग-वस्त्र धरधूनी दीजै॥ या धूनीके गुण सुनि भाई। इतने काम करै सदाई॥ सुरति रंग बस व्हैहै नारी। देखत नरपति होय सुखारी॥ क्रयविक्रयमें लाभ घनेरो। होय दिये धूनी बहुतेरो॥

जूवां दूर करनेका उपाय।

गौमूत्रमें डार खैरटी, करो लेप शिरमाहीं। सब कूँ होय अचंभा भारी, रहै जुआँ इक नाहीं॥

दूसरी विधि।

कृष्ण धतूरेको रस लीजै ॥ पारो तामें मरदन कीजै ॥ तामें कपडा एक भिजोय। रक्खै सिरपै ताकूं सोय ॥ तीन पहर में देखौ भाई। जुआ एक रहने नहिं पाई ॥

मक्खी दूर करनेका उपाय।

अकरकरा अरु गन्धक लाय। नार्गिसकी जड लेय मिलाय ॥ पीस छान के जलके मांहिं। छिडक-तही मक्खी उडिजाहिं ॥

दूसरी विधि।

दांत गायका ले मँगवाई। लीजे ताहि मठा पिसवाई ॥ जहां धरौगे इसको भाई। मक्खी तहां एक नहिं जाई ॥

सिरकी गंज दूर करनेका उपाय।

शहत चिरमिठी लायके लीजै इन्है पिसाय। जहां गंज शिर बीच हो, दीजै इसे लगाय। गंज

उडै दिन सातमें, कीन्हे यही उपाय। घुघुरीले काले उगें, केस तहां सुख पाय॥

दूसरी विधि।

हाथी दांत जरायकै, लै सुरमा समभाग। मलिये शिरपैं मेलके, अजा दूधके झाग॥

शीशा आगसे भरा दीखै।

शीशीमें मदिरा भर दीजै, गंधक तनक गेर पुनि दीजै॥ धरियै ताहि अँधेरेमाहिं। अग्निभरा शीशा चमकाहिं॥

शीशीमें अंडा उतारना।

उत्तम लेहु अंगूरीमदरा। कुछ बिचार नाहिं भरणी भदरा॥ वामें अंडा देहु भिजोय। काढौ वाहि नरम जब होय॥ शीशी भीतर देहु उतार। ऊपरसे गेरौ जलधार॥ डारत जल कठोर ह्वैजाही। अद्भुत अचरज देहि लखाही॥

नींबू उछलनेकी विधि।

नींबू एक कागजी लाय। नौसादर पारा भरवाय॥ धरिये ताहि धूपके माहीं। उछलै नींबू अचरज नाहीं॥

घरमेंसे चूहे भागें।

ऊंट दाहिने हाथका, ले नाखून मँगाय। घरमें धूनी दीजिये, चूहा रहन न पाय॥

पत्थर तिरनेका तंत्र।

ससा स्यारकी मेंगनी, ले आवै रविवार। गुठली बरे मिलायकै, पीस करै तय्यार॥ ऊपर पत्थर लेपकर, जलमें देहु बहाय। पत्थर तैरैही करै, नैंक न डूबन पाय॥

बिना आगके ज्वारका भुनना।

थूहर दूध मँगायके, देवैं ज्वार भिगोय। राखै अपने पासमें, छायां सुख जब होय॥ खेल करौ तुम

जब कभी, रखौ धूपके माहिं। खिलजैहै कछु देरमें, यामें संशय नाहिं॥

दूसरी चालाकी।

एक हाथमें राखिये, थोडी कच्ची ज्वार। दूजेमें लीजै छुपा भुनी भुनाई त्यार॥दीजै सबै दिखायकै, वोही कच्ची ज्वार। तब भर चुटकी धूरकी, दीजै तामें डार। वही चुटकी संगमें, भुनी भुनाई डारे। भुनी सबै दीखनलगै, जो कोई ताहि निहारे॥

हथेलीपर सरसों जमाना।

दुद्धीको रस लायकै, दीजै सरसों भेय। चार पहरमें काढकै, छायासुखाकर लेय। हाथ बीच धर मृत्तिका, दीजै सरसों दाव। जलके छींटा देतही, फिर सरसों उगि आव॥

बालोंको सफेद करनेकी विधि।

अजा दूधकी भावना, हरड देहु दिन सात। पीस तेलमें लेपकर, बालश्वेत व्है जात।

दूसरी विधि।

थूहर दूध भिजोइयै, दिवस सात तिल लाय।
तेल काढ शिर लेपकर बाल श्वेत होय जायँ॥

तीसरी विधि।

सात दिवस तक आंवला, थूहर दूध भिजोय।
पीस लेप शिर कीजिये, शीस श्वेत सब होय॥

कोयलेको रुपहरा करना।

जलता कोयला लायकर, रखिये बर्तन माहिं।
डार काष्टिक दीजिये, ऊपरसे तिहिं पाहिं॥ डारत काष्टिक ताहिपर, शब्द भयंकर होय। रंग पलटकै कोयला, तभी रुपहरा होय॥

मक्खी दूर करनेका उपाय।

डालकर लकडी काशिया, चूरन ले करवाय।
भिजो सवाभर दीजियै, सेर नीर मँगवाय॥ घंटा भरमें छानकर, दस भरदे गुडगेर। उतनी काली

मिरचभी, पीस गेरिये फेर ॥ ऐसे कर तय्यार यह, राखौगे जिहि ठांव । मक्खी रहन न पावही है, यह सहज उपाव ॥

जले हुए डोरेमें अँगूठी लटकाना ।

भिगो नमकके नीरमें डोरा लेय सुखाय । मुदरी हलकी बांधकै, खूंटीसे लटकाय ॥ दियास लाई रिगडकै, दीजै आग लगाय । डोरा सब जलजायगा मुदरी गिरन न पाय ॥

हाथसे प्याजकी दुर्गन्ध जाय ।

हाथनमें दुर्गन्ध जो, होय प्याजकी जाय । राई जलसों धोइयै, तुरत दूर व्है जाय ॥

छापेकी नक्कल करना ।

थोडीसी ले फिटकरी, साबुन माहिं मिलाय । कागज एक भिजोयकर, कीजै यही उपाय ॥ छापे इक चित्र लै, कागजसूं ढकवाय । ढक कपडा फिर दाबियै तुरत चित्र बन जाय ॥

मक्खी दूर करना ।

मठा और हरतालकी, कर गोली घर माहिं।
सूँघत ही मक्खी भगें, यामें संशय नाहिं ॥

मूसे दूर करना ।

बकरीकी ले मेंगनी, और मूत हरताल। प्याज गांठ मँगवायकै लेहु पीस तत्काल ॥ जीवत मूसौ पकडकै, छोडे लेपकराय। देखै मूसौ जो कोई, सोई जाय पलाय ॥

दूसरी विधि ।

बिल्लीकौ मल लायकै पीस लेय हरताल। लेप करेपै देखकै भाग जांय तत्काल ॥

खटमल दूर करनेका उपाय ।

रुई आककी लायकै, बाती लेय बनाय। ताय महावरमें भिजो, पीछे लेय सुखाय ॥ दीपक कडवो तेल भर, बाती देय जलाय। घरमें खटमल एकभी, तभी रहन नहिं पाय ॥

दूसरी विधि।

गंधक धूनी दीजै खाट। खटमलगहैं मौतकीबाट॥

तीसरी विधि।

गुडचन्दन अरुलाख मिलाया। त्रिफला विडंग लेहु मँगवाया॥ लाय आकका पत्ता और। सबकूं पीस करौ इक ठौर॥ याकी धूनी दीजै जहां॥ खटमल मच्छर रहे न तहां॥

शुजाक खोनेकी विधि।

चंदन तेल बूंद ले चार। दस तोले पानीमें डार॥ पीवै दिवस सात लों जोई। ताके फेर शुजाक न होई॥

अदृष्ट होनेका उपाय।

मोर लाय इक राखिये, सातदिना निजपास। मनासिल अरु हरताल लै, दीजै भोजन तास। ताकी विष्ठा लायके, लेप हाथसों लेय। होय अदृश्य जो इन्द्रकूं नहीं दिखाई देय॥

आम लगानेका उपाय ।

लाय तेल अंकोलको, गुठली आम भिजोय ॥
गाढेपै उगै तुरत, संशय नेक न होय ॥

कलम उगाना ।

वाही तैलमें डारिये, कलमबीज लै एक । जल में डारत उगै, सुन्दर कलम सुरेक ॥

ग्रहण दिखाना ।

तेल लाय अंकोलको लेप काँचपै लेय । रविराकेश निहारियै, ग्रहण दिखाई देय ॥

जलमें न डूबै ।

हलकी लकडी लायकै, सिंहना बनवाय ॥ लेप चिरमिठीको करै, जलमें देय बहाय ॥ ऊपर ताके बैठकै, चले जाहु बिनरोक । सूखे जाओगे बहे, डूबनको नहिं सोक ।

वशीकरणकी बुरकी ।

झाऊ नदिया तीरकी, लावै जड कढवाय । पुष्य

होय नक्षत्र जब, कुडा छाल मिलवाय ॥ पुनि समानही मेलिये, लै मासानकी राख । तुरत होय बसमें वही, जाके सिरपै नाख ॥

पारेका कटोरा ।

पारा एक भाग मँगवावै । तासे दूना रांग मिलावै ॥ धरै आगपर लेय तपाई । सांचा एक काठ मँगवाई ॥ भर सांचेमें उसको दीजै । बना कटोरा सुन्दर लीजै ॥

दूसरी विधि।

नीलाथोथा पारा लावै । दोनोंको सम भाग मिलावै ॥ पीस कूट राखौ निजपास । वेलावेली बनै गिलास ॥

कपूरका ग्लास बनाना ।

मिट्टीके दो ग्लास मँगावै । एक माहिं कर्पूर भरावै ॥ दूजा औंधा दीजै ढांक । जामें रहै संधि नहिं सांक ॥ नीचैं दीपक देय जराई । ऐसे ले

कर्पूर उडाई ॥ धूंआं होय बन्द जब जावै ॥ दीपककूं तबही बुझवावै ॥ ऊपरका दे ग्लास उतार॥ मट्टी दीजे फैंक उपार । ऐसे ग्लास बनैगा भाई ॥ उत्तम विधि यह दीन्ह बताई ॥

गंधकका कटोरा ।

ऊपर कही रीतिसूं भाई । गंधककूं तुम लेहु उडाई ॥ बनै कटोरा सुन्दर ऐसा । पीला पीत मणीसम जैसा ॥ ठंडा करकै भरिये दूध ।पीयें बढै हर्ष बल बुद्ध ॥

नोनका कटोरा ।

लीजै सांभर नोन मँगाई । गाजर बीज संग पिसवाई ।सांचेमें फिर दीजै थाप । बनै कटोरा अपने आप ॥

दीमक दूर करनेका उपाय ।

जहां कहीं दीमक लगै, कीजै एक उपाय ।
हींग डार जल छिडककै, दीजै उन्है भगाय ॥

दूसरा उपाय।

दीमक जहां लगै सुनि भाई। कोलटार दीजै पुतुवाई॥

दोकडी चीजोंका पानी करना।

नाईट्रेट औफ एमोनिआ अरु, ग्लौवर सौल्ट मँगाय। डार खरलके बीचमें,ले धीरै घुटवाय। धीरे धीरे घुटतही, अद्भुत अचरज देख। जाय कडापन दूर हो पानी सीले पेख॥

रातमें दीखनेका उपाय।

ले कपाल पै घुग्घूका भाई। घीका दीपक जोड धराई॥ ले कपाल पै काजल पार। आंखिन अंजन लैवे सार। तेज नजर ताकी अस होई॥ पुस्तक पढै रातमें सोई॥

दूसरी विधि।

घुग्घूको लावै हृदय रुधिर काककौ लाय। कर बत्ती आंजे दृगन दिनसमताहि दिखाय॥

दशमुख दीखना ।

कवडी तूंबी तेल लै, बींट कबूतर लाय । हड्डी गधा मँगवायके, सबकूं ले पिसवाय ॥ माथेपै याकै तिलक, जो कोई लेय लगाय । रावणसौ दीखन लगै, यामै संशय नाय ॥

पांचमुख दीखना ।

तेल सहजने बीजकौ बींट कबूतर लाय । सूअर चर्बी शिखी जडा, सब समभाग मँगाय ॥ जो काढे सिरपै तिलक, सो दीखै मुख पांच । इन्द्रजालकौ खेल यह जाने झूठ न सांच ॥

सुनहरी स्याही बनाना ।

सोनेका लाकर वरक, शहतसंग पिसवाय । एक कटोरा मांहिं धर, पानी दे भरवाय ॥ ताहि हलावै खूबही, पानी देय नितार । नीचै जो सौ नौ रहै ताकूं लेहि निकार ॥ ऊपरकीसी रीतिसे, करै क्रिया

दोबार। तामें गोंद मिलायकै, करै सियाही त्यार। यासै जो अक्षर लिखै, सोनेसे सम भाय। जो इन अक्षरकूँ पढैं, सोई मनहर खाय॥

दो कडवी चीजोंको मीठी करना।

नाईट्रेट औफ सिलवर और हाईपो सलफेट औफ सोडा ये दोनो चीजें अलग अलग चाखनेमें बहुतही कडवी होती हैं परन्तु इन दोनोंको मिलादेनेसे निहायतही मीठापन होजाता है॥

दृश्य और अदृश्य।

दर्पणपर फरासीसी खडियेसे कुछ लिखदो और फिर रूमालसें पोंछ डालो तौ लिखाहुआ कुछभी दिखाई न देगा अगर मुँहकी भाफ दर्पणपर फूँकोगे तौ अक्षर दीखने लगेंगे भाफके सूखने पर फिर न दिखाई देंगे फिर फूंकने पर फिर दिखाई देने लगेंने उसी तरह चाहै जबतक करते चले जाओ॥

पांच प्रकारके रंग बदलना।

पांच ग्लास मँगवाकर नम्बरवार रखदो पहिलेमें सौल्यूशन औफ आयोडाईन् औफ पुटेसियम भरदो, दूसरेमें सौल्यूशन औफ कौरोसिन सब लाईमेट अर्थात् रसकपूरका अर्क भरदो। तीसरेमें आयोडाइन औफ पुटैसियमका तेज अर्कमें औक्सेलेट औफ ऐमोनिया डालकर भरदो, चौथेमें म्यूरियेट औफ लाइमका अर्क और पांचवेमें हाइड्रोसलफेट औफ ऐमोनिया भरदो तब इनके रंग इसतरह बदलेंगे॥ पहिले ग्लासको दूसरेमें उढेलनेसे पहिले जरद फिर तत्कालही किर्मिजी लाल रंग डोजायगा। तब दूसरेको तीसरेमें डालनेसे फिर साफ और स्वच्छ होजायगा तीसरेको चौथेमें डालनेसे दूधसा सफेद रंग होजायगा। चौथेको पांचवेमें डालनेसे गहरा काला होजायगा। इस तरह करनेसे साफ और स्वच्छ अर्क पांच रंग पलटैगा॥

जलमें सूखा चलनेका उपाय।

लकडी अरलू लायके, लेहु खडाउँ बनाय।
पहर तिन्हैं भीजैनहीं, जलऊपर जो जाय॥

शस्त्र स्तम्भन।

मूल चमेली लायके, मुखमें लीजै मेल।
घाव न आवै नेकभी, चले शस्त्र जो सेल॥

दूसरा उपाय।

सरफोंका कीजडले आवै। अथवा पाढरमूल मगावे॥ युद्ध समय ले मुखमें डार। लगन नेक शस्त्रकी धार॥

हजार आंखका दीखने लगे।

घूग्घूकौ सिर काट मँगावै। बीज धूतरेके बुववावै॥ जब आसाढ बादि चोदस आवै। धूप दीप कर भैंरों ध्यावै॥ सिरकूँ गाड भूमिमें देवै। जूँठा पानी उसमें देवै॥ नित प्रति दीपक देय जलाई। बत्ती सूत घीवको भाई॥ उगै पेड जब

करै उपाई। जड फल फूल छाल मँगवाई॥ पीस तिलक माथे पै दीजै। सहस्र आंखको रूप धरीजै॥ सुनी सुनाई दीनी छाप। सांच झूठकूँ परखौ आप॥

स्त्रीरूप दीखै।

लाय मनुजकी खोपरी, लाल चिरमिठी बोय।
फल ऊगे मुख धारियै, नारीरूपजु होय।

लालस्याही बनानेकी विधि।

कत्था सज्जी एलुआ, ले तीनों मँगवाय। अलग अलग कुटवायकै, पानीमें भिजवाय॥ तब तांबके पात्रमें, कत्थाजल भरवाय॥ चूल्हे ताहि चढायकै, नीचै आग बराय॥ जब उफान आवन लगै, कीजै यही उपाय। सज्जी जल अरु एलुआ, तामें देय मिलाय॥ जब तीनो मिल होंय इक, नीचै लेय उतार। जो चाहै लिख लीजियै, स्याही लाल तयार॥

बिना रंगतके दो जलोंका नीलाकरना।

एक पानी भरे काचके ग्लासमें प्रशियेट औफ पुटाशकी थोडीसी बूंदें डालदो और दूसरे पानी भरे ग्लासमें सलफेट औफ आयरनका हलका अरक डालदो इन दोनों ग्लासोंमें निर्मल बिना रंगका जल दीखैगा फिर इन दोनों ग्लासोंके जलको किसी तीसरे बर्त्तनमें मिलाओगे तौ चमकीला गहरा नीलारंग हो जायगा ॥

बिना रंगतके दो जलोंको कालाकरना।

एक ग्लासमें डाईल्यूट हाईड्रोफौस्फेट औफ ऐमोनिया भरदो और दूसरेमें ऐसीटेठ औफ लीडका अर्क भरदो ये दोनों अर्क जुदे २ स्वच्छ और बिना रंगतके होते हैं उन दोनोंको मिलानेसे दोनों काले दिखाई देने लगेंगे ॥

जादूका लाल रंग रंगना

चुकुन्दरकी जडका अर्क जो बहुत लाल हो-

WARBURG INSTITUTE UNIVERSITY OF LONDON

ता है उसे एक ग्लासमें भरदो उसमें थोडासा चूनेका पानी डालतेही जलका रंग दूर होकर विनारंगत हो जायगा फिर उसमें एक सफेद कपडा भिगोकर तत्काल सुखा लो सूखतेही कपडा लाल हो जायगा ॥

दीपककेउजालेसेसफेदको कालाकरना

मलमलके एक टुकडेपर नाईट्रेड औफ सिल वरसे कुछ अक्षर लिख लीजिये सूर्यके प्रकाशमें देखनेमें कुछ दिखाई न देगा अंधेरे मकानमें ले जानेसेभी कुछ न दीखैगा परन्तु ज्योंही लैम्पकी तेज चांदनीमें देखौगे तौ काले अक्षर दीखने लगैंगे ॥

मुहरकी स्याही बनाना ।

तोलेभर मैजेन्टर लाओ । ग्लैसरिन एक छंटाक मिलाओ ॥ स्याही अच्छी बनि है भाई । लीजै तासूं मोहर लगाई ॥

हीरा बनाना।

सिलीका आठ आउन्स, कारबोनेट औफ पुटाश चौवीस आउन्स, दोनोंको मिलाकर गरम कर लो फिर ठंडा करके उसको डाइल्यूटेड नाइट्रिक ऐसिडमें डाले जब खदखदाना बन्द होजाय तब पानीसे ऐसिडको खूब धोडालें फिर इसे सुखाकर कारबोनेट औफ लीड बारह आउन्स मिलाओ ओर एक औन्स सुहागा मिलाकर चीनीके खरलमें घोंट लो फिर इसको गरम करके पानीमें दो तीन बार बुझाओ और अन्तमें पांच ड्राम सोरा मिलाकर रख लो उमदा हीरा बन जायगा॥

पुखराज बनाना।

स्ट्रास १०५ ग्रेन, ग्लास औफ एन्टीमनी ४४ ग्रेन, एपिल औफ केसिस एक ग्रेन इन ती-

नोंको मिलाकर आगपर चढा लो उमदा पुखराज बनैगा ॥

पानीसे भरेहुए ग्लासको पानीके भीतर खाली करना।

एक ग्लासको पानीसे भरकर उसके मुँहको ऐसी रीतिसे बन्द करो कि औंधा करनेपर पानी न निकलसके फिर उस ग्लासको पानीके अन्दर औंधा ले जाओ उस डाटको निकाललो और ग्लासको औंधाही पानीके ऊपर निकालो लेकिन मुँह उसका पानीके अन्दर रहा आवै तब एक किलया पोला नरसल ग्लासके मुंहमें लगाकर दूसरे सिरेसें फूंक मारो तब पानीमें बुलबुले उठने लगेंगे और पानी ग्लाससे निकलता रहैगा इसी तरह करते करते सब पानी निकलकर ग्लास खाली रह जायगा.

नीलम बनानेकी विधि।

स्ट्रास ४६०८ ग्रेन, औक्साईड औफ कोवाल्ट ६८ ग्रेन दोनोंको मिलार आग पर जढाओ नीलम बन जायगा।

फीरोजा बनानेकी विधि।

औक्साईड औफ कोवाल्ट ११॥ ग्रेन ग्लास औफ ऐन्टीमनी २४ ग्रेन, स्ट्रास ३४५६ ग्रेन इन सबको आगपर पिघलाकर ठंडा कर लो फीरोजा बन जायगा॥

पन्ना बनानेकी विधि।

औक्साईड औफ कोमिअम दो दो ग्रेन, ग्रीन, औक्साईड औफ कोपर ४२ ग्रेन, स्ट्रास ४६०८ ग्रेन, इन सबको गलाकर धीरे २ ठंडा कर लो पन्ना बन जायगा॥

लाल बनानेकी तरकीब।

स्ट्रास १४४० ग्रेन, औक्साईड औफ मेगानीज

३६ ग्रेन इन सबको मिलाकर गला लो ठंडा होने पर चरख पर चढवालो नकली लाल बन जायगा.

बच्चेके दांत सुखसे निकलें।

बीज सिरसके लाहु निकाल। पोय लीजिये तिनकी माल। बालकके गर डारें रहौ। दंत कष्ट बिन वाके लहौ॥

सिरपर आग चमकै।

पीस तेल अंकोलमें, मनसिल अरु हरताल।
रंग बांधौ सिर वस्त्रइक, दीखै जली मसाल॥

स्वदेह अग्निके समान दीखे।

मनसिल गंधक अरु हरताल। ले समभाग सिंदूर सु घाल॥ रँग कपडा ओढे निज तनपर दीखे आग समान रात नर॥

सिरपर बत्ती जलना।

त्रिकुटा पहिले मुखसे चाबै। थूंक काढ

नरमूत मिलावै ॥ लेप सीसपर इसका कीजै। बत्ती जला शीस धरलीजै ॥ बाल एकभी जलन न पाय। यामें संशय नैक न थाय ॥

रथसहित सूरजको देखना।

बीज बिजौरा तेल लै, ताम्रपात्रमें भरियै। बीच दुपहरी धूपमांहिं धर, यह उपाय तब करिये ॥ सूरजकूँ जो देखै तामें। रथ समेत वह दीखै वामें ॥

भूत पिशाच दीखै।

बेलपत्र रस पीसियै, गुंजा मूल मंगाय।
आंज आंखमें दीखियै, आवें भूत लखाय ॥

मरी मछली जी पडै.

मरीभई मछली लै आवें,ताके मुखपारोभरवावै॥
जलमें दीजै उनकूं डार। जीकें ते पहुंचें मजधार ॥

समुद्र दीखें.

चरबी मेंडकलायकै, जंगल मांहिं जराय ॥

चहूं ओर दीखन लगै, सागर भरयौ दिखाय ॥

दिनमें तारे दीखें.

काट धतूरा लेय मँगाई । कोदोंकौ भुस लेय मिलाई ॥ दुहुन जलाय करै इकढेर, भर कपडा बत्तीकर फेर ॥ ताकौ दीपक लेहु जलाय, काजल आंखिन लेहु लगाय ॥ दिनमें तारे दीखें भाई, इन्द्रजाल विद्या यह गाई ॥

बिच्छू पैदा होना.

निर्गुंडीके बीचमें अंगुल तेल लगाय ।
बिच्छू अनगिन होंयगें, दीजै भूमि गडाय ॥

मूत्र बन्द करना.

मंगलवार होय जब भाई । अरिके मूतमृत्तिका लाई ॥ किरकेंटा मुख दीजै डार । बांधौ ताहि बेरकी डार । अरिकौ मूत बन्दह्वै जाय । मूतन लागे दिये हटाय ॥

तांबेका रूपा करना।

मिट्टी गंधक लेहु मंगाय। केला रस तामें मिलवाय॥ ताम्रपात्रपै लेप कराय। सोई रूपे-सौ ह्वै जाय॥

अंडेका आकाशमें उडना।

किरकेटाका अंडा लाय। भरपारा लघु छेद कराय॥ रखियै ताहि धूपके माहिं। उडे देखतें संशयनाहिं॥

कलाबत्तू बनानेकी विधि।

केवल चांदीकी लँगडी बनाकर सोहन या और किसी चीजसे ठोककर खडबडी कर दें फिर उसपर पारा लगाकर मोटा वरक या सौनेका पतला पत्रा लपेटकर आगमें धरके तावदें इससे पारा उड जावैगा और सुनहरी वरक चांदीकी लँगडीसे लिपटा हुआ रह जायगा जो वरक कम हो तौ उसी तरकीबसे जितना चाहें उतना लगादें

फिर इस लँगडीकी बारीक सलाईयां बनाकर जंत्रीमें तार खेंचकर जितनी चाहियै उतनी लंबी और बारीक करले और हथौडेसे चपटी करैं पीछे उसको लेप और जोश देकर इसपर जिला देवें फिर बँटे हुए रेशमपर इस तारको चढा दें इस रीतिसे कलाबत्तु बनानेमें महनत अधिक न होती है।

कलाबत्तू बनानेका सहज उपाय।

निखालिस चांदीका जितना चाहें उतना पतला या मोटा तार जंत्रीमें खेंचकर और पीछे हथौडेसे ठोककर चपटा कर लो और ऐलेक्ट्रिक बैटरी अर्थात् विद्युत्यंत्रके द्वारा जैसा पतला या गाढा मुलम्मा करना चाहो करलो और फिर उसपर जिला करके बँटे हुए पीले रेशमपर चढालो कलाबत्तु बन जायगा ॥

और धातूके कलाबत्तूभी इसी रीतिसे बनाया जा सक्ते हैं ॥

सोनेका वरक बनाना।

सौ नम्बरका सोना लाकर जंत्रीमें होकर बारीक तार खिंचवा लो गूंज या जितना चाहिये उतने बजनके सांचेमें डालकर बारीक बारीक टुकडे कतरै और उनमेंसे हर एक टुकडेको हथोडेसे गढकर जितना बडा होसकै उतना चौकोन पत्तर बनालेवै इन पत्तरोंको हिरनकी खालके तहदार थैलेमें एक २ तहमें एकएक पत्तर भरकर थैलेका मुँह बन्द करदे। फिर एक चौरस पत्तरके सिरपर उस थैलेको रखकर बडे और चौडे मुँहके हथौडेसे कूटे यहांतक कि तमाम थैलेमें सोना फैलजाय फिर उस थैलेका मुह खोलकर उन वरकोंको पतले कागज पर निकाल गडियां बांधकर रखदे जितना बडा वरक बनाना चाहै उतनीही बडी थैलीयां बनवालेवै इसी तरह चांदीके वरकभी बन सक्ते हैं॥

कलाबतूमेंसेसौनाऔरचांदीदूरकरना.

पुराना या नया कलाबतू चिरागपर जलाकर तांबेके चौडे बर्तनमें रखकर एक गोल पत्थरसे पीसले ऐसा करनेसे रेशमकी राख कलाबतूके तारसे अलग होजायगी पीछे उसको जलमें धोकर राखसे साफ करलें और नये मूसमें गलाकर लँगडी बनावै और उसे कतर कतरकर बारीक टुकडे करलो फिर सोरेके तेजाबमें इन टुकडोंको डालदो और उस शीशीको वालुका यंत्रमें आधी गाडकर आगसे गरम कर लो तौ इन टुकडोंका पानी होजायगा जब खदकना बन्द होजाय तब शीशीको निकाल लो उसके पेंदेमें जो काली गाद जम जायगी उसके ऊपरसे एक दूसरे चीनीके प्यालेमें तेजाब नितार लो और उस गादमें थोडासा ठंढा पानी डालकर धो डालौ और उस धोये हुए पानीको उस निथारे

हुए तेजाबमें डालदो फिर उस काली तलछटको सुखाकर मूसमें गलानेसे सौ नम्बरका निखालिस सौना निकल आवैगा । फिर उसको धोकर निकाले हुए पानी और तेजाबमें और थोडा पानी मिलाकर उसमें साफ तांबेके थोडेसे टुकडे डालदो और फिर उस शीशीको वालुकायंत्रमें रखकर आगदो जब पानीका खदकना बन्द होजाय तब नीचे उतार लो तांबा गलकर उसमें मिल जायगा और चांदी नीचे बैठ जायगी ठंडा होनेपर तेजाबके दूसरे चीनीके प्यालेमें नितार लो उस नीचेकी गादको पानीसे धोकर साफ कर लो और सुखा लो साफ चांदी निकल आवैगी ॥

सोनेका हरा रंग करना ।

नौसादर चार आउन्स + जंगार चार आउन्स सोरा दो ग्रेन इन सबको खरल करके सिरकेमें मिलाकर सोनेपर लगाकर आगमें रख दो ॥

सिंदूर बनानेकी क्रिया।

जितना सिंदूर बनाना हो उतनाही सफेदा लेकर कूटकर महीन कर लो फिर चूल्हेपर एक कढाई चढाकर उसके नीचे धीमी आग जलाकर सफेदाको डालकर चलाते रहौ रंग बदलतेही उतारलो और ठंडा होनेपर फिर वैसेही करो इसी तरह पांच या छः बार करनेसे सिंदूरकासा रंग होजायगा तब उसे ठंडा करके शीशीमें भरलो ॥

रसकपूर बनानेकी विधि।

जरद मुलतानी मिट्टी, फिटकरी, नमक, दरियाकी सफेद रेती, और पारा समभाग और फटकिया संबूल आधा भाग सब जुदाजुदा महीन कूटकर छानलो और पारेमें मिलाकर डमरू यंत्रमें रख कर चार पहरतक मंदी २ आग देवै फिर वीस पहरतक बबूलकी लकडीकी तेज आग देवै, ऐसा

करनेसे ऊपरके बर्तनमें रसकपूर जमजायगा ठंढा होनेपर निकाल कर पास रखें, बनाते समय मुंह और आंखोंको धुएंसे बचावै क्योंकि धुंआ लगनेसे मुंह सूझजाताहै ॥

रसकपूरकी डली बनाना ।

लाय आतिशी शीशी एक । रसकपूरसों भरिये ठेक ॥ ऊपर कर कपरौटी दीजै । यंत्र वालुकामें रख दीजै ॥ नीचे दीजै आग लगाय । ऐसे रसकपूर उडजाय ॥ ढार सलाई सीसी देखौ । पेंदे रसकपूर नाहिं पेखौ । भर कपूररस दीजै और । जासूं फेर रहै नाहिं ठौर । चार बार ऐसेही करियै । थोडौ थोडौ लैके भरियै ॥ जो भरिहौ तुम एकहि संग । सीसी फूट जायगी तंग ॥ कपरौटी कर दीजै दूर । सीसीकौ कर दीजै चूर ॥ जो ऐसे करिहो तुम भाई- रसकपूर डली बनजाई ॥

रूमीशंगरफ बनाना।

तोले दस गंधक लैआवे। नौसादर आधो मिलवावै। दुहुन पीस कजली करलीजै। यंत्र वालुकामें भरदीजै॥ आगदिये जौहर उडजावै। सीसी तोड सिंदूर कढावै॥

पारेका तेल बनाना।

पारेको गंधकके तेजाबमें डालकर धीमी आगपर गरम कर लो। तेजाबके सूखनेपर पारेका चून हो जायगा, उसमें पारेके समान और तेजाब डालकर पहिलेसे तेज आग दो जब तेजाब सूख जाय तब फिर उतनाही तेजाब डालकर औरभी तेज आग लगाओ इसी तरह चौथीबार तेजाब डालकर जब आग लगाओगे तौ तेजाब न सूखैगा तेलके समान गाढा रहैगा यह जोस्तके सडानेमें काम आता है इस कामके करनेमें धुएँसे आंख नाकको बचाता रहे॥

पारेको कामके लायक बनाना।

पारा रांग मिलाकर भाई। चम्पा दूध खरल करवाई॥ बनि है तब यह ऐसा पारा। चाहै जो करियै तय्यारा॥

दूसरी विधि।

लोहेकी मँगवाय कढाई। अलसी तेल डारिये भाई॥ पारा डाल पकाओ उसे। पारा जमै उतारौ उसे॥ ऐसे पारा जमिहै भाई। चाहै जो लीजै बनवाई॥

इन ऊपर कहीहुई दोनों तरकीबोंसे जो वेलावेली कटोराकटोरी बनाओ और उनको यदि बहुत कडा करना चाहौ तौ कुछ दिवसतक उस बनी बनाई चीजको नींबूके रसमें डालदो बहुत कडी होजायगी॥

सब्ज और स्याह रोशनाई।

जौ कूट माजूफल १५ भागको २०० भाग

पानीमें चढाकर एक घंटेतक खूब जोशदो पीछे इसको छानकर पांच भाग सलफेट औफ आयरन, और चार भाग लोहेका चूरा डालकर मिलावो, इसको आधी बोतल नीलका पानी और तीन भाग सलफोरिक ऐसिड इन सबको मिलाकर तय्यार करलो यह रोशनाई लिखते समय हरी मालूम होती है परन्तु पीछे स्याह हो जातीहै, यह लिखनेमें अच्छी होती है ॥

सब्ज रोशनाई ।

कैलसिन्ड ओसीटो नाईट्रेट औफ क्रोमको अन्दाजके पानीमें मिलादो सब्ज स्याही बन जायगी ॥

दूसरी विधि ।

नीली और पीली दोनों रोशनाइयोंको मिलानेसेभी उमदा सब्ज स्याही बन जाती है ॥

अंग्रेजी नीली स्याही।

सलफेट औफ इन्डीगोको पानीमें घोलनेसे नीली स्याही बन जाती है जो रंग गहरा चाहौ तौ पानी कम डालौ और जो फीकी रखना चाहौ तौ अधिक पानी डालकर पतली करलो ॥

देशी स्याही।

उमदा काजलको मछलीके पतले सरेसके साथ घोटकर टिकिया बना लो अगर सुगंधित करना चाहौ तौ सोनेका वरक लगाकर कस्तूरीका सत डालदो ॥

मोहर लगानेकी स्याही।

चंदरस पच्चीस भाग, औयल औफ लैवैन्डर दोसौ भाग, काजल दो भाग, नील एक भाग, इन सबको मिलाकर गला लो मुहरकी स्याही बन जायगी ॥

दूसरी विधि।

ऐस फैलटम एक भाग काजल चौथाई भाग इन दोनोंको गला लो और छापनेकी स्याहीके लिये जो अलसीका तेल तयार किया जाता है उसका डेढ भाग उसमें डालकर पकाओ जब तार बंधने लगै तब स्पिरिट ऑफ टरपैन्टाइन चार भाग मिलालो। जितना टरपैन्टाइन कम मिलाया जायगा उतनीही स्याही अच्छी बनैगी जिस चीजपर एकबार मुहर लगा दोगे फिर वह किसी तरह दूर न होगी। ऐसिड या ऐल कोहलके डालने परभी मुहर वैसीही रही आवैगी॥

कपडेपर निशानी करनेकी स्याही।

जूस औफ सिलौज आधी बोतल, गोंद २॥ तोला इन दोनोंको मिलानेसे अदृष्ट स्याही बन जाती है इसमें मौर डैन्ट मिलानेकी कुछ आवश्य-

कता नहीं है धोबीके कोरे थान धुलवानेमें यह स्याही बहुत काम देती ॥

मुहरकी लाल स्याही ।

सिंदरफ़ चार भाग, सलफेट औफ़ आयरन एक भाग, सुखलानेवाला तेल थोडासा डालकर खूब मिलावें यह लाल स्याही मुहर लगानेकी बहुत अच्छी बनतीहै ॥

सुनहरी रोशनाई।

हरताल तबकिया चार तोले, सोनेके वरक पैंतालीस, तवाखीर चौथाई तोला, अंडेकी जरदी चार तोला, इन सबको घोट गरमपानीमें मिला लो थोडी देर पीछे जब ऊपर नितरा पानी आजाय तब उसे धीरेधीरे निकाल दो और नीचे की गादको आठ दिन तक कीकरके गोंदमें घोटलो पीछे शीशीमें भरके पांच चार दिन

धूपमें रखदो इस तरह तयार होनेपर लिखो तौ उमदा स्याही सुनहरी होजायगी॥

छापनेकी स्याही बनाना।

प्रथम अलसीका तेल लाकर खूब औटाओ यहां तक कि औटते औटते उसमें आग लग उठे जब आग लग उठे तब उसको एक ऐसे ढकनेसे ढक दो जिसमें हवा न जाने पावै जबतक तेल बहुत न औटाया जायगा छापनेके काम नहीं आसक्ता॥

दूसरी वस्तु जो इसमें पडती है काली राल होती है अच्छी स्याही बनानेमें यह अवश्य काम आती है जब तेल अच्छी तरह औटजाय तब उसमें राल डालकर मिला लो॥

तीसरी वस्तु साबुन है विना इसके स्याही टैपके हरफोंपर जमजाती है और अक्षर बहुत जलदी बिगड जातेहैं इसलिये काली स्याहीके

वास्ते रोजनसोप अत्यन्त अवश्यकीय है। हलकी स्याहीके वास्ते काईट वर्डसोप काममें लाते हैं। अगर साबुन ज्यादा पड जायगा तौ अक्षर बिगड जांयगे और स्याहीभी जल्द न सूखने पावेगी इसलिये साबुन अंदाजसे अवश्य डालनाचाहिये॥

चौथी वस्तु काजल डाला जाता है यह वैजीटे विललैम्प ब्लेक होता है जो छोटे छोटे पीपोंमें विकता है यही उमदा स्याही बनानेके काममें आता है॥

पांचवां आईवरीब्लेक अर्थात् हाथीदांतकी राख है यह वजनदार होती है और टाईपके छापेकी स्याहीके साथ जलमें थोडीसी मिलाई जाती है इसके मिलानेसे लकडीपर नकशे अच्छे छापे जाते हैं॥

छठी वस्तु नील अथवा प्रशियन बल्यु है यह समभाग थोडा थोडा मिलाये जानेपर का-

जलकी स्याहीकी भूरी रंगतको दूर कर देता है या थोडी इंडियन रेडेकौ नील और प्रशियन बिल्युके साथ पीसकर मिलावें तौ बहुत अच्छा स्याहरंग होजायगा ॥

तेल पकानेके समय जब तेलसे धुआं निकलने लगै तब एक कागजका टुकडा लकडीसे बांधकर और आगपर सुलगा कर तेलके ऊपर लगादे तो तेल सुलग उठें बुखार जल जाने देवै और तैलको वैसाही जलता हुआ बरतनको आगपरसे उतारले या उसके नीचेकी आग बुझादें और तेलको गाढा होनेदें और एक छूरीसे थोडासा निकालकर ठंढा होनेपर दो उंगलियोंसे दबाकर उंगलियों को जुदा करें और जो आधे इंचकी बराबर उसका तार बंधै तौ समझ लो कि तेल तैयार होगया इस तरह दो प्रकारके तेल एक पतला और एक गाढा ज्यादा कम पकाकर तैयार करें क्योंकि यह जरूर है कि दोनोंके मिलानेसे जुदे जुदे काम निकलते हैं जो गरम हवामें काम आता है वह सरदीमें गाढा होजाता है और बडे हरफ या टप्पोंको इतनी कडी स्याहीकी आवश्यकता नहीं होती जितनी छोटे टाइपके वास्ते दरकार होती है ॥

इस रीतीसे तैयार हुए छः बोतल तेलमें छः रतल रोजन तेलको गरम करके झाग मिटजानेके पीछे थोडा थोडा मिलाओ और रालके मिलतेही सेरभर अन्दाज ब्राउन सोपके टुकडे करके ऐसी होशियारीसे मिलाओ क्योंकि साबुनमें पानीका अंश होता है और इसके डालनेके समय तेलमें जोश होता है रॉल और साबन इन दोनोंको सींकचेसे खूब हिलाओ और उस बरतनको आगपरही रहने दो ऐसा करनेसे सब दवा मिलकर एक होजायगी पीछे सात तोले प्रूशियन बिल्यूको खूब महीन पीसकर डालदो तब विलायती कोयलेका काजल २ सेर और बालसम औफ कौप्रीवीका काजल पौने २ सेर डालकर सबको खूब मिलादो यह उमदा टाईपके छापनेकी स्याही तैयार होगी.

छापनेके वास्ते हाथसे लिखकर पत्थर पर उतारनेकी स्याही।

मैस्टिक इन्टिअर्स आठ आउन्स, शेल्लाक बारह आऊन्स, वेन्स टरपेन्टाइन एक आऊन्स मिलाकर सबको गुदाज कर लो फिर एक रतल मोम और छ आऊन्स टालो मिलावे जब ये

सब जलजांय तब इसमें कडी टालो सोपके टुकडे मिलादो पीछे चार आउन्स काजल डालकर खूब मिलालो ठंढा होनेपर सांचेमें डालकर जसी चाहौ छोटी बडी चकती बनालो, जब तुमको कांपीके कागजपर लिखना हो तब जितना टुकडा मंजुर हो भरके या मेहके पानीमें पकालो और लिखनेसे पहिलै कलमको तेलमें भिजोकर पोंछडालौ तौ कमल अच्छी तरह चलैगी ॥

कांपी लिखनेका कागज बनाना ।

समागखी दो भाग, स्टार्च छ भाग और फिटकरी एक भाग इन तीनोंको गरम पानीमें अलग अलग जोश देकर सौल्यूशन करलो फिर मिलादो फिर कागजपर बुर्श या हाथसे दो तीन वार पोतकर सुखा लो ॥

दूसरी विधि।

कागजपर दो तीन वार पानीका हाथ फेर कर रेवत्चीनी और सफेद कांजीका सोल्यूशन बनाकर इसपर फेरो हाथ फेरतेही सुखाते जाओ इस तरह तैयार करनेपर पत्थरपर उतारनेकी स्याही से लिखियै॥

करेलोंका कडवाहट दूर करना।

चूल्हे ऊपर नाखिये छील लाय। करेला भर इमलीको नीर फिर जोश दीजियै ताय। तीन वार ऐसें करै फेर मसाला डार। रहै न कडवे नेकहु होय साग तय्यार॥

शराबका नशा उतारना।

पी शराब जो बहुतसी, भयो होय बेहोश।
गिरी नारियेल दूध अरु, दिये होयगै होश॥

दीमकका इलाज।

क्लौरेड औफ मेरेरीक अर्थात् हल किया हुआ

पारा एक तोला लेकर दो सेर पानीमें मिलाकर जहां २ दीपक लगनेका सन्देह हो छिडक दीजिये दीमक या दूसरे कीडे कभी न लगेंगे ॥

दूसरी विधि ।

पत्ता लाय चितारैके, घरमें देहु जलाय।
दीमक रहन न पावहीं, लगत धुंआं भगजाय॥

पिस्सू दूर करना ।

इन्द्रायग फल पीसकै पानीमाहिं मिलाय।
सब घरमें दीजै छिडक पिस्सू रहन न पाय॥

मुरदा न सडै ।

तीन हजार ग्रेन गरम पानी, सौ ग्रेन फिटकारी, पच्चीस ग्रेन खानेका नमक, बारह ग्रेन कलमी शोरा साठ ग्रेन पुटाश, दश ग्रेन आरसैनिक ऐसिड इन सबको मिलाकर ठंढा होनेदो फिर उसमें फी दस लेटरके हिसाबसे चार सेर ग्लैसेरिन और एक

लेटरमें चारभाग फैनिलिक एलकोहल मिलाकर आधे लेटरसे पांच लैटर तक मुरदेके जिसको खूब मालिश करें और कुछ उसके भीतरभी भरदे इस तरह करनेसे बहुत दिन तक मुरदेका देह न सडैगा॥

देखते देखते दही जमाना।

पोस्तसंगके दाने लावे। पीस सुखाय तयार करावै॥ लीजै तभी दूध औटाय। जासें दही जमायो जाय॥ पोस्तसंग चूरन दे डार। होय देखतें दही तयार॥

मछली ताजी रखना।

सालमन मछली या और किसी प्रकारकी मछली लाकर एक चीनीके बरतनमें रखदो और उसको मीठे सौल्ड तेलसे भरदो और बरतनका मुँह ऐसा बन्द करदो कि हवा न जाने पावे जब निकालोगे मछली ताजी पाओगे॥

सेवका न सडना।

मोमको पिघलाकर उसमें एक २ सेवको डबो कर साफ और सूखी घासमें इस तरहसे रक्खो कि एक दूसरेसे न लगने पावें फिर उनको खूब बन्द करके रखदो ॥

लाल चींटियोंका इलाज।

ग्रीन शीजको लायकर, रखियै खिडकीमांहिं।
जो चाहै भगवान तौ चींटी रहैजुनाहिं ॥

मक्खियां दूर करना।

काली मिरच एक भाग, गुड एक भाग, दूध, या मलाई दो भाग ये सब मिलाकर एक रकेबीमें धरदो मक्खियां न रहैगी ॥

बिना दीपक उजाला।

सिरका स्वच्छ मंगायकै भरिये सीसीमाहिं।
डारतही हरताल तब किया होय चांदनौ जाहि

बिच्छूके विष दूर करनेका उपाय।

बींट लाय ढिग राखिये मुर्ग कबूतर मोर। आक मूल मिलवायकै धरौ पीस इक ठोर। बीछू काटै जहं कहीं इनकी धूनी देय। धूनी लागत बिषनसै मन भावत सुख लेय॥

मूषक विष निवारण।

सरसों केसर अरु मठा, घृत समभाग मिलाय॥ पीवतही विष जायनस, इन्द्रजाल यह गाय॥

बावले कुत्तेका विष दूर होवै॥

आकदूध गुडतेल मंगाय। लेप किये कूकर विष जाय॥

दूसरी बिधि।

औंगाकी जड लेय मँगाय। पीस सहतसँग देहु चटाय॥ मुरगा बींट लेप कर दीजै। कूकर विष तत्काल हरीजै॥

मेंडक बिष हरण।

त्रिकुटा अरु चौलाइ पिसावै। छानपियै मेंडक बिषजावै॥

सर्पबिष नाशक।

स्वेत सांठकी लाओ मूल, लेपें दूर होय बिषशूल॥ है यह अद्भुत एक उपाय। सब प्रकार बिष जाय नसाय॥

व्याघ्रनखका बिष दूर करना।

जहां व्याघ्रकौ नख लगै, कीजै यही उपाय।
कंजा तेल कढायकै, दीजै लेप कराय॥

दूसरी बिधि।

छाल नीम अरु सेमर लाय। लेय गरम जल संग पिसवाय॥ नख अरु दन्त लग्यौ जहँ होंय। किये लेप बिष नासै सोय॥

मकडीका बिष दूर करना।

केशर नाग मजीठ अरु, दोनों हलदी लाय।
लेप किये तत्कालही, बिष मकडीकौ जाय॥

भिलायेका विष दूर करना।

तेल भिलाये के लगें, फूट देह जो जाय।
माखन अरु तिल पीसके, ऊपर देहु लगाय॥

अग्निबिना स्पिरिट जलाना।

पांच ड्राम स्पिरिट लाकर एक पात्रमें रखदेवै फिर इसमें पन्द्रह ग्रेन क्लौरे ऑफ पुटाश मिलादे पीछे इसमें सात ड्राम सलफूरिक ऐसिड डालदे तब इसमें बहुतसी छोटी छोटी नीले रंगकी गोल बत्तियां बाहर अग्निकी लोहके समान निकलेंगी॥

नगारा फूटै।

जहां नगारा होय तहँ, स्यार खाल जर वाय।
फूट्यौ सौ बाजन लगै, अद्भुत भाव दिखाय॥

चांवल न सीजे।

दूध आकमें चुपडकै, चांवल देहु चढाय।
सीज न पावै एक नहिं कोटिन करौ उपाय॥

स्त्रीको बांझ करनेकी बिधि।

जब नारी रजधर्मसे, चौथे दिन शुध होय।
पांच दिवस जड पानकी, घोट पीजियै तोय॥

स्त्रीके शुद्ध रजोधर्मका उपाय।

तन्दुल दूब समान लै, पीस पकावे तोय।
कामिन बल अनुसार निज, पियें रजस्वला होय॥

दूसरी विधि।

बींट कबूतर सहत संग, जोनारी पीलेय।
होय रजस्वला शीघ्रही, मूलदेव कहदेय॥

मूंगेको साफ करना।

हाईड्रोक्लौरिक ऐसिडको पानीमें मिलाकर काममें लावै अथवा एक ब्रुशसे मूंगोंको ठंढे नौन और पानीमें धोवै इसमें थोडा साबुनका चूरा मिलादे क्लोराइड ऑफ लाइम मिलानेसे जादः सफाई आजातीहै इसमें धोकर धूपमें रखनेसे सूखकर साफ हो जाते हैं॥

स्त्रीका बहता लोहू थमै।

सरपंखा जड पीसियै, तंदुलवारि मिलाय।
कर्ष मात्रके पिवतही, बहत रुधिर थमजाय॥

दूसरी विधि।

लालचँदन अरु दूध घृत, मिश्री शहत मिलाय।
पियै रुधिर थम जायगो, है यह सहज उपाय॥

मोहन।

तुलसी बीज पिसायकै, सहदेवी रसमांहि।
वसीकरण रविदिन तिलक, यामें संशय नाहिं॥

दूसरी विधि।

पंच अंग दाडिमके लाय। स्वेत चिरमिठी लेहु गिलाय॥ तिलक कीजियै मस्तक सार। बसी होय सगरे नरनार॥

रसायन बनानेकी विधि।

सौना बनाना।

पीत धतूरा पुष्परस, सीसा तोले आठ। लाङ्ग

लीकौ लाय रस. और लेय रस पाठ ॥ मर्दन करकै खरलमें, गोला लेहु बनाय। गज पुटकी धर आगमें फूँक सुवर्ण बनजाय ॥

दूसरी विधि।

एक पत्थरपर थोडासा पारा रखकर उसपर सर्वबन्धनमंत्रका १००८ जप करै फिर स्वयंभू पुष्पके रसमें एक वस्त्र रंगकर उसमें पारेको लपेट लो तदुपरान्त मिट्टीकी दो मूस बनाकर एकमें पारा रखदो और थोडेसे स्वयंभु पुष्प रखकर दूसरी मूससे ढककर उसका मुख बन्द करदो ऊपरसे मिट्टीमें भुस मिलाकर कपडमिट्टी करदो फिर धूपमें सुखाकर फिर कपडमिट्टी करके और धूपमें सुखाके अग्निमें धरदो फिर निकालकर पान अथवा घीगुवारके रसमें पारेका शोधन करो ऐसा करनेसे जो गुटका बनजाय तब एक धतूरेका फल लाकर उसके भी-

तरकी गिरी निकाल डालै, और उस खोखलेमें पारेके गुटकेको रखकर काली तुलसी अथवा घीगुवार भरदे और सात प्रहर तक प्रचंड अग्निमें रखदे ऐसा करनेसे पारेकी सफेद भस्म होजायगी फिर इसमेंसे एक रत्ती भस्म तोलेभर तांबा गलाकर उसमें डालदो सुवर्ण होजायगा परन्तु इस विधिके करनेमें धनदा देवीका सदा जप और विधिपूर्वक पूजा करता रहै ॥ यदि कुछ विघ्न होगा तौ पारेकी भस्म बिगड जायगी ॥

चांदीबनाना।

मधु घृत अरु तांबा लाय। सोनामाखी पारा लाय ॥ कीजै खरल इन्है मिलवाय। दीजै तीव्र आग जलवाय ॥ मूसमाहिं रखकर मुख बंद। जासें रहन न पावै सन्द ॥ दीजै अगनी बीच धराय। ऐसें चांदी सहज बनाय ॥

एक वृक्षकी शाखासे तरह तरहके फूल निकालना।

किसी वृक्षकी एक बडी डालीको पकड उसको लम्बाईकी ओरसे चीरकर भीतरका गूदा निकाल डालो और उसमें कितनेही प्रकारके फूलोंके बीज भरदो और डालीका मुख बंदकरके ऊपरसे इस रीतिसे मिट्टी लहेमदो कि बिलकुल संधि न रहै और डालीको वृक्षहीपर छोडदो थोडे दिन पीछे जितने रंगके बीज तुमने उसमें भरे हैं उतनेही रंगके पत्ते फूल टहनियां निकल आवेंगी और इसे देखकर सब लोग अत्यन्त आश्चर्य करने लगेंगे॥

पीतलको सफेद करना।

छिलका अंडामुर्गाके, अरु नौसादर लाय।
पीस छान तय्यार कर, लीजै अरक कढाय॥
पीतल लीजै आगपर, गरम सुरख करवाय।
बुझा अरकमें दीजिये, ततछिन स्वेत दिखाय॥

तरकीब फुलझडीकी ।

शोरा अट्ठाईस तोले, कोयला ढाई तोले गंधक सवा दो तोले, बीड आठ तोले ।

तरकीब दूसरी फुलझडीकी ।

शोरा अठाईस तोले बन्दूककी बिलायती बारूद अडतालीस तोला, इन दोनोंको महीन पीसकर उमदा बीड ८ तोला मिलाकर फुलझडी भर दो ऐसा करनेसे फुलझडी बहुतही अच्छीबनेगी.

गुलेरेज फुलझडी ।

शोरा बारह तोले, गंधक एक तोले, कोयला एक तोले और लोहेका बुरादा तीन तोले लेवै ॥

तरकीब महताबकी ।

शोरा अठाईस तोले, गंधक दस तोले हरताल चार तोले, गिली एक तोले, कपूर पावतोले लेवे ॥

नकटी महताब ।

शोरा एक सेर, हरताल चौदह दिरम, मुरगेके

अंडेकी सफेदी चौदह दिरम, नील छः दिरम, शंगरफ तीन दिरम, वीर बहुटी दो दिरम, इन सब को मिलाकर जो महताब बनाई जातीहै उसकी रोशनीमें जोमनुष्य होताहै वह नकटा दिखाईदेताहै.

अनेक रंगकी महताब।

शोरा दस भाग, गंधक साडे तीन भाग, हरताल आधा भाग; नील पाव भाग, हरताल डालनेसे रंग जरद होता है अगर सुरख किया चाहौ तौ हरतालकी जगह शंगरफ डालो और जो हरारंग करनाचाहौ तौ तूतिया सब्ज मिलाओ.

गुलअकशांका पेड।

शोरा बत्तीस तोले, गंधक आठ तोले, कोयला दश तोले, और लोहेका बुरादा पांच तोले॥

बाण बनानेकी बारूद।

आधपावकी तोलका बान बनानेके लिये ३० तोले शोरा, कोयला पन्द्रह तोले, गंधक दस

तोले इन सब चीजों को सुखाकर बहुत महीन पीसलेवै बालकी चलनीमें जुदी २ छानकर फिर सबको मिलालो शोरा आगकी तेजीको बढाता है और गंधक उसे मंदा करती है. और कोयला सुनहरी चिनगारियां पैदा करता है। बानकी रंजक मील पाउडर इस्पिरिट और बाइनके संयोगसे बनती है॥

सुनहरीरंगके जरद सितारे।

क्लौरेट औफ पुटाश बीसभाग नाइट्रेट औफ ब्रिटा तीस भाग, पिसाहुआ सोडा पन्द्रह भाग, गंधक आठ भाग, शल्लैक चार भाग और जो पूछक तारे बनाना चाहौ तौ उस मसालेमें एक भाग कोयला और मिलादो इन सब चीजोंको शल्लैकके सौल्युशनमें भिजोदो ये सितारे बहुतही खूबरसूत और मनको प्रसन्न करनेवाले होंगे॥

सब्जमौम बनाना।

जंगार एक आउन्स मोमनिखालिस दो रतल सौनोरस इसटिराइन पांच रतल और कुछ सुगंधित चीज इन सबको आगपर मिलावें तौ बहुत अच्छा सब्जमोम बन जायगा॥

नीली लाख मुहरके वास्ते।

शैल्लैक दो भाग, डियामर रेजन दो भाग, बरंगदीपैच एक भाग, वैनिस टरपैन्टाइन एक भाग, एल्ट्रम्यारैन तीन भाग, इन सबको गुदाज करके मिलावें जो हलका नीला रंग बनाना होवै तौ इन चीजोंमें एक, भाग सुखस लफेट औफ लेड मिलादो॥

काली लाख बनानेकी विधि।

वैनिसटरपैन्टाइन ग्यारह तौले, शल्लैक २२ तौले कालोफूनी डेढ़ तोले और अन्दाजका काजल इन सबको टरपैन्टाइनके तैलमें मिलाकर तैयार करलो.

सुनहरी लाख बनानेकी विधि।

बैनिस टरपैन्टाइन दस तोले उम्दा शैलक बीस तोले, सौनेके वरख चोदह, बिरोजा पाऊंडर सवा तोले, मैगनेशिया ताडबीन तेलमें मिलाया हुआ डेढ ड्राम ॥

मुहरकेवास्ते नरम लाख।

जरद राल एक भाग, मोम चार भाग सख्त चरवी एक भाग, बैनिस टरपैन्टाईन एक भाग, और जैसा रंग करना हो वैसा रंग डालकर धीमी आगपर पकावै ॥

शत्रुका नाश करना।

हस्तनछत्तर जबही आवै। तादिन सेंधानमक मँगावै ॥ कर गणेसकी मूरत तामें। शत्रुनाम धरदीजै तामें ॥ ज्यों ज्यों नमक विसैगौ भाई। त्यों त्यों शत्रु नाश ह्वै जाई ॥

चौरभय दूर होना।

शुक्लपक्षके पुष्यमें, गुंजाकी जड़लाय।
सिरशय्यामें बांधियै, बाधा चौर न आय॥

गज निवारण।

लाय छछूंदर पीसिये, हस्त नछत्तर मांहिं।
लेप कियें हाथी भगै, यामें संशय नाहिं॥

बसीकरण बुरकी।

चिताभस्म अरु कूठ मंगावै। बसा तगर कुंकुम मिलवावै। पीस पासकै करै तयार। नारी सिर नर पगतरडार॥ जब तक जीवन रहिहै भाई। दासी दास समान सुहाई॥

अर्ककपूर।

कपूर १ आउन्स, साफ की हुई स्पिरिट ८ आउन्स गलाकर मिला दें। यह नुसखा आजकल-के नये फारमें कोपियामें है या १ आउन्स कपूर को ९ आउन्स स्पिरिटमें गलावै॥

आफीमका सार।

एक पाउण्ड अफीम कुटी हुई छोटे छोटे टुकडे और छः पिंट पानी पहिले अफीमको २ पिंट पानीमें २४ घंटे तक भिगो रक्खै फिर पानीसे निचोडकर अफीमको गाढा कर ले और फिर २४ घंटेतक २ पिंट पानीमें भिगोकर पहिलेकी तरह कर फिर तीसरीबार इसीतरह करै इन तीनों वारके अर्कोंको मिलाकर फलालैनमें छानकर मामूली तौरपर गाढा कर ले॥

चित्रके रोनेकी विधि।

बालक पैदा होय जब, ताकी झिल्ली लाय। रखियै अपने पासमें, पहिले ताहि सुखाय॥ चित्त-रसारीं जायकै, दीजै खेल दिखाय। झिल्ली धरकै आगपैं, धूआं देहु उठाय। धुआं लगतही चित्रमें, आंसू बहत दिखाय॥ फिर गूगलकी धूनी दीजै। सूखे आंसू अरु सुख लीजै॥

मनकी बात जानना।

रविदिन जहां जु घुग्घू पावै। ताकौ काढ कलैजा लावै॥ ताकूं धूप दीपदै राखै। सोवत नरके हिरदै नाखै॥ गुप्त बात मनमें जो होई। ज्योंकी त्योंहीं कहै वो सोई॥

टीढी दूर करना।

रविदिन होय अमावस जबहीं। बन्दर हाड लाइयै तबहीं॥ कोरे खपडा मांझ धरीजै। धूनी अगर ताहि पुनि दीजै॥ सिंदुरकौ इक टीकौ काढै। तैल भरयौ इक दीपक बारै। गांव सीमपर दीजै गाढ। टीढी घुसे न भीतर हाड॥

तत्ते तेलसे न जलै।

रजस्वलाको लोहू लाय। तामें गद्धामूत मिलवाय॥ बगलाकी फिर चरबी लावै। चूल्हे चढा सबै पकवावै॥ करै हाथपै लेप जो याको। तप्त तेलसों जलै न ताको॥

अग्निपर चलना।

केलाकन्द भांगरा लावै। मेंडक चर्बी फेर मंगावै॥ मन्द आगपर लेय पकाई। पाँवन लेप अग्निपर जाई॥

आंच जलै अरु अन्न न सीजै

लकडी बबेंई[1] लेय जलाई। गधामूतसों जो ताहि बूझाई। जलती आंच दीजिये डार। ताको जो फिर खेल निहार। सौमन लकडी देहु जलाय। तोभी अन्न न सीजनपाय॥

लड़ाई करना।

कौआ उल्लूपांख मिलाय। शत्रुनाम लै होम कराय॥नष्ट प्रीति होवेगी ऐसे।कौरव पांडव नासे जैसे॥

वशीकरण अंजन।

तगर कूट तालीस मिलावै। तब बातीसों पीस लगावै॥ सरसोंतेल दियामें मेलै। आदितवार

---

१ बबई अर्थात तुल्पलंगा.

पुष्पमहँ खेलै ॥ आधीरात अमावस नयन निहारिये । मनुष खोपँरी ऊपर काजल पारिये ॥ रंचक अंजन आंज नैनन जब देखियै । मन जो भावै यार सोई बस कीजियै ॥

सौनेकीचीजको जिलहैंदेनेकी तरकीब।

गेरु दो हिस्सा, नौसादर एक हिस्सा । इन दोनोंको पानीमें पीसकर सफा पत्थरपर पीसें फिर उस बनाई चीजपर लगाकर आगपर सुखालो। धुआं बन्द होनेपर निकालकर ठंडे पानीमें। बुझाओ और साफ पानीसे धोकर फिर गेरु पानीमें पीसकर उस चीजको लगावे और आग पर सुखावै और ब्रश या साफ कपड़ेसे पोंछकर जिलहदैनेकी सलाईसे मुहरा करे ॥

तोपके समान शब्द करना।

एक तोला गंधक दो तोले जवाखार और दो तोला क्रीम औफ टारटर ये तीनों वस्तु लाकर

अलग अलग पीसकर मिलालेवे इस मिले हुए द्रव्यों में से चार रत्ती तमाखू पीने की नली में भरकर आग लगादो तोप कासा शब्द होगा परन्तु नली न फटैगी ॥

पत्थरपर सुनहरी मुलम्मा ।

सौना छः भाग,एक्यू ओरजिआ छत्तीस भाग-में गलाकर एकभाग रांग मिलाकर बालसम औफ सलफर तीन भाग, औइल औफ टरपैन्टाइनमें मिलाकर सहज सहज खरल करे यहांतक कि सख्त हो जाय पीछे इनमें औइल औफ टरपैन्टाइनके चार-भाग और मिलाकर काम में लावै ॥

बिच्छूभय निवारण ।

होय जबै नक्षत्र शुभ, ओंगाकी जड लाय ।
बाँधै दक्षिण कानमें, बिच्छू भय सब जाय ॥

मूध्न निवारण ।

होय जबै रविवार सुहाई । पत्ता फूल सिरसले

लकडी जोडनेकी लेहेई ।

औक्लाईड औफ आयरन, चूना कलई मंगाय ।
पीस सानकै नीरमें, लकडी लेहु जुड़ाय ॥

संगमर्मर जोडनेकी लेहेई ।

प्लास्टर औफ पेरिस फिटकरीके पानीमें जित ना मिलसकै मिलालेवै । इसको भट्ठीमें पकाकर और पीसकर रख छोडै जब संगमर्मरको जोडना चाहौ उसमें पानी मिलाकर जोडदो इसका रंग संगमर्मरके रंग कासा होता है ॥

मिट्ठी मीठी लगै ।

गुंजापत्ता लायकै, पहिले लेय चबाय फेर अंधेरी रातमें, मृत्तिका डेलीखाय ॥ गुडसी सो मीठीलगै, खातै नहीं अघाय । ईश्वरकी माया प्रबल, अदभुत ख्याल दिखाय ॥

अदृश्य होना ।

जीवत खंजन लाइये, फाल्गुनमास सुहाय ।

भादौं तक तेहि राखिये, पिंजरा बन्द कराय ॥ तब ताकी सिख लेयके, जंतर मांहि मढाय । राखै गो-मुख ताहि जो, सो फिर दीखै नाहिं (–जंतर की विधि–) दशभाग सुवर्ण, बारह भाग तांबा और सोलहभाग चांदी इनसबको मिलाकर जंतरबनावै ॥

मेह रोकना ।

लाय राख समसान की, ईंट लपेटै दोय ।
बनमें गाडै मेह तब, बरसत बंद जो होय ॥

मनुष्य स्तम्भन ।

रजस्वलाको बस्तर लावै । तब गोरोचन चोल मंगावै ॥ बस्त ऊपर लिखियै नाम । तापी छै कीजै यह काम ॥ वस्त्र घडामें दीजै डार । तत्क्षण थंभन हो नर नार ॥

पशुस्तम्भन ।

लोम ऊंटके लायकै पशु ऊपर दे डार ।
गाय भैंस घोडा गधा सब थंभन कर डार ॥

सेनाका स्तम्भन।

मट्टीके इक पात्र बिच, मरघट राख लिपाय। नामशत्रु ता बीच लिख, नील सूत्र लिपटाय॥ फेर गढेला खोदकै, ता बिच पात्र धराय। पत्थर ऊपर ढांकियै, शत्रुसैन्य रुक जाय॥

भूत उतारनेकी विधि।

घुग्घूमांस मंगायकै, राखै पास सुखाय।
याकी धूनी देतही, भूत प्रेत भग जाय॥

मनुष्यके मनकी बात जानना।

आदितवार अमावस होई। तादिन कर उपाय यह जोई॥ काढकरेजा घुग्घू लावै॥ धूप दीप दै सिद्ध करावै॥ सोवतके उर धरियै ताहि। मनकी कहै छिपावै नाहिं॥

पृथ्वीमें गडा धन दीखै।

काला कौआ लायके, जीभ मांस कढवाय।

रुई लपेटै आक की, बत्ती लेय बनाय ॥ बकरीको घी दीपभर, बत्ती देहि जलाय । यासे काजल पाडकै आंखिन लेय लगाय ॥ जहां कहीं हो धन गडा, दीखन लागै ताहि । इन्द्रजालका खेल यह इसमें संशय नाहिं ॥

दूसरी विधि ।

किरकेंटाके रुधिरमें, मनसिल ले भिजवाय ।
पीस आंखमें आंजिये, धरती धन दिखराय ॥

दांतके कीडे दूर करना ।

हरडा चूरण सहत मिलाय । ताम्रपात्र छिनभर भुंजवाय ॥ गुटका बना दांत तर दाबै । कीडा डाढ सभी मरजावै ॥

दूसरी विधि ।

दांत तरै सेहुँड जड़ दाबै ॥ कीड़ा डाढ़ रयन नाहिं पावै ॥

तीसरी विधि ।

गुँजाकी जड लायकै, काननमें बंधवाय । बांध त कीडा डाढके, एक एक झर जाय ॥

कानकी लौर बढाना ।

सरसों ओंगा और कटेरी । दूध मिलावै इनमें छेरी ॥ लेप करै लौर पर जोई । लौर बडी ताही छिन होई ॥

दूसरी विधि ।

गजपीपल बच कूठ मँगावै । इनमें फिर असगंध मिलावै ॥ भैंस घीवमें लेय मिलाय । लेप करत कान बढजाय ॥

बहरापन दूर करना ।

काढा कर दसमूलका, लेवै तेल पकाय । डारत ही यह कानमें, बहरापन सब जाय ॥

दूसरी विधि ।

ओंगाकी जड लेय मंगाय । तामें मनसिल

देय मिलाय ॥ सहत संग जो बहरा खाय । सुनन लगै बहरापन जाय ॥

दृष्टि बढनेका उपाय ।

सुन्दर वर्षा ऋतु जब होय । लाय धरै जड़ सहित मकोय ॥ ताहि तेलमें लेय पकाय । एक मास नित प्रति यह खाय ॥ वाकी नजर तेजहो ऐसी । होय गिद्धकी ऐसी जैसी ॥

आंखका जल बंद होय ।

स्वेत सांठकी लाय जड़, घीमें लेय पिसाय ।
आंजत आंखन गुणकरै, टपकत जल रुक जाय॥

बाणी सुधारना ।

पीपल सोंठ बहेडा लाय । त्वक् अरु सेंधा नमक मँगाय ॥ गौमूत्रसंग पीस पियावै । किन्नर सम कलरव सों गावै ॥

दूसरी विधि

मिश्री सोंठ अरु सहत मिलाय । चाटै जो किन्नर सम गाय ॥

तीसरी विधि।

निर्गुण्डी जडको कर चूरन, तिलके तेल पकावै।
चाटै याहि अनोखी औषधि, कोकिलसम सो गावै।

तांबे पीतलको जलदी गलाना।

टाटर नमक और शोरा ये तीनों बराबर तो-
लमें लेकर बारीक पीसके चूर्णकरें और जिस
धातुको गलाना होवै उसको आगपर खूब तपा-
कर उस चूर्णमेंसे थोडासा डालें जो न गलै तो
और थोडी डालें जो इससे कुछ न हो तो थोडी
और डालें जब अच्छी तरह गल जाय तब लँगडी
बनावै यह धातु बहुत नरम और स्वच्छ निकलेगी
साढे बारह सेर धातुके लिये एक अखरोटकी बरा-
बर चूर्ण बहुत है॥

बालक कवि होवे।

बचकौ चूरन पीसकै, पियै दूधके संग। खीर
भातभोजन करै, कविता करै सुरंग (–इस मंत्रका
जपकरै–) "ओ३म् महेश्वरायनमः"

पथ्याघृत ।

पीपल हरडै सोंठ बच, सेंधा मिरच मिलाय । तोले तोले लेय सब, और सहँजना लाय ॥ बाइस तोले लेय घी, चौगुन दूध मिलाय । अग्नि चढाय पकाइयै, जबतक दूध जलाय ॥ जो नर पीवै नित्य यह, पावै बुद्धि अपार ॥ एक वार वह बात सुन, क्योंहुं नाहिं बिसार ॥

हाथकी बस्तु अदृष्ट होय ।

जंगलसे एक मोर ला, दो दिन खान न देय । फिर कीजै ऐसो जतन, तब अचरज लख लेय ॥ मनासिल अरु हरतालकूँ, गोघृतमें ले सान । गोली बांध चुगाइयै, रती रती परमान ॥ इहिं विधि बीते सात दिन, तब यह करै उपाय ॥ बींट करै दिन सातवें, रखिये जिन ढिग लाय ॥ जबै दिखावै खेल तब, लेप हाथमें लेय । करमें राखें जो कछू, फिर न दिखाई देय ॥

खेती नष्ट करना।

आर्द्राके नक्षत्रमें, रीछ हाडकौ टूक।
अरिके गाडै खेत जो, नाज न होवे चूक॥

मोतीको जिलादेनेकी विधि।

सज्जीखार, शोरा, सिंगरफ, चरबी, समन्द्रफेन, मनसिल इन सबको बराबरले चरबीमें पकावें जब झाग आनेलगै उस समय मोतीको उसमें फिरावें और साफ रुईमें पकडें अगर साफ हो तो अच्छा है नाहिं तौ दूसरी बार फिरानेसे साफ हो जायगा॥

हीरेकी परीक्षा।

हीरेके नगीनेके पुश्तपर थोडा मोम लगा दिया जावै जो हीरा असली होगा तो उसमें वैसी ही झलक मारती रहैगी और जो बनावटी होगा तौ झलक बंद हो जायगी॥

चांदीके गहनेमेंसेकालेदाग दूर करना।

क्लौरेड औफ लाइनमें थोडासा पानी मिलाकर कूंची या बुर्स से धोडालो,अच्छा चमकने लगैगा॥

जर्मनासिलवर बनानेकी विधि।

लोहा एक भाग, नैकिल दसभाग, शीसा दस भाग, तांबा बीस भाग, मिलाकर गलालो बहुत अच्छी जर्मनासिलवर बनजायगी॥

शत्रु भ्रमण करै।

दस अंगुलकी कील इक पीपल काठ बनाय।
अरिके घरमें गेरिये भ्रमें शत्रु दुख पाय॥

शत्रुकी मन्दाग्नि करना।

इमलीकी इक कीलले, अंगुल पांच प्रमान।
मृगासिर रिपुके घर धरे, अग्नि मन्द पडजाय॥

बशीकरण विधि।

सौ तंत्रनकौ तंत्र यह, बसीकरण मन राख। तन

मनसों बस कीजियै, बोली मीठी भाख ॥ पशुपक्षी आवन चलैं, सुनकैं मीटे बोल । देखत टेढी दृष्टिही, भगें बोल अनबोल ॥ जो सब गुनमें आगरौ, है यह नरके देह।केवल यह बस होतहै,सुनके बचन सनेह॥

जुआमें जीतना ।

हस्तनक्षत्तर होय रवि, तादिन करै उपाय । नौतै पेढ पंवाडको, दिन पहिलेही जाय ॥ रविदिन ताकूं लायकै बांध दाहिनी बांहिं । खेलै जुआ जो कोई, जीतै संशय नाहिं ॥

लढाई करना ।

कागपंख इक हाथ लै, दूजै घुग्घूपंख । मिला नोकसे नौक तब करै ,काम निःसंख ॥ डोरा काला बांधकै लेय हाथमें लेय । अरिके लैलै नाम तब,तर्पण कर जल देय । दिनांसात ऐसे करै, मंत्र जपै सौ-आठ । होय शत्रुघर कलह बहु, बिगडे सबरे ठाठ ॥

मंत्र।

ओंनमो महाभैरवाय श्मशानवासिने अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु कूं फट् ॥

बेडी कटें।

लालकमल जटामांसी लावै। लाय तुल्य किरकिटै खवावै ॥ ताकौ मलजाके जु लगावै। तुरत बन्ध बेडी खुल जावै ॥

प्रथम माससें गर्भ रक्षा।

प्रथममासमें जो कहीं, गर्भवेदना होय। खस चन्दन पदमाक सम, गौ पय पीवै सोय ॥ तीन दिना ऐसै करै, सब पीडा मिटजाय। गर्भ थमै इस जतनसे, है यह सहज उपाय ॥

द्वितीय माससें गर्भ रक्षा।

तिलकाले अरु पीपल छाल। मेल मजीठ सितावर हाल ॥ डार चौगुने दूध जु पीवै। गर्भ रुकै अरु बच्चा जीवै ॥

तृतीय मासमें गर्भ रक्षा।

क्षीरककोली लायकै, देय खरैटी देय।
दूध मिलाकर प्याइयै, गिरै गर्भ नहिं फेर॥

चतुर्थ मासमें गर्भ रक्षा।

नीलोफर अरु गोखरू, गेर कसेरु मृणाल॥
गौ पयके संग पीजियै, रुकै गर्भ तत्काल॥

पंचम मासमें गर्भ रक्षा।

सांठ ककोली अरु तगर, नीलोफरकूं लाय।
गौपयके संग पीजियै, गिरत गर्भ रुकजाय॥

छठे मासमें गर्भ रक्षा।

सीतल जलमें पीसियै, मिसरी खैर अरुसार।
गौ दूध संग पीजियै, पीडा सभी विचार॥

सातवें मासमें गर्भ रक्षा।

पोहकर मूल कसेरु अरु, नीलोफर सिंघाड।
पीस दूधसंग पीजियै, घटें रोग तज हाड॥

आठवें माममें गर्भ रक्षा ।

गजपीपल अरु मोथा लाय। लकडी ले पदमाख मिलाय ॥ तब नीलोफर लेय मँगवाय । डार कसेरू सब घुटवाय ॥ डार कसेरू पीवै जोय । अष्टममास न पीडा होय ॥

नवम माममें गर्भ रक्षा ।

क्षीर ककोली और गिलोय । तामें लेय निसोथ मिलोय ॥ डार मुरहटी पय औटावै । पीये पय पीडा मिट जावै ॥

दशम माममें गर्भ रक्षा ।

गौदूधमें सोंठकूं, डार लेय औटाय ।
रात समय यह पीजियै सब वेदन मिट जाय ॥

पसली और डबकाका इलाज ।

जा बालकके होय जो, डबकाकौ कहुं रोग। ताकौ कीजै जतन यह, मिटै दुःख अरु सोग । शनिदिन

ससे को रुधिर, गोली लीजै बांधि। जा बालकक्कूँ देहुगे, मिटिहै डबका व्याधि॥

मरे हुए दीखै।

रविदिन गधामूत लै आवै, बर्तन माहि कराइ। रातसमें आंखनमें आंजै, मरे जो देंहिं दिखाई॥

भरा घडा खाली दीखै।

रविकी मावस होय जब, चोंच हंसकी काट। रेखा तासों खेंचियें, जहँ पनघटकी बाट॥ घटभर पनघट सों चलै, लांख चलै जो लकीर। खाली सों दीखन लगै, ताकों घट बिन नीर॥ जो चालै फिर उलटकै, लांघै नहीं लकीर। भर्यौ घडा दखिन लगै, इन्द्रजालकौ तीर॥

काले अक्षर सफेद हों।

कच्चीस्याहीसों लिखै, कागज स्वेत मँगाय। काजल तापै रिगडियै, कागज कृष्ण दिखाय॥ फिर

जल छींटा दीजियै,स्याही जायउडाय । अक्षर चमकें स्वेत वे खेल सबै यह भाय ॥ जैसे कागजपै लिखो, अक्षर सोही रंग। दीखैगो अचरज यहै, पडै नेक नहिं भंग ॥

पारेकी भस्म करना ।

साफ पारा चार रतल, गंधकका तेजाब तीस आउन्स, नमक डेढ रतल, नोसादर आठ आउन्स पहिले दो रतल पारा कांचके बरतनमें ऐसिडके साथ डालें और बर्तनको गरम रेतीमें आधा गाड कर पानी सुखादेवें जब सूखजाय तब ठंढाकरके बाकीका दो रतल पारा उसमें मिलाकर खरलमें घोंट कजली बनावें फिर उसमें नमक मिलाकर खूब घोटें और लुगदी बनाकर डमरूयंत्रमें रखदें और उस यंत्रको आधा रेतीमें गाडकर ताव देनेसे नीचेकी शीशीमें उडकर ऊपरकी शीशीमें सफेद रंगका सत जा जमैगा उसको निकाल कूट छान

एक गैलन पानीमें नौसादरके संग भरकर अच्छी-तरह गरम करलो और फिर उसको चलाओ मत, जो गाद नीचे बैठजाय उसको निकालकर साफ पानीसे धोडालो और उसमें नौसादरका पानी डालकर देखो जो सफेदीमें कम हो तो सुखाकर खरलमें डाल पीस डालो और उसमें गरम पानी डालकर खूब हिलाओ फिर ऊपरसे मैले पानीको नितार डालो इसी तरह जबतक नीचे गाद जमती जाय तबतक किये जाओ। पीछे उसे सुखाकर बारीक पिसवा इसमें रसकपूरकी मिलावट रहती है जो इसका रंग चूनेकासा सफेद होजाय तो समझलो कि अच्छी भस्म होगई नहीं तो उसमें कुछ मिलावट समझ लो॥

हरताल बनानेकी विधि।

पारा एकभाग, नीलेथूथाका तेल दोभाग इन दोनोंको खरलमें घोटकर, बारीक कर लो और

गरम रेतके यंत्रमें रखकर आग दे सूखेपर गरम पा नीसे धोकर सुखालेवेंतौ पीली हरताल बनजायगी.

तलवारको जोहरदार करना।

तेजाबफारूक आठ तोले, और गरम पानी चाल रतल मिलाकर तलवारको ताव देकर उसमें बुझावें जोहरदार हो जायगी॥

किताबके किनारेपर सोनहरी छींटे।

संगमर्मरकी खरलमें साफ शहत एक आउन्स और एक दस्ता सुनहरी बरक डालकर घोटै जब अच्छी तरह मिल जाय तब उसमें पानी डालकर खूब घोटकर छोडदे जब पानी साफ होजावै तब उसे नितार डाले और फिर पानी डालकर, और घोटकर पानीको नितार डालै जबतक सब शहत न धुलजाय जबतक इसी तरह घोट घोटकर पानी निकालता रहै जब केवल सोना रहजाय तब उसमें

एक ग्रेन कौरोसिव सल्वीमेटको एक चमचाभर स्पिरिटि प्रौफबाइनमें पिघलाकर थोडा गोंदके पानीके साथ उस सौनेमें मिलादे और शीशीमें भरकर काकसे बन्दकरदे और किताबोंके किनारोंको गहरा काला या सब्ज या नीला या सुरख रंगदे पीछे उसपर सुनहरी पानीकी शीशीको हिलाकर जैसे चाहो छोटे या बडे छीटे देवें और सूखे पर मोहरेसे जिलादेवें और किनारोंको कागजसे छिपा रक्खें क्योंकि किनारोंपर गरदन न गिरने पावै इसके सिवाय दूसरी चीजोंपर भी यह सुनहरी पानी बहुत सुन्दर दिखलाई देताहै परन्तु कलम या ऊंटके बालोंके बुरससे उसके छीटेदेकर कुत्तेके दांतसे जिला करते हैं ॥

रातमें दिनके समान चांदना होय।

घुग्घूसिख हरताल लै, मनासिल लेयमिलाय।
कर गोली आजै दृगन, दिनसम रात दिखाय॥

सर्व वशीकरण तिलक।

तगर कूठ हरिताल अरु, केसर सब समलाय। लोहु गेर अनामिका, पीस त्यार करवाय ॥ माथेपै दीजै तिलक, जैयै जहँ चितआय। जोदेखै सो होय बस, है यह सुगम उपाय ॥

भूतादिक उतारनेका उतारा।

मंगल अथवा वाररवि, शनि अथवा भृगुवार अर्द्धरात्रिपै यह करै, तौ दीजै भूत उतार ॥ चौसठ दियै लाइकै, मट्टीके बनवाय। कूंडेमें धरके तिन्है, लीजे उन्है जलाय ॥ बीचमांहिं भरदीजियै, चांवलकौ करभात। बूरौ लाल जु डारियै, लोंग जु धारियै सात ॥ लड्डूनुकतीचूरको, अरु बकराको मांस। बडी इलाची दोय धर, चन्दनकी इक फांस। ताके ऊपर डारियै, उत्तम सिंदूर मंगाय। चौमुख दीपक चूनकौ, तापै धरै जलाय ॥ उत्तम एक मँगाइयै, फूल चमेलीहार। लाल-

गुलाबी फूलहू,तामें दीजै डार॥ चार फुरैरी अतरकी, चारों कौने गाड । जतन पूर्वक कीजियै, कोई लेय न ताड ॥ आधी रात निखंडपै, लीजै त्यार कराय। रोगीकूं चेतायकै दीजै ताहि दिखाय ॥ इक्कीसवार उसारियै,रोगी ऊपर ताहि।ताही छिन जल दीजियै, पीछै मुडिये नांहिं ॥ ऐसे यह लै जायकै, नदीकिनारे राख। चुप चाप घर आइयै,काहूसों नहिं भाख। भूत प्रेत अरु डाकिनी, जिंद चुडैल मसान। ताही छिन भगजायहै ,लीजै सांच जु मान ॥

कटेरी खाना।

जंगलकी एक बड पतिया नामकी बूँटी पहिले चबालो फिर कटेरीको चबालौ तौ न कडवी मालूम होगी न कांठे नुकसान पहुँचायेंगे ॥

बोतलमें अक्षर लिखना।

एक सफेद कांचकी बोतलमें गोंद और कतीरे

का पानी भरकर चारों ओरसे तर कर लो जिससे भीतरकी ओर सब बोतल चेपदार होजाय फिर एक सफेद कागजपर थोडासा लिखकर उसके टुकडे २ करके बोतलके भीतर उतारकर तरकीबवार चिपकादो तो देखनेवालोंको ऐसा मालूम होगा कि किसीने बोतलके भीतर अक्षर लिख दिये हैं।

बोतलमें दर्पण उतारना।

अबरखका एक चौखुंटा टुकडा लेकर उसकी एक ओर दर्पणकी तरह कलई कर लो और एक उतनाही लम्बा चौडा कागज चिपकाकर बोतलके भीतर उतार दो तौ दर्पणसा दिखलाई देने लगैगा॥

बोतलमें पृथ्वी, समुद्र, हवा और आकाश।

एक सफेद बोतलमें कई रंगके कांचके छोटे २ टुकडे तीन चार अंगुल तक भरदो, उसके ऊपर

नीले रंगका पानी उसपर मिट्टीका तेल और उसपर गंधकका नीला तेजाब भरदो इनके चारों रंग अलग अलग चमकेंगे सबके नीचे वाले कांचके टुकडे पृथ्वीके समान, नीलापानी समुद्रके समान मिट्टी का तेल हवा और तेजाब आकाशके समान चमकैगा ॥

वृक्षके पत्तोपर दीप दान।

राल एक तोले लोहचूर्ण दो तोले, गंधक एक तोला कपूर छःमासे इन सबको पीसकर एक कपडेकी पोटलीमें बांध एक ऊंचे वृक्षकी सबसे ऊंची डालीपर बांधकर आग लगादो तब ज्यों ज्यों हवा चलैगी त्यों त्यों उसमेंसे चिनगारी निकलकर प्रत्येक पत्तेपर जमजायगी और यह मालूम होने लगैगा कि प्रत्येक पत्तेपर किसीसे दीपदान किया है यह खेल रातके समयका है ॥

नीमके पत्तोंका मीठा होना।

अजवायनकूं चाबकै, पत्ता नीम जु खाय।
ते कडवे लागें नहीं, है यह सहज उपाय॥

बिना कल चांदीका मुलम्मा।

दो तोले नाईट्रेट सिलवरको सेरभर पानीमें गलादो जब गलजावै तब उसमें हाईपोसल फिट डालदो जब यहभी गल जावै तब उस पानीमें स्पंज भिगोकर जिस चीजपर गिलट करना हो खूब रिगडौ थोडी देरमें बहुत अच्छा चांदीका मुलम्मा हो जायगा॥

शब्दयुक्त गिल्ला बनाना।

एक कागजमें थोडी बारूद चांदीकी और मूँगके बराबर थोडेसे कांचके टुकडे डालकर गोली बनालो और उसपर गीलीमट्टी लपेटकर धूपमें सुखालो जब तुम गुलेलपर रखकर गिल्लेको चलाओगे या जमीनपर मारोगे तो लगतेही बन्दूकके समान शब्द होगा॥

एकगोली और दो अवाज।

शीशेकी एक गोली लेकर उसे भीतरसे पोली करलो फिर उसमें चांदीकी बारूद भरके लकडीकी डाट लगादो फिर जैसे बन्दूकमें गोली भरकर चलाये करतेहैं उसी रीतिसे उस गोलीको भरकर चलाओ तौ एक अवाज मामूली गोली चलते समयकी होगी और दूसरी आवाज गोलीके निशाने पर लगनेके पीछे होगी ॥

काजलकी विधि।

चीडकी लकडीमें आग लगाकर उसके ऊपर थोडासा मिट्टीका तेल डालदो जब धूँआं बहुत उठने लगै तब उसको ऐसी रीतिसे ढकदो कि धूँवां न निकलने पावै थोडी देरमें बहुत उत्तम काजल बन जायगा ॥

नीला रंग।

अंग्रेजी नील एक तोला, सफेदा तीन मासे,

गोंद तीन मासे, सबको मिलाकर पीसलो नीला रंग बन जायगा ॥

हरा रंग ।

नील अंग्रेजी एक तोला, सारारेवन्द एक तोला; सफेदा तीन मासे, हारसिंगारका पानी छटांकभर, गोंद छः मासे इन सबको मिलाकर पीसनेसे हरारंग बन जायगा ॥

सुरख रंग बदलना ।

सिंदूर दो तोले, गिलैअरमनी नौमासे, सफेदा तीन मासे, गोंद छः मासे. इन सबको पीसनेसे सुरख रंग बन जायगा ॥

लाजवर्दी रंग ।

लाजवर्द एक तोला, नील तीन मासे, सफेदा चार मासे, गोंद तीन मासे इन सबको मिलाकर महीन पीसनेसे अच्छा लाजवर्दी रंग बन जायगा ॥

तलवारपर नाम लिखना।

प्रथम तलवारको अच्छी तरह साफ करलो फिर मोमको पिघलाकर उसपर अक्षर लिखो जब अक्षर सूखजांय तब नीला थोथा बारीक पीसकर और नींबूका अरक दोनों अक्षरोंपर डालदो तो थोडीदेरमें अक्षर दिखाई देने लगेंगे ॥

लोपांजन ।

हड्डी बन्दर मोरकी, महिषी घृत पकवाय ।
पीस आंजियै आंखमें, हो अदृश्य वह जाय ॥

उशवाकासार ।

साढे तीन पाउण्ड सारसापरिला ३ गैलन साफ किये हुए पानीमें गरम करै जब १२ पिंक रहजाय तौ उतारकर छान लियेहुए सारसाको २ गैलन पानीके साथ औटावै जब आधा रहजाय तब छानले और दोनोंको मिलादे और गरम करै जब १८

आउन्स रहजाय तब उतारकर ठंढा करले,और २ आउन्स साफ की हुई स्पिरिट मिलादे ॥

धनकेखजानेसे सांप हटाना।

गिरिकर्णी अरु लाय चमेली । स्वेत आक तामें ले मेली ॥ मूली बच अरु लाय कटेरी । सबकूँ पीस कीजिये ढेरी॥पांवन लेप जु करकै जाय । सांप यक्ष सब जांय पलाय ॥ विनारोक ले आउ खजाना। हीरा अरु सुवरण मनमाना ॥

धातके पात्रोंपर अक्षर लिखनेकीविधि।

किसी धातके जिस पात्रपर अक्षर लिखने हों उसको अच्छी रीतिसे साफ करके जिला करलो, और मोमको पिघलाकर पतली पतली तह उस पर चढादो जब मोम जमजाय तब बहुत अच्छे अक्षर मोमकी तहतक खोददो अर्थात् मोममें होकर पात्र चमकने लगै जहां वे अक्षर बनाये गये हैं और मोम

हटाया गयाहै उसमें शोरेका तेजाब भर दो और ऐसा जतन करदो कि तेजाब फैलने न पावै यह काम करनेसे दो पहर पीछै मोमको हटाकर उस जगहको पोंछ डालो तो खुदे हुए सुन्दर अक्षर जैसे लिखे थे वैसेही निकल आवेंगे ॥

रक्तगुञ्जाकल्प ।

॥ दोहा ॥

गुंजाकी गति कहत हौं, कौतुक चरित अपार । गौरीते शिव कहत हैं, सर्व कल्पको सार ॥ १ ॥ मारण तारण वसकरण, राजा मोहन अंग । उच्चाठन इह करत हैं, बचन सिद्ध दल भंग ॥ २ ॥ भूत प्रेत ग्रह डाकिनी, यक्ष वीर वेताल । गुंजाकी जड के सुनों, कौतुक माया जाल ॥ ३ ॥ बहुत चरित अगणित कहे, सकल सिद्धकी खान । जो चाहै सोई करै, साधनके वरदान ॥ ४ ॥ शिव आनन्द यह, गुंजहै, जुगत गुप्त अरु ज्ञान । या सतगुरु सा-

भेद लखि, साधौ संत सुजान ॥ ५ ॥ अब याकौ साधन कह्यौ, यथा योग्य उपदेश । जो साधै सो सिद्ध है, कसर नाहिं लवलेश ॥ ६ ॥ पुष्य होय आदित्यकूँ, जब लीजै यह मूल । शुक्रवारी रोहिणी, ग्रहण मोय अनुकूल ॥ ७ ॥ कृष्णपक्षकी अष्टमी, हस्त नक्षत्रजु होय ॥ चौदस स्वाती सतभिषा, पून्यौकूँ ले सोय ॥ ८ ॥ अर्द्धनिसा कारज करै, मनकी संज्ञा खोय । धूप दीप कर लाइयै, धरै दूधसों धोय ॥ ९ ॥ जो काहू, नरनारिकूँ विष कोईकौ होय । विष उतरै सब तुरतही, जडी पिलावै धोय ॥ १० ॥ जो घिस लावै भालमें, सभामध्य नर जाय । मान मिलै अस्तुति करै, सबही पूजैं पाय ॥ ११ ॥ हांजी हांजी सब करें, जो वह कहै सुसांच । एक जडीकी जुगतिसूं, सबै न चावै नाच ॥ १२ ॥ तांबेमूल मढायकै, बांधै कटिसूं सोय । नवें मास वा नारकै, निहचै बेटा

होय ॥ १३ ॥ ऋतुवंतीसों रक्तसों, अंजन आंजै कोय । देखत भाजै सैन सब, महाभयानक होय ॥ ॥ १४ ॥ कारजहूं घिसि आंजियै, मोहै सब संसार । गाली देदे ताडियै, तऊ लगा रह लार ॥ १५ ॥ मधुसूं अंजन आंजियै, देखै वीर वेताल । जोर मँगावै वस्तुकूं, लै आवै सोहाल ॥ १६ ॥ जो घिसकै लेपन करै, दूधसंग सब अंग । भूत प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥ १७ ॥ घिसके रुई लगाइयै, बाती धरै बनाय । फेर भिजावै तैलमें, दीपक देय जलाय ॥ १८ ॥ करौ अचंभौ सबनमें, घर मसान दरसाय । सातमहलके बीचसूं, लावै पलंग उठाय ॥ १९ ॥ जो घृतमें घिसकै करै, लेप मूत्रनर ताय । भोग शक्ति बाढै अमित, मन बहु मोद बढाय ॥ २० ॥ अजामूत्रमें रिगडकै, वेंदी देजो हात । करै दूरकी बात वो, रहै जक्षिणी सात ॥ २१ ॥ गोरोचनके संग घिस, लिखियै जाकौ

नाम ॥ मृत्यु होय वाकी तुरत, नहीं वैरकौ काम ॥ ॥ २२ ॥ लिंगपत्रके अर्कसूं, घिसियै केवलनाय । भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखतही नस जाय ॥२३॥ स्याउ संग वा रिगडकै, तलुआतलै लगाय । आंख मीचकै पलकमें, सहस्रकोस उड जाय ॥२४॥ जो घिस आँजै पीसकै, बंदी छोड कहाय । बंदि पडे छूटें सभी, विनही कियै उपाय ॥ २५ ॥ जो गुलाब संग याहि घिस, नाडी लेप कराय ॥ घडी चारकूँ जीपरै, मुरदा सहज सुभाय ॥ २६ ॥ फेर अंकोलके तेलमें, घिसकै आंजै कोय । धन दीखै पातालकौ, दिव्य दृष्ट जो होय ॥ २७ ॥ जो वाघिनके दूधमें, घिस चुपरै सब अंग । सर्व शस्त्र लागें नहीं बदकर जीतै जंग ॥ २८ ॥ घिसकै तिलके तेलमें, मर्दन करै शरीर । दीखै सब संसारकूँ, महावीर रणधीर ॥ २९ ॥ जो अलसीके तेलमें, घिसियै सहत मिलाय ॥ कोढीके लेपन करै; कंचन तन

हो जाय ॥ ३० ॥ जो कोई संसारमें, अंधाआंजै कोय। सात दिवस भर आंजियै, दृष्टि चौगुनी होय ॥ ३१ ॥ स्यामनगद संग रिगडकै, वीसों नख लिपटाय। जो नर होय कुमारगी, देखत बस हो जाय ॥ ३२ ॥ कस्तूरीसूं आंजियै प्रातसमें लौ-लाय। मोतजु लखियै सबनकी, काल पुरुष दर-साय ॥ ३३ ॥ गंगाजल सूं आंजियै, दोनों नेत्र जुमांहिं। वरषा बरसै भूलकी, यामें संशय नाहिं ॥ ॥ ३४ ॥ जो आंजै निजरक्तसूँ, भरके दोऊ कोय। देखै तीनौ लोककूँ, अपनी आंखन सोय ॥ ३५ ॥ जो आंजै निजमूत्रसूं, खुलै रागनी राग। जो घिसपीवै दूधसूं, होय सिद्धसो भाग ॥ ३६ ॥ रक्त गुंजा यह कल्प है, सूक्षम कह्यौ बनाय। जो साधै सो सिद्धहो, यामें संशय नाय ॥ ३७ ॥

इतिरक्तगुंजाकल्पसमाप्तम्।

सोनेको सफेद करना।

शोरा दो आउन्स, फिटकरी एक आउन्स, नमक एक आउन्स इन सबको महीन पीसकर मिलालो और जिस सोनेको सफेद करना हो उसे पानीमें भिगोकर ऊपर लिखें हुए चूर्णमें लुढावें पीछे मूस अथवा मट्टीका ठीकरा लेकर लाल गरम करलो और उसके ऊपर उस सौनेको चिमटेसे पकडे रहो जबतक लगे हुए चूर्णका पानी सूखै तब उसको दूसरी ओर फिराओ जब सब सूख जाय तब सौना जरद रंगकासा दिखलाई देगा उसको साफ ईठपर रखकर ठंडा करलो। फिर एक वडी मूस लेकर उसमें साफ पानी एकमुठ्ठी पिसाहुआ नमक, और पिसा हुआ टारटर डालकर आठसात बूँद नौसादरके तेजाबकी टपकादो और जोश देकर सोनेको उसमें उससमय तक डाल रक्खो जबतक वह सफेद नहो. फिर उसको बाहर निकाल कुँचीसे धो धो कर साफ करलो ॥

नजर दूर करना।

बालककूँ लागै नजर तौ कीजै यह बात। लाल मिरच तब तीनले बार उसारौ सात। जलते चूल्हे झोंकियै धांस उठैगी नाहिं। नजर कुजर मिटजायगी ताही छिनके माहिं॥

मेंडक पैदा करना।

भादोंमें रविवारको पीला मेंडक लाय। उसके माथे दहीका दीजै तिलक लगाय। धूनी गूगल ताहिदै हँडियामें भरवाय। रखियै अपनेपासमें सूखेपै पिसवाय॥ बरसाऋतु आवै जबै बरसन लागै नीर। थोडीसी वह राखलै गेरौ जलके तीर। दो घंटाके बीचमें अद्भुत दीखे खेल॥ लाखन डोलें मेंडका मचे रेल अरु पेल॥

हथियारोंको काई न लगै।

पित्ता मुरगी लायके अंडी तेल मिलाय। हथियारन पै दीजिये इसको लेप लगाय॥ फिर

इनकूँ उठायके धरदीजै इकठौर । बिनाबुझा बिछवाइयै चूना चारों और । कैसीही बरसातहो लोहा जंग न खाय । रहें चमकते शस्त्रसब है यह सहज उपाय ॥

लडके और लडकियोंकीगिन्तीबताना

अगर कोई मनुष्य यह पूछै कि मेरे कै लडके और कै लडकियां है तौ उससे कहो कि जितने तेरे लडके हैं उनको दूना करके पांचसे गुणाकरदो और गुणनफलमें जितनी लडाकियां हैं जोडदो जब वह ऐसा करचुकै तब जुडाहुआ अंक उससे पूंछलो जो इकाईकी ओरका अंकहै उतने लडकियां और जो दहाईकी ओर हैं उतने लडके हैं ॥

पिस्सुओंका मारना ।

रातके समय एक पीतलके बर्तनमें पानी भरकर एक बूँद सरसोंका तेल और एक बूँद मट्टीका तेल

डालकर खाटके नीचे रखदो प्रातःकाल हजारों पिस्सू मरे हुए उसमें मिलैंगे ॥

रुमालका अंडा बनाना ।

मिट्टी या लकडीके दो अंडे एकसे बनवाओ जिनमेंसे एक पोला और दूसरा ठोसहो फिर दो रुमाल सुरख रंगे हुए बहुत महीन कपडेके ऐसे बनवाओ जो उस पोले अंडेके भीतर अलग २ घुस जावें इस रीतिसे सब सामान इकट्ठा करके एक रुमाल हाथमें लेलो और उसके नीचे पोला अंडा छुपालो और दूसरा जेबमें डाललो हाथवाले रुमालको जिसके नीचे पोला अंडा छिपा हुआहै और ठोस अंडेको तमाशगीरोंको दिखलाओ और कहो कि अब रूमालका अंडा बनता है यह कहकर ठोस अंडेको जेबमें डाललो और पोले अंडेके भीतर किसी न किसी रीतिसे हाथवाले रूमालको घुसेडकर दिखलाओ कि अंडा बनगया फिर दूसरी जेबमें रूमाल निकालकर दिखलादो ॥

जस्तेके समान लोहेको जलदी गलाना

ईसपातका एक टुकडा लेकर आगमें सुरख करलो और फिर उसको चींमटेसे पकडकर एक हाथमें थामलो दूसरे हाथमें गंधक लेलो और उस गरम ईसपातके लगा दो। लगातेही ईसपात पानीके सदृश गलकर गिरपडैगा ॥

पानीमें आगकी गेंद ।

एक बोतलमें पावभर पानीभरकर उसमें तीसदाने फस्फरसके डालदो और उस बोतलको दीपककी लोहपर रखकर गरम करलो तब पानीमेंसे आगकी गेंदसी निकलने लगेंगी जैसा कि आतशबाजीमें हुआ करताहै और उसमेंसे ऐशी चमकभी निकलैगी जिसमें मन प्रसन्न होगा ॥

सांप निकनेका उपाय ।

घरमें निकसै सांप जो फिर वह बिल घुसजाय। बारहासिंहा सींगलै दीजै तहां जलाय ॥ धूंआंके संग

गंध जब ज्यों ज्यों फैलै जाय। तितौ तितौ ही सांपहू दूर भागकै जाय॥

रेशम वस्त्रसे चिकनाई दूर करना।

पड चिकनाई जाय जो वस्त्ररेशमी मांहिं।
बुरकतही मगनेशिया स्वच्छ होय छिन मांहिं॥

दूधकी पहचान।

मोजे बुननेकी सुईकी नोक दूधके पात्रमें बोरदो जो दूध निखालिस है तौ दूधकी बूँद सुई की नौकसे चिपटी रहैगी और जो कुछभी पानी मिलाहोगा तौ बूँद ढलक पडैगी॥

मकानकी दुर्गन्ध दूर करना।

जिस मकानमें दुर्गंध भरगईहो उसके किवाँड खोलकर चौपट करदो फिर एक लोहेके पात्रको बहुत गरम करके उसपर एक बूँद सिरकाकी डालदो तत्काल दुर्गंध दूर होजायगी॥

वस्त्रसे चर्बीका दाग दूर करना।

लिकर ऐमोनिया, ईथर और ऐलकोहल इन तीनोंको समान लेकर मिलालो, कपडेके दागके नीचे ब्लाटिंगपेपर लगादो फिर इस्पंज (बादली) के टुकडेको इन तीनों चीजोंसे तर करके उसपर फेरो, चरबी पिघलजायगी और नीचेका कागज उसे सोख लेगा ॥

गुलदस्तेको कईदिनतक हरा करना।

फूलोंका एक गुलदस्ता बनालो और पानीमें कार्बोनेट औफ सोडा मिलाकर छिडकते रहो बहुत दिनतक वैसाका वैसाही बना रहैगा ॥

पानीका अवगुण दूर करना।

पीस फिटकरी डारियै, भरेघडा बिच आय।
पानी निर्मल होयगो, अवगुण दूर बहाय ॥

मच्छर दूर करनेका सहज उपाय।

जादिन मच्छर रातकूं, अधिक दुःखदें आय।

तेल लौंगको खाट पै, छिडकत जाँय पलाय ॥

हिचकी दूर करना ।

पानी चार छटांकलै, राई मासे चार। करौ गुन-गुनी आगपर, पीस छान तैयार ॥ जिसको हिचकी रोगहो, दीजै उसे पिलाय। ततछिन हिचकी बंदहो, नींद जायगी आय ॥

आगसे जलेकी दवा ।

चूना पानी मट्टी तेल, इन दोनोंको लीजै मेल। आगन जलेपर देय लगाय, ताही छिन ठंडक पडजाय ॥

अँधेरेमें बिना दीपक उजाला ।

शीशीमें भरदीजियै, लौंग अरक मंगवाय। फास्फरस पुनि गेरकै, दीजै डाट लगाय। सीसीको मुख खोलियै, अंधियारे घरमाहिं। दीपक समहो चांदना, यामें संशय नाहिं ॥

बादलकी दूरी जानना ।

बिजलीकी चमकके साथ अपनी नाडीपर हाथ धरियै और फिर बादल गरजने तक गिनते जाइयै कि नाडी कितनी बार चली बिजलीकी चमकसे बादलकी गरजतक जितनी बार नाडी चलती है उसके आधी मीलपर बादल होता है जैसें नाडी अगर दसबार चलै तौ बादल पांच मीलपर होता है ॥

संखियाका विष दूर करना ।

खाय संखिया चढै नसा, जो यह उपाय कर लीजै ।
पीस छाल गूलरकी जडकी, पानी संग पीलीजै ॥

आकर्षण ।

होलीके दिन नौते होली, ताकी लकडी लावै ।
धोबीके भट्टीमें जाकै, चुपकै जाहि जलावै ॥ हस्त नक्षत्र पीस कूटकै, अपने ढिंग धर राखै । आवै चल्यों संगमें लाग्यो, जाके सिरपर नाखै ॥

मरा मैंडक बोले।

कातिक मांहिं दिवालीके, दिन मगजो मैंडक लावै। पाराभर नींबूरस डारै, फिर पृथ्वीमें दाबै॥ महिना पीछै ताहि निकारै, करै तमासा भारी। फुदक फुदक इत वितकुं डोलै, टरटर करै जुन्यारी॥

चार कोसकी बात सुनै।

बीट गिद्धकी लायकै, तासम पीपर डारी। माल काँगनी छालजु, नींबू पीसछानकर त्यारी॥ धरकै ताहि पतालयंत्रमें, खेंच अरक पुनि लीजै। गेर कानमें योजनभरकी, ततछिन बात सुनीजै॥

स्वप्नमें प्रश्न मिलाना।

बनमें काही वृक्षपै, रूपारेल जु हो। ताका फेरासातलै. लकडी लावै सोय॥ लकडी लाय धूप दै ताकौ, दीजै आगलगाई॥ कोलाधर सिरहाने ताकै, सोऔ कर विचार मनभाई॥ जैसी हो होतव्यता, तैसी दीखै आय। जो जो सांची होयसो, सुपनेमें दरसाय॥

आऊत्तपितृको दोष मिटै।

होय मूल नक्षत्र जब, मूल ताड मँगवाय।
ऊत्त पितरके दोष सब, लावतही मिटजाय॥

थानगलै।

होय सतभिषा जब रविवार। शीशौ तोलै लावै चार॥ एक कटोरी लेय बनाय। खांड बाजरो चून भराय॥ ताकूं गाडै धरती मांहिं। दिनातीस पीछैलै आहिं॥ गाडै घरमें याकू जाय। कपडा बुकचा सब गलजाय॥

कपूरकी माला।

हंडिया भरैकपूर पुनि, चूल्हे देय चढाय। ढांक-कटोरा ऊपर ताके, जल दीजै भरवाय॥ नीचै मंदी आगदै, लेय ताहि पिघलाय। सांचो एक बनायके, ताहि लेय ढलवाय॥ गोल गोल दाने बनै, तिनमें करिये छेद। डोरा पो गल बांधियै, नष्ट होय सब खेद॥

कस्तूरी बनानेकी विधि।

एक तोला कस्तूरी मँगाकर उसमें उतनीही बांसकी पोई मिलाले फिर इन दोनोंको मोथेके पाव-भर रसमें आगपर चढाकर औटाले फिर इसमें एक तोले बबूलका गोंद और एक तोले कुटकी मिला-कर खरल करले जब रिगडते २ गाढी होजाय तब निकाल लो यह श्यामरंगकी कस्तूरी बनजायगी ॥

केशरबनानेकी विधि।

मोठोंको पानीमें भिगोकर पहर भर पीछे एक कपडेमें बांधदे जब उसमें कुला फूट आवै तब उनको छायामें सुखादो ऐसा करनेसे मोठके कुले झडपडैंगे उन सबको अलग करके अपने पास रख ले। फिर केसूके फूलोंके रसमें सज्जीखार मिलाकर उन कुलोंको उसमें डालदे दो महीने पीछै निका लै उमदा केसर होजायगी ॥

आधाशीशीजाय ।

घीव गायकौ लायकै, सोरा लेय मिलाय ।
सूंघतही सब दुखमिटै, आधाशीशी जाय ॥

बवासीरका इलाज ।

पीस तमाखू चूने माहीं, ताकी धूनी दीजै ।
मस्से मिटैं दुःखसब नासैं, फिर हरिसुमरन कीजै॥

मुखकी झांई दूर होय ।

आंबा हलदी सेंधानौन । रसनीबूका मेलौ तौन ॥
मुखके ऊपर लेप करीजै । छाया झांई दूर करीजै ॥

गर्भस्त्रावकी विधि ।

अंडी जडकूं लायकै, नौ अंगुल परमान ।
गंधक लेप जु भगधरै, होय गर्भकी हानि ॥

सीसाका रस उडै ।

पीली कौडी भस्मकर, राखै अपनेपास । करै अनौखौ खेल यह सबके, हिये हुलास ॥ सीसा एक

मंगाइयै, नींबूरस भरवाय। भस्म डार उंगलीसों, ढांकै देखत रस उडजाय॥

चिमनी धुंएसे काली न होय।

बत्तीको सिरकेमें भिजोकर सुखालो और फिर लैम्पमें जलाओ चिमनी काली न होगी॥

लडका या लडकी होनेकी पहचान।

गर्भवतीका हृदय जो एकमिनटमें एकसौ चवालीस बार धडकै तौ कन्या होगी और जौ एकसौ चौबीस बार धडकै तौ पुत्र होगा यह विधि गर्भके पूरे दिनोमें करनी चाहियै॥

पानी साफ करना।

घडेके भीतर निर्मलीके बीज पीसकर रिगड दो फिर उसमें कैसाही मैला पानी भरदो थोडीदेरसे निर्मल होजायगा॥

सर्पके काटनेका इलाज।

क्लोराईड औफ गोल्ड सौल्यूशन को सांपके

काटनेके घावके चारों ओर खालके भीतर भरदो तौ विष असर न करैगा ॥

सांखियाका दर्प नाशक।

खांड और मैगनेशिया मिलाकर देनेसे संखियाका विष दूर होजाता है ॥

मुखसे प्याजकी दुर्गन्ध दूर करना।

प्याज खानेके पीछे सिरका और अजमोदको मिलाकर पीनेसे मुखकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥

दूसरा उपाय।

काले कहवेका एक प्याला पीलैनेसेभी प्याजकी दुर्गन्ध नष्ट होतीहै ॥

गर्भ रहनेकी विधि।

गर्भरहै नहिं नारिकै, सो यह करै उपाय।
कारी बिल्लीको रुधिर, योनिमें ले लगवाय ॥

शराबका नशा उतारना ।

मूली अरुले फिटकरी, घिस जलमें दे प्याय ।
मिटै नशा तत्काल ही, है यह सुगम उपाय ॥

मुर्गा लडैं ।

इक मुर्गाकी आंखमें, चुम्बक पीस अंजाय । दूजे कुक्कुट आंखमें, लोहचून लगाय ॥ फिर छोडै मैदानमें करैं लडाई घोर । नहीं हटायेसे हटैं, हटैं घटे पैं जोर ॥

जाडेका ज्वरजाय ।

काली मिरच जु हींगलै, मक्खी सिर मिलवाय ।
आंज आंखमें लीजिये, ज्वर जाडौ मिटजाय ॥

बिना जामन दूधजमै ।

तालमखाने पीसकै, दीजै दूध मिलाय ।
दही जमैं जामन बिना, अद्भुत यही उपाय ॥

रातमें भय न लगै ।

पेटी लिरिया चामकी, बांध कमरमें लेय । जहँ चाहै निशि डोलिये, भय न ताहि कछु देय ॥

भोजन करता हंसै ।

शनि अथवा रविवारकूं, गधालोटकी धूल ।
भोजन थालीतर धरै, पेट हंसीसे फूल ॥

अफीम बनानेकी विधि ।

सेरभर पोस्तको पानीमें भिजोकर महीन पीसले और कपडेमें छानले फिर इसमें आध पाव कुचला, आधसेर ऐलुआ इन सबको पीसकर एक कोरे कूंडेमें भरदेवै फिर गोंदको अलसीके तेलमें मिलाकर उसमें मिलादेवे ऊपरसे गोभीके पत्तोंको पीसकर बुरका देवै ऐसा करनेसे अफीम बनजायगी ॥

बादामके सकर पारे ।

मैदा सेरभर, घी पावभर, बादामकी गिरी आधपाव, बूरा सवासेर, मलाई पावभर, दूध सेर भर , इसमेंसे डेढ छटांक घी, सब मैदा, और पिसीहुई बादामगिरी ये तीनों वस्तु मिलाकर म-

लाई डालकर दूधसे माँडले फिर इनके शकरपारे बनाकर घीमें उतार लेवै, और बूरेकी चासनी करके उसमें छोडदे मीठे सकरपारे बनजांयगे ॥

अपने आप हुक्का गुड गुड करै ।

मिट्टीका हुक्का मंगवाकर उसमें बिनबुझा चूना भरदेवै उसमें आंख बचाकर नीबूका रस भरदेवै परन्तु नींबूका रस नैकेद्वारा भरै और चिलममें आग भरकर हुक्कापर रखदेवै उसके ऊपर चमेलीके फूलोंकीमाला पहनादेवै हुक्का गुडगुड करने लगैगा

स्त्री कपडे होय ।

रविदिन कौआकी चोंच लायकै ताकूं धूनी दीजै । जो लांघैगी स्त्री वाकूँ सोई रुधिरमें भीजै । फेर चोंच धोके जो प्यावै तभी रुधिर थमजावै । इन्द्रजालका खेल अनोखा मन सबके यह भावै ॥

बर्तनको सुनहरी करना ।

नींबूरस अरु कहरुवा, गधामूत्र घिसवाय ।
जा बर्तन पै लेपियै, सो सुवरन दरसाय ॥

फूलप्रश्न।

नंबर १ चक्र.

अकवन	गुलाव	सेमर	हथकंद
दहवर्गा	गुलवदा	नागेश्वर	वेली
अडहुल	सेवती	करना	जुही
केवडा	केतकी	पांडर	कोई

नंबर २ चक्र.

गुला बवा	सेमर	रूप मंजरी	हथकंदर
इसकपे.	गुला वदा	जटा धारी	कोई
चमेली	सेवती	कनईल	जुही
चम्पा	केतकी	कंवल	वेली

नंबर ४ चक्र.

परास	जटा धारी	चमेली	सूर्य मुखी
रूपमं जरी	कनईल	नागेश्वर	वेली
पांडर	रुसा	करना	जुही
सिंगार	गुलाब	कोई	हथ कंदर

नंबर ८ चक्र.

रुसा	जुही	गुलाब	हथ कंदर
करना	सेवती	रूपमं जरी	सेमर
गुल वदा	चम्पा	अकवन	चमेली
सिंगार	दह वर्गा	दुप हरिया	कुसुम

नंबर. १६ चक्र.

मालती	नागेश्वर	जटा धारी	कोई
सूर्य मुखी	इसक पेच	गुला बदा	रूप मंजरी
अडहुल	रुसा	गुलाब	सेमर
कुसुम	अकवन	गुला बदा	हथ कंदर

एक, दो, चार आठ और सोलह इन नम्बरोंसे फूलका पता लगता है, जिन जिन चक्रोंमें वह फूल है उन चक्रोंके अंकोंको जोड कर उसी नम्बरका दोहा पढै फूलका पता लग जायगा ॥

१ केवला ।

दोहा–पुरविल प्रीतमजानके, तनमनजीवनदीन ।
जोवन धन अस केवला, सबैनिछावरकीन ॥

२ कंबल ।

दोहा–विरह दगध तनदेतहै, साहिना सकै शरीर ।
सदिन सकै उठि २ तकै, कंबल ढरै जसनीर ॥

३ केतकी ।

दोहा–बान विरहके ऐसखी, जेहि लागै सोजान ।
केतकी धीरजमैं धरी, छिन २ निकसे प्राण ॥

४ परास।

दो०-आप भला तो जग भला, चित जिन करो उदास
परास समैं नारी सुनौ, राखो पियपर आस॥

५ पांडर।

दोहा-रात गँवाई सोयके, दिवस गँवायो रोय।
पिय विनतन पांडरभई, सो नींद कहांसे होय॥

६ कनईल।

दो०-जादिन प्रीतम आय हैं, सैंदुर पहिरौं भरमांग।
घरघर रंग मजीठका, चीर कनईली राग॥

७ वेली।

दो०-प्रीत पिया मोहि है गए, और दीन कछु थोर।
अकेली वेली निहारती, चितवती पियाकी ओर॥

८ दुपहरिया।

दोहा-कन्तासिधारे ऐसखी, तिलतिल दहै शरीर।
जीवन वैरी दुपहरिया, नयन ढरै जसनीर॥

९ दहवरगा।

दोहा–जबते प्रीतम तजगए, तबते कछु न सुहाय।
विरहादै दहवर्गा गये, काहि पुकारौं जाय॥

१० चम्पा।

दोहा–अचरज देखौ ऐ सखी, प्रीत कही नहिं जाय।
चम्पा चटक दिखायकै, मधुकर रहा लुभाय॥

११ सेवती।

दो०-हम अबला अति दुखितहैं, पिछली प्रीत सुजान
चरणशंभु सेवती रहौ, कंतमिलै मोहिं आन॥

१२ सिंगारहार।

दोहा–जबही जीवन हे सखी, पिय दैखौ भरनैन।
सिंगारहार कहा ए सखी, सो बोले मृदुवैन॥

१३ करना।

दोहा–राजकाज सब विसरगए, चित जो रहै उदास।
आयो करना कुछ भला, कन्त हमारे पास॥

१४ चमेली ।

दोहा–प्रातसमें पिय जागिहैं निसिवासर एक संग ।
करि असनान तन माजिहैं, तेल चमेली अंग॥

१५ जुही ।

दोहा–पंछी होयके उडिमिली, जगमोसौं जौ जाय ।
घट भीतर पिय जूहिला, सो नैनन रही समाय॥

१६ मालती ।

दोहा–षोडशकला पुनीतहै, सो मैं किया सिंगार ।
कनक मालती मनदिया, दियो पियापर डार॥

१७ अढहुल ।

दोहा–प्रीतम सब देखनगए, चित्तचकित गएभूल ।
निरखत लागु सुहावना, जस अडहुलके फूल॥

१८ इसकपेच ।

दोहा–प्रीतमकोना चाहिये, आपरहे सुखवेच ।
विरह लाग लिपटीरहै, जस इसकपेचका खेत॥

१९ गुलाबदादी।

दोहा–मनमें करतहों ऐ सखी, गये प्राण पति तेज।
आसकमेरा चित्त है, जस गुलाबदादी प्रसेज॥

२० सूर्यमुखी।

दोहा–शूद्र त्रिया विजचुनी, सुखन लहै बिन कन्त।
सूर्यमुखी हैं गे पती, विरह वानकी अन्त॥

२१ नागेश्वर।

दोहा–तन अन्नरणना सह सकै, नितनागेश्वर होइ।
जादिन पिय प्रदेसगये, हैं कहा कहूं सखितोई॥

२२ जटाधारी।

दोहा–नांहींगुण चाटक सिखा, नहीं रही कुछ आस।
जटाधारी है सीसपर, खडी पियाके आस॥

२३ कोई।

दो०–रंगरस खेलत ऐ सखी, सबकोइ तजेउशरीर।
कोई नहिं सखि आपना, कासे कहौं सखिपीर॥

२४ कुसुम ।

दोहा–हंसगवनि मृगलोचनी, लिये सारिकापास ।
कुसुमीसारी पहनके, खडी पियाके आस ॥

२५ अकवन ।

दो०–आसपिया सेवत रहौं, जनि बिछुरो तनमांहिं ।
पियलैके अकवन रहो, लागि रहा मनमांहिं ॥

२६ गुलाबवास ।

दो०–करसिंगार कामिनी चली, सबै सहेली संग ।
सांझ समैं जसदेखिये, गुलाबवासले रंग ॥

२७ सेमर ।

दो०–यतन अनेक सो राखिये, घटभीतर रहै आस ।
बारह मास सेवा करी, सुया सेमर ले पास ॥

२८ रुसा ।

दो०–कनक कसोटी जानके, कसिये प्रीतम आय ।
रूसाके पति आइके, रसचाखै चितलाय ॥

सफेदचंदनका चूरा इन सबको समान भाग लेकर औटालेवै और छानकर चन्दनी रंग लेवै ॥

आसमानी रंग ।

मासे चार लील ले कच्ची । रंगिये वस्त्रबात यह सच्ची ॥

ऊदा रंग रंगना ।

प्रथम बीसभाग कसूम जलमें रंगकर फिर तीन भाग लील कसूमजलमें घोलकर फिर रंगे और पीछे फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंग डालै ॥

उन्नाबी रंग कच्चा ।

नासपाल फिर फिटकरी, फिर पतंग रंग मांहिं ।
ईसबगोल लुआब फिर, कच्चा रंग रंगाहिं ॥

उन्नाबी रंग पक्का ।

प्रथम पांच भाग पीली हरडोंमें, फिर दो भाग काठ रंगमें फिर पंद्रहभाग पतंगमें और फिर दो भाग फिटकरीमें ॥

आमौआ सेवती रंग रंगाना।

प्रथम कपडेको पक्की लीलसे रंगकर धोडालै पीछे हलदीसे, फिर नासपालसे फिटकरीके पानीमें ईस-बगोलके लुआबसे रंगै ॥

हुलासी रंग।

प्रथम नासपालके रंगमें रंगकर फिर काठके रंगमें रंगनेसे हुलासी होजाताहै ॥

आवी रंग।

मासे एक लीललै कच्ची। आवीरंगै बात सब सच्ची ॥

सुरमई रंग रंगाना।

रंगतके गहरी लीलमें, रंगै कसूमल रंग।
देत खटाई तनकसी, बनै सुरमई रंग ॥

अब्बासी रंग।

प्रथम लीलके रंग रंगै, पचगुन कुसमल नील।
फिर नीबूके रसरंगै, सुन्दर बनैजु चीर ॥

सिंदरफी रंग।

रंग सिंदरफके रंगमें, फेर फिटकरी नीर।
ईसब गोल लुआवदे, रंगै सिंदरफी चीर॥

शरबती रंग रंगना।

हारसिंगारके रंगमें आधा कसूमका रंग मिला कर कपडा रंगै फिर ईसबगोलका लुआव देतौ शरबती रंग होजायगा॥

पक्का शरबती रंग रंगना।

प्रथम थोडेसे गेरूमें रंगकर फिर मुलतानी मिट्टीमें रंगले फिर निर्मल पानीसे धोकर फिटकरीमें रंगकर ईसबगोलका लुआव देवै॥

सुनहरा रंग।

प्रथम कसूममें रंगकर हारसिंगारसे रंगे फिर फिटकरीके पानीमें धोडालै॥

मजीठका रंग ।

हर्रीमें रंगकर फिटकरीके पानीमें रंगै फिर मजीठके जलमें रंग लेवै ॥

सब्जकाई ।

रसीको हलदीकेसाथ महीन पीसकर कपडा रंगै फिर पानीमें साबन घोलकर उसे उसमें धोडालै फिर फिटकरी का पानी देवै ॥

लाजवर्दी रंग ।

तोलेभर तांबेके चूरेको दो नींबूके रसमें डालकर किसी चीनीके प्यालेमें रखदे तांबेके गलनेपर कपडा रंग कर दहीके तोडमें धोडालै ॥

हिनाई रंग ।

सुपारीको पानीमें पीसकर कपडा रंगै हिनाई होजायगा ।

बैंजनी रंग ।

प्रथम लीलमें रंगकर कसूमकी रैनीमें डालदे और खटाईभी डालदे ॥

मूंगिया रंग ।

पहिले कपडेको फिटकरीके पानीमें भिगोकर निचोडले फिर हर्डाके पानीमें रंगले पीछे हर्डा और कसीस दोनोंको मिलाकर रंगै फिर हलदी और पीछे नासपालसे रंगे मूंगियारंग होजायगा ॥

लाल रंग ।

सेरभर कसूमके जलमें पावभर खटाई डालकर कपडा रंग लेवै ॥

वसंती रंग ।

हारसिंगारमें रंगकर नींबूकी खटाईके साथ ईसबगोलका लुआब बनाकर रंगै और कूंचीसे कसूमकी छींटें मारदे ॥

फीरोजई ।

प्रथम चूनेके पानीमें रंगकर नीले थोथेके गहरे रंगमें रंगे कपडा फीरोजई होजायगा ॥

नारंगी रंग।

हारसिंगारका रंग निकालकर फिटकरी डालदे फिर हाथसे मलकर झाग उठावै और कपडा रंगै नारंगी रंग होजायगा ॥

धानी रंग।

नील हलदी और फिटकरीके पानीमें यथाक्रम रंगनेसे धानीरंग होताहै ॥

जाफरमानी रंग।

कमसूका रंग, लील और फिटकरीसे जुदा २ रंगनेपर जाफरमानी हो जाताहै ॥

फाखतई रंग।

प्रथम चार माजूफलमें रंगकर आधपाव काठके रंगमें रंगनेसे फाखतई होताहै ॥

बादामी रंग।

प्रथम थोडेसे कसूमके जलमें रंगकर नीबूकी

खटाई देवै फिर हारसिंगारके जलमें ईसबगोलका लुवाब देकर रंग डालै ॥

फालसई रंग ।

थोडीसी लीलमें रंगकर, कसूमके जलमें रंगै। फिर फिटकरीमें ईसबगोलका, लुआब देकर रंगै ॥

फूल गुलाबी ।

थोडेसे कसूमके जलमें नींबूका रस डालकर रंगनेसें फूल गुलाबी होताहै ॥

चंपई रंग रंगना ।

प्रथम कसूमके रंगमें रंगकर उससे आधे हारसिंगारके जलमें रंगे फिर थोडासा फिटकरीका पानी देकर निचोडडालै ॥

गुलै अनार रंग ।

कसूमके दूसरे रंगसे रंगकर हलदीके पानीमें खटाई डालकर रंगै और ईसबगोलसे कलफ करदे ॥

कत्थई रंगका रंगना।

कपडेको प्रथम हलदीके रंगमें रंगकर फिर नासपालके रंगमें रंगै फिर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगै तौ कत्थई रंग होजायगा ॥

कर्पूरी रंग।

हारसिंगारके जलमें रंगकर फिटकरीका पानी और ईसबगोलका लुआब देवै ॥

कासनी रंग।

दो तोले पक्की लीलको पानीमें घिसकर उसमें कपडेको भिजोदे दो घंटे पीछे निचोडकर छायामें सुखाले फिर दो तोले कसूमकी गादमें रंगै पीछे खटाई और ईसबगोलका लुआब डालकर रंगनेसे कासनी रंग होजाताहै ॥

कपासी रंग।

प्रथम टेसूके फूलोंको भिजोकर जल निकालले उसमें कपडेको रंगकर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब देवै ॥

गुलाबी रंग।

कसूममें रंगकर खटाईके साथ ईसबगोलका लुआव देवै तौ गुलाबी रंग होगा ॥

कोकई रंग।

छः मासे कच्ची लीलमें रंगकर कसूमकी रैनीमें रंगले और ईसबगोलका कलफ चढादे ॥

काकरेजी रंग।

माईके रंगमें रंगकर काढके रंगमें रंगै फिर फिटकरीमें गोलादेकर छायामें सुखाले फिर पतंगमें रंगकर ईसबगोलका लुआब दे देवै ॥

खसखसी।

दो सेर पानीमें कसूमकी गाद डालकर कपडा

रंगले फिर लीलमें रंगकर फिटकरीके जलमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगै ॥

जाफरानी रंग।

कसूमकी गादमें रंगकर उससे चौगुने हार सिंगारके जलमें रंगके फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगै ॥

तूमी।

अच्छा सफेद कपडा लेकर फिटकरीके पानीमें भिगो देवै फिर उसे निचोढकर सुखा लेवै। फिर पावभर बबूलकी छाल छःतोले कायफल इन दोनोंके रंगमें रंगै फिर इसी रंगमें डेढ तोले कसीस डालकर रंगै और कलफ करै ॥

तोतई रंग।

दसभाग हलदी और एक भाग लील मिलाकर कपडेको रंगले फिर फिटकरीके पानीके साथ ईसबगोलका लुआब देकर रंग डालै ॥

पिसतई रंग ।

लील, हलदी, दहीका तोड इनसे अलग रंगकर लुआब देकर कलफ करलेवै ॥

पियाजी रंग ।

दो भाग कसूमकी गादमें एक भाग फिटकरी देकर रंगनेसे पियाजी रंग होता है ॥

अंगूरी रंग रंगना ।

आधासेर टेसूके फूलोंका जल निकालले उसमें कपडेको रंगकर फिर ३ मासे कच्ची लीलमें रंगै फिर नींबूका रस देकर कलफ कर देवै ॥

आमौआसुरख ।

प्रथम कपडेको गेरुके रंगसे रंगकर साफ पानीमें अच्छीतरह धोडालै पीछे हलदीके पानीमें रंगै फिर नासपालके रंगमें फिर फिटकरीके पानीके-साथ ईसबगोलका लुआब देकर रंगलेवै ॥

अर्गवानी।

फिटकरीके पानीमें प्रथम कपडेको भिगोले फिर हरडेके जलमें रंगकर पतंगके जलमें रंगडालै अर्गवानीरंग होजायगा ॥

नीला रंग रंगना।

पक्के नीलमें रंगकर ईसबगोलका लुआबदेकर रंगले नीला होजायगा ॥

काही रंग रंगना।

बहुतथोडे नीलके पानीमें कपडेको रंगकर निचोडडालै फिर छटांक भर नासपालके रंगमें रंगकर तोलेभर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगै ॥

हाथीदांत को लाल रंगना।

हाथीदांतको कतरकर किसी पात्रमें डालदो और उसके ऊपर गायके दही या दूधमें लालरंग

डालकर डालदो। थोडेदिन पिछे हाथीदांत नरम होजायगा जब उसमें चाकूकी नौक गडनेलगै तभी उसमें लाखका रंग डालकर ढकदो जो सातदिन पीछे देखोगे तो दांत लाल निकलैगा॥

हाथी दांतको स्याह रंगना।

हाथी दांतको लोहेके बर्तनमें भरकर आगपर चढादो और उसमें इतना पानी भरदो जो दांतके टुकडेसे चार अंगुल ऊंचारहै और उसीमें अनारका छिलकाभी डालदो जब खूब गरम हो जाय तब उतारकर ठंडा करलो फिर उसमें थोडा लोहचूर्ण और नीबूका रस डालकर बर्तनका मुंह बन्द करके रखदो दसबारह दिनके पीछै देखौगे तौ दांत काला निकलैगा॥

विनामौसम फलफूल लगाना।

जिस घोंसलेमें शुतरमुर्ग रहता है उसकी मिट्टी कूडा कर्कट सब इतठ्ठा करके खात बनालेवै फिर

जिस वृक्षमें बिना मौसम फलफूल प्रगट करना चाहै तौ उस वृक्षके चारोंओर एक थांबलेकी तरह गढा खोद लेवै और उसमें वह खात भरदेवै ऊपरसे थोडा थोडा पानी सींचतारहै तो मनकी इच्छा पूर्ण हो जायगी ॥

मछलीके कांटेगलानेका उपाय ।

जहां मछलीके कांटे हुवा करते हैं उस स्थानको छुरीमे चीरकर पिसाहुआ सुहागा भरदो और डोरे-से लपेटदो । फिर उसमें उचित मसाले डालकर अग्नि पर पकाओ पकनेपर उतारकै डोरा खोलके फेंकदो तौ मछली बे कांटेकी रहजायगी ॥

बशीकरण ।

पंख परेवाकी लेआवै । सहत सहित पुनि ताहि मिलावै ॥ पढकरमंत्र तिलकदे भाला । निरखत तिय मोहै तत्काला ॥

अन्य वशीकरण ।

कुमुद प्रसून बहुतले आवै ॥ कै पलासके पुहुप मंगावै ॥ पुनिबुधिवन्त ले होमसुकीजै ॥ सहस-बार सो आहुत दीजै ॥ सात पुहुप पढि राखै सोई जिहि देखै अपने बश होई ॥

अन्य वशीकरण ।

तगर कूठ तालीस मिलावै । तब बातीसों पीस लगावै, सरसोंतेल दियामह मेलै, आदितवार पुष्य महं खेलै ॥ आधीरात अमावस नैन निहा रिये ॥ मनुजखोपरी ऊपर काजल पारियै ॥ रंचक अंजन आंज नैनन जब देखिये, मनमें भावै जार सोई बस कीजिये ॥

अदृष्टकरणताबीज ।

पकड खंजरी पिंजरा डारै, बरस एक ताकों प्रतिपारै ॥ बरस एक दिन ऐसा आई, तातपंख सिर निकसै ताई ॥ तादिन दृष्टन आवै साये

जदपिरहै पिंजरामें सोय ॥ नैननसो खोजत जिमि-रहै, जैसे हाथमेलतिहिं गहैं ॥ दोहा ॥ सातोंपंख उखाडकै, कंचनमध्य मढाय । कोई न देखै तासुको, मुखमेंलै तहँ जाय ॥

उन्नावी रंगका कागज रंगना ।

जरद पानीमें कागजको तरकरो फिर फिटकरीके पानीमें गोतादो और सुखालो कागज उन्नावी-रंगका होजायगा ॥

कागजको एक ओरसे रंगना ।

मावेमें रंग मिलाकर कागज पर चढादो ऐसा करनेसे रंग दूसरी तरफ नहीं फूटेगा जब वह सूख जाय तब जैसा रंग तुम दूसरी ओर करना चाहते हो सो मावेमें मिलाकर चढादो ॥

कागजपर फीरोजी रंगत ।

काजको प्रथम चूनेके पानीमें फिर जंगालके पानीमें भिजोकर सुखालो इसीतरह दूसरी बार

भी करो तौ कागज बहुत अच्छा फिरोजी रंगका हो जायगा ॥

चित्रलोप करना ।

जलमें बडी गोह जो होय, ताकी चर्बी आनै कोय ॥ सो चर्बी हाथमें नावै, हाथलाय चित्रहि दिखलावै ॥ मूठीबांध चित्रको लेप दुराई, तत छिन चित्रलोप हो जाई ॥

दीपकमें जवाहरदीखै ।

चर्बी कालेसांपकी लेय, जुगतिसों कोय ॥
आंनि दियामें बालियै, जोतजवाहर होय ॥

नावकी तवाही ।

पक्काफल मँगाय बेलका और मैनफल आनै, पीस दूध डराय गायका इहि विधि गोली सानै ॥ पोलासींग मँगाय गायका भूमि पडा जो लीजै ॥ जामुन बडी बराबर गोली बांध छांह सुख कीजै ॥

सींग मांहिं भर राखै गोली सातदिवस जोबीतै ॥ ऐसा जतन करै जो कोई राजसभामें जीतै ॥ बहती नाव जाय पानीमें तहां खेल यह करियै ॥ देखो छिद्रनावके पेंदे तहां सुगोली धारियै ॥ बहकै चलै न खेवामानै रहै हार मल्लाह बिचारा, लीजै काढ छिद्रसों गोली चलै स्वयं बिन खेवन हारा ॥

आंखमें पानी आनेका इलाज।

जो धूल आदि पडनेसे आंखमेंसे पानी बहने लगै तो १ भाग गरम पानीमें १ भाग पौपी डिकौशन मिलाकर धो डालौ।

लकडीके छेद भरनेका मसाला।

जापानी अलसीका गरम तेल और तारपीन बरावर लेकर आधास्टार्च मिलादें, और स्पंज याऊनसे लगा लगाकर छेद बन्द कर दो अगर उसपर अखरोटकी वारनिस होतौ थोडा अम्बर मिलावै ॥

तांबेको रेतीले पथ्थरपर जमानेका मसाला।

साढेतीन भाग सफेद सीसा, ३ भाग लाइथ्रेज तीन भाग वोल और दो भाग काचके टुकडे मिलाकर दो भाग अलसीके तेलकी वारनिसके साथ घोंठ ले॥

फैट सिमेंट।

चिकनी मिट्टीको सुखा पील छानकर एक लोहेके बर्तनमें रक्खै और सुखजानेवाला तेल मिलाकर घोटै जब यह सब मिलजाय और लेहेईसो हो जाय तौ इसे तेलमें रक्खै जिससे सोखना बंद होजाय इससे कौरोसिव गैस हवा नहीं निकालती मगर गरमीमें पिघल जाता है॥

भोजन पकानेके बर्तनोंको जोडना।

सबसे मजबूत और आसान मसाला चूना

और अंडोंकी सफेदीसे बनता है किनारोंपर लगा कर जोरसे दबादें जल्दी जमजाता है और मजबूत होजाताहै यह मसाला थोडाही तयार करना चाहिये क्योंकि यह बहुत जल्दी कडा होजाता है केलसाइंड प्लास्टरभी चूनेका काम देता है ॥

क्रोकस सीमेंट ।

क्रोकस सीमेंटकों थोडी अलसीके तेलमें मिलानेसे उमदा जोडनेका मसाला तयार हो जाता है ॥

कुठारी या घरिया जोडनेका मसाला ।

पिसीहुई चिकनी मिट्ठी माईटको रेतके पानीमें या सुहागेके अर्कमें मिलाकर लगानेसे हरसमय गरम रहनेवाली घरिया जुडजाती है आगपर रखनेसे यह कम्बकासा चमकीला मसाला तैयार हो जाता है ॥

अंडोंसे बनाहुआ जोडनेका मसाला ।

अंडेकी सफेदीमें बराबर पानी मिलाकर थोडा-

बुझा हुआ चूना मिलादे और लेहेई बनाकर तुरतही काममें लावै ॥

स्वासका उपाय ।

स्याही सोखा कागजको शोरेके पानीमें भिगोकर सुखादो और रातके समय जिस मकानमें रोगी सोताहो उसे जलादो स्वास बन्द होजायगा ॥

बमन करना ।

तरबूजेके फलकी जडको पीसकर पिलानेसे बमन होने लगती है ॥

नकसीरबन्द करना ।

पानी थोडासा गरम करके हाथ और पावोंको उनमें धरदीजियै नाकका लोहू थम जायगा ॥

जीर्णज्वरका उपाय ।

रोगीकी देहमें बकरीका रुधिर प्रविष्ट करनेसे जीर्णज्वर जाता रहता है ॥

पसीनारोकना ।

कछु नौसादर लेयके पानी माहिं मिलाय ॥
फेर पसीना आय नहीं कैसा सहज उपाय ॥

बाल जमानेका उपाय ।

जिस मनुष्यके सिरके बाल गिरने लगगये हों उसको उचित है कि सोते समय सूखानमक पीसकर सिरमें मललिया करें बाल जमजांयगे ॥

मूंगाबनानेकी विधि ।

संखकाचूरा पीसकर उसको सिंगरफमें मिलादेवै फिर उसको चंदरसमें खरल करके मूंगाके समान दाने बनालेवै सुखनेपर बर्मासे छेद करके रेशममें पोहलेवै सुन्दर मूंगोंकी कंठी बनजायगी ॥

पीपल बनाना ।

उरदके चूनमें राई मिलालेवै फिर पीपलके आकारके समान उसमेंसे बनाकर सुखालेवै ऊपर उनके

काली मिरचका पुट देदेवै सूखनेपर तेल का हाथ लगाकर मसलै बहुत सुन्दर बे पहचान पीपल बन जायगी ॥

हरतालकी भस्म ।

थूहरकी डंडी लाकर उसको पोली करलो और भीतर उसके हरताल भरदो बिन आकंडाकी आंचमें पहरभर रखनेसे हरतालकी उत्तम भस्म बनजायगी

मृगाङ्क बनाना ।

गंधक और पारेको खरलकरके गोली बनालो और उसके भीतर सोनेकी डली रखदो, इस गोली को कोयलोमें रखकर पहरभरतक धोंकनीसे धोंकै तौ मृगांक बन जायगी ॥

स्त्रीके पैर थमनेका उपाय ।

ककडीके बीज, कुशाकीजड दोमासे गेरु इन सबको पीसछानकर पिलावै तौ जिस स्त्रीका पैर चलताहो तत्काल बन्द होजायगा ॥

मद्यपान छुडाना ।

जो नर पीवे बहुतमद, ताको यही उपाय ।
श्यामकागको पित्तले, मदमेंधोय पिलाय ॥

हाजरात ।

सूखी ओंगा साखलै दीजैरुई लिपटाय ॥ भरघृत कोरेदीपमें बाती देहुजलाय ॥ सातबरसको होय जो तो बालक एक बुलाय ॥ ताहि न्हवाय धुवायके स्वेतबस्त्र पहराय ॥ सन्मुख दीपक लायकै दीजै ताहि बिठाय ॥ देखत दीपक लोयकूं भेद देय सुनवाय ॥

नहरुवाका उपाय ।

सांपकी कांचली और कालीमिरचको ठंडेपानीमें घिसकर लगानेसे नहरुवाका रोग नष्ट हो जाता है ॥

छाति कौडी गई टिकाने आवै ।

बनमेंफूलै संखाहुली तब यह काम करीजै,

हरदीरंग चांवलको लेजावै शनिदिन नौतौ दीजै रविदिन जाय प्रातही उठकै सात प्रदक्षिण दीजै ॥ हाथ जोड अरु सीस नवाके ताकी विनती कीजै ॥ तब मुख करके सूरज ओरी दूधप्यायताकी जड दीजे ॥ खोदलीजिये तोरि लायतेहि राखियै निज घरमें कीजै यह उपाई ॥ जाकी धरन हटै निजघर-सों ताकीकटिबधवाई ॥ धरनि ठिकानै छिनमें आवै होय सुख बहूतेरो ॥ पीडाघटै दुःखमिट जावै क्लेश न आवै नेरो ॥

जंगाल बनानेकी विधि।

भरतांबेके पात्रमें कुचला दहीमंगाय ॥ मुरदा सिंग भरदीजिये दीजै धूपसुखाय ॥ दिनाबीसकी आंचतब दीजै ताहि बनाय। तबही जाय जंगाल बन उत्तम रंग सुहाय ॥

दूसरी विधि।

तांबेमें भरदीजिये सिरका तेज मंगाय। पुनि-

ताकूँ धर धूपमें सिरका तांबौ खाय ॥ दिना चारमें देखिये सुन्दर बनै जंगाल ॥ उत्तम रंग सुहावनो बनै तभी तत्काल ॥

तीसरी विधि ।

एक भाग तांबेका चूरा नौसादर जो लावै ॥ तांबेके बासनमें भरकै नीबूकारस प्यावै ॥ गाडधरै पृथ्वीमें ताकूँ दिन चालीस प्रमाना ॥ खोद निकासै पृथ्वीमेंसे हो जंगाल सुहाना ॥

दोबासन आपसमें लडैं ।

रविवार अथवा मंगलवारको किसी काले कुत्ते के दो दांत निकलवालावै और एक काली बिल्लीके दो दांत निकलवाले फिर इन चारोंपर सिंदूर लगाकर एक प्यालेमें रखदेवै और उस प्यालेपर एक पात्र ढकदेवै तदनन्तर दो दांत बकरेके लावै और दो दांत भेडके लावै भेडके दांतोपर सिंदूर

लगाकर एक पात्रमें रखदे और दूसरेमें बकरेके दांत रखदेवै इन दोनों बर्तनोंको ऐसी रीतिसे रक्खै कि एक दक्षिणमें हो दूसरा उत्तरमें हो और इन दोनों पात्रोंके बीचमें चार दांतवाला बर्तन रखदो फिर उत्तर दक्षिणवाले दोनों पात्रोंको चमडेकी धूनी देवै तब यह तमशा दीखनें लगेगा कि दोनों बर्तन हटहट कर एक दूसरेसे टक्कर लडेंगे और बीचवाला बर्तन उनका बीच बिचाव करैगा ॥

तांबेका पानी बनाना ।

आधसेर नीलाथोथा महीन पीसकर उसमें छः ग्लास मैजर पानी डालदो और छानकर एक चीनीके पात्रमें भरदो और आधपाव सज्जीका तेजाब चार ग्लास पानीमें अलग रखलो, फिर दोनों पानियोंको एक बडे बर्त्तनमें भरदो ॥

मुलम्मा करना।

चांदी उमदा पांच भाग, शोरेका तेजाब इक्कीस भाग, नमकका तेजाब सत्रह भाग इनसबको मिलाकर एक चीनीके पात्रमें रखदो फिर इसमें सोना डालकर आगकी गरमीपर पिघलाओ जब उसमेंसे धुआं निकलना बन्द होजाय तब उसको दूसरे बर्तनमें करलो फिर इसमें बहुतसा पानी डालकर गरमकरलो ठंडा होनेपर एक अच्छे पात्रमें रखदो जिस वस्तुपर मुलम्मा करनाहो उसे एक तारमें बांधकर उस पानीमें लटका दो और नीचे आग लगादो ऐसा करनेसे मुलम्मा चढ जायगा फिर उसको निकाल कर धीरे२ साफ करलो॥

मैनमुद्रा।

गूलरका, दूध दो पैसाभर, बडका दूध दो पैसाभर, आकका दूध दो पैसाभर, पीपलकी लाख

दो पैसाभर, चुम्बक पत्थर आठ पैसाभर इन सबकी घुटाई पहरभर अलसीके तेलमें करै फिर इस लुग दीसे संधिको लेपनकरै तौ कितनाही जल गरमहो संधिफूटै नहीं इसीसे गंधकका तेल निकलता है॥

मारग चलनेका गुटका।

कालातीतर लाकर तीन दिनतक भूंखारक्खै और चौथे दिन उसे पारा खवावै पीछे गौके दूधमें चांवल भिगोकर खवावै, फिर उसकी बीटमेंसे पारेके गोला को निकालकर मुखमेंरखकरमारगचलैतोहारै नहीं।

दोहा।

क्रियाकुशल गुरुभक्तिसों, साधै याहि सुजान।
विधि सबसांची होय है, विना क्रिया नहिं आन॥
कौतुक संयुत ग्रन्थ यह, संग्रह कियो विचार।
सबके मन हर्षित करै, साधै रीति निहार॥

इतिश्रीमथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल
संगृहीते कौतुकरत्नभांडागारे
॥ द्वितीयपादः ॥

॥ श्री ओ३म् ॥

कौतुकरत्नभांडागार.

अर्थात्

बृहदिन्द्रजाल.

तृतीयपादः

मथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल संगृहीत

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलालने

मुम्बईमें

"ज्ञानसागर" यंत्रालयमें मुद्रित कराया

सम्वत् १९६४ शके १८२९.

ओ३म्

श्रीहरिम्वन्दे

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः

कौतुकरत्न भांडागार.

तृतीयःपादः प्रारम्भः

पीर विरहनाका मंत्र।

पीरविरहना फूलविरहना धुंधूंकार सवासेरका तोसाखाय असीकोसका धावाकरै सातसै कुत्तक-आगै धलैं सातसै कुत्तक पाछै चलैं छप्पनसै छुरी चलै बावनसै बीरचलैं जिसमें गढ गजनीका पीर चलै औरकी धुजा उखाडता चलै अपनी धुजा टेकता चलै सूतेको जगावता चलै बैठेको उठावता चलै. हाथोंमें हथकडीगेरै, पैरोंमें पैरकडी गेरै हलालमाहीं दीठकरै मुरदारमाहीं पीठकरै। कलवान नबीकू याद करौ; ओ३म् नमः ठः ठः स्वाहा ॥ १ ॥

विधि।

ग्रहणकी रातको इस मंत्रके जपनेका आरंभ करै प्रथम सवासेर मोहनभोग तैयार करके और चमेलीके ५८ वरक लेवै फेर मोती माला ले २०८ मंत्र रोज जप फेर विरहना हाजिर

होंगे और जो काम उनसे कहोगे करेंगे परन्तु जब वे आवें तब डरोमत धीरजसे उनके संग बातकरो.

ज्वर हरण मंत्र।

ओं३म् ह्रीं क्लीं ठः ठः भो भो ज्वर शृणु शृणु हन हन गर्ज गर्ज ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुराहिकं सप्ताहिकं मासिकं आर्धमासिकं वार्षिकं द्वैवार्षिकं मौहूर्तिकं नैमेषिकं अट अट भट भट ह्रूं फट् अमुकस्य ज्वरं हन हन मुंच मुंच भूम्यां गच्छ स्वाहा ॥ २ ॥

विधि।

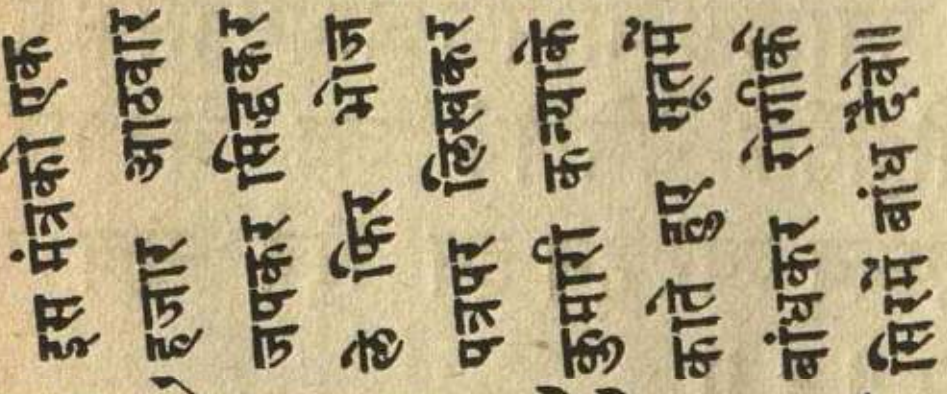
जिस मनुष्यको ज्वर आगया हो उसके नामसे नौ मुट्ठी

चांवलके चूनमें नमक डालकर पुतली बनावै उसके ऊपर हलदी पोत देवै और चार पीले कपडेकी धुजा उसमें गाड देवै इसतरह तीन दिनतक रोगीका नाम लेलेकर उत्तर दिशामें पुतलीका बिसर्जन करै.

दूसरा ज्वरका मंत्र ।

ओ३म् नमश्चण्डवज्रपाणये महासुषेणाधिपतये ओ३म् ज्वर शृणु शृणु छर्द्द छर्द्द शिरो मुञ्च मुञ्च हृदयं मुञ्च मुञ्च उदरं मुञ्च मुञ्च कटिं मुञ्च मुञ्च उरुं मुञ्च मुञ्च, हस्तौ मुञ्च मुञ्च गात्राणि मुञ्च मुञ्च ओ३ म् हुं हुं हुं फट् अमुकस्य सर्व ज्वरं नाशय स्वाहा॥ ३ ॥

विधि ।



सुखसे बालक होनेका मंत्र ।

ओ ३ म् मुक्ता पासा विपाशाश्च मुक्ताः सू-

र्येण रस्मयः ॥ मुक्तः सर्वभयाद्धर्म एह्योहि मारीच मारीच स्वाहा ॥ ४ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे आठवार जल पढकर गार्भिणी स्त्रीको प्यावे तौ बालक सुखसे होय ॥

दूसरा मंत्र ।

ओ३म् मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा ॥ ५ ॥

विधि ।

इस मंत्रके जपनेसे बालक सुख पूर्वक होताहै ॥

मंत्रधरन ठिकानै आवै ।

ओंनमो नाडी नाडी नौसैनाडी बहत्तरसौ कोठा चलै आगाडी डिगै न कोठा चलै न नाडी रक्षा करै यती हनुमन्तकी आनि मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ६ ॥

विधि।

नौ गांठका एक नालाकार नाभिपर रखदे और इस मंत्र को जप जपकर उसमें फूंक मारे पीछे धरन ठिकाने आ-जायगी॥

मोहन मंत्र।

ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् ॥ ७ ॥

विधि।

इस मंत्रसे पान पढकर खवावै तो तत्काल बस होय ॥

वशीकरण।

ओंनमः कपाल रुद्राय सर्व लोक वशङ्कराय अनाथायाप्रतिहतबलवीर्य्यपराक्रमप्रभवाय हा हा हे हे पच पच मारय मारय कपट कपट काट सर्व कर्म करि अमुकंमे वशमानय स्वाहा ॥ ८ ॥

विधि।

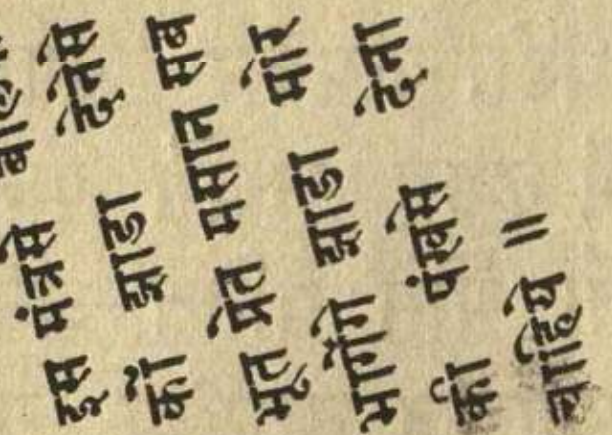
इस मंत्रको एक लक्ष जपै तौ तत्काल सिद्धि होय यह सबको वशीकरण करनेवाला मंत्र है ॥

हनुमानजीका झाडा।

जयति हनुमानजी निजध्यान धूप ध्यान धरूं सेवूं वीर हनूमान जटाजूट अवधूत जंग जंजीर लंगोट गाढी भूतकूं वस प्रेतकूं बसकर गदाकी मारदे, तेल सिंदूर फलफूल पान मंगल चढै आप देखें जब रोट होवे, सत्यकी नाव नरसिंह खेवै, दुष्टके लात बजरंग देवै तोड वज्राकिवाड वक्तकी कडी चार लाख अस्सीहजार बसकर रावणके दीनी धडा धडी, सत्यवीर हनुमान बरस बारहके ज्वान हाथमें लड्डू मुखमें पान सीताकी गये खोज गये तौ मोसे पतित अनाथकी नहीं करौगे का महाराज हनुमंता गुणवंता गाजंता घोरंता डगरी बैठे राज करंता ऋद्धि लाओ सिद्धि लाओ राजा परजा बसकर बडी वेग मेरे पास लाओ मेरे पास बडी वेग नहीं लाओगे तौ माता अंजनीका दूध पिया हलालसे हराम कराओगे

बडी वार वेग लाओगे तौ माता अंजनीका दूध पिया हल्लाल करौगे यही पानका वीडा तुह्मारी भेट है जो वाचा चूकै तौ ऊभ्यौही सूखै मेरे हं-कारे नहीं हंकोगे तौ माता अंजनीकी दुहाई नरसिंह पिताकी दुहाई आदिपुरुषकी दुहाई सती सीताकी देखूं हनुमंता वीर तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ९ ॥

विधि ।



आपकी देहरक्षाको मंत्र ।

ॐनमो लोहका लोढा जहां डाकी कूंडी हमारा पिंड पैठा ईश्वर कूंची ब्रह्माताला हमारा पिंडकाचा श्री हनुमन्त वीर रखवाला ॥ १० ॥

विधि ।

इस मंत्रको पढकर कहीं रह्यो कहीं जाओ शरीरमें किसी प्रकारकी चिन्ता न होगी ॥

बवासीरको मंत्र ।

उमती उमती चल चल स्वाहा ॥ ११ ॥

विधि ।

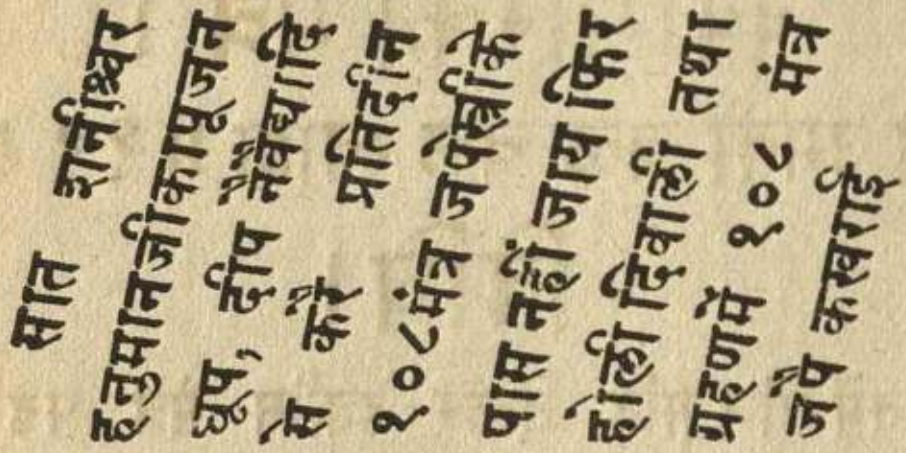
लाल सूतमें तीन गांठ देकर इक्कीस मंत्र पढकर पांवके अंगुठासे बांधै ॥

दस रोगका झाडा ।

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक सिला फटिक सिलापर अंजनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला काँखकी कखराई पीछेकी आदीठ कानकी कनफेड रानकी बद कंठकी कंठमाला धुटनेका डहरू डाढकी डढ सूल पेटकी तापतिल्ली फिया इतनेको दूर करे भस्मंत नातर तुझै माता अंजनीका दूध पिया हराममेरी भक्ति गुरूकी

शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ १२ ॥

विधि ।



अदीठ, कनफेर, बद, कंठमाला, डढशूलको, राखसे झाडैं, डहरुको आकसे, तापतिल्लीको छुरीसे झाडे हनुमानका प्रसाद वटवाय दिया करै ॥

फलफूल बढानेका मंत्र ।

ॐ नमो जगन्नाथाय हर हर शिलि सर्वेषांत्वं पतंगादि प्राशीना तुण्डबंधनं कुरु कुरु हुं फट स्वाहा ॥ १३ ॥

तिल्ली दूर करवेको मंत्र ।

ॐनमो हुतास पखत जहां सुरहगाय सुरह

गायके पेटमें बच्छा बच्छाके पेटमें तिल्ली दवा २ तिल्लीकटै सरकंडा बढै फीयाकटै हरो फूरौ ॥ १४ ॥

विधि ।

आठ रेखा करके छुरीके फलसों काट दीजै सरकंडा बढै छुरीको लोह करे ॥

आकर्षण मंत्र ।

ॐ ह्रीं चामुण्डे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा ॥ ९५ ॥

विधि ।

प्रथम एक लक्ष जप करके इस मंत्रको सिद्ध करले पीछे स्त्रीको देखकर जप करै तो स्त्री तत्क्षण पीछे पीछे चली आवेगी ॥

मंत्र करवलाईका ।

ॐनमो कारवलाई भरतलाई इहां बैठा हनुमन्ताआई पकैनफूटै चलै बालजती रक्षा करै गुरु गो रखवाल । शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ १६ ॥

विधि ।

नीमकी डाली पत्तेसमेत लाकर तीन दिवसतक प्रतिदिन इक्कीस वार झाडे और पीछे पृथ्वीकी मिट्टी उसपर लगादेवै करवलाई बैठजायगी ॥ १६ ॥

चौकी मुहम्मद वीरकी ।

बिस्मिल्लाह रहानेरहीम पांय घूघुरा कोट जंजीर जंजीरपर खेलै मुहम्मदावीर सवामनकी तीर जिसपर खेलता आवै मुहम्मदावीर मारामार करता आवै बांध बांध करता आवै डंकिनीको बांध, पलीतको बांध, नौ नरसिंहको वांध, बावन भैरों बांध जातका मसान बांध करिचाहा प्रपान साज, गूंगिया पीतिया धोलिया कालिया मसान बांध बांध कुआं वावरी लाओ, सोतीको लाओ, पीसतीको लाओ, पकातीको लाओ, जल्द जाओ हजरत इमाम हुसेनकी जांघसे निकाल करलाओ बीबी फातिमाके दामनसूं खोलिके लाओ नहीं

लाओ तो माताका चक्खा दूध हराम कहलाओ शब्दसांचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा ॥ १७ ॥

विधि ।

इस मंत्रको तीन दिन जुमेरात संध्या समयसे प्रारम्भ करे लोबानकी धूनी देता जाय प्रत्येक दिन इक्कीस बार पढ़े इक्कीस दिनमें मंत्र सिद्ध होजायगा फिर किसी रोगीपर पढ़कर फूंक दे तत्काल अच्छा हो जायगा और जो किसी वीरको वस करना चाहो तौ इक्कीस जुमेरात तक सिद्ध करो तो वस हो और जो कहोगे सो करेगा ॥

नेत्रके दरदका मंत्र ।

नमों श्रीरामजीधनी लछमनकेबाण आंख दरद करैतो लछमन कंवरकी आन मेरीभक्ति गुरूकीशक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच सत्य नामआदेशगुरूका ॥१८॥

विधि ।

इक्कीस दिनमें मंत्र सिद्ध करै धूप दीप नैवेद्यादि करके लक्ष्मणजीका पूजन करै प्रतिदिन १०८ जपै ।

डाकिनी बुलानेका मंत्र।

ॐनमो चढौ चढौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पगपाली चढा कुण कुण वीर हनुमंत बीर चढा धरती चढि पगपान चढी एढी चढि मुरचै चढि मुरचै चढि पींडीचढि पींडी चढि गोडाचढि-गोडा चढि, जांघ चढि जांघ चढि काटि चढि कटि चाढि पेठ चाढि, पेटसूं धरणी चढि धरणीसूं पांसली चाढि, । पासलीसूं हियै चढि, हियासूं छाती चढि, छातीसूं खवां चढि, खवासूं कंठ चढि, कंठसूं मुख चढि, मुखसूं जिव्हा चढि, जिव्हासूं कान चढि, कानसूं आंख चढी आंखसूं लालट चढी, ललाटसूं सीस चढी, सीससूं कपाल चढी, कपालसूं चोटी चढी, हनुमान नारसिंह, चले वीर समद वीर, दीठ वीर आज्ञा वीर, सोसंता-वीर. ये वीर चढे ॥ १९ ॥

विधि।

ग्रहणकी रातको लगाय चौका दिया ॐ चौका लाय एक हंग खडा होकर इस मंत्रको एकसौ तीन जप आप डाकिनी परलै

रूपको देखकर डरै नहीं सन्मुख होकर बात करै फिर जो चाहे सो करै ॥

डाकिनीके चोट लगनेका मंत्र।

ॐनमो महाकाली जोगिनी जोगिनीपार साकिनी कल्पवृक्षीय दृष्टि जोगिनी सिद्ध रुद्राय काले दंडेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपार शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं फट् स्वाहा ॥ २० ॥

विधि।

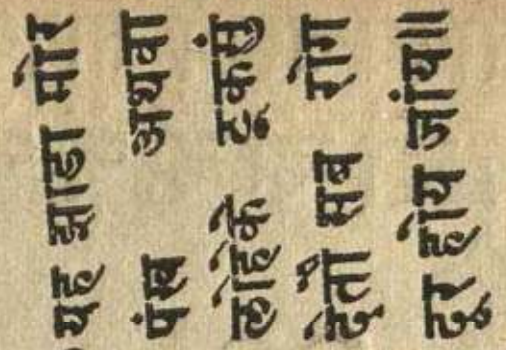
पवित्र होकर इस मंत्रसे सातवार गूगलको पढकर ओखलीमें डालकर मूसलसे कूटै तौ वे चोट डाकिनीके लगेंगी और इस मंत्रसे घोंटू मुंडै तौ डाकिनी का सिर मूंडै या मंत्रसें पढकें

डारै तौं वाके घर आय बोलै या मंत्रसें पढकै आंखिनमें जलमारै तौ खेल उठे ॥

डाकिनी दोष दूर करनेका झाडा ।

ॐनमो आदेश गुरुको डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्तने मारी. कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसूं कान पकड लाये, एक तालदै एक कोठो तोड्यो। दो तालदै दो कोठे तोडे तीन तालदै तीन कोठे तोडे, चार ताल दै चार कोठे तोडै, पांच ताल दै पांच कोठे तोडै, छः ताल दै छः कोठे तोडै, सात ताल दै सातवों कोठो खोल देखे तो कुणखडी है, डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चले, जती हनुकन्त तेरे झाडेसूं चलै ॐनमों आदेश गुरूकूं गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ २१ ॥

विधि।

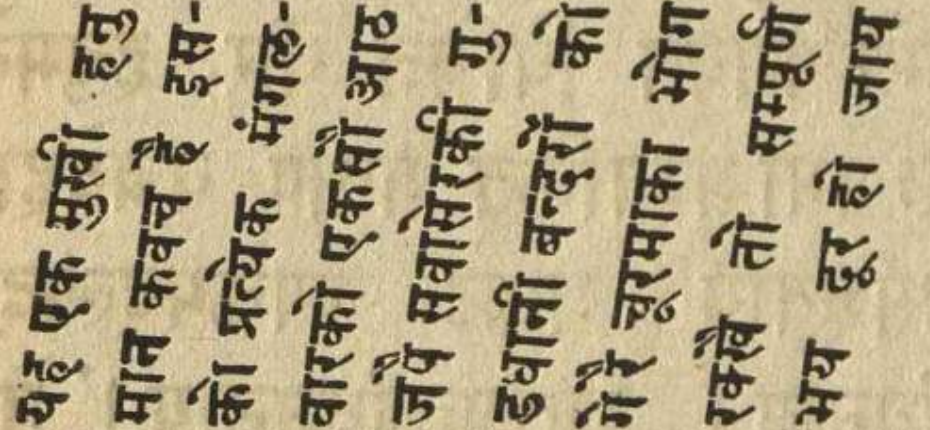


एकमुखी हनुमान कवच।

ॐनमो भगवते विचित्र वीर, हनुमते प्रलय कालानल प्रभा प्रज्वलित प्रताप वज्रदेहाय। अंजनीगर्भसंभूताय प्रकट व्यक्तमदल्पदानवयक्ष रक्षोग्रहबंधनाय। भूतग्रहबंधननाय। प्रेतग्रहबंधनाय। पिशाचग्रहबंधाय। ब्रह्मराक्षसग्रहबंधनाय। चौरग्रहबंधनाय। मारीचग्रहबंधनाय। एहि एहि आगच्छ आगच्छ। आवेशय आवेशय मम हृदये प्रवेशय। स्फुर स्फुर सव्यं कथय कथय व्याघ्रमुखबंधनाय। सर्पमुखबंधनाय। लंका प्रसादभवनं श्रीरामचन्द्रवशमानय क्लीं ह्रीं ह्रीं श्रीराजानं वशमानय श्रीराजानं वसमानय श्रीं ह्रीं

क्लीं स्त्रीं आकर्षय मम शत्रून् मर्दय खार्वे श्रीरामचन्द्रस्य तापय तापय तापय मम कार्य्याणांसिद्धं कुरु कुरु ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रें ह्रें ह्रों ह्रः ॐ फट् स्वाहा ॥ २२ ॥

विधि ।



परन्तु प्रथम सवालक्ष जप करके सिद्ध करले और सवा मनका रोट भोग धरै ॥

शतधारण सरस्वती स्तोत्र ।

अथध्यानम् । शुद्धं ब्रह्मविचारसारपरमांमाद्यां जगातव्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमम यदां जाड्याधिकारापहम् ॥ हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां देवित्वां परमेस्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १ ॥ ह्रीं ह्रीं

ह्रीं हृदेकविजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे । भव्ये भव्यानुकूले प्रमुदितवदने विश्व वंद्यांघ्रियुग्मे ॥ पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनामनमोद संपादयित्री प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिहरदयिते देवि संसार सारे ॥ २ ॥ ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुष्टे कुटे वल्लकिव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडता देहि बुद्धि प्रशस्ताम्॥ वेदे वेदांत गीते अति परिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गादित्स्वरूपे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे ॥ ३ ॥ धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमति मुनिभिः प्रेमिभिः किर्तिनीये नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिजननामिते नूतने वैपुराणे ॥ पूर्णे पुण्यप्रभावे हरिहरमिते पूर्णतत्वे सुवर्णे मातर्मात्रार्धतत्वे मतिमतिमतिदे माधविवा प्रियेवा ॥ ४ ॥ क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे दह दह दुरितंपुस्तके व्यग्रहस्ते संतुष्टाकारचित्ते स्त्रिमुखिसुभगे जृम्भनिस्तम्भनीये ॥ मोहेदुग्धप्रभावे ममकुरु

कुमतिध्वंसविध्वंसमीडे गीर्गौर्वांक्र [भारति त्वां कविवृतरसने सिद्धिसाध्ये विशुद्धे ॥ सों सों सों शक्तिबीजे कमलभवमुखांभोजभूतेस्वरूपे रूपे रूपप्रकाशे सकलगुणमये निष्कले नित्य शुद्धे ॥ स्तौमि त्वाहञ्चदेवीं ममखलु रसना मा कदाचि-ज्जदध्वं मामे मामेबुद्धिरुद्धां भवतु मम नो पातुमां देवि पापात् ॥ मोमे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि समये पुस्तकेनाकुलत्वं शास्त्रेवादेकवित्वे प्रसरतु ममधीर्मास्तु कुंठं प्रयातु ॥ १ ॥

विधि ।

त्रयोदशीके दिन इस स्तोत्रका पाठ करना प्रारम्भ करै सुन्दर गोवरका चौका लगवाकर धूप दीप नैवेद्य और फूलमाला करके इक्कीस पाठ करै फिर प्रतिदिन इसी तरह करता रहे इस पाठके करनेसे सौ श्लोक कंठ याद करनेकी शक्ति होजाती है बहुत उत्तम कविता करने लगताहै और साक्षात् सरस्वती कीसी बुद्धि हो जाती है ॥ ३३ ॥

डाकिनीकेबकुरवायबेको मंत्र।

ॐनमो आदेश गुरुको ॐनमों जय नरसिंह तीन लोक चौदह भुवनमें हाथ चावी होय चावी नयन लाल २ सर्व वैरी पछाड मार भगतनको पख राख आदेश आदिपुरुषको ॥ २४ ॥

विधि।

या मंत्र ७ वेर पानी पढ़ि रोगीनकूं प्याव आपपवित्रहोय करवांकूं पूछै डाकिनी डाकि को नांहि कही ॥

सिंह बांधनेका मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरुको गुरू गोरखनाथ बनखं डराव चोर न भेटै बाघ न खाय दिनकूं राखै सूर्य्य देवता रात्रिकूँ राखै चन्द्रमा, कालाकँटक दूर अंजी-हा कुत्ता बांधूं तेरी गर्दनी बांधौ चारों पांव पाच वीं बांधू पुछडी छटी बांधूं डाढ, कोणा कोणसा अधिया वघिया लटिया जटिया सेत सुनहरी शार्दू

ल बाराजात बारावर्ण कीलूं डाढ चारकोस आगे चारकोस पीछे चारकोस बावें चारकोस दाहनै सोलहकौसमें घनै घावतौ माता पार्वतीके चर्णाकी आण माता बाघणी के दूध पिये का हराम ईश्वर कूंची ब्रह्मताला हमारे नखासिखका गुरु गोरखनाथ रखवाला ॥ २५ ॥

विधि।

इस मंत्रको तीन वार पढ़ कर तीन ताली दे तो मंत्र सीधे चोरका मुख न होगा प्रथम ग्रहणकी रात ॐ २००८

मंत्र सिद्धकर लेवे।

सांप कीलनेका मंत्र।

वजरीवजरी वजर किंवाड, बजरीकीलूं आस पास, मरै सांप होय खाख मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥

विधि।

इस मंत्रसे पढकर एक कांकरी मारै सांप कीलाजाय॥

सांपखोलनेका मंत्र।

कीलन भई कुकीलनी, वाचा भया कुवाच॥
जाहु सर्पघर आपने, चुगफिर चारों मास॥२७॥

दूसरा मंत्र।

पहरभगोंये कापडे कर मरदाना भेस। बँधी बँधीपन छुटाई फिरिआ चारों देस॥ मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच॥ २८॥

विधि।

इन मंत्रोंसे पढकर कांकरी मारे तो कीला हुआ सांप छुटजाय॥

ईश्वरादि क्रोधशमनकर्ता मंत्र।

ॐ शान्तेप्रशान्तेसर्वक्रोधोपशमनिस्वाहा॥ २९॥

विधि।

इस मंत्रसे जलको २१ वार पढकर मुखपर छींटे मारदे तत्काल क्रोध शान्त होजाय॥

वशीकरण चामुंडा मंत्र।

ॐ ह्रीं रक्ष रक्ष चामुण्डे कुरु कुरु अमुकं मे वश मानय वशमानय स्वाहा ॥ २० ॥

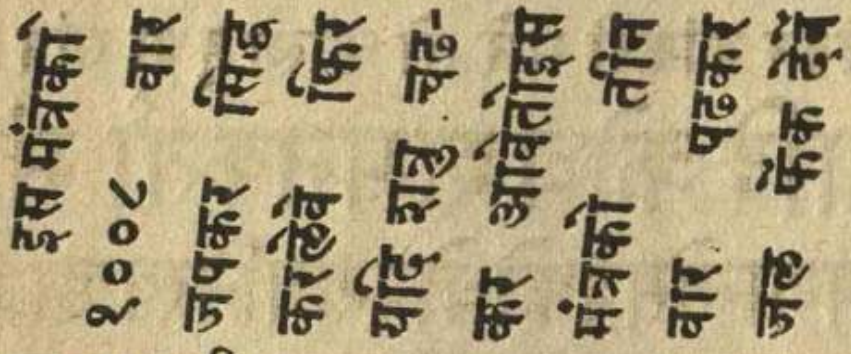
विधि।

इस मंत्रको पढकर जिसको चाहो वस करलो॥

सैन्यस्तम्भन मंत्र।

ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस निकषागर्भसंभूत परसैन्यस्तम्भने भगवान रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥

विधि।



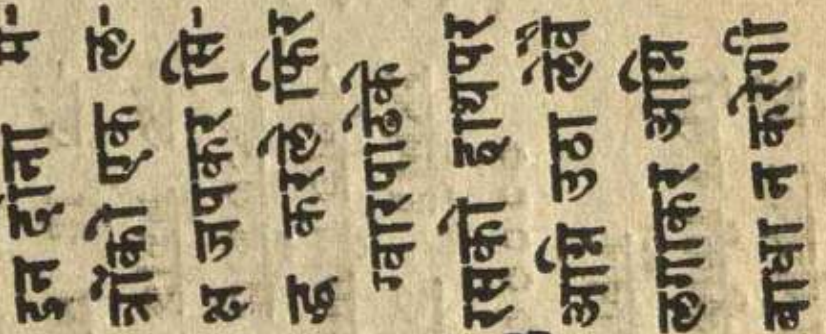
सेना वहीं रुक जायगी॥

अग्निस्तम्भन।

ॐ मत्तक टीट छय घने सेकटीयमूलीयसी।

आलिप्याम्नाय मुदीयते शनकवीञ्जे मन्दी हीं फट् ३२ ॐ ह्रीं महिषवाहिनी स्तम्भन मोहय भेदय-अग्नि स्तम्भय ठ ठ ॥

विधि ।



मंत्र हूककौ ।

ॐ नमो सारकी छुरी धारका बान हूक न चलैरे मुहमम्दा ज्वानकी आन । शब्दसांचा पिंड कांचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा ॥ ३४ ॥

विधि ।

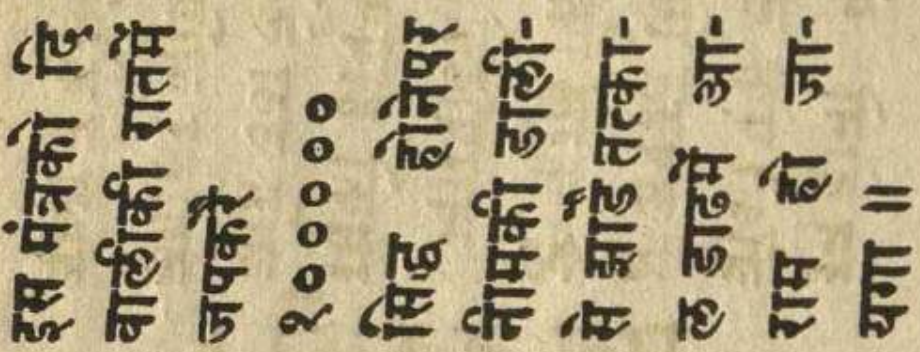
एक पैनी छूरी लेकर इस मंत्रको २१ वार पढता जाय और पृथ्वीपर छुरीसे लकीर खींचता जाय हूक बन्द होजायगा ॥

डाढके दरदका मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरूको बनमें व्याई अंजनी

जिनजाया हनुमन्त । कीडा मकुडा माकडा ये तीनों भस्मंत ॥ गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ ३५ ॥

विधि ।



पान वशीकरण मंत्र ।

हरेपान हरयालेपान चीकनी सुपारी स्वेत खेर दाहिनेकर चूना मोही लेहपान हाथ दे हाथ रस लेये पेटदे पेट रस लेह श्रीनारसिंहवीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वर महादेवकी वाचा ॥ ३६ ॥

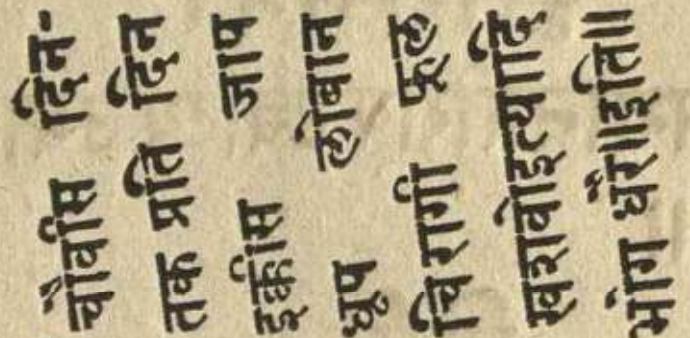
विधि ।

इस मंत्रको इक्कीसबार पढकर जिसको पान खवावै सोई वस होय यामें संशय नाहीं ॥

वशीकरण मंत्र ।

विस्मिल्लाहरहमानेरहीम इला एला एनेस इल लिल्लाह आनिर्मिलै सया मुहम्मद रसूलिल्लाह फलाना हमारा कहना करै लाइलाह इलालिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह ॥ ३७ ॥

विधि ।



वशीकरण अमलसुरमा ।

विस्मिल्लाह रहमाने रहीम जल देखि जल डरै थल देखि थलडरै सिंहासन बैठा राजा डरै सीतल पाटी बैठी राणी डरै जो न मानै इस सुरमेकी आन उसपर पडै हाजदह इमामके बांण ॥ ३८ ॥

विधि ।

दिन इक्कीस प्रतिदिन १०८ जप चिरागी लोबान मिठाई खुशबू आग धरै सिद्ध होय ।

मंत्र उच्चाटन।

ॐ ह्रीं मातेश्वरी गंडाली अमुकस्य या अमुकँ दह दह पचपच मथमथउच्चाटयउच्चाटय हुंफट्स्वाहा३९

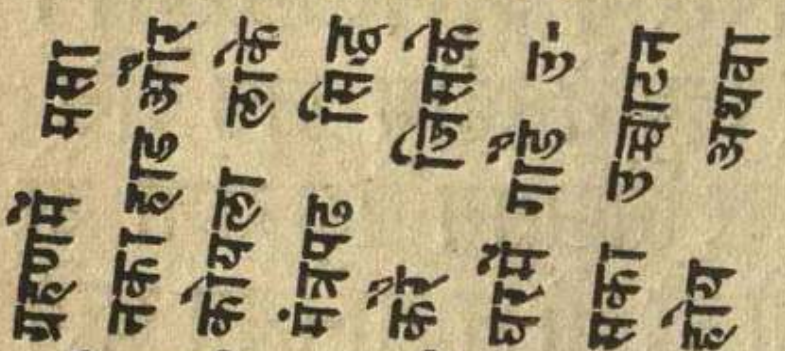
विधि।

तिनकी खल एकसौ आठवार जप होम करै उच्चाटन होजाय

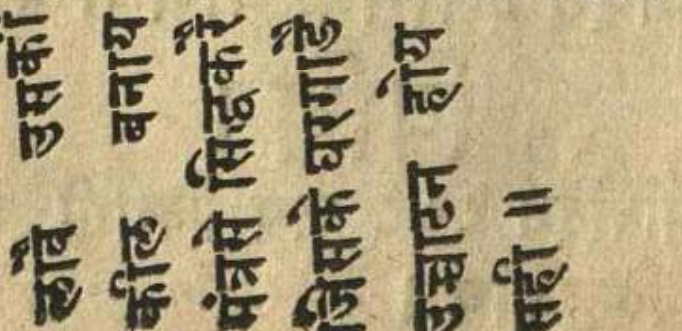
दूसरा मंत्र।

ॐनमो स्मशानवीराय उच्चाटय उच्चाटय कुरु कुरु स्वाहा ॥ ४० ॥

विधि।



शनीश्वर या रविवारको दुपहरके समय मसानमें जाकर हाड



बैरी निर्बल होय।

ॐनमो आदेश गुरुको बांधू अंबर बांधूं तारा बांधूं रक्त बिन्दुकी धारा ऊपर बांधै कामसेन तले बांधै हनुमंत पांचो पंडू साखदे फलानेकी कायाबंध हनुमन्त गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुका ॥ ४१ ॥

विधि।

सात शनीश्चर अ-
थवा इक्कीस दिन धूप,
दीपादि करके हनुमा-
नकी पूजाकरें प्रतिदिन
२०८ मंत्र जपे फेर
नीला तागा शनिवारको
मंगाकर सात गांठ
सात बार मंत्र पढ़

जिसकी खाटके पायेके नीचे गाडे सो नामर्द होय उखाडे तब रोग जाय।

वैरीको जेर करवाकौ मंत्र।

ॐनमो यावली यावली उसकासा चसमा कुलफ उसका बाजू कुलफ दुष्मनको जेर हमकों सेर४२

विधि ।

इक्कीसदिन हलें फेंकै बैरी बस होय ॥

मानकी पूजा करें मंगलसे १०८ जप करें मूलदीप नैवेद्य करें एकपूजन करोफेर मंगलकी मंगल २०८ जप करें कतराष्ट्र जहां बैरी बैठता हलाय तहांकी रेतकी मुकटीमर तीन वा सात मंत्र पढ़ें कर बैरीकी तरफ

चौरीकाढवाको मंत्र ।

ॐसत्रहसौ पीर चौंसठसौ जोगनी वामनसौ वीर बहत्तरसौं भैरूं तेरासौ तंत्र चौदहसौ मंत्र अठारासौ परवत सत्तरासै पहाड नौसै नदी निन्ना न वेसे नाला हनुमंतजती गोरख रख वाला कांसीकी कटोरी अंगुल चार चौडी कहौबीर कहांसो चलाई गिरनार पर्वतसों चलाई गिरनार पर्वतसों चलाय अठाराभार बनस्पतिचले लौना चमारीकी वाचा फुरै कहां कहां फुरै चौरके जाय चंडालके जाय चौरके जाय चंडालके जाय कहा कहा लावै चोरकों

लावै चकारकों लावै गडाधन जायबतावै चाल-चालरै हनुमंतावीर जहांहो चलै जहां होरहै न चलै तौ गंगा यमुना उलटी बहें शब्द सांचा पिंडकाचा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो-वाचा सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ ४२ ॥

विधि।

कांसीकी कटोरी
अंगुल चार चौडी
पैसा तीन भरकी
बनवावै दिवाली की
रातको फिर उसकी
पूजा करै गाहींमें
त्रिसा उडद पडै पूजा
करके कटोरी
चौकमें धरै

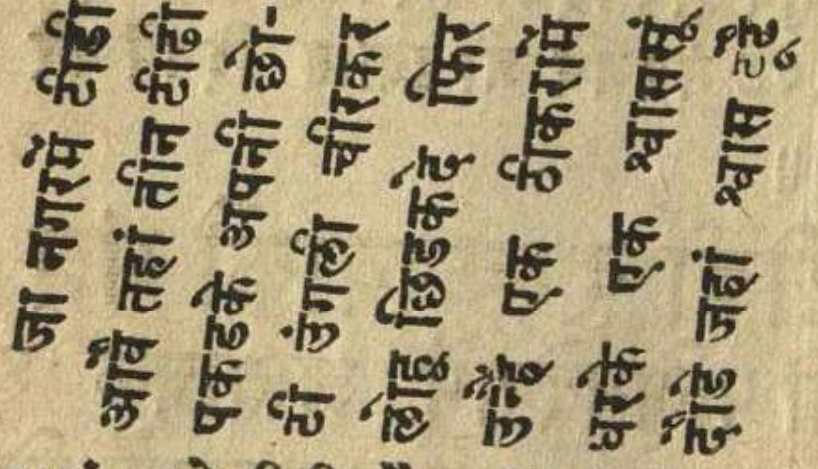
उडदके देतें कटोरी चलै माल चोरीको जहां होय तहां जाय मंत्र पढा करै धूप दीप दिया करैं सिद्ध होय दिन एकसौ एकमें प्रसितिदिन १०८ मंत्रजपै जो इक्कीस दिनमें करै तौ १००० प्रतिदिन जपै ॥

टीडी दूरकरवाकौ मंत्र।

ॐनमो पश्चिमदेशमें अस्ताचल हुआ जहा अजयपाल खुदाया कुआ जाकूआमें निकसा नीर

भेला हुवा बावनवीर जिन्हों मिल मता उपाया हाथपकरि टीडीको ल्याया सुनरे टीडी बनाकी कीडी बांधूं तेरी डाढ जिमी आसमान सिरले बाधूं तीजै तेरा जायाल्याऊं बारह कोस मुकाम कराऊं या विधि विचरें बावनवीर जायडारी समुद्रके तीर मेरा किया सब कोई लाजै मेरे सिरपै यती हनुमन्त गाजै किसी की चलाई चले नहीं मेरा डंका चार खूंटमें बाजे याविधिकी चलाई न चलै तो एक लाख अस्सी हज्जार पीर पैगम्बर लाजै मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ४४ ॥

विधि।

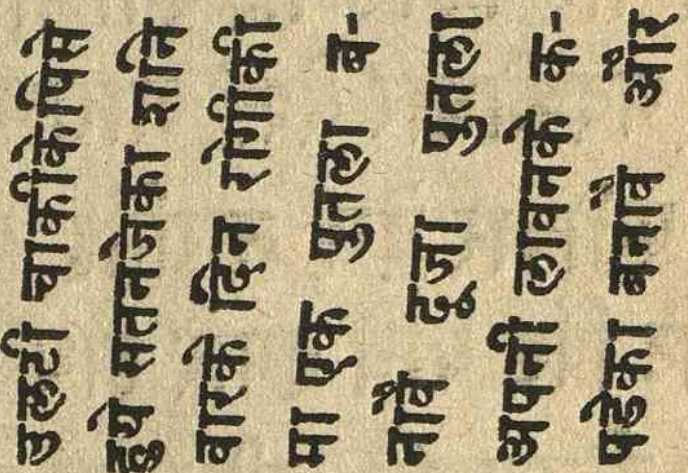


तासूं आगे टीडी बढै नहीं ॥

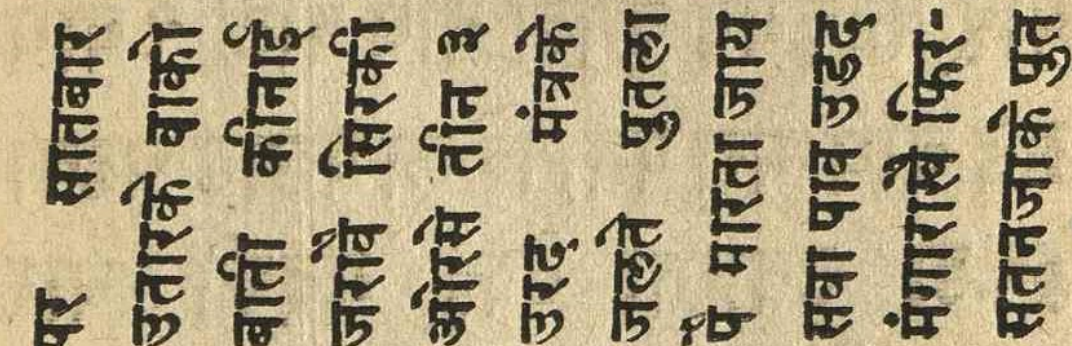
डाकिनी शाकिनीको मंत्र।

ॐनमो हनुमानजी आया काईं काईं लाया डाकिनी शाकिनी आनि २ कुरु २ स्वाहा ॥ ४५ ॥

विधि।



सबापातिलके तेलमें तरकरके पूतलाकों तकुवामें पिरोवे रोगी

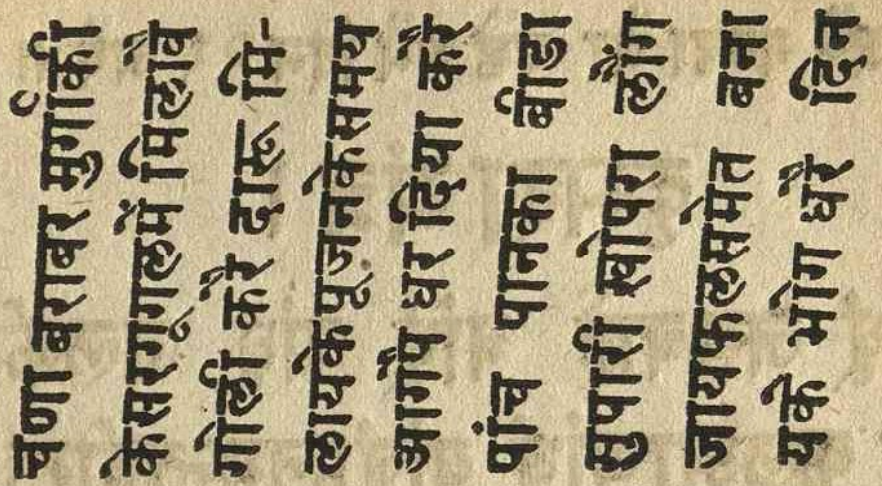


कर पानी भरदेवे जिससे डाकन भाग न जाय फिर थालके पुतला पै बलते हुए पुतलेका तेल ठपकाता रहै और तेल भी वा पूतला पै डालता रहै जिससे जलदी २ तेलकी बूंद वा पुतला पर पडें और डाकिनी जलै ज्योंही डाकिनीके अंगमें अग्नि लगैगी तुरन्तहाजर होयगी ॥

आसेव उतारवाको मंत्र।

ॐनमो नार सिंह वीर नारीका जाया कदका आया पांच पानका बीडा मधकी धारा चाल चालरे नारसिंह बीर कहांलगाई एती बार देस्यूं केशर कूंकडौ देश्यूं मदकीधार देश्यूं आराध्या आयौ नहीं कहां लगाई एतीबार देखूं नारसिंह बीर तेराकियां फलानेका घट पिंड बांध हमारे हाथ दिया मारतां कां हाथबांध बोलताकी जीभ बांध, झांकतांकी नैनबांध, हीयांवू कानूगढे बुगडौ बांध बोटी २ बांध पकडलटी पछाड बांध मेरा पग,तलेला पछाड चढता देश्यूं केसरकूंकडा उतारतां देश्यूं मदकी धार इतनादूं जब उतरज्यो खेलज्यो घोर मघार हमारा उतारा उतरज्यो औरका उतारया उतरैंतौ नारसिंह तू सही चंडाल शब्दसांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ४६ ॥

विधि।



२१ प्रतिदिन १०८ जाप सिद्ध होय ॥

पैर थामवाको मंत्र।

गौरी गंडा देगई ईश्वर देगया बाचा महादेव थापा धरगया हुआ शब्द यह सांचा ॥ इसत्रियाकी चिंता मेटौ दसमासा दसमास, बांधूं बीस पाखबांधूं इसका पैर खिसै तो गुरु गोरखनाथकी दुहाई फिरै ईश्वर गौरादीयाताला याघट पिंडका गुरु गोरखनाथ रखवाला शब्दसांचा पिंडकाचा फुरोमंत्र इश्वरोवाचा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति सत्यनाम नाम आदेश गुरूका ॥ ४७ ॥

विधि।

बारसात जपै गण्डा पैर पडै थमै दिन २१ जपै॥

दूसरा मंत्र।

जलबांधूं जलबाई बांधूं बांधूं जलकी तीर। पांचोंकाचा कलुआ बांधूं बांधूं हनुमन्तबीर। सहदेव तेरी लाकडी अर्जुनतेरा बान। रावण रणतरथा म दौ जती हनुमन्तकी आन॥ शब्दसांचा पिंडकाचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा, मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति सत्य नाम आदेश गुरूका॥ ४८॥

विधि।



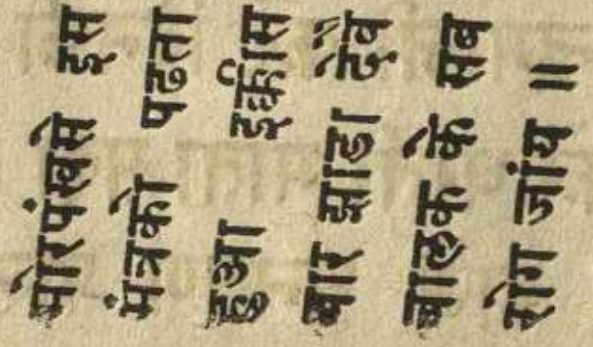
आराम होय.

झाडा रामरक्षाका।

ॐ रोम रोमकी रक्षा रामजी करें हाडन रक्षा हरजी करें टकनाकी रक्षा टीकमजी करें पिंडरीकी रक्षा मोहनजी करें गोडनकी रक्षा गोवर्धनजी करें जांघनकी रक्षा जनार्दनजी करें इन्द्रीकी रक्षा इंद्रजी करें कमरकी रक्षा केशवजी करें पेटकी रक्षा पुरुषोत्तमजी करें खँवानकी रक्षा गरुडजी करै कंठकी रक्षा कृष्णजी करें ओंठनकी रक्षा हनुमन्तजी करें जिव्हाकी रक्षा पार्वतीजी करें नाककी रक्षा नरसिंहजी करें नेत्रकी रक्षा नारायणजी करें ब्रह्मांडकी रक्षा श्रीसकल वेदशास्त्र सहाय करें चोटीकी रक्षा चतुर्भुजजी करें आकाशकी रक्षा ज्योतिसरूपजी करें रैनकी रक्षा चन्द्रमाजी करें दिनकी रक्षा श्रीसूर्यनारायणजी करें धरती माता सदा रक्षा करबो करें अनहद नाद बाजे धनतृण प्राल जंजाल भय

व्यापैन पीरा अंडेसो ब्रह्मंडे मूरख डोलै खंडे खंडे झलहोय तौ झलकूं मारूं, घात होय तौ घातकूं मारूं, छलछिद्र होय तौ छलछिद्रकूं मारूं, जलमें, थलमें, फूटमें दृढकर बांधौं पालबीज जमामनदे-गया श्री ब्रह्माविष्णू मुरार तलझडै पिंडवा पडे जहां बैठे बाबा हनुमन्त हुंकार करें हाट होट काया जामें शब्दसमाया राख राखहो निरजना सरनाई तेरीआल जंजाल भय व्यापै न पीडा चौकी फिर गये बावन बीरा इतके राम रक्षा सत्य करै भाषी सत्यनाम सत्यवीर सत्यनाम आदेश गुरूका शब्द सांचा पिंड-काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र इश्वरोवाच ॥ ४९ ॥

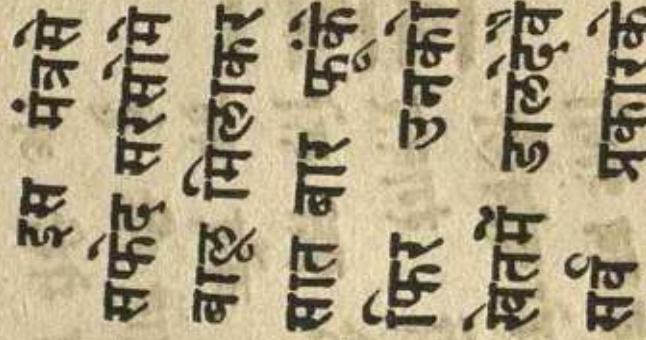
विधि ।



पक्षियोंकी चोंच बन्द करनेका मंत्र।

ॐ नमो नगर नाथाय हर हर शिलि २ सर्वेषां प्राणिनां तुण्ड बन्धनं कुरु २ हुं हुं फट् स्वाहा॥५०॥

विधि।

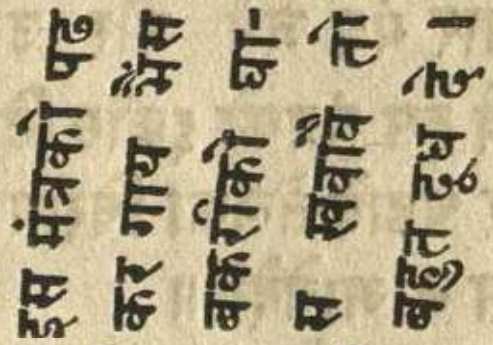


उपद्रव नष्ट होजांय॥

बहुत दूध करनेका मंत्र।

ॐ नमो हुङ्कारिणि प्रसव ॐशीतलम्॥ ५१॥

विधि।



भैरोंकी चाकीका मंत्र।

कालाभैरों कालीरात, चले भैरों आधीरात, चले

कतार बांध तू बावन बीर परनारीसे राखी सीर छाती पाव धरता लावै बैठी होय उठाय लावै सोती हो जगाय लावै जल्दी लावै नहीं लावै तो माता का चूंस्या दूध हराम करै ॥ ५२ ॥

विधि ।



अभिलाषाके निमित्त मुझे तेल देवै रविके दिन सुर्योदयसे पहिले बांये हाथसे एक झटकेमें तोडलावे और बीज निकालकर बत्ती-बनाकर उसका १०८ वार मंत्र जपै और उसपर फूंक देवै फिर इसका तमाशा देखै इस मंत्रको इक्कीस दिनतक एक सहस्र प्रतिदिन जपै तेल सिंदूर चढावे तेलका चिराग जलावे धूप देवै और दूसरेको अपने पास न आनेदेवे ॥

कीडा झाडनेका मंत्र ।

ॐनमो कीडारे तूं कुंडकुंडाला, लालपूँछ तेरा

मुख काला, मैं तुही पूछूं कहांतेआया, तोडमास सबको क्यों खाया, अब तू जाय भस्म हो जाय, गोरखनाथजी लागूं पाय शब्दसांचा पिंडकाचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा ॥ ५३ ॥

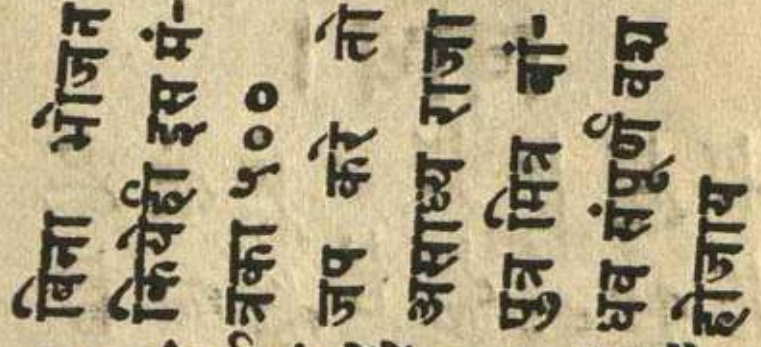
विधि ।

इस मंत्रको पढकर सातवार नीमकी डालीसे झाड देवे तो कीडा मरजाय ॥

सर्वजन वशीकरण मंत्र ।

मोंड्रों ॥ ५४ ॥

विधि ।



यह संपूर्ण मंत्रोंमें उत्तम मंत्र है ।

पुनर्वशीकरण मंत्र ।

ॐ नमोः कटविकट घोररूपिणी स्वाहा ॥५५॥

विधि ।

मातका पिंड़ा बन कर इस मंत्रको सातवार पढकर जिसके नामसे सात दिन तक खाय को अवश्य वश होय ॥

पुनर्वशीकरण मंत्र ।

ॐवश्यमुखि राजमुखि स्वाहा ॥ ५६ ॥

विधि ।

इसमंत्रको सातबार पढकर मुखधोवे फिरजिसको देखैसो वशहो

वशीकरणतैल मंत्र ।

ॐराजमुखि वश्यमुखि स्वाहा ॥ ५७ ॥

विधि ।

बांये हाथमें तेल ले कर तीन वार मंत्र पढकर फूंकदे फिर प्रातःकालही शय्या पर बैठकर तीन वार मूलमंत्रका पाठ करे मुख और केशों के पर लगावे तो जिसको देखै वशहोय और व्याघ्रभी उसको नहीं खायगा ॥

वशीकरण फूल मंत्र।

ॐचामुंडे जय जय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय सर्व सत्वायैनमः स्वाहा ॥ ५८ ॥

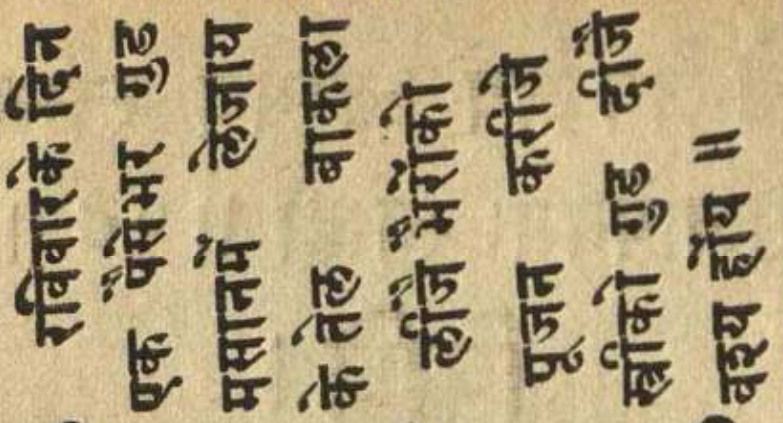
विधि।

इस मंत्रको पढकर जिसको फूल दौ वही बश होय।

वशीकरण मंत्र।

ॐनमो गुड गुडरे तू गुड गुड तामडा प्रसाना केलिकरंता जा उसका देग ऊभा सब हरखें हमारी आस रवसमकों देखें जलै बलै हमकों देखें साकि-रुचले चलि चालिरे कालिकाके पूत जोगी जंगम अरु अवधूत जैसेहो तैसे ले आव न ल्यावै तौ माता कालिकाके शय्यापर पांव धरै शब्द सांचा पिंडकांचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरुका ॥ ५९ ॥

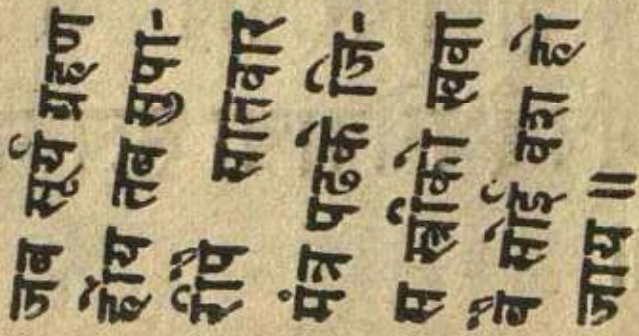
विधि।



वशीकरण मंत्र सुपारी।

ॐनमो उर्वशी सुपारी कामनिगारी राजा परजा खरी पियारी मंत्र पढ लगाऊं तोहि हिया कलेजालाने तोडि जीवता चाटै पगतली मूवा संग मसान सो वश्य न होय तो यती हनुमानकी आन। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ ६० ॥

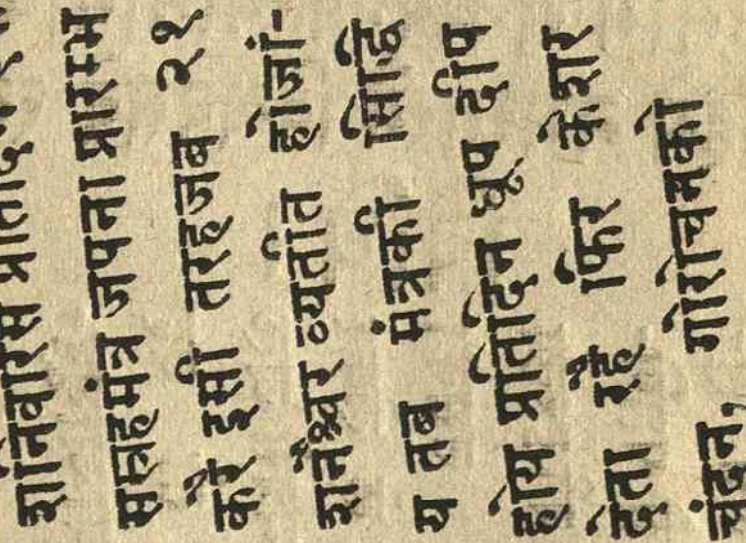
विधि।



राजा वशीकरण मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरुका जल बांधूं जलहर बांधूं बांधूं द्वारवार बांधूं बार बार बांधूं शिवपूत प्रचंड बांधू रूडा राजा कांई करसी आसण छोड पास बैठण देशी आपण टीको चंदन ललाट टीको काढी सिंहवर्ण कहाऊं और करूं सैईयाल, तेमें वंध्यान गौरी पार्वती बन्ध्यान तेमें बन्ध्याया गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ६१ ॥

विधि।



दूधमें घिसकर तिलक करै और राजाके सन्मुख जाय तो राजा वश होय ॥

वशीकरण धूप मंत्र।

ॐमूली मूली महामूली सर्व सक्षोभय एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा ॥ ६२ ॥

विधि।

नागके सार तगर, कमलके सार, जटा मांसी ये सब सं- मान भाग लेकर पीस लेआरइसको अग्निपर डालकर अपने अंगको इस धूनी मंत्रसे देय

बो स्त्री बश होय ॥

मंत्र वशीकरण विश्वावसु।

ॐविश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामीधपः। सुरूपां सालङ्कारांदेहिमे नमस्तस्मै विश्ववसवे स्वाहा॥६३॥

विधि।

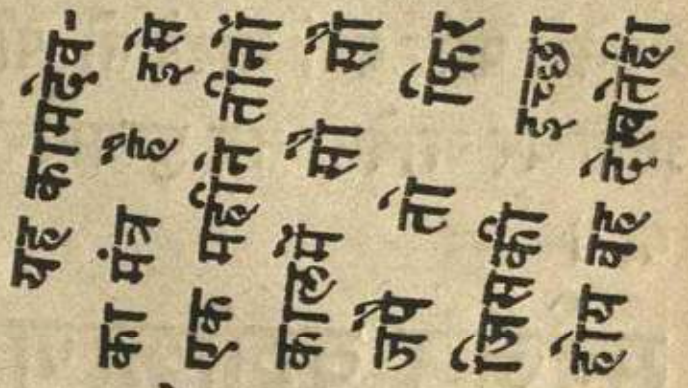
जिस सं- दिनसे पाठ- ग्रहणकी इच्छा उसको हो नाम ले- इस मंत्रसे जल दे वह कन्या आभूष-

णोंसमेत आकर प्राप्त होवै ॥

वशीकरण मंत्र कामदेव।

ॐ नमः कामदेवाय सहकल सहदश सहयम सहलिमे वन्हे धुनन जनं मम दर्शनं उत्कण्ठतं कुरु कुरु दक्ष दक्षुधर कुसुमं बाणेन हनहन स्वाहा ॥६४॥

विधि।

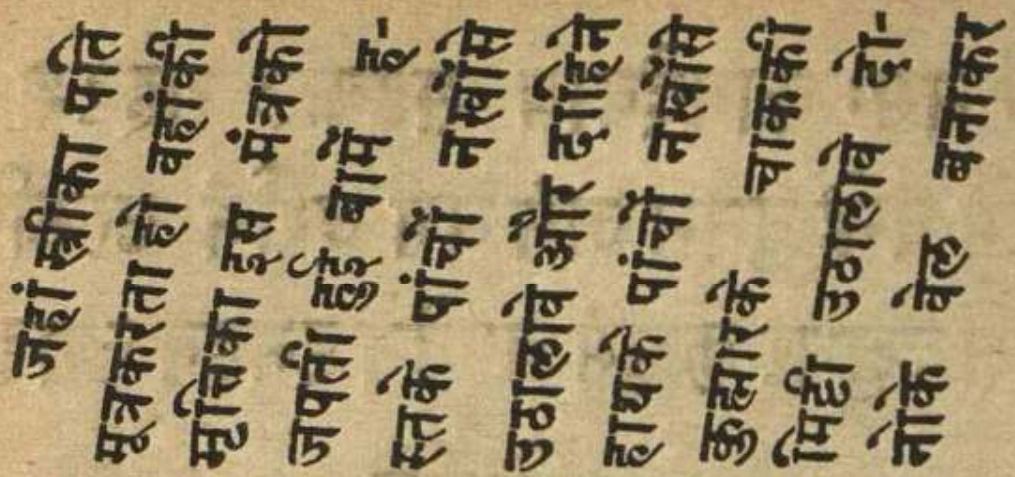


वश हो जाय॥

पति वशीकरण मंत्र।

ॐह्रीं नाथं तुच्छं मन्त्रयती ह्रौं पञ्चनखे उच्चण्डं पनीह्रौं सामोहि नीलद्रति सौंसा योगिनी कामिनी याली बन्धौ सुखेन सांजवेन जामृयसं रांसास्था॥ ६५॥

विधि।



बीचमें डोरा पोदेवे इस बेलको द्वारमें रखदे जब तक पति न लांघे, लांघनेके पीछे वहीं गाढदे तो पति वश हो जायगा और जब उसके घर आवेगा तब पुरुषार्थको प्राप्त होगा अन्यत्र नपुंसक रहेगा॥

सर्वजन वशीकरण मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरुकों राजा मोहूं परजा मोहूं मोहूं ब्राह्मण बाणियां हनुमन्त रूपमें जगत मोहूं जो रामचन्द्र परमाणियां गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ६६ ॥

विधि।

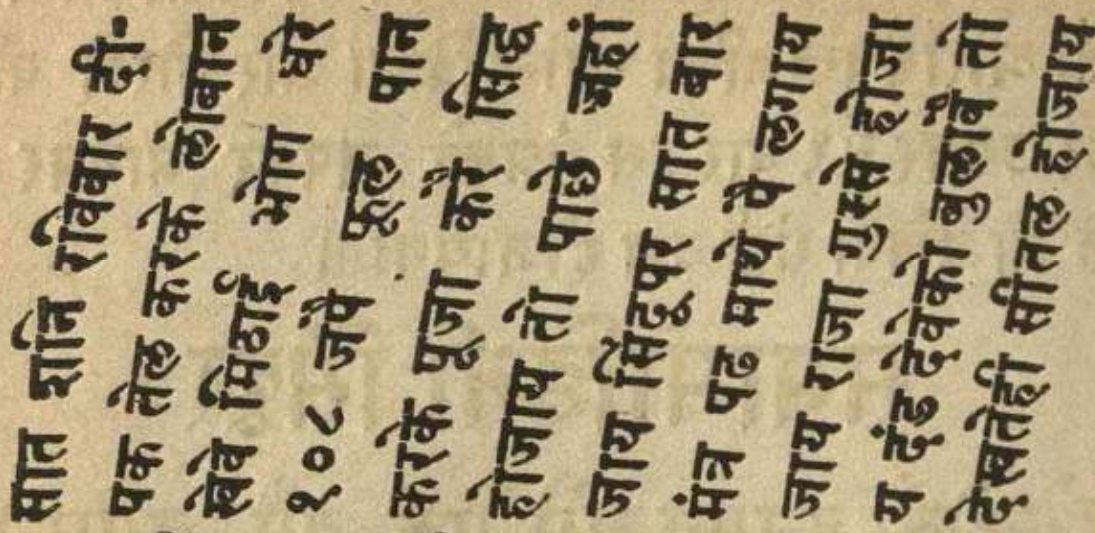
इस मंत्रको प्रथम २१ दिवसतक एकसहस्र प्रतिदिन जपे

और धूप दीप फूल चन्दन नैवेद्य नित्यप्रति करता रहे ऐसा करनेसे यह मंत्र सिद्ध हो जायगा फिर सब किसी को वसकरना चाहे तो श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान किया और चोराहे की धूल उठाकर उसपर २१ वार इस मंत्रको जपकर माथेपर बिन्दी लगाले जो देखेगा सोई वश होजायगा ॥

सभामोहिनी सिंदूर।

हथेलीतौ हनमत बसै भैरूं बसै कपार। नाहरसिंहकी मोहनी मोहौ सब संसार ॥ मोहनरे मोहनतावीरसब वीरनमें तेरासीर सबकी दृष्टि बांधदे मोहि तेल सिंदूर चढाऊं तोहि। तैलसिंदूर कहांसे आया कैलास परवतसैं आया कौनलाया अंजनीका हनुमन्त गौरीका गणेश कालागोरा तोतला तीनों बसैं कपाल। बिंदा तेल सिंदूरका दुशमन गया पताल ॥ दुहाई कामिया सिंदूरकी हमें देख सीतल हो जाय हमारी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ ६७ ॥

विधि।

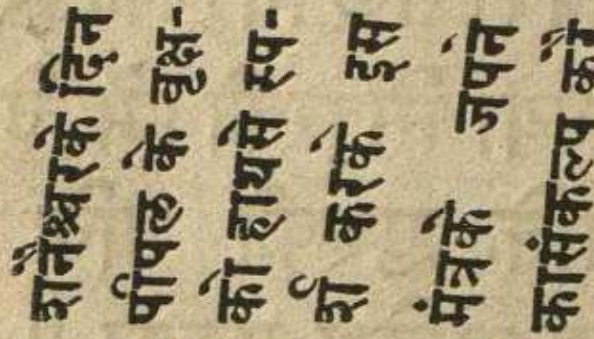


जिस सभामें जाय वहांके सब मनुष्य बडा आदर भाव करें अरु प्रीतिसे सन्मान करें ॥

त्र्यंबक प्रयोग।

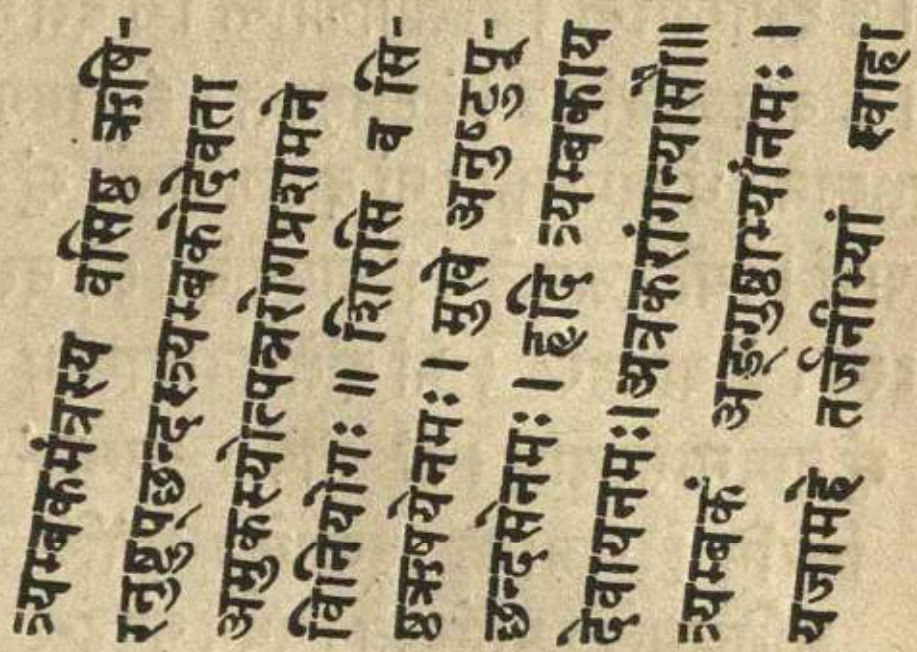
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ६८॥

विधि।



गोत्रस्य श्रीअमुकदेवशर्मणो झटित्युत्पन्नरोगप्रशमन-

पूर्वकदीर्घजीवित्वकामोऽहममुकसंख्याकं जपं करिष्ये ॥ इस रीतिसे संकल्पकरके पीपलकी पींडके पास आसनपर शिवलिंगको स्थापन करके और अर्घ्यपात्रको रखकर अंजली बांधकर न्यास करे। न्यास विधि–



सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां वषट्। उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां हुं। मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।मामृतात् करतलपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषु। त्र्यम्बकंहृदयायनमः। यजामहे शिरसे स्वाहा। सुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनं शिखायै वषट्। उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचायहुं। मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयायवौषट् मामृतात् अस्त्राय। फडित्यूर्ध्वोर्ध्वतालत्रयं दत्वा चुक्कटिकाभि-र्दशदिशोबध्नीयात्।

अथ मंत्रवर्णन्यास ।

ॐयं पूर्वमुखे । बं पश्चिममुखे । कं याम्यमुखे । यं उत्तरमुखे । जां वक्षसि । मं गले । हें ऊर्ध्वमुखे । सुं नाभौ । गं हृदि । धिंपृष्ठे पुंकुक्षौ । ष्टिं लिंङ्गे । वंपादयोः । द्धं दक्षोरुमूले । नं वामोरुमूले । उं दक्षोरुप्रान्ते । वांवामोरुप्रान्ते । रुं दक्षजानुनि । कं वामजानुनि । मिं दक्षगुल्फे । वं वामगुल्फे बंदक्षस्तने । धं वामस्तने । नां दक्षिणपार्श्वे । मृं वामपार्श्वे । त्यों दक्षपादे । मुं वामपादे । क्षीं दक्षहस्ते । यं वामहस्ते । मां दक्षिणनासायाम् । मृं वामनासायाम् । तां शीर्षे । त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रूयुगले । सुगंधिं अक्षियुगले । पुष्टिंवक्त्रे । वर्धनं गण्डयुगले । उर्वारुकं हृदये । इव जठरे । बन्धनात् गुह्ये । मृत्याऊरुद्वये । मुक्षीय जानुद्वये मामृतात् पादयोः ।

अथ ध्यानम् ।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैरालपवयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ॥

अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं
स्वेच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥१॥

विधि ।

ऐसे ध्यान करके शिवलिंगको स्थापन करै और षोडशोपचारसे आराधना करके अंगोंका पूजन करै। ॐअर्कमूर्तये नमः। ॐ इन्दुमूर्तये नमः। ॐ वसुधा मूर्तये नमः। ॐ तोयमूर्तये नमः। ॐ वह्निमूर्तये नमः। ॐ वायुमूर्तये नमः। ॐ आकाशमूर्तये नमः। ॐ यजमानमूर्तये नमः। ॐ रमायैनमः। ॐ एकायैनमः। ॐ प्रभायैनमः। ॐ ज्योत्स्नायैनमः। ॐ पूर्णायैनमः। ॐ उमायैनमः। ॐ पूषायै नमः। ॐ स्वधायैनमः। ॐ विश्वायैनमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ सितायैनमः। ॐ श्रद्धायैनमः। ॐ सारायैनमः। ॐ सन्ध्यायैनमः। ॐ शिवायैनमः। ॐ निशायै नमः। ॐ आर्य्यायैनमः। ॐ प्रज्ञायैनमः। ॐ मेधायैनमः। ॐ कांत्यैनमः। ॐ काल्यैनमः। ॐ धृत्यैनमः। ॐ मत्यैनमः। ॐ उमायैनमः। ॐ पावन्यैनमः। ॐ प्रद्मायैनमः। ॐ शान्तायै नमः। ॐ मेधायैनमः। ॐ जयायैनमः। ॐ अमलायैनमः। इत्यादिमंत्रोंसे पूजन करै ॥ इसी तरह ॐ इन्द्राय वज्रहस्ताय नमः। ॐ अग्नये शक्तिहस्तायनमः। ॐ ममाय दंडहस्ताय

नमः । ॐ निर्ऋतये खड्गहस्तायनमः। ॐ वरुणाय पाशहस्तायनमः । ॐ वायवे ध्वजहस्तायनमः । ॐ सोमाय गदाहस्तायनमः । ॐ ईशानाय शूलहस्तायनमः । ऊर्ध्वं ॐ ब्रह्मणे पद्महस्तायनमः । अधः ॐ अनन्ताय चक्रहस्तायनमः । या प्रकार पूजन करके समाप्त करे ॥

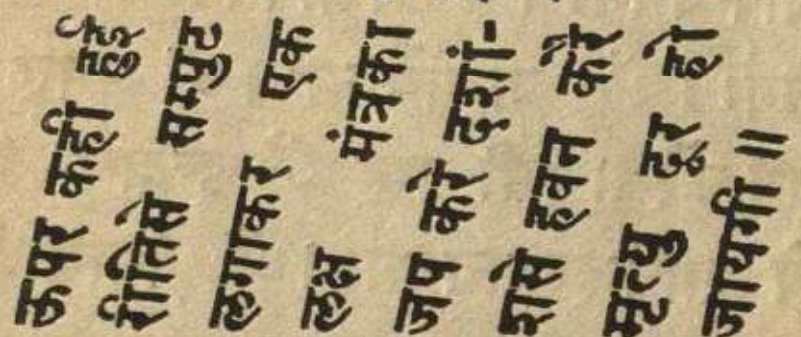
मृतसञ्जीवनी ।

ॐ हौं जूं सः ओ३म् भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् हौं ॐ जूं सः ॥ ६९ ॥

दूसरी विधि ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ हौं जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम् । ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् हौं ॐ जूं सः ॥ ७० ॥

विधि ।



शुक्रोपासित मृतसंजीवनी विद्या मंत्र ।

ॐतत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं धियो योनःप्रचोदयात्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ७१ ॥

अन्यप्रकार मृतसंजीवनी विद्या ।

ॐ जूं सः मां जीवय पालय ॥ ७२ ॥

मृतसंजीवनी मंत्रके ध्यान ।

स्वच्छं स्वच्छारविन्दास्थितमुभयकरेसंस्थितौपूर्ण कुंभौ द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौ ॥ द्वाभ्यांतौच स्रवन्तौ शिरसि शशिकला चामृतैः प्लावयन्तं देहं देवो दधानो विदिशतु विशदां कल्पजालं श्रियं नः ॥

विधि ।

ॐ ध्यानं समर्पयामि ॐ ध्यान करके पुष्प लेवे ॐ कलिपतमूर्तये नमः ॐ आवाहनं करके पुष्प लेवे ॐ त्र्यम्बकं यजामहे नमः ॐ आसनं महारुद्राय नमः ॐ आसनमें पुष्प लेवे ॐ ह्रीं ॐ

अथ मृत्युंजयप्रयोग।

ओ ३ म् जूं सः ॥ ७३ ॥

विधि।

प्रथम स्वस्ति वाच- तपूर्वक संकल्प ॐ अमुक अमुकगोत्रस्य श्रीअमुकदेव शर्मणो जीववत्सुखसंपूर्ण शतायुरारोग्य शतपुत्रशतपौत्रसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं त्र्यक्षरमृत्युञ्जयमंत्र लक्षमयजपमहं करिष्ये । ॐ संकल्प करके न्यास करे यथा-शिरसि कहोलं

ऋषयेनमः । मुखे गायत्री छन्दसे नमः । हृदि मृत्युञ्जयाय देवायनमः । ततः कराङ्गन्यासौ । सां अंगुष्ठाभ्यांनमः । इत्यादि एवं सांहृदयायनमः इत्यादि ॥

अथ ध्यानम्।

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्॥ इन्दोःकोटिगलत्सुधाप्लुभूतनुं हारादिभूषोज्ज्वलं कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये ॥

विधि।

इस मंत्रसे ध्यान करके अपने मस्तकपर फूल धारण करे और मानसिक पूजा करे। इसका पुरश्चरण एकलक्ष मंत्रकाहै फिर इसके दशांश क्रमसे होमादिक करना चाहिये हवनकी सामग्री यह है दूध, घी और गिलोयके इन तिनोंको मिलाकर हवन करे॥

शूलरोगके नाशकरनेका मंत्र।

ॐ मीढुष्टमः शिवतमः शिवोनः सुमना भव परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचरपिनाकं बिभ्रदागहि॥ ७४॥

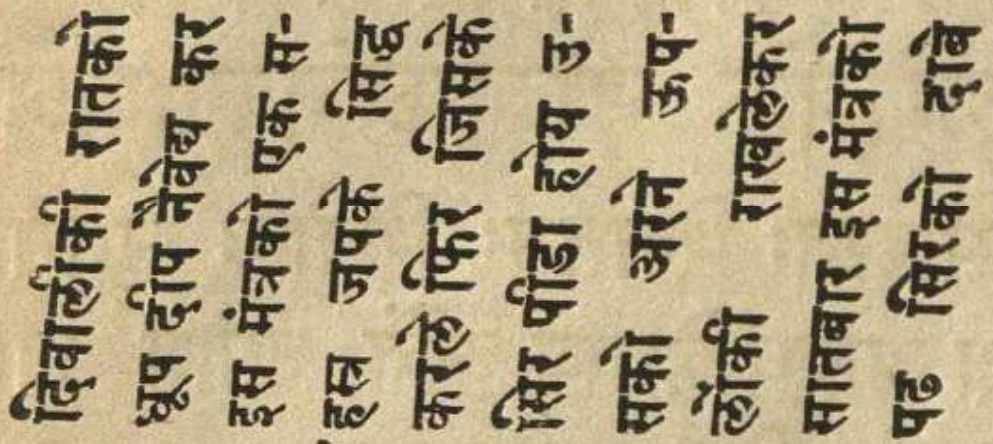
विधि।

त्र्यंबक विधानसे शिवजीका पूजन करके संकल्प करे फिर इस मंत्रका एकसहस्र अथवा एक लक्ष जपे तो निश्चय शूलकी पीडा जाय॥

मंत्र मथवायका।

ॐनमो आदेश गुरूकों बालमें कपाल, कपालमें भेजी, भेजीमें कीडा, करैन पीडा, सौनेका सलावा, रूपाका हथोडा, ईश्वर गढै गौरिया तोडे इनको शाप श्रीमहादेव तौडे, शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ ७५ ॥

विधि।

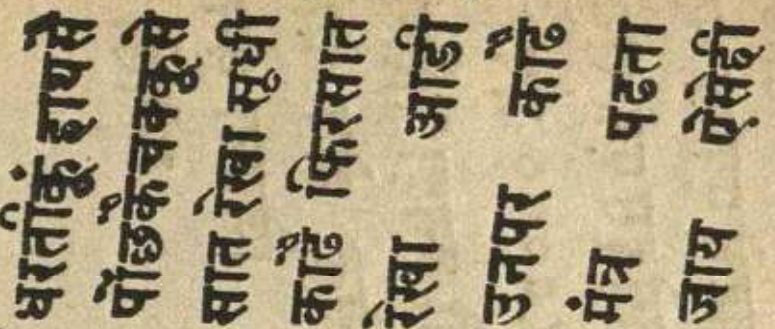


आराम हो जायगा।

आधा शीशीका मंत्र।

ॐनमो बनमें व्यानी बानरी उछर वृक्षपै जाय कूद२ शाखानपै काचा बनफल खाय॥ आधा तोडै आधा फोडै आधा देय गिराय। हुंकारत हनुमानजी आधाशीशी जाय ॥ ७६ ॥

विधि।

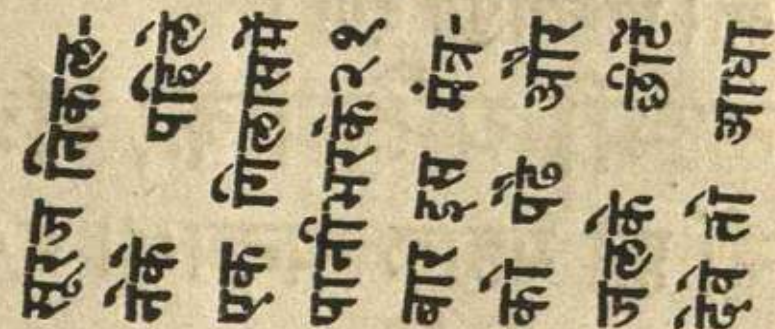


सात बार करै आधाशीशीजाय।

दूसरामंत्र।

ॐनमो दुघटा तौ बनमें बसै तिपटा सबैकवाय। शीसपकडकै चाहिये आधा शीशी जाय॥ मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरूकौ॥ ७७॥

विधि।



शीशी जाय॥

यक्षिणीके सिद्धिकरनेका मंत्र।

ओं ऐं क्लीं श्रीं धनं कुरु २ स्वाहा॥ ७८॥

विधि ।

पीपलके वृक्षपर चढके एकाग्र मनसे इस एक अरब २००० जपकरे तो यक्षदा यक्षिणी सिद्ध होय चाहे जितना धन मांगलो ।

पुत्रदा यक्षिणीका मंत्र ।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७९ ॥

विधि ।

इस मंत्रको आमके वृक्षपर चढकर एकाग्र मनसे एक कं जप पुत्र यक्षिणी सिद्ध हो जायगी ।

और निश्चयपुत्र देगी ।

महालक्ष्मी यक्षिणीका मंत्र ।

ओ३म् ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यैनमः ॥ ८० ॥

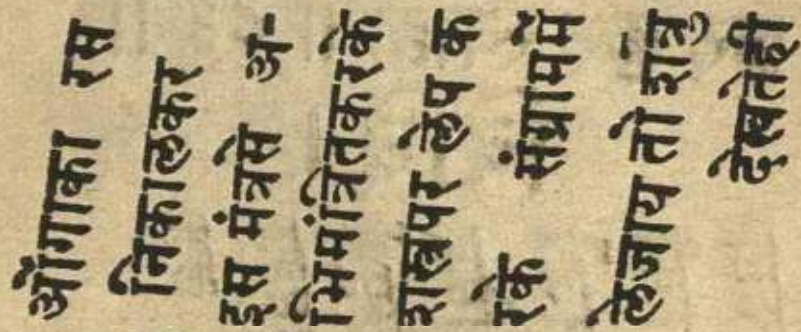
विधि ।

वटके वृक्षपर चढकर एकाग्र मनसे एक करोड जप करै तौ महालक्ष्मी नाम यक्षिणी सिद्ध होकर अचल लक्ष्मी देगी ॥

शत्रुके मोहनेका मंत्र।

ॐनमो महाबलमहापराक्रमशास्त्रविद्याविशारद अमुकस्यभुजबलं बन्धय बन्धय दृष्टिंस्तम्भय स्तम्भय अङ्गानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले ह्रूं ॥ ८१ ॥

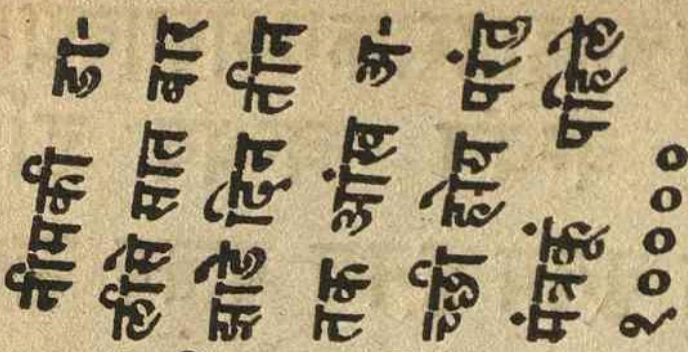
विधि।



मंत्र नेत्र न दुखे।

ॐनमो झलमल जहर भरी तलाई। अस्ताचलपर्वतते आई। तहां बैठा हनमन्ता जाई। फूटेन पाकै करैन पीडा। यतीहनुमन्त राखैहीडा। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरू कौ ॥ ८२ ॥

विधि।

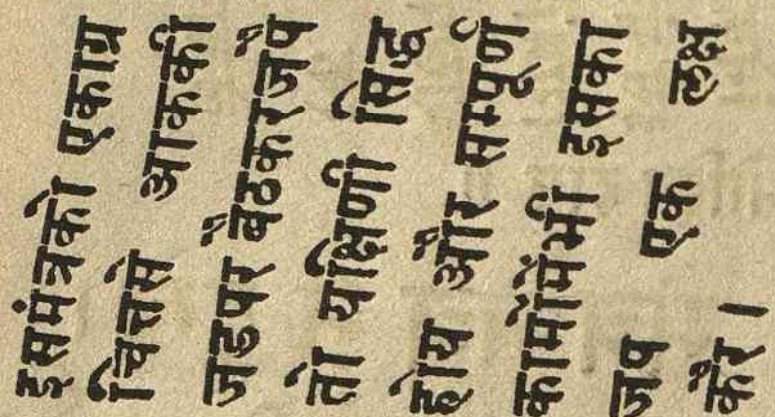


जप करके सिद्ध करले ॥

जया यक्षिणीका मंत्र।

ओं जयं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८३ ॥

विधि।



अशुभ नाशक यक्षिणीका मंत्र।

ओं ऐं क्लीं नमः ॥ ८४ ॥

विधि।

आंवलेके जडपर बैठकर इसमंत्रको १००००० जपै यक्षिणी सिद्ध हो सब अशुभों को दूर करै ॥

राजकरण मंत्र।

ॐ क्लीं क्लीं नमः ॥ ८५ ॥

विधि।

इस मंत्रको १०००० तुलसीकी जड़ पर बैठकर एकाग्रचित्तसें तो अकस्मात् राज्य मिले ॥

महाराजकारक मंत्र।

ॐ ह्रौं नमः ॥ ८६ ॥

विधि।

अंकोलकी जडपर बैठकर ध्यान पूर्वक एक लक्षजप- सें राजाप्रें- राजहीजाताहै यह साक्षात् शंकरका रूप- देखा है ॥

कार्यसाधक मंत्र।

ॐ वाङ्मायायै नमः ॥ ८७ ॥

विधि।

कुशाकी जडपर बैठकर एकलक्ष जपनेसे संपूर्ण कार्य सिद्ध होजाते हैं ॥

वाचा सिद्ध होनेका मंत्र।

ॐ ह्रीं भारत्यै ईं नमः ॥ ८८ ॥

विधि।

शंकरोक्त इस मंत्रका आंगाकी जडपर बैठकर जप-ने मनुष्यकीवाणी सिद्ध हो जाती है जोकि सोहोजाय २०००० जप हो॥

विद्यामंत्र।

ॐ ह्रीं श्रीशारदायै नमः ॥ ८९ ॥

विधि।

गूलरके वृक्षपर बैठकर इस मं-त्रको जपनेसे मनुष्य १४ विद्यानिधान हो जाताहै जप २०००० ।

सरस्वती मंत्र।

ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ९० ॥

विधि ।

निगुंडीकीजड़-
पर बैठकर इस
मंत्रकोजपनेसे
विद्यावान् हो
जाता है जप
एक लाख करे

वांछित फलदायक यक्षिणीका मंत्र ।

ओं जगन्मात्रे नमः ॥ ९१ ॥

विधि ।

विरामे
बैठकर
करनेसे
नाम
सिद्ध
वांछित
=
मक्षेद
दीपर
जप
संतोषा
यक्षिणी
होकर
फल देती है

सुरसुन्दरी यक्षिणीका मंत्र ।

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा ॥ ९२ ॥

विधि ।

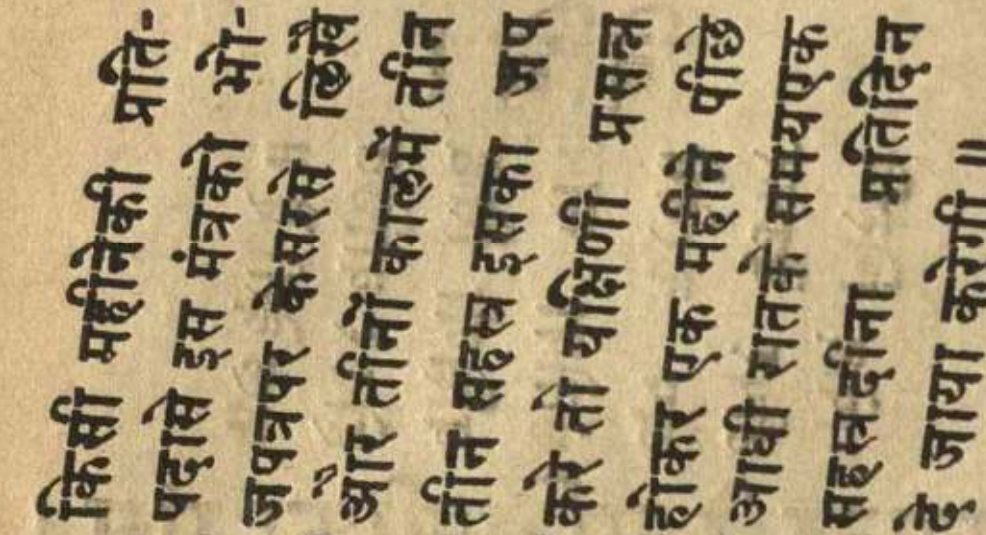
एक लिंग महादेवकी मूर्तिका त्रिकाल पूजन करै धूप दीप

देकर तीन सहस्र मंत्रका जाप करे इसरीतिसे एक महीने पीछे सुरसुन्दरी आवेगी तब उससे कहै कि "देवि! दारिद्र्यदग्धोऽस्मि तन्मे नाशकरी भव।" ऐसे कहकर प्रणाम करै अर्घ देय तब वह प्रसन्न होकर अमित वित्त और दीर्घायु दे जायगी ॥

सहस्रमुद्राप्रयोग मंत्र ।

ॐ अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ ९३ ॥

विधि ।



यह शंकरोक्त है इसमें संदेह नहीं ॥

अमृतयक्षिणीका मंत्र ।

ॐ क्लीं चन्द्रिके हंसः ओंक्लीं स्वाहा ॥ ९४ ॥

विधि ।

पडवासे आरंभ करके शुक्लपक्षमें इसमंत्रको उस समयतक

जपकरै जबतक चन्द्रमा दीखे ऐसा करनेसे अमृता नाम यक्षिणी सिद्ध होकर अमृत दे जायगी जिसको पीकर कभी मृत्यु पास ही न आवे।

कर्णपिशाचिनी मंत्र।

ॐ ह्रीं चण्डवेगिनि वरदे स्वाहा ॥ ९५ ॥

विधि।

इस मंत्रको एक अयुत १०००० जपे तो कर्णपिशाचनी सिद्ध होकर त्रिलोकीकी वार्ता कानमें कहजाया करैगी ॥

कर्णपिशाचिनीका मंत्र।

ॐनमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा॥९६॥

विधि।

मूलिकाका फूल तथा
सरफोंकाकी जड़को
लाल डोरेमें बांधकर
डोरपर बांधे और
मंत्रको एक अयुत जपे
तो रात्रके समय
पिशाचिनी तीनों
कहा सभाखेम
जायगी ॥

हंसी यक्षिणीका मंत्र।

ओ३म् हंसी हं याने ह्रीं त्तीं स्वाहा ॥ ९७ ॥

विधि।

इस मंत्रको शहरके बा-
हरके कोनेपर जाकर
एकलक्ष जपे और घीसे
सातसातकर कमलके
पत्तोंका हवन करे तो
हंसी यक्षिणी हंसा करे
जब देवी जिसको आं-
बसे लगानेसे पृथ्वीका
गड़ा हुवा धन दीखने
लगेगा॥

कण्ठबेलका मंत्र।

ओ३म् नमो कंठबेल तू द्रुमद्रुमाली, सिरपर जकडी वज्रकी ताली, गोरख राय गाजता आया बढती बेलको तुरत घटाया जो कछुवची ताहि मुरझाया घटगई बेल बढन नाहिं पावै बैठी तहां उठन नाहिं पावै फूटे और पीडा करै तौ गुरू गोरखनाथ की दुहाई सत्यनाम आदेश गुरूकौ मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ९८ ॥

विधि।

सात दिनतक चक्कूकी नोकसे झाडे वार इक्कीस धरतीपै लकीर काढै॥

मंत्र अदीठको।

ओ३म् नमो सिरकटा नखकटा विषकटा अस्थिमेदा मज्जागत फोडा फुन्सी अदीठ दुम्बल दूखना रैत्याव रोगरी धनबाय जाय चौंसठ योगिनि बावनवीर छप्पन भैरों रक्षा कीजै आय शब्द सांचा पिंडकाचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको॥ ९९॥

विधि।

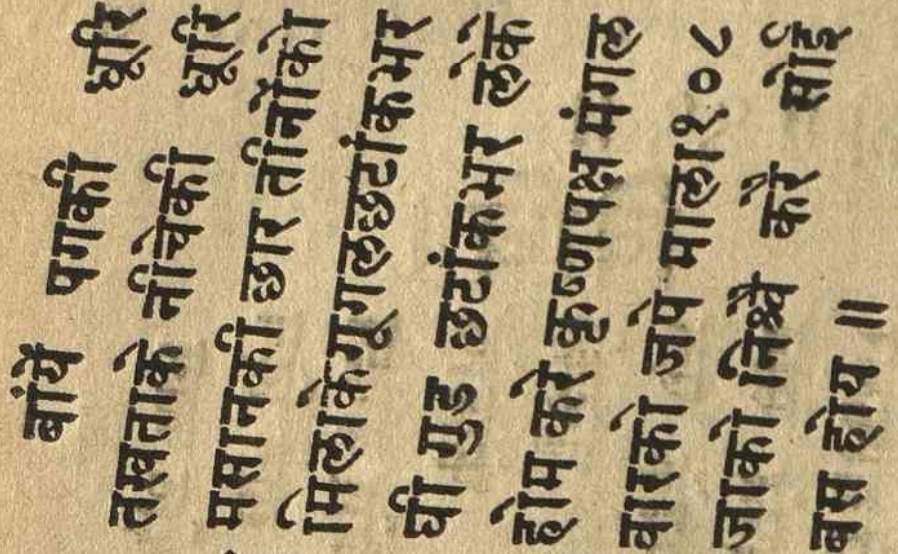
पंथसे मोरकी पृथ्वीको साफकर इस मंत्रको सात वार पढके एक सूलकी छेदाय फोडाके वारां ओर लगाय रोज सात दिन करे अदीठ जाय

आकर्षण।

ओ३म् नमो आकाशकी जोगिनी पातालको

नागउठि हनुमन्तजी फलानीको लाग परै न निद्रा बैठे न सुख जो वो देखै न भैरो सुख कलतक नहिं परै मैं हियौ उठाय लाउ जौ वानक पीयौ मोहि देखि ठंढी ह्वै जाय आवत जात न काहू दिखाय आउ आउ मेरे आगे लाउ न लावै तो गुरू गोरखनाथकी आन ॥ १०० ॥

विधि ।

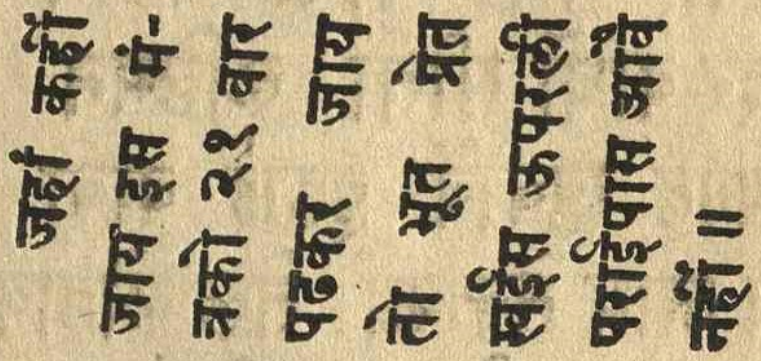


मंत्र रक्षाको ।

ओ३म् नमो आदेश गुरूकों लेना चमारी गगनकी वीजुरी, मोती हैल चमकै इस पिंडमें ज्यान करै

विज्यान करै तो उस रंडीके ऊपर परै। दुहाई तखत सुलेमान पैगम्बरकी फिरै मेरी भक्तिगुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०१ ॥

विधि।



मंत्र बिच्छूको।

ओंइम् नमो समुद्र समुद्रमें कमल कमलमें विसहर बीच्छू ऊपजारे बीच्छूकहूं तेरीजात, गरुड कहै मेरी अठारह जात। छह काला छह काबरा छह कूं कूं वान। उतररे उतर नहीं तो गरुड पंख हकारूं आन। सर्वत्र विसन मिलई उतररे बिच्छू उतर गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०२ ॥

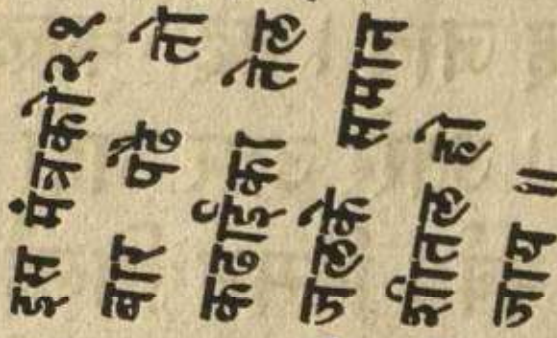
विधि।

इस मंत्रको पढकर बीछूसे काटी हुई जगहपर सातवार हाथ फेरै तत्काल अच्छा होजाय ॥

तेलको पानी होयवाको मंत्र।

ॐ नमो अंगा बांधो अंगानि बांधो असी कोस वैसांदर बांधों सीता लछिमन बडा पकावें राम काढ काढ खुवावें दुहाई बाबा अजैपालकी इंलारा होय जाय तेलका तेल लोहाका ताई तह बैठी हणमन्तकी माई ताता होय नचुर मुराई सीला राखै हणवंत राई गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच॥ १० ॥

विधि।



मंत्र आधाशीशीका।

ॐ नमो आदेश गुरुको काली चिडी चिग

चिग करै धोली आवै वासै हरै जती हनमन्त हांक मारै मथवाई अरु आधासीसी नासैं गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०४ ॥

विधि ।

इक्कीस बार चाकै आधाशीशी जाय ॥

आंखको दरद दूर करवाको मंत्र ।

ॐनमो आदेश गुरूकों समुद्र समुद्र समुद्रमें खाई इस मरदकी आंख आई पाकै फूटै न पीड करै गुरु गोरखजी आज्ञा करें गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

विधि ।

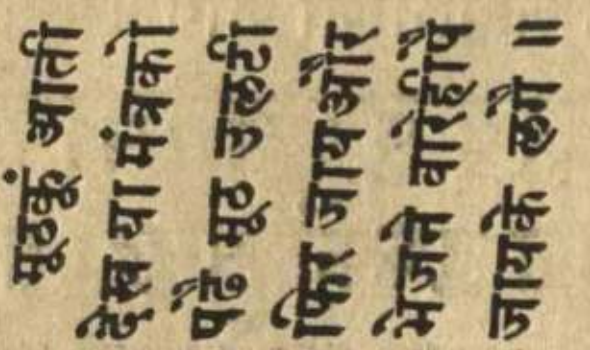
सातलूणकी कांकरीते चांके अच्छी होय ॥

मंत्र मूठ थामवाको ।

ॐनमो आदेश गुरूकूं चंडी चंडी तौ ऊपर चंडी आवत मूठ फिरै नव खंडी चक्कर ऊपर चक्कर धरूं बार चक्कर लै कहा करूं श्रीनृसिंहका मुख आगै

धरूं नंद मासकी करौ आग्यारी नाटक चेटक मेरे साथ मूठ फिराऊं तीनसौं साठ मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०६ ॥

विधि ।



गर्भ थामवाको मंत्र ।

ॐनमो आदेश गुरूकूं जैजै जैजै जैजै कार। गोरख बैठाघोरू घार जबलग गोरख जाप जपै जबगल राज बिभीषण करै गौरा कात्या कातना ईश्वर बांधा गंडा। राख राख श्रीहनुमन्त बजरंग जी छिटका परता अंडा दूध पूत ईश्वरकी माया। पडता गर्भ श्रीगोरखनाथजी रखाया। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०७ ॥

विधि।

क्वारी कन्यासे सूत कतायके इक्कीस बार मंत्र पढकर गर्भवतीकी कमरसे बांध देवै गर्भ गिरना रुक जाय ॥

सर्वदेहरक्षाको मंत्र।

ॐनमो आदेश गुरूको दे हनमंतबीर बीरनके बीर तिहारे तरकस नौलख तीर छिनबामें छिन दाहिने कबहूं आगे होई। धनी गुसाईं सेवतां काया भंग न होई। इन्द्रासन दो लोकमें बाहर देखै मसाण। ह्मारी देहीकों छलछिद्र ब्यापै तौ जती हनमंतकी आन। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १०८ ॥

विधि।

इस मंत्रका पाठ करता हुआ कहीं जाय कुछ भय व्यापैनहीं

डाकिन भूतप्रेतखईस उतारवाकोमंत्र।

ओं नमो आदेश गुरूकूं गिरहवाज नटनीका जाया। चलतीबेर कबूतर खाया। पीवै दारू खा-

यज मास। रोगदोषकू लावै फांस॥ कहां कहां सूं लावैगा॥ गुद गुदमें सूं लावैगा। बोटी बोटीमें सूं लावैगा। चाम चाममें सूं लावैगा। नौनाडी बहत्तर कोठामें सूं लावैगा। मार मार बन्दीकर कर लावैगा। न ल्यावैगा तौ अपनी माताकी शय्यापर पांव धरैगा। मेरा भाई मेरा मेरा देखा दिखलाया तौ मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच॥ १०९॥

विधि।

इस मंत्रको पढ़कर मोरको पंखसूं झाड़ते मूए प्रेत डाकिनी को, साकिनी को सब भाग जाय

नाक थामवाको मंत्र।

ॐनमो आदेश गुरूकूं चार आटी चार घाटी नीख नीखहै चौरासी घाटी वहै नीर भीजै चीर नाथनाकथंभि हो श्रीनरसिंह वीर न थंभै तौ

अपनी माता अंजनीका पियादूध हराम करै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ११० ॥

विधि ।



लोंगमोहनी मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरूकों कामरूदेश कमख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी । इस्माइल जोगीने दीनीलोंग । एक लोंग राती माती । दूजी लोंग दिखावै राती । तीजी लोंग रहै थहराय । चौथी लोंग मिलावै आय । नहिं आवै तो कूवा बावडी घार फिरै रंडी कूआ बावडी छिटक मरै ॐ नमो आदेश गुरूकों मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १११ ॥

विधि ।

ग्रहणकी रातको चार लोंग लाकर चारों दिसानमें धरै

बीचमें चौमुखा दिया जरावै फिर धूप सुगंध माला नैवेद्य चढाय १००० मंत्र जपै सिद्ध होनेपर सात मंत्र पढकै लौंगदे जो खाय सोई बश होजाय ॥

भूत निवारवाको मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरूकूं हरिवामें हरिदाहिने हरि हांवो विस्तार । आगें पीछें हरि खडया राख्या सिरजनहार ॥ चमकंत बीजरी गाजंत श्रीनरसिंह फटतखंभ आवता काल राख राख चार चक्र लै नृसिंहजीके आगेमेल इतना सूं दूर जाय पडै प्रातःकाल कंटक छलछिद्र खेचरा भूचरा जलचरा थलचरा भूतदाना नाटक चेटक मार माररंडीका तीनसो साठ । उलटंत नरसिंह पलटंत काया । भगत हेत श्रीनरसिंहजी आया कपिल केस उदर रूप श्रीनृसिंह बली सदासहाय श्रीगुरू गोविंदके चरणारबिन्द नमस्ते मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ११२ ॥

विधि ।

या मंत्रको दिवालीकी रातको सिद्ध करै फिर चकूसे झाडै सब दोष दूर होयँ ॥

राक्षस निवारण मंत्र ।

ॐनमो आदेश गुरुको सुरगुरु बेची एक मंडली आणि । दोय मंडली आणि । तीन मंडली आणि । चार मंडली आणि । पांच मंडली आणि । छः मंडली आणि । सात मंडली आणि । हलंत आणि । चलंती आणि । नासंती आणि । भाजंती आणि । सिहारी आणि । उहारी आणि । उग्रहोकर चढती घालवाय सुग्रीववीर तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ११३ ॥

विधि ।

इस मंत्रको पढकर मोरपंखसे २१ बार झाड देवै अच्छा होजाय ॥

चुडैल दूर करवाको मंत्र ।

ॐनमो आदेश गुरुको । कवलाछरी तू बाव-

नबीर। कलू बैठनो जलके तीर। तीन पानका बीडा खवाऊं। जैठे बैठा जलताऊ। मालीमरै तौ रगत बहाऊं। वाचा चूकै तो कंकालीकी सत दुहाई। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ११४ ॥

विधि।

मोरपंखसे झाडदे चुडैल उतरै ॥

डाइन छुडावाको मंत्र।

ॐ फट् स्वाहा ॥ ११५ ॥

विधि।

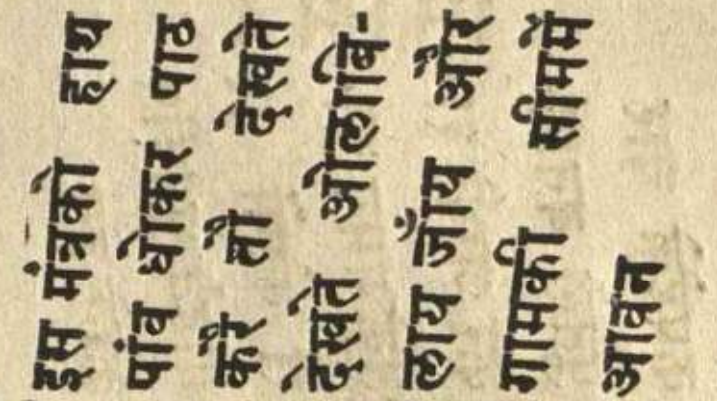
धूप गूगल खेवै आंखनसों ताके डाइन दूर होजाय ॥

ओला दूर करवाको मंत्र।

ॐनमो आदेश गुरुकुं। पांचों पंडा पांचों भीम। जाय पडे समुद्र की सीम। भीमगदा अकबर कर लीन्हीं। फेर फेर समुद्रकों दीन्ही। समुद्र हुआ तांबेका। कुआ यहांही जनम ओलका

हुआ। कीली चमकत बीजरी। कीली हरी घटा। हांकैगा हणवंत बुलावैगा भीम। यहां पर ओला आय नहीं जहां गांवकी सीम। यहां पर ओलापरै राजा रामचन्द्रकी दुहाई। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ ११६ ॥

विधि।



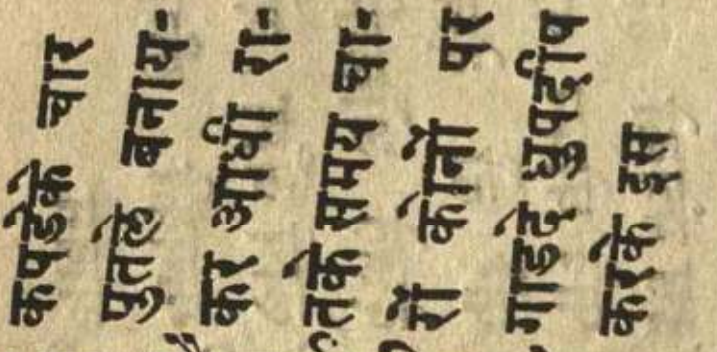
नहीं पावै। पहिले एक लाख जपके सिद्ध करै ॥

मंत्र जंजीराको।

ॐनमो सात समुद्रके बीच शिला सुलमान पैगम्बर बैठा सुलैमान पैगम्बर बेचारि मवक्किल तारिया सारिया जारिया जमारिया एक मवक्किल पूरवको धाया देव दानवों को बांधलाया। दूसरा मवक्किल पश्चिमको धाया भूत प्रेत बांधलाया।

तीसरा मवक्किल उत्तरको धाया। ऊतापितरको पकडलाया चौथा मवक्किल दक्षिणको धाया। डाकिनी शाकिनीको पकडलाया। चार मवक्किल चहूंदिश धावें छलछिद्र कोऊ रहन न पावैं। रोग दोषकूं दूर बहावें दुष्टन मार सहज गिरवावें॥ शब्दसांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥ ११७॥

विधि।



मंत्रको १०८ बार पढै कार्य सिद्ध होय॥

चढावाको मंत्र।

ॐनमो हाकन्त युगराज फाटंत काया। जिसकारणयुगराजमें तोकों धाया। हंकारत युगराज आया गाजन्त आया घोरन्त आया सिरसके फूल वखेरन्त आया। औरकी चौकी उठावन्त आया आपकी चौकी बैठावन्त आया। औरका किंवाड

तोरन्त आया। आपका किंवाड भेडन्त आया। बांध बांध बांध किसको बांध भूतको बांधि प्रेतको बांधि देवदानवको बांधि उडन्त गढन्त योगिनी बांध, चोर चिणगारको बांध। तिरेसठ सौ कलु आकों बांध चौंसठसौ योगिनीकों बांध। बावन बीरनकों बांध। आकाशकी परीनकूं बांधि डाकिनी शाकिनीकूं बांध चेटककों बांध। छलकों बांध छिद्रकों बांध। द्वारको बांध हाठकों बांध। गलीको बांध। गिरारेकों बांध। कियाकों बांध करायाकों बांध आपनीको बांध। पराईकों बांध। मैलीकों बांधि कुचैलीकों बांधि पीलिको बांध। स्याहकों बांध। सफेदको बांधि कालीको बांध लालको बांधि। बांध बांधरे गढ गजनीके महमदा पीरें। चलें तेरे संग सत्तर सौ बीर॥ जो बिसर जाय तो सो रोजा हलाल जाय। उलट मार। पलट मार। पछाड मार धर मार। कूआ चढाय। मूडिया

हलाय। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥ ११८ ॥

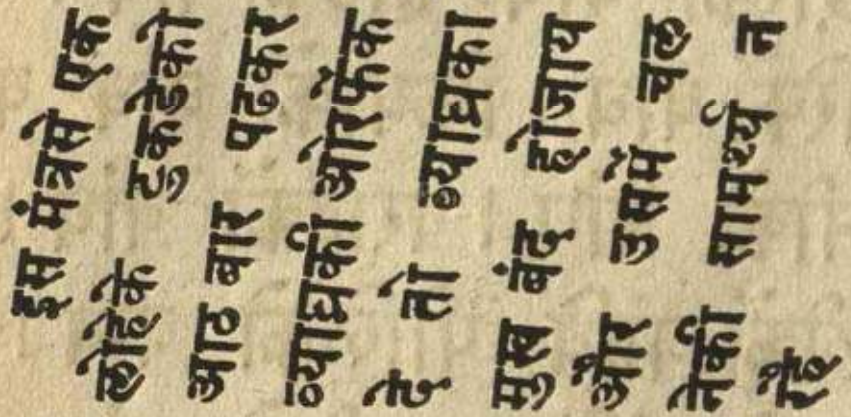
विधि।

ग्रहणकी रातको १००० जपै मांस मदिराको भोग धरै महमदा पीर हाजर होय जो चाहै सोई कराय लेउ ॥

व्याघ्रनिवारण मंत्र।

क्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ॥ ११९ ॥

विधि।



शत्रुमुखस्तम्भन मंत्र।

ॐ ह्रीं रक्ष चामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा॥ १२० ॥

विधि।

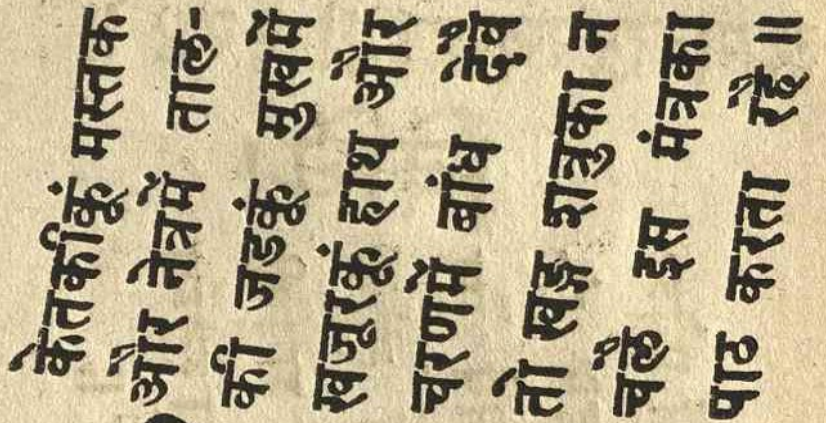
चौलाईकी जडको चांदीके तावीजमें मढकर मुखमें धारण

करै इस मंत्रको पढता रहै तो शत्रुका मुख बन्द होजाय उत्तर देनेकी सामर्थ्य न रहै ॥

शस्त्रस्तंभन मंत्र ।

ॐ अहो कुम्भकरण महाराक्षस निषषागर्भसम्भूतपरसैन्यस्तम्भन भगवन् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥ १२१ ॥

विधि ।



अग्निस्तंभन मंत्र ।

ॐ मत्तकटीट छयघनेसेकटीय मूलीयसी।आलिप्या ग्न्याससुदीयतेशानक विज्जे मन्दी ह्रींफट्ट ॥१२२॥

मंत्र दूसरा ।

ॐह्रीं महिपवाहिनी स्तम्भय मोहय भेदय अग्निं स्तंभय ठः ठः ॥ १२३ ॥

विधि ।

महिषमर्दनी तारी देवीका स्मरण करके खैरके अंगारोंकी आगमें प्रवेश करै तो अग्नि बाधा न करैगी पहिले इन दोनों मंत्रोंको एक अयुत (१००००) जप कर सिद्ध करले ॥

शत्रुबुद्धिस्तंभनमंत्र ।

ॐनमो भगवते विश्वामित्राय नमः सर्वमुखीभ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्र आज्ञापयति । शक्त्या आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥ १२४ ॥

विधि ।



चोरगतिस्तम्भनमंत्र ।

ॐ ब्रह्मवेशिनि शिवे रक्ष रक्ष ठः ठः ॥ १२५ ॥

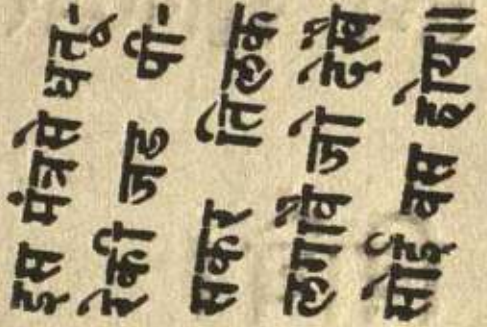
विधि ।

इस मंत्रको पढकर सात पासोंको हाथमें लेकर तीन कमरमें बांधै और दोदों मुठियोंमे लेवै तो चोरकी गति रुकजाय.

सर्वजनमोहन मंत्र ।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् ॥ १२६ ॥

विधि ।



मोहन मंत्र ।

ॐ मीं क्षां भीं मोहय मोहय ॥ १२७ ॥

विधि ।

इस मंत्रको तीन बार पढनेसे मनुष्य मोहित होजाता है ॥

सुखप्रसवका जल मंत्र ।

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनी लंबोदरं मुञ्च मुञ्च स्वाहा ॥ १२८ ॥

विधि ।

स्नानादिकसे पवित्र होकर इस मंत्र करके गरम किया हुआ

जल गर्भवतीस्त्रीको पीनेके लिये देवे बालक सुख पूर्वक और शीघ्र होवे ॥

भूतादिक निवारण धूप मंत्र ।

ओं द्रुतं मुञ्च मुञ्च उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा ॥ १२९ ॥

विधि ।



बालकको भूतादिक बाधा होय नहीं ॥

नृसिंहमंत्र।

ओं नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थल-विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच-डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तंभोद्भवाय समस्तदो-षान् हरहर विसर विसर पच पच हन हन कंपय

कंपय मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥ १३० ॥

विधि ।

इस मंत्रसे सरसों पढ पढकर रोगीपर प्रदार करै तब सम्पूर्ण ग्रह दूर हो जांय ॥

बलिदान मंत्र ।

ॐ सर्व भूतेभ्योबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा१११

विधि ।

इस मंत्रसे मछलीका मांस पकाकर नये सोपडेमें रखकर पुष्प, अक्षत, गंध, धूप, दीपक और दक्षिणा धरके रात्रिके समय चौराहेमें रखदेवै तो ग्रहादिक सब दोष उतर जांय ॥

अरिष्टनिवारण मंत्र ।

ओं ह्रीं स्त्रीं छ्रीं ठ्रीं श्रीं फ्रीं ह्रीं ॥ १३२ ॥

विधि ।

श्रद्धापूर्वक इस मंत्रका जप करनेसे मनुष्योंके सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हो जाते हैं ॥

रक्षामंत्र।

ओं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं फट्ट॥ १३३ ॥

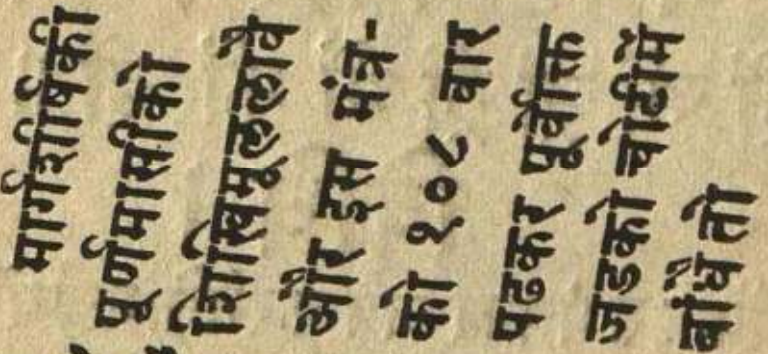
विधि।

भगवान् कहते हैं कि ये मंत्र साक्षात् मेरा रूप है इस मंत्रका ५०० जाप करनेसे त्रिलोकीमें उसके समान कोई नहीं रहता और नित्य धन, धान्य पुत्र मित्र बढते रहते हैं॥

बंधनमोचनमंत्र।

ओं नमः कमलपिङ्गले रुद्रहृदयाङ्गे वेताला-स्थिधारिणि तिष्ठ तिष्ठ सर सर सर्वान् मोहय मोहय भगवति शिखाजे तिमिरे महामाये स्वाहा ॥१३४॥

विधि।



बन्धसे छूटै॥

निगडभंजनमंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहु-रूपाय नानारूपधराय हस हस नृत्य नृत्य तुद तुद नानाकौतुकेंद्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा ॥१३५॥

विधि।

हस्तनक्षत्रमेंसिंधुवार की जडको लेवे जो उतारे की ओर गड़े होवे ओर इस मंत्रको पढकर जब बेडीको हाथ लगावे तत्काल बेडी कट जाय ॥

द्वारभंजनमंत्र।

दं हुं ओं आय आय चिं चिठि चिठि हां ला वज्रनन्दिका कालिका ॥ १३६ ॥

विधि।

इस मंत्रसे पढकर सफेद सरसों किंवाडोंपर मारै तो तत्काल बन्दीगृह खुलजाय ॥

मच्छरादि निवारण मंत्र।

पूर्वे ब्रह्मणे बन्ध। पश्चिमे विष्णवे बन्ध। उत्तरे

रुद्राय बन्ध, दक्षिणे यमाय बन्ध, पातालेवासुकये बन्ध फणिसहस्र बन्ध, हुं अंगुष्ठाभ्यान्नमः ॥१३७॥

विधि।

इस मंत्रको पढकर तीन ताली फटकारे सब मच्छर मकोडा जांय और गाही भैंसे आवे ॥

दूध बढानेका मंत्र।

ओं हुङ्कारिणी प्रसव ओं शीतलम् ॥ १३८ ॥

विधि।

इस मंत्रको पढकर गाय भैंसको घासखवावै दूध बहुत बढजाय।

उच्चाटनमंत्र।

ओंनमो भगवते रुद्राय हुं दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रबांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ॥ १३९ ॥

विधि।

शत्रुका नाम ले ले कर कौएकी १०८ पंखोंका हवन करनेसे शत्रुकुलका उच्चाटन होता है ॥

मंत्र मूठ चलानेका।

ओं नमो काला भैरों मसानवासा चौसठ जोगिन करें तमासा उदरकी मुठ्ठी रक्तावाण चलिरे मेरो कचिया मसान मैं कहूं तोसों समझाय सवापहरमें धुंआं दिखाय मूंआ मुर्दा मरघट बास माता छोडै पुत्रकी आस जलती लकडी धुकै मसान भैरो मेरा बैरी तेरा स्वान सेली सिंगी रुद्रबाण मेरा वैरीको न हीं मारो तो राजा रामचन्द्र लक्ष्मणयतीकी आण शब्द सांचा पिंडकांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥१४०॥

विधि।

किसी मरे हुए मुर्दाको देखकर मसानमें जाय कर उस मुर्दाकी हांडी लेकर मुर्दाके को-यलेकी आगसे सरसो-सरसो गरम करले फिर उसमें एक मुठी डारे हाथमें जो जल लाय उसे अलग करले और जो खिलजाय

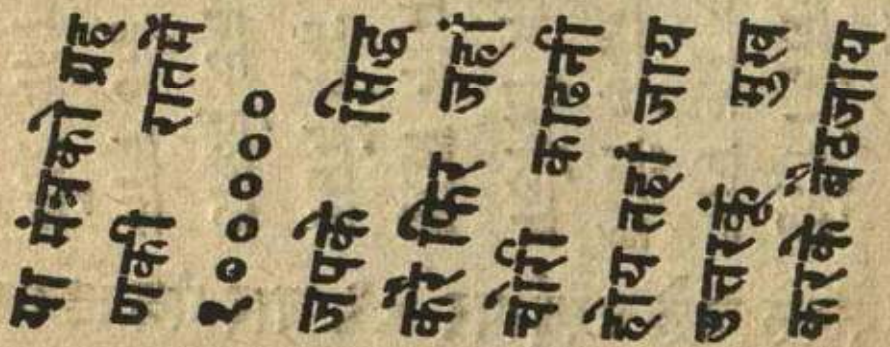
उन्हें अगल करले जले उरदोंपर २१ बार मंत्रपढकर प्रातःकाल

विना मुंह धोये जिसके मारै वही सेवा करने लगै ॥

मंत्र चोरीकाढवाको।

ओं नमो नाहरसिंह वीर चलती तेगमें तेरा सीर बहता चलता थांबे नीर सोयेअनपै लागै तीर ज्यों ज्यों चालै तू धर धीर चालैपवन अरु चालैनीर ज्यों ज्यों चालै नाहरसिंह बीर चित्त चोरका धरै न धीर चोरका हाथ कांपे; सिर कांपे छाती थर्रावै जहां धरै चुराया धन तहांसूं हटन ना पावै दुहाई गुरू गोरखनाथकी दुहाई चौरासी सिद्धकी दुहाई पूरन पूतकी शब्द सांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेशगुरूको ॥ १४१ ॥

विधि।

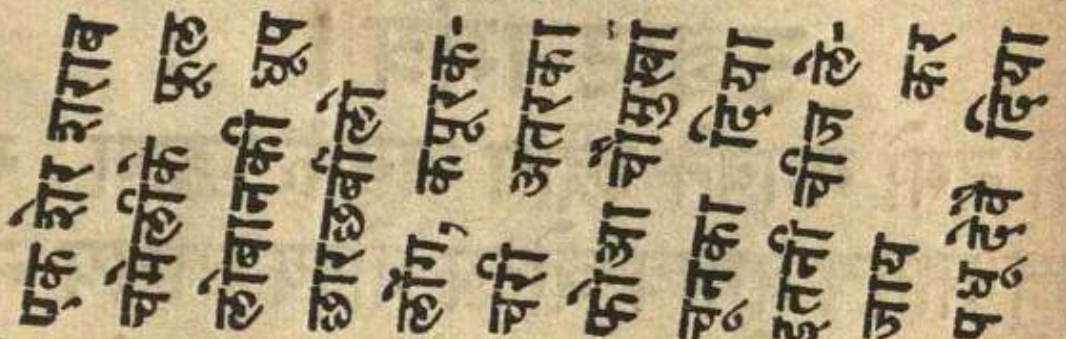


एक कटोरी कांसीकी साम्हने रखले उसपर इस मंत्रको पढ-पढकर चांवल मारता जाय यह कटोरी अपने आप चलैगी और जहां गाडा होगया तहां ठैरेगी खोदकर धन निकाल लो.

मंत्र मसानके जगावाको।

ॐ नमो आठ काठकी लाकडी मूंज वनीका कावा। मूंवा मुर्दा बोले नहीं तो महावीरकी आन सत्यनाम आदेश गुरूको शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १४२ ॥

विधि।



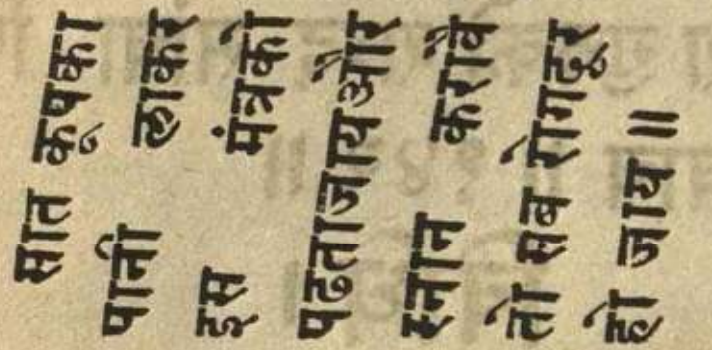
जलावै मरा हुआ मुरदा खिलखिलाकर हंसै ॥

जादू दूर करवाको मंत्र।

ओं वज्रमें कोठा बज्रमें ताला बज्रमें बंध्या द-

स्तें द्वारा तहावज्रका लग्या किवाडा बज्जरमें चौखट वज्जरमें कील जहां सूं आया तहां ही जाय जाने भेजा जाईकूं खाय हमकूं फेर न सूरतदिखाय हाथ कूं, नाककूं, कानकूं, सिरकूं; पीठकूं,कमरकूं,छातीकूं, जो जोखों पहुंचावै तो श्रीगोरखनाथकी आज्ञा फुरै मेरीभक्ति गुरूकीशक्तिफुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥१४३॥

विधि।



उच्चाटनमंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय अमुकं गृहाण गृहाण पच पच त्रासय त्रासय त्रोटय त्रोटय नाशय नाशय पशुपतिराज्ञापयति ठः ठः ॥ १४४ ॥

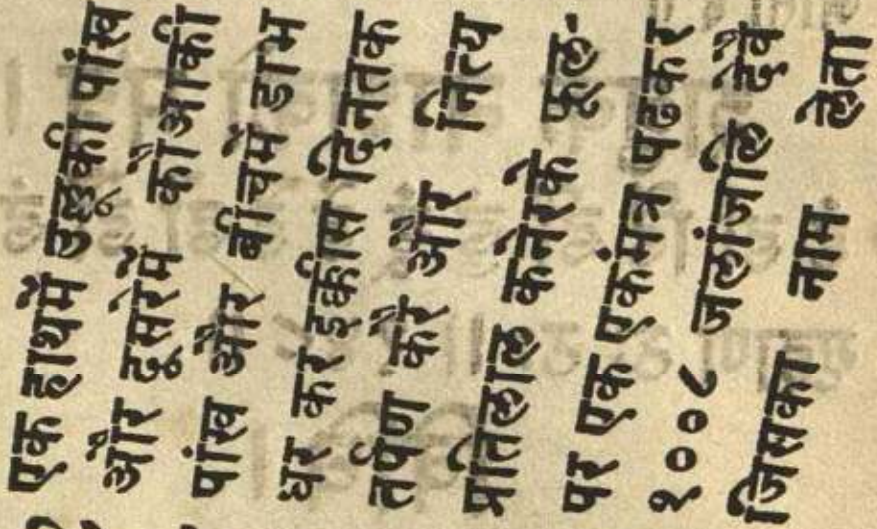
विधि।

मनुष्यके हाडकी कील ४ अंगुल लम्बी लावै और उसको इस मंत्रसे जिसके द्वारपर गाडदे तत्काल कार्य सिद्ध होय ॥

विद्वेषण मंत्र।

ॐ नमः कटीटनी प्रमोटनीकी गौरी गौरी अमुकस्य अमुकेन सह काकोलूकादिवत् कुरु कुरु स्वाहा ॥ १४५ ॥

विधि।



जाय निश्चय विद्वेष होय॥

शत्रुको बहरा करनेका मंत्र।

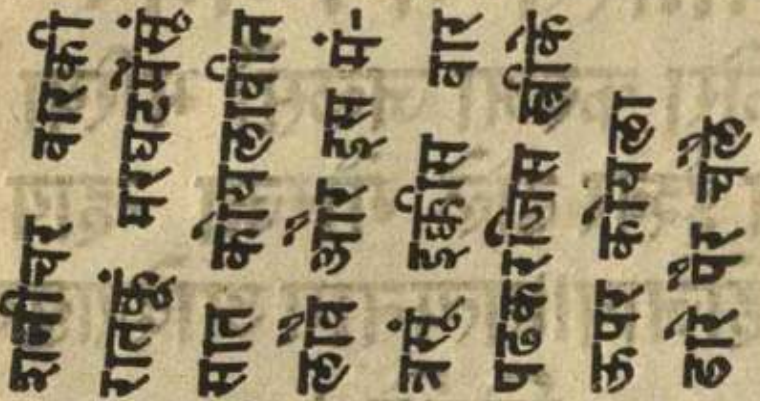
ॐ अमुकं हन हन स्वाहा ॥ १४६ ॥

विधि।

इस मंत्रसे त्रिकुटामें कडुवा तेल मिलाकर हवन करै शत्रु बहरा हो जाय॥

चाबै चरण चलावै पर मसारकी माटी भोंराके बलि-पंडी सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १५१ ॥

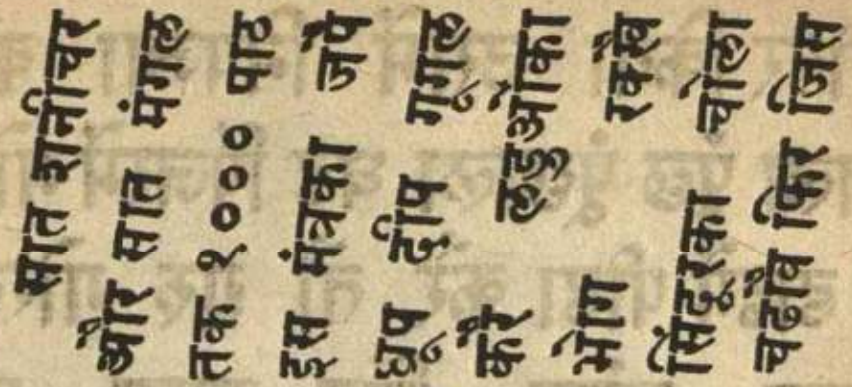
विधि।



भूत प्रेतके मारवाको मंत्र।

ओं नमो आदेश गुरूको वीर बलि हनुमन्तजी मुद्गर दहिने हाथ। मार मार पछाडिये पर्वत बांये हाथ। भूत प्रेत अरु डाकिनी जिन्द खईस मसान बचै न इनमें एक हूं निराकारकी आन। दुहाई अंजनीकी, दुहाई राजा रामचन्द्रकी दुहाई लक्ष्मण-जतीकी, मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १५२ ॥

विधि।



का भूत मारना होय उसके चांवल पढकर मारै भूत मर जाय॥

डाढके कीडाका मंत्र।

सकोरामें सामेंमें सीसेसें पानी सीचीमें कीडा कीडामें कीडा मरै पीडा टरै शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥ १५३॥

विधि।

दो कीलसे दाढ कीलके कुएमें डालदे दूसरीको नीबूमें गाडै कीडा मर जाय-

डाढपीडाका दूसरा मंत्र।

कामरूदेश कामाख्या देवी जहां वसै इस्माइल जोगी इस्माइल जोगीने पाली गाय नित उठ

चरवा बनमें जाय बनमें चरै सूखा घास खाय पीयके गोवर किया उसमें निपज्या कीडा सात सूत सुताला पूंछ पूंछाला धड पिंजरमें मोट मुटाला जो कहीं डाढमें पीडा करै तौ गुरु गोरखथनाकी दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १५४ ॥

विधि ।

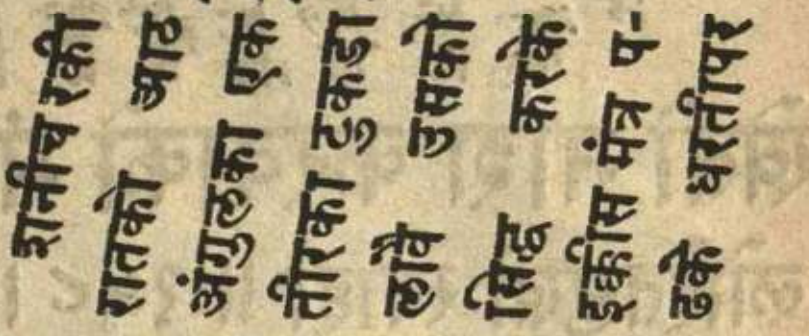
ग्रहणकी रात- कौसिद्ध करके इस मंत्रसे तीन कीलोंको सात बार पढ़- कर काठके त- खतामें ठोक डाढका तर्फी कीडा मर जाय ॥

मंत्र डवकाको ।

ओंनमो खंगारी खंगारा कहां गया सवालाख पर्वतां गया सवालाख पर्वतां जाय क्या किया कोयला कराया कोयला कराय क्या किया, छुरा गढाया छुरा गढाय क्या किया, डवकाका हाढ गोड काट काली कामलीमें लपेट खारे समुद्रमें

बहाया शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १५५ ॥

विधि ।



लकीर काढता जाय डवका जाय ॥

आंखके फूला काटवाको मंत्र ।

उत्तरकाल काछ सुन जोगीका वाछ इस्माइल जोगीकी बेटी एक माथे चूल्हा एक काटे फूला डुहाई लौना चमारीकी शब्द सांचा पिंड कांचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ १५६ ॥

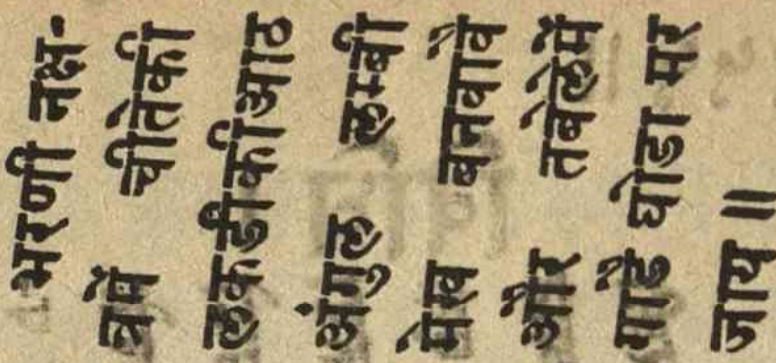
विधि ।

लोहेकी कील इक्कीस बार पृथ्वीमें इस मंत्रसे ठोकै फूला कटै ॥

घोडा मारवाको मंत्र ।

ॐनमो भगवते रुद्राय ओं अश्वान् स्वाहा १५७

विधि ।



खेती नाश करवाको मंत्र ।

ओं लोहितमुखी स्वाहा ॥ १५८ ॥

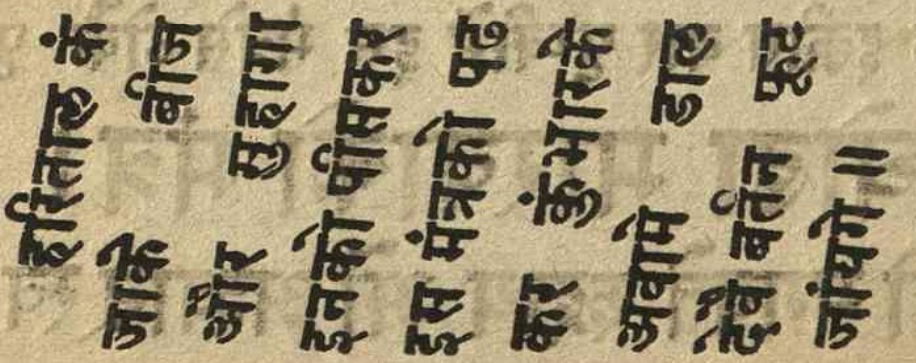
विधि ।

पुनर्वसु नक्षत्रमें चीतेकी लकडीकी मेख आठ अंगुल लम्बी बनवावै उस पर सौ मंत्र पढकर खेतमें फेंक दे तो खेतीका नाश हो जाय ॥

कुंभारके बर्त्तन फोडवाको मंत्र ।

ओं दमन्य दमन्य स्वाहा ॥ १५९ ॥

विधि ।



धनुर्विद्याका मंत्र।

कलायुतरक्ता धरे ओंकार शतगुण आधारे एकादशशतसहस्र इन्द्र आज्ञा ॥ १६० ॥

विधि।

यह सप्तविंशत्य- क्षरा विद्या है जो अर्जुनसे इन्द्रने कहीथी इस मंत्र से धनुषपर एक बाणधरकर फेंको तो एकके हजार हो जायंगे परन्तु कलियुगके प्रभावसे एकके दसही होते हैं ॥

सप्तदशाक्षरी धनुर्विद्या।

चान्द्र धर गुण रेखकाण्ड ब्रह्मज्ञान ओं ओं ओं ॥ १६१ ॥

विधि।

यह मंत्र महादेवने इन्द्रसे कहा था इसको पढकर बाण मारनेसे एकके पांच हो जाते हैं ॥

वागीश होनेका मंत्र।

ओं ह्रुँ हयशीर्ष वागीश्वराय नमः ॥ १६२ ॥

विधि।

हूँ अथवा चंद्र ग्रहणमें इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके बच लावे उसका चूर्ण करके घीमें मिला कर सात दिवसतक खाय तो मनुष्य बृहस्पतिके समान हो जाय। सहस्र जपनेसे यह मंत्र सिद्ध होता है॥

अत्यन्त भोजन करवाको मंत्र।

ओं नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवीश्वाज्ञापयाति स्वाहा ॥ १६३ ॥

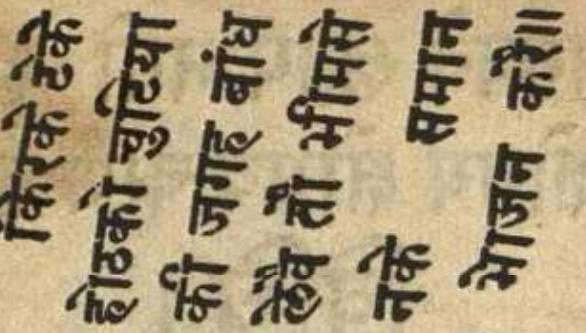
विधि।

इस मंत्रसे बहेडेके पत्ते लाकर दाहिनी जांघके नीचे दाबकर भोजन करै तो बीसगुना भोजन कर लेवै ॥

दूसरा मंत्र।

ओं नाभिवेगेन उर्वशी स्वाहा ॥ १६४ ॥

वाध ।



भूख दूर करवाको मंत्र ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतार्कमध्यें संस्थिताय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु सः स्वाहा ॥ १६५ ॥

विधि ।

गोंदकि तेलकी भावना देकर गूलरको पकाकर खाय तौ भूख प्यास जाती रहै ॥

पादुका सिद्धि करवाको मंत्र ।

ओं नमश्चंडिकायै गगनं गगनं चालय वेशय हिलि हिलि वेगवाहिंनिन्हीं स्वाहा ॥ १६६ ॥

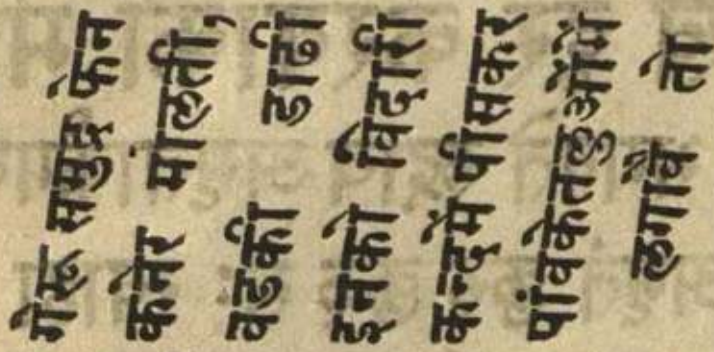
विधि ।

अंकोलकी जडको तिलके तेलमें पकाकर घोंटूतक पाँवोंपर लेप करले तो खडाऊँपर चढकर बहुत दूर जाय ॥

सहस्रयोजन चलावाको मंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय त्रासय क्षोभय क्षोभय चरणे स्वाहा ॥१६७॥

विधि।



सहस्र योजन जाय॥

मेह बरसावाको मंत्र।

हुं श्रीं हुं ॥ १६८ ॥

विधि।

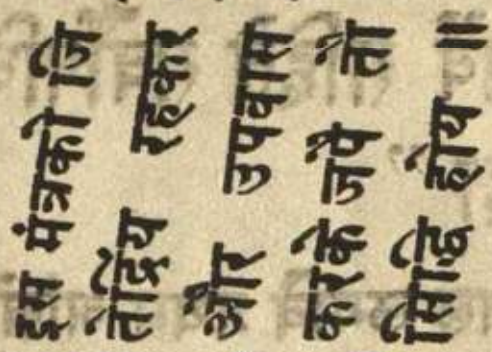
जलमें घुसकर हस मंत्रको जपै तो मेह बरसने लगै॥

धरतीमें गडा धन दीखवाको मंत्र।

ओं नमो रुद्राय रुद्ररूपायनमो बहुरूपाय नमो विश्वरूपायनमो विश्वात्मनेनमस्तत्पुरुषयक्षायनमो यक्षरूपायनम एकस्मैनम एकायनम एकरौखायनम

एकयक्षायनमः एकेक्षणायनमो यक्षायनमो, वरदा-
यनमः, तुद तुद स्वाहा ॥ १६९ ॥

विधि ।



" ओंज्वलितविद्युते स्वाहा "

इस मंत्रसे अग्नि लावै ।

" ओं नमो भगवते वासुदेवाय बबन्ध
श्री पतये स्वाहा "

इस मंत्रसे बत्ती बनावै ॥

" ओं नमो भगवते सिद्धिसाधकाय ज्वल ज्वल
पत पत पातय पातय बन्ध बन्ध संहर संहर दर्शय
दर्शय निधिं मम "

इससे दीपक जलावै ॥

" ओं ऐं मन्त्रसिद्धेभ्यो नमो विश्वेभ्यःस्वाहा "

इस मंत्रसे काजल पाडै ।

"ओं कालि कालि महाकालि रक्षेदमञ्जनं नमो विश्वेभ्यः स्वाहा"

इस मंत्रसे अंजन द्रव्यपर पढै।

"ओं सर्वे सर्वे सहिते सर्वौषधि प्रियाहिते विरते नमोनमः स्वाहा"

इस मंत्रसे काजल लगावै प्रथम आंखोंपर सुवर्णकी सलाई फेरलेवै फिर उसी सलाईसे अंजन लगावै॥

दूसरा अंजन मंत्र।

"ओं नमो भगवते रुद्राय ओं नन्न नन्न महेन्नन विहेन्न विहेन्न मिहेन्न मिहेन्न हर हर रक्ष रक्ष पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा॥ १७०॥"

विधि।

इस मंत्रसे अंजन लगावै दोनो आंखोंमें समान होवे कमती बढती न होवै दो दिनतक उपवास करै दो दिन पीछे सायंकाल को दूधभातका भोजन करै तो पृथ्वीका गडा धन दीखै॥

लोपहोनेका मंत्र ।

ॐ नमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्य्यटतः सर्वलोकलोचनानि बन्धय बन्धय देव्याज्ञापयति स्वाहा ॥ १७१ ॥

विधि ।

इस मंत्रको बांये हाथसे रात्रिके समय निशा चरका ध्यानकरकेएक लाख जप तक अदृश्यकरणी विद्या सिद्ध होय ॥

विष दूर करवाको मंत्र।

ॐ नमो भगवति स्वच्छन्दभैरवि कालकूट विषं स्फोटय स्फोटय विस्फारय विस्फारय खादय खादय अवतारय अवतारय नास्ति विष हलाहल विष संयोगविष स्थावरविष अत्युग्रविष जङ्गमविष कालचञ्चुया परा इष्टमंत्रः तडदर्घायण इथय इथय

ॐ कालाय महाकालाय कालमर्द्ददेवि अमृतगर्भ-देवि ॐ ओं फट् फट् स्वाहा ॥ १७२ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे झाडा देवै ॥

बीछूका विष दूर करवाको मंत्र ।

ओं झं हुं यं क्रं डं वं वं लं क्षं एं ऐं ओं औं हं हः ॥ १७३ ॥

विधि ।



विषनाशक जल पढवाको मंत्र ।

ओं नमो भगवति वज्रमयि हन हन ओं भक्ष भक्ष ओं खाद ओं अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मालिप्तशरीरे वज्रायुधे बज्रा क-

रां नोचिते पूर्वां दिशं बन्ध बन्ध ओं दक्षिणां दि-
शं बन्ध बन्ध ओं पश्चिमां दिशं बन्ध बन्ध उत्तरां
दिशं बन्ध बन्ध नागान् बन्ध बन्ध नागपत्नीं बन्ध
बन्ध ओं असुरान् बन्ध बन्ध ओं यक्षराक्षसपिशा-
चान् बन्ध बन्ध ओं प्रेतभूतगंधर्वादयो ये केचिदु-
पद्रवास्तेभ्यो रक्ष रक्ष ओं उर्ध्वं रक्ष रक्ष अधो रक्ष
रक्ष ओं क्षुरिक बन्ध बन्ध ओं ज्वल महाबले घट
घट ओं मोटि मोटि सटावलि वज्राग्नि बज्रप्रकारे हुं
फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं हः फूं फैं फः सर्व ग्रहे-
भ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो
रक्ष रक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा ॥ १७४ ॥

विधि ।

थोडासा जल एक पात्रमें लेकर इस मंत्रसे तीन बार अभि-
मंत्रित करले रोगीको प्यावै रोगी आच्छा हो जाय ॥

विष दूर करवाको पत्थर पढवाकोमंत्र।

ओं ऱ्हुं स्रूं ओं नालकान्ति दंष्ट्रीनि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणी छिलि किलि रक्तलोचने किलि किलि घोर निःस्वने कुल कुल ओं ताडिज्जिव्ह निर्म्मांसे जटामुण्डे कट कट हन हन महोज्ज्वले चिलि चिलि मुंडमालाधारिणि फोटय फोटय मारय मारय स्थावरं विषंजङ्गमं विषं नाशय ओं महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनि वनवासिनि पर्वताविचारीणि कह कह ओं हस हस नम नम दह दह क्रुद्ध क्रुद्ध ओं नीलजीमूतवर्णे विस्फुर विस्फुर ओं घण्टानादिनि ललज्जिव्हे महाकाये क्षुं ऱ्हुं आकर्ष आकर्ष विषं धून धून हे हः यं ज्वालामुखि बज्रिणि महाकाये अमुकस्य स्थावरजङ्गमविषं छिन्द छिन्द किटि किटि सर्वविषं निवारिणी हुं फट् ॥ १७५ ॥

विधि।

पहाडके पत्थरका एक नीलि वर्णकाटुकडा लेकर इस मंत्रको पढ़कर पत्थरको सर्पके काटे हुए स्थानपर चिप का दे और इस मंत्रको पढता रहे जबतक विष रहेगा तबतक पत्थर वहीं चिपका रहेगा विष निःशेष होनेपर

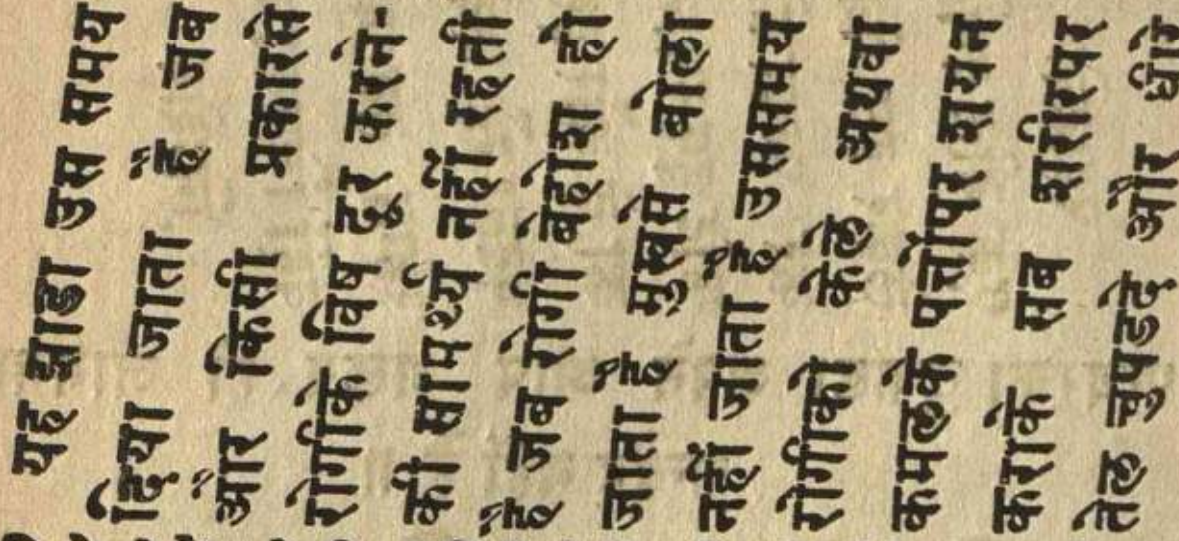
पत्थरका टुकडा अपने आप अलग हो जायगा इसमें सन्देह नहीं है ॥

विषनाशक अग्निझाडा।

आल विष काल विष मारवाहां चौसटि योगिनी वले ए विषया। ब्रह्माबले मलो विष आगुणे पूडे। तेजेर चौढे गगन फाटै विष गेल उडे। ऊयो विष पूयो विष, येरवोन या छिल। अमुकेर अङ्गेर विषेर सङ्गे सब पूडे मलो। आल नागिनी कालनागिनी चौंसठ योगिनी। दाना दैत्य सब संगे मनसा सतीनी मलो विष मलो पूडे। नाहि विष

विषहरीर आज्ञा । दुहाई मनसार दुहाई गुरुदेव सिद्धि रामेर । दोहाई नाहि विष विष नाहिं आर ॥१७६॥

विधि ।



धीरे अग्निसे सेकैं । ऐसी रीतिसे सेंकै कि रोगीके बाहरके अंगमें ताप होने लगे । यह क्रिया केवल अन्त समयकी है यह बंगालियोंका मंत्र है ॥

मंत्र ऋद्धिको ।

ॐ नमो शंखवादिनी मम करतीधरनी उधर इन चंडी सवापहर होय हाथ प्रक्षालि मुख धोऊं अपनौ जो चींत्यौ सोई फल पाऊं जगबंध भुजबंध मुक्तसमान बंध चारि लाडशिर सिंदूर ऋद्धिसिद्धि देवो वावा नंदके पूत बैठा होय सोऊलाग पास

उठाय सो ले आवै न जावै नै ल्यावै तौ लाजै गौरिया माय। आवै ऋद्धिसिद्धि पास, करै दुख दरिद्रको नास ओं नमो आदेश गुरूको फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १७७ ॥

विधि।

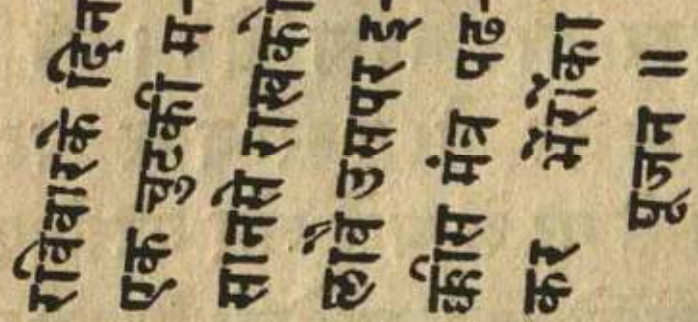
ब्राह्मण भोजनकी सामिग्रीको एक कोठेमें धरवाके एक धुले हुए वस्त्रसे ढकदेवै उसमेंसे चार लड्डू निकाल कर कुआ-पर लेजाय उसमेंसे एक लड्डू कुआमें गेरदे और एक लड्डू कु-आमेंसे जल खेचकर बाहर बहाय देय। इसी तरह फिर एक लड्डू कुआमें पधराय देय और दूसरा बाहर बहाय देय फिर कलसामें जल भरकै घर ले आवै और घडेको एक कौनेमें धर देवै। उस सामिग्रीमेंसे इतनी सामिग्री जितनी एक मनुष्य खा सकै निकालकर खूंटीपर टांक देवै और पास बैठकर इस मंत्रको जपै और एक आदमी उस सामिग्रीमेंसे डला भर भर कर देवै भंडार कभी टूटै नहीं ॥

नजर बांधवाको मंत्र।

ॐ नमो कालभैरूं घूंघरवाला हाथ खड्ग फू-लोंकी माला, चौसट सौ जोगिनि संगमें चाला, देखहु

खोल नजरका ताला राजा परजा ध्यावै तोहि सबकी दृष्टि बांध दै मोहि मैं पूजों तुमकों नित ध्याय राजा परजा मेरे पांय लगाय भरी अथांइ सुमरों तोहिं तेरा कीया सब कुछ होय देखूं भेरों तेरे मंत्रकी शक्ति चलै मंत्र ईश्वरोवाच शब्द सांचा पिंडकाचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ १७८ ॥

विधि ।



करै विधिसंयुक्त प्रसन्न करके भरी सभामें चुटकी फूंकते उडाइये सबकी दृष्टि बन्द हो जाय ॥

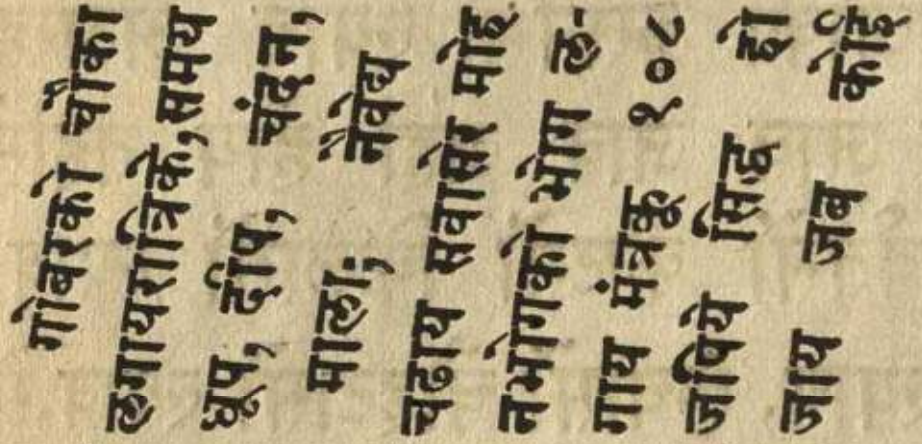
मंत्र जंजीराको ।

ॐ नमो विस्मिल्लाहि रहिमान रहिम गजनी सों चला मुहमदा पीर चला चला सवासेरका तोसा खाय असी कोसका धावा जाय स्वेत घोडा

स्वेत पलान जापै चढै मुहमदा ज्वान नौसै कुत्तक आगै चलें नौसै कुत्तक पाछे चलें कांधा पाछे भात डाला ध्याया चलै चालि चालिरे मुहमदा पीर तेरे सम नहि कोई वीर हमारे चोरकों ल्याव सातसमुद्रकी खाईसों ल्याव ब्रह्माके वेदसों ल्याव काजीकी कुरानसों ल्याव अठारह पुरानसों ल्याव जाव जाव जहां होय तहांसों ल्याव गढसों पर्वतसों कोटसों किलासों ल्याव मुहल्ला गलीसों ल्याव, कुंचासों चौहटासों ल्याव,सेतखानासों ल्याव मोरीपनालासों ल्याव बागबगीचासों ल्याव कूआबावरीसों ल्याव बारह आभूषण सोलह सिंगारसों ल्याव,काजल कजरौटीसों ल्याव मंढीकी मौठसों रोली मोलीसों हाट बजारसों ल्याव खाटसों पायासों नौनाडी बहत्तर कोठाका घूमती बलायकों ल्याव हाजिरकर हाड हाड चाम चाम नख सिख रोम रोमसै ल्यावरे ताइयासिलार जिन्द पीर

मारतौ पीटतौ तोडतौ पछाडतौ हाथमें हथकडी पांवमें बेडी गलामें तौंक उलटा कज्बा चढाय मुख बुलाय सीस खिलाय कैसेंहूं लाव लिये बिन मत आव ओं नमो आदेश गुरूको ॥ ५७९ ॥

विधि ।



काम करना होय तभी मंत्र पढकर उडद माथे पै राखिये कारज सिद्ध होय ॥

डाढकी पीडाको मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरूको नौलख ओढे कामरी बैठें जहांगुपाल । जमना गंगा सरस्वती तहां ग्वाल अरुबाल । आये गोरख जतीजी गौतम ऋषिके पास । डाढ दांतके दर्दको आवत

होय विनास।आधो दियौधेनुकूं आधो सन्तन माहिं रोग दोष सबही टरैं श्रीहनमन्तसहाहिं। मेरी शक्ति गुरूकी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १८० ॥

विधि।

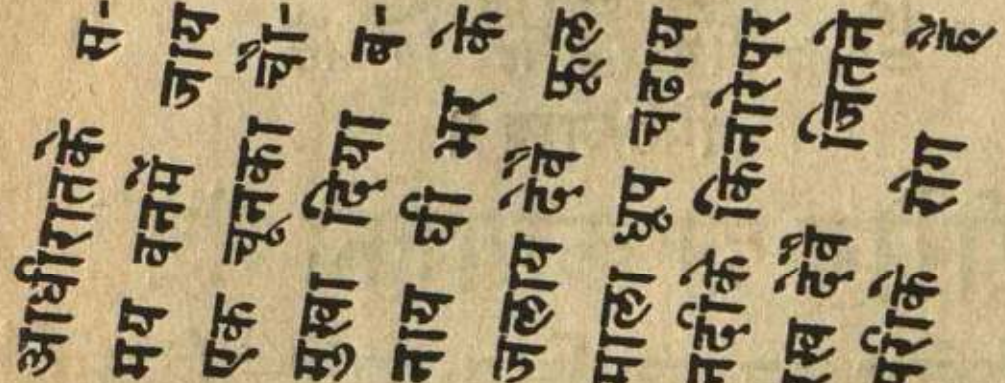
एक पैनी छुरी से पृथ्वीपर ई- कीसिरेखा खींचे हाथसे उसरेखा नकों पकडेरहे जहां दरद हो ता होय दरद मिट जाय ॥

परीरोग दूर करवाको मंत्र।

ॐ महकूब कूब मह विमल मह बढीमढीमें चार देव कौणकौण अहंकार महंकार मुहमदा वीर ताइया सिलार बजाऊं रव्वाजे मुअय्युनुद्दीन तुह्मारी खुशवोइमें चढी कमान सुलैमान परी लंक परीकों हुकुम कीजै कौन २ सी परीकूं हुकुम कीजै स्याह परी सब्ज परी हूर परी अर्श कुर्शकी परी लाऊली बीबी फातमा कीली झीली आपा नापाना

फल आय लैना सवासेर सर्बतका प्याला आप ले आय हाजिर होना मीर मुहीयुद्दीन मखदूम जहानी या शेख सय्यद आहिया पठाण आय हाजिर न हो तो रोज कयामतके दामनगीर होऊंगा ॥ १८१ ॥

विधि।



हाजरात करवाको मंत्र।

विस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम खुदाई बडीतू बडा जैनुद्दीन पैगम्बरदीन दुनी तेरा सादात फुरो वादना मुरादी वेवुनयादी तुरक मा पीर ताईया सिलार देखूं तेरी शक्ति वेगी बांध ल्याव छूट जाय

तौ फेरूं ल्याव नौ नाहरसिंह चौरासी कलुवा बारा ब्रह्मा अठरासै शाकिनी कामन दुरामन छलछिद्र भूतप्रेत चोरचाखर आगिया बेताल वेगी बांध ल्याव जौ न बांध ल्यावै तौ दुहाईसुलेमानकी दुहाई खलीफाकी दुहाई पीर पेगंबरकी ॥

विधि ।

इस मंत्रको होली-की रातसे सिद्ध करने-का प्रारम्भ करै प्रति-दिन २००० मंत्र जपै झूपदीप करता रहै ऐसे करते २ जब सिद्ध हो जांय तब जब हाजरात करनी होय एक आठ बरसके बालक को बिठलाकर पूछौ जो कुछ होनहार है सब कह देगा ॥

ढाल रोपवाको मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरूकों चौसठ जोगिन बावन बीर छप्पन भैरों सत्तर पीर आकर बैठा ढालके तीर

हाला हलेन चाला चलै। वादी वाद शत्रुसौं मिलैं चलै ढाल लै कैं जो भाई जाहर पीरकी फिरै दुहाई। न मानै तौ गुरू गोरखनाथकी आन शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥ १८३॥

विधि।

या मंत्रसों पढके २१ बार उरद मारै तौ ढाल बन्द होय जाय॥

गर्वोक्त ज्वरहरणवाला मंत्र।

ॐ ह्रीं ह्रीं ठः ठः भो भो ज्वर शृणु शृणु हन हन गर्ज गर्ज ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं साप्ताहिकं मासिकं आर्द्धमासिकं वार्षिकं द्वैवार्षिकं मौहूर्तिकं नैमेषिकं अट अट भट भट अमुकस्य ज्वरं हर हर हन हन मुञ्च मुञ्च भूम्यां गच्छ गच्छ स्वाहा॥ १८४॥

विधि।

अश्विनी नक्षत्रसे दस राततक बलि देनेसे रोगी छूट ज्वरसे

जाता है एक परसे चांवलोंको पीसकर एक घोडा बनालेवै और उसको एक मिट्टीके पात्रमें रख देवै और चार पुरुषोंको पकडवादेवै गंध, पुष्प, धूप, दीप करै और एक पताका लगावै फिर सायंकालके समय बलिदान करै ॥

वशीकरण पुत्तालिका मंत्र ।

ॐ नमो भगवति सूचि चाण्डालिनी नमः स्वाहा ॥ १८५ ॥

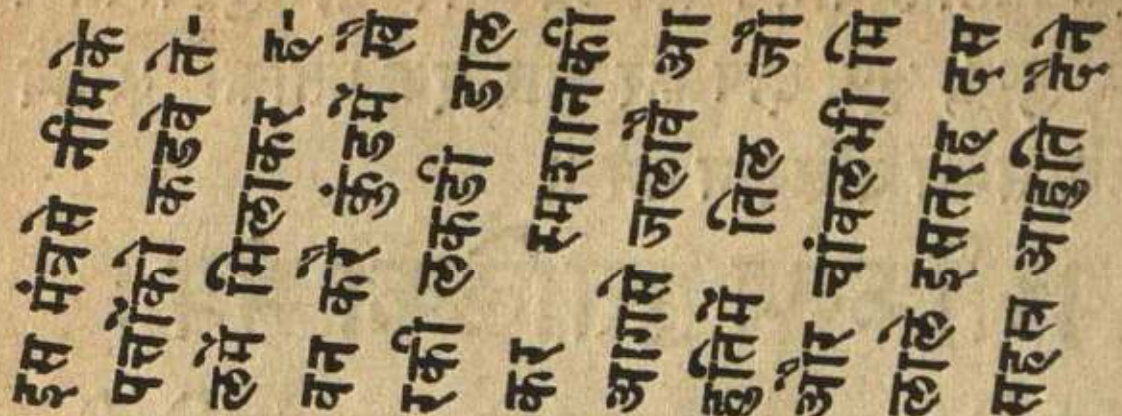
विधि ।

इस मंत्रसे मोमकी एक ऐसी पुतली बनावै जिसकी अंजली बन्ध रही दोनो पांव हों तथा जिसके सब अंग प्रत्यंग जुदे जूदे चमकते हों फिर जिसको बस करना चाहै उसकी उसमें प्राण प्रतिष्ठा करके इस मंत्रको जपता हुआ अंगारपर पुतलीको तपावै ऐसा करनेसे मनुष्य वश हो जायगा ॥

वैर करवाको मंत्र ।

ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हुं फट् स्वाहा ॥ १८६ ॥

विधि ।



पर तत्काल विद्वेष होय ।

उच्चाटन मंत्र ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय हूं दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रबान्धवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ङं ञं णं नं मं ॥ १८७ ॥

अथ ध्यानम् ।

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रतिमतनुरुचिंसोमसूर्य्याग्निनेत्रं । विद्युज्ज्वालाकपालोज्ज्वलविपुलजटाजूटबद्धेन्दुखण्डम् ॥ घण्टाठङ्काभयेष्टान्यपिचनिजभुजै-

बिंभ्रतं भीषणाङ्गं श्रीमत्कालाग्निरुद्रं प्रणतभयहरं साट्टहासं भजामि ॥

विधि ।

इस ध्यानको पढकर ॐ ह्रीं क्रीं कालाग्निरुद्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ इस मंत्रसे प्राणप्रतिष्ठाकरके स्मशानकी भस्म लाकर कलए और उलूकके परोसे १०८ वार मंत्र पढकर सिद्ध करै जिसके नाम से करै उसका उच्चाटन अवश्य होय ॥

काकवन्ध्याके पुत्र करवेको मंत्र ।

ॐ नमः शक्तिरूपाय अस्या गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १८८ ॥

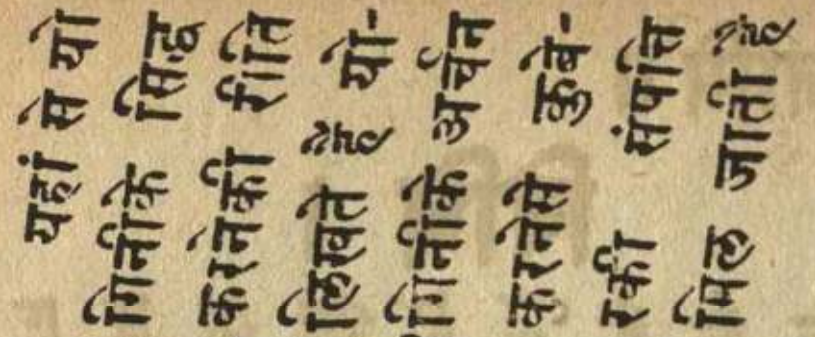
विधि ।

इस मंत्रको १०८ वार जपै कार्य सिद्ध होय ॥

योगिनी सिद्धि करनेका मंत्र ।

ॐ ह्रीं फट् ॥ १८९ ॥

विधि।



प्रातःकाल उठकर नित्यकर्मके अनन्तर मूल मंत्रसे दिग्बंधन करै फिर मूल मंत्रसे प्राणायाम करके कराङ्गन्यास करै ऱ्हीं अगुष्ठाभ्यांनमः, ऱ्हीं अनाभिकाभ्यांनमः इत्यादि एक अष्टदल कमल लेकर योगिनीका चित्र खींचैं प्रतिदिन रात्रिके समय एक सहस्र मंत्र जपै परन्तु पूजाके महिले इस ध्यानको कर लिया करै॥

ध्यान।

पूर्णचन्द्रनिभां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोत्तुङ्गकुचां वामां सर्वेषामभयप्रदाम्॥

विधि।

एक महीने पीछे आधी रातके समय योगिनी प्रसन्न होकर पास आवेगी तब उसकी पूजा करके वर माँगै और देवीसे माता, बहन, भार्या अथवा भक्तिभावसे संबोधन करै जो जननीभावसे पूजा करै तो नित्य प्रति धनकी वृद्धि होगी

राजपद मिलैगा तथा देवी सुतके समान रक्षा करैगी ॥ भगिनी भावसे उपासना करैगा तो द्रव्य, वस्त्र, दिव्य कन्या, नागकन्याका लाभ होगा और देवी बहनके समान रक्षा करैगी ॥ जो स्त्रीभावसे पूजा करै तो त्रिभुवनका स्वामी होगा, संसारकी उत्तम उत्तम वस्तु उसको मिलैगी और स्त्रीके समान उसके साथ देवी रमण करैगी ॥ यदि साधक अन्य स्त्रीसे रमण करैगा तो देवी उसका संहार करैगी ॥

नटी साधनमंत्र।

ॐ ह्रूं ह्रूं फट् फट् नटी ह्रूं ह्रूं ह्रूं ॥ १९० ॥

ध्यान ।

फुल्लेन्दीवरसुन्दरोदरमुखी प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी मृगयुग्मनयनासानन्दल्हादास्मिता । क्षीराम्भोनिधिसम्भवा विलासिता मणिमय कुण्डलौ कर्णे धारणतत्परा भगवती ॥

विधि।

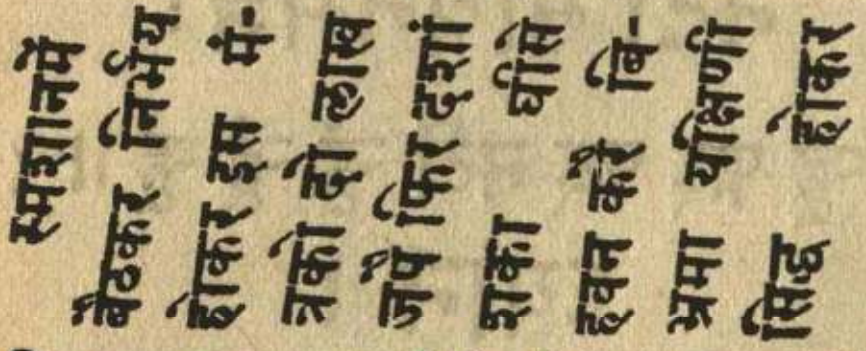
नदीके किनारेपर जाकर सात दिनतक धूप दीप चन्दन नैवेद्य द्वारा जप करै ध्यान पढै फिर नटी प्रसन्न होकर साधककी

पत्नी भावसे सेवा करेगी और चार तोले सुवर्ण प्रतिदिन दे जायगी ॥

विभ्रमा यक्षिणीका मंत्र।

ॐकुवलये हिलि हिलि तु तु तु सिद्धि सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा ॥ १९१ ॥

विधि।



प्रतिदिन पचास मनुष्योंके भोजनकी शक्ति देगी ॥

शत्रुको पांगला करनेका मंत्र।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय रुद्रशेखराय खञ्जने सङ्कोचने ठः ठः ॥ १९२ ॥

विधि।

काले सपके रक्तमें नीली मख्खी और कपौतकी विष्ठा मिलाकर लेप करनेसे शत्रु तत्क्षणपांगला हो जाता है तथा तिलके

तेलमें बला और अतिबला डालकर लेपकरनेसे फिर तत्काल सुखी हो जाता है ॥

मंत्र सुई काढवाको।

ॐ नमो चड पड चूना लोहासार, घडै लुहार लोहाका तार मोड मोडकै कीया पानी लोहा जार भस्म कर हानी रामवीर तौ जाया माटी कक्ष्मणवीर मूंदै घाव पाकै फूटै पीडा करै तौ लक्ष्मणराजा रामन्द्रजी रक्षा करें शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ १९३ ॥

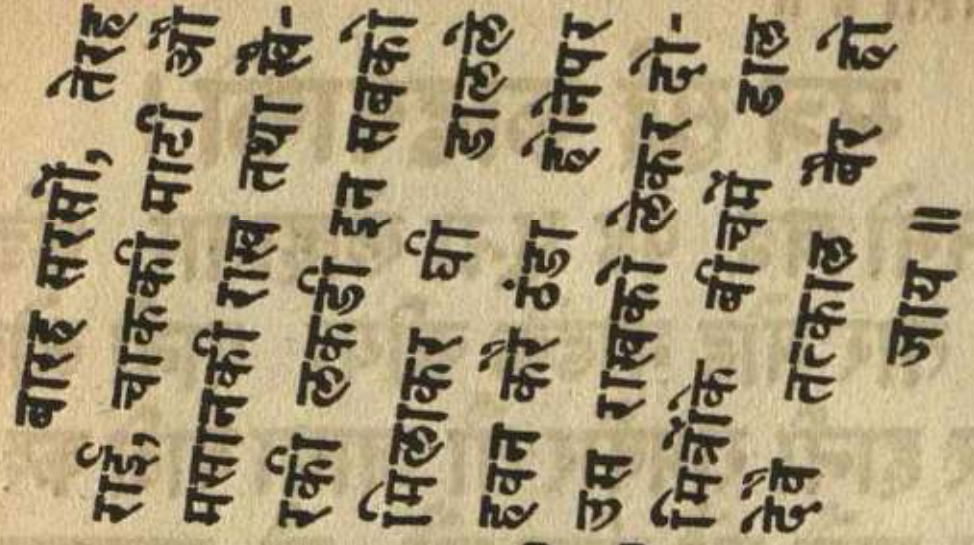
विधि।

बिभूतकी चुटकी भरकर उस जगह हाथ फेरे जहां सुई गडी हुई हो मंत्र पढता जाय सुई अपने आप निकल आवेगी ॥

मित्रनमें लडाई करवाको मंत्र।

बारह सरसों तेरह राई पाटकी माटी मसाण राकी छाई पढकर मारूं करदलवार अमुका कुटै नदेखे अमुकीका द्वार मेरी शक्ति गुरुकी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरूका ॥ १९४ ॥

विधि।



बारह सरसों, तेरह राई, चाकरी माटी लो मसानकी राख तथा नख रखी लकडी इन सबको मिलाकर धूंवा डालिये हवन कुंडा तैयार करके हाथ में लेकर मंत्र तीनबार जाप ॥

नजर दूर करवेको मंत्र।

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरूको ओं नमो नजर जहां पर पीर न जानी बोलै छलसों अमृत बानी। कहौ नजर कहांते आई। यहां की ठौर तोहि कौन बताई ॥ कौन जात तेरो कहां ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम ॥ कहांसे उडी कहांकू जाया। अबही बस करलें तेरीमाया ॥ मेरी जाति सुनोचित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तंमोलन, चूहडी, चमारी, कायथनी, खतरानी कुम्हारी, महतरानी राजाकी रानी जाकौ दोष वाहीके

सिर पडै । जाहर पीर नजरसों रक्षा करै ॥ मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥१९५॥

विधि ।

मोर पंखसों झारो देय मंत्र पढ़ै तो जाय बालकके लैं रखो धरतीपै मोरपंखको पछाडो मारतो जाय ॥

मोहनी मंत्र ।

तेलसों मैं तेल राजा परजा पावै मेल अछक पानी मसक ल्याव छः सै बीर मेरे पाय लगाय हाथ खड्ग फूलोंकी माला जानि विजानै गोरख जानै मेरी गतिको कहै न कोय हाथ पछानो मुख धोऊं सुमिरों निरंजन देव हनुमन्तयती हमारी पति राखौ मोहनी दोहनी दोनों बहन आव मोहनी रावल चलै मुख बोलै तौ जिव्हा मोहूं आस मोहूं पास मोहूं सब संसार में निकलूं टीकादेय ललाट। आवै तौ आवै नाहिं पकड बांध

ले आवै दुहाई अंजनीके पूतकी दुहाई लक्ष्मण जतीकी दुहाई गुरू गोरखनाथकी दुहाई निरंजन भगवानकी मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाच ॥ १९६ ॥

विधि ।

दीपमालिका- की रातकूं एक आलीमें ग्यारह दीपक जलाय औज पत्र ऊपे इस मंत्रकूं सैं छसे लिख पूजन करे और १०८ मंत्र जपे

जाकूं मोहनो होय ताकी ओर मुख करके तीन बार मंत्र जपै तत्काल बस होय ॥

अग्निभयानिवारण मंत्र ।

उत्तरस्याञ्च दिग्विभागे मारीचो नाम राक्षसः ।
तस्यमूत्रपुरोषाभ्यांहुता वन्हिःस्तम्भःस्वाहा॥१९७॥

विधि ।

इस मंत्रको १८ पाठकरे जलको गरम औजलीआगेधरे पीवे गोरेको लगावे तो जाय ॥

सिंहभय नाशक मंत्र।

ओं नमो अग्निरूपाय ह्रीं नमः ॥ १९८ ॥

विधि।

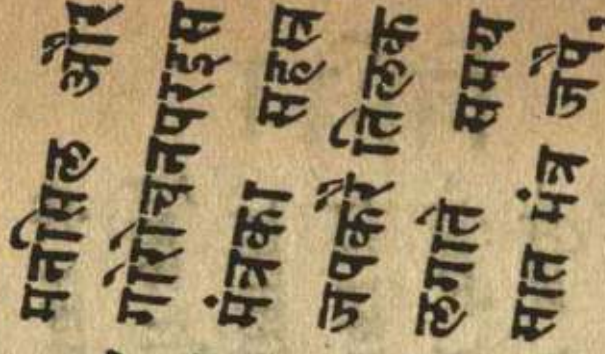
पुष्य नक्षत्रमें इस मंत्रसे सफेद आककी जड लाकर दाहिने हाथमें बांधले सिंहका भय न होय ॥

ग्रहदोषपीडा निवारण मंत्र।

ॐ नमो भास्कराय अमुकस्य सर्व ग्रहाणां पीडानाशनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १९९ ॥

विधि।

आककी जड, धतूरा, भोंगाकी जड, दूधीकी जड, बडकी जड, पीपलकी जड, आमपत्र, आमपत्र, गूलरपत्र, ये सब मिट्टीके पात्रमें रखकर घी और दूध डाल देवे, चांवल, जवा, मूंग, गेहूं, तिल, गोमूत्र, सफेद सरसों, कुश, कंदुल, शहत ये सब वस्तुभी मिला देवे इन सबको शनिवारके दिन सायंकालके समय पीपलकी जडमें गाडदेवै तौ घोर दरिद्र



शत्रु देखतेही वश होयँ ॥

व्याघ्रनिवारण मंत्र ।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रो श्रोस्वाहा ॥ २०४ ॥

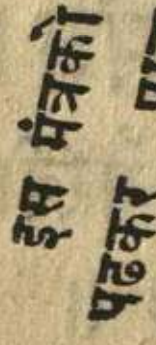
विधि ।

इस अष्टाक्षर मंत्रको पढकर लोहेको व्याघ्रकी ओर फेंक देवै तौ उसका मुख न चलै और चलनेमें भी असमर्थ होय ।

मोहन पान मंत्र ।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् ॥ २०५ ॥

विधि ।



अदीठका मंत्र।

धारधार अधरधार धार बांधूं सातवार अनी बांधू सीन बार नागर पान बांधू एक बार पकै न फूटै पर जरै हनुमान वीर रक्षा करै गुरुका शब्द सांचा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥२०६

विधि।

सात शनीचर १०८ जपकरै हनुमानका पूजनकरै औरव्रतकरै।

मुरदेको सिद्ध करनेका उपाय।

विधि।

मुरदेको सिद्ध करनेके पहिले स्थानकी परीक्षा करै भारत चूडामणि ग्रंथमें इस प्रकारसे लिखा है कि शून्यागार, नदीतीर पहाड, निर्जन स्थान, बिल्वमूल, स्मशानके पास बनभाग ये सब स्थान मुरदेके सिद्ध करनेमें अच्छे हैं कृष्णपक्ष या शुक्ल पक्षकी चौदस या अष्टमीसे इस कामका प्रारम्भ करै तौ तत्काल सिद्धि होय। जो मंगलवारकी अमावससे इस कार्यको करै तो बहुत ही फलदायक होवैगा। शव साधन करनेके लिये तिल,

विधि।

इस मंत्रसे मुर्देको प्रणाम करके 'ओं हुं मृतकायनमः' इस मंत्रसे धोकर सुगंधित जलसे स्नान करावै धूप दीप देकर चन्दन लगावै और कमर पकडके उठाकर कुशाके आसनपर पूर्वकी ओर मुख करके शयन करावै और इलायची, लोंग कपूर, जावित्री और पान उसके मुखमें धरकर औंधामुखकर देवै और पीठपर सुगन्धित पदार्थोका लेप करके बाहोंकी कांखसे लेकर कमरतक एक चौकौन मंडल बनावै और उस मंडलके बीचमें अष्टदल कमल खींचै और यह मंत्र उसके बीच में लिख देवै॥

पीठका मंत्र।

ओं ह्रीं फट्॥ २११ ॥

विधि।

इस मंत्रको मुर्देके पीठपर लिखकर कमर आसन झिलाकर कमर पकडकर मुर्देका प्रकारका ह्रीं ह्रीं ह्रीं

पीपलकी लकडी बारह अंगुल लम्बी गाडकर दिक्पालोंकी पूजा करै ॥

इन्द्रपूजाविधान।

ॐ लां इन्द्राय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय वज्रहस्ताय सशक्तिपारदाय सपरिवारायनमः२१२॥

विधि।

इस मंत्रसे पूजा करै और नीचे लीखे मंत्रसे बलिदान करै ॥

इंद्रके बलिदानका मंत्र।

ॐ लौं इन्द्राय सुराधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा ॥ २१३ ॥

अग्निपूजाका मंत्र।

ओं वां अग्नये तेजोऽधिपतये मेषवाहनाय सपरिवाराय शक्तिहस्ताय सायुधाय नमः॥ २१४॥

अग्निके बलिदानका मंत्र।

ॐ वां अग्नये तेजोधिपतये इमं बलिं गृहाण

गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा ॥ २१५ ॥

यमपूजाका मंत्र ।

ॐ मां यमांय प्रेताधिपतये सदण्डहस्ताय सायुधाय महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥ २१६॥

यमके बलिका मंत्र ।

ॐ मां यमाय प्रेताधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २१७ ॥

नैर्ऋताधिपतिकी पूजाका मंत्र ।

ओं क्षां नैर्ऋतये रक्षोऽधिपतये असिहस्तायाश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः ॥ २१८ ॥

इसके बलिका मंत्र ।

ओं क्षां नैर्ऋतये रक्षोऽधिपतये इमं बलिं गृहाण

गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २१९ ॥

वरुणपूजाका मंत्र ।

ओं वां वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनाय सायुधाय सपरिवाराय नमः ॥ २२० ॥

वरुणबलिका मंत्र ।

ओं वां वरुणाय जलाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापाय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २२१ ॥

वायुपूजा मंत्र ।

ओं यां वायवे प्राणाधिपतये हरिणवाहनायांकुशहस्ताय सायुधाय सपरिवाराय नमः ॥ २२२ ॥

वायु बलि मंत्र ।

ओं यां वावे प्राणाधिपतये इमं बलिं गृहाण

गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २२३ ॥

कुबेर पूजा मंत्र।

ओं सां सोमाय यक्षाधिपतये गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥ २२४ ॥

कुबेर बलि मंत्र ।

ओं सोमाय यक्षाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २२५ ॥

ईशानपूजा मंत्र ।

ॐ हां ईशानय भूताधिपतये शूलहस्ताय वृषवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥ २२६ ॥

ईशानबलि मंत्र।

ओं हां ईशानाय भूताधिपतये इदं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २२७ ॥

ब्रह्मपूजा मंत्र।

ओं आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये हंसवाहनाय पद्म-हस्ताय सपरिवाराय नमः ॥ २२८ ॥

ब्रह्माबलि मंत्र।

ओं आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २२९ ॥

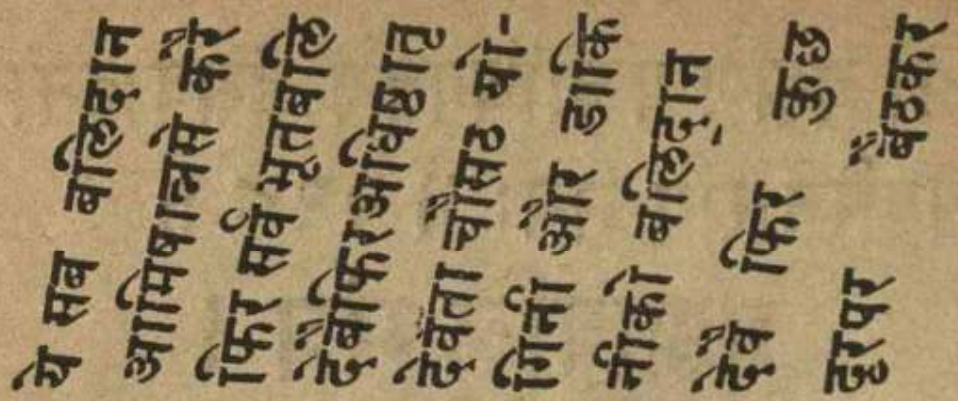
अनन्तपूजा मंत्र।

ओं ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये चक्रहस्ताय रथवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥ २३० ॥

अनन्तपूजाबलि।

ओं ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्न-निवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥ २३१ ॥

विधि।



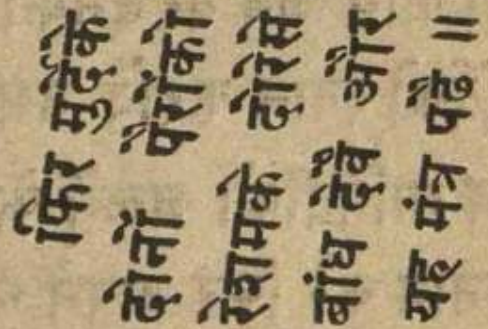
"ह्रीं फट् शवामनाय नमः" इस मंत्रसे मुर्देका पूजन करै फिर मूल मंत्रके पीछे ह्रीं फट् बोलकर मुर्देपर घोडेकी तरह बैठजाय और अपने पांवोंके नीचे कुशा दाबलेवै अनन्तर गुरु, गणेश और देवीको नमस्कारकरके प्रणायाम षडंगन्यास करके वीरार्दन मंत्र द्वारा दसों दिसामें लोष्ट फेंक देवै और संकल्प करै "अद्येत्यादि अमुक देवतायाः सन्दर्शनकामअमुक मंत्रस्यासुकसंख्या जपमहं करिष्ये ॥

फिर "ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इस मंत्रसे आसनकी पूजा करके अपने बाई ओर मुर्देके समीप अर्घ्यपात्रादिकोंको रखकर पीठपूजाकर। फिर यथाक्ति षोडशोपचार दशोपचार अथवा पंचोपचारसे देवीका पूजन करके अभिमंत्रित जलको मुर्देके मुखमें डाल देवै और ऊपरसे उठकर साम्हने जाकर यह मंत्र पढै ॥

मंत्र।

ओं वशो मे भव देवेश मम वीर सिद्धिं देहि महाभाग कृताश्रय परायण ॥ २३२ ॥

विधि।



बन्धन मंत्र।

ओं मद्वशो भव देवेश वीरसिद्धिकृतास्पद। भीमभीरुमायाभाव भवमोचन भावुक ॥ त्राहिमां देवदेवेश सुराणामधिपाधिप ॥ २३३ ॥

विधि।

इस मंत्रसे मुर्देके चरणमें त्रिकोण यंत्र खींचै और ऊपर बैठकर उसके दोनों हाथोंको लम्बा करके उनपर कुशा बिछा देवै और साधक उन कुशाओंपर अपने चरण जमाकर तीन बार प्राणायाम करै और सिरपर गुरुकी भावना करै हृदयमें

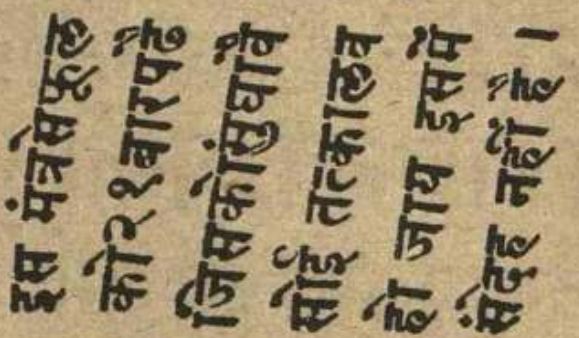
देवीका ध्यान और ओष्ठ मूंदकर मौन धारण करके मंत्र जपना प्रारम्भ करै। इसतरह आधी राततक जप करनेसे यदि कुछ भी दिखाई न दे तौ वहांसे सात पेंड हटकर फिर जपना प्रारम्भ करै जब कोई अदृश्य होकर पूछने लगै कि तू क्या चाहता है? तब उससे शपथ दिवाकर वर मांगै यदि प्रतिज्ञा न करै तो फिर जप करनेमें प्रवृत्त हो जाय जब वर दैनेकी प्रतिज्ञा कर लेवै तब जपको त्याग कर मुर्देको स्नान करावै उसके बन्धनोंको छोड देवै और पूजाकी सब सामिग्रीको जलमें फेंक कर मुर्देको भी बहा देवै और स्वयं स्नान करै फिर अपने घर जाकर बलिदान देवै 'अग्रिमरात्रौ येषां यजमानोऽहं तेगृण्हान्त्विममू' इस मंत्रसे बलि देवै और पंचगव्य लेकर २५ ब्राम्हणोंको भोजन करावै। नव दिनतक मंत्र सिद्ध करनेकी चर्चा किसीसे न करै पन्द्रहादिनतक विषय भोगोंको त्याग दे क्योंकि १५ दिनतक देवी देहमें रहती है॥

वशीकरण फूल मंत्र।

कामदेश कामाख्या देवी जहां वसै इस्मायलयोगी इस्मायलजोगीने बोई बाडी, जीमें निपुजे फूल हजारी' एक फूल हसै एक फूल रसे एक

फूल नरसिंह वीरके हाथ बसै एकफूल कूं मंत्रके कहौ जाहि बुलवाऊं जो आवै सात कल कालाबीर किल किलाय लावै हांक मार हनुमंत बुलावै न लावै तौ माता दूध पिया लजावै ॥ २३४ ॥

विधि ।



दूसरा फूलवशीकरण ।

कामरूपदेश कामाख्या देवी जहां वसै इस्माइलजोगी इस्माइलजोगीने लगाई फुलवारी फूल वीनै लौना चमारी जो इस फूलकी सूंघैवास तिसका जीव हमारे पास घर छोडे घर आंगन छोडै लोककुंटबकी लज्जा छोडै जो इतने पै हमसे मुख मोडै तौ दुहाई लौना चमारीकी दुहाई आदि गुरूकी दुहाई धनवन्तारिजीकी मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति

फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २३५ ॥

विधि ।

दिवालीकी रातसे एक माला प्रतिदिन जप प्रतिदिन जप, दीप करता रहे सिद्ध होनेपर इस मंत्रको फलपर २१वार पढ़ै और संघावे वस हो जाय परन्तु होली दिवाली रातकै इस मंत्रको १००जप।

मंत्र रीघनवायको ।

ॐ नमो आदेश गुरूकों ओं नमो कामरूपदेश कामाख्या देवी जहांबसै इस्मालजोगी इस्मालजोगीकै पुत्री तीन एक तोडै एक पिछोडै एक वारी घनवाय तोडै शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २३६ ॥

विधि ।

मंगल और शनीश्चरके दिन मनियारकी मोगरीसुं झारा दीजै ।

मंत्र पीलियाको ।

ॐ नमो वीर वेताल असराल नारसिंह देव

खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती। काटै झारै पीलिया रहै न नैक निसान। जो रहजाय तौ हनुमन्तकी आन। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २३७ ॥

विधि।

इस मंत्रको ग्रहणकी रातमें २००८ जपकर सिद्ध करै फिर जिसका पीलिया उतारना होय उसके सिरपर कड़वा तेल एक कटोरीमें भरकर धरै और कुशासे मंत्र पढ़कर उस तेलको बहाता रहै तेल पीला हो जाय तब उतार दे ॥

मंत्र बवासीरका।

ओं नमो आदेश गुरूको खुरासानसूं आया वीर छप्पनसूर संगमें तीर। शीस कटै और खून न आवै टपका एक पडन नाहिं पावै ॥ खूनी बादी

कैसी होय करो दूर पीडा कम होय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २३८ ॥

विधि।

इस मंत्रको पढता जाय और पृथ्वीपरडालता जाय मस्तकपरजायगा और स्नान न करेगा ॥

भूतादिकके झाडवाको मंत्र।

ॐ नमो ओं ह्रीं ह्रीं ह्रूं नमो भूतनायका समस्त भुवन भूतानि साधय साधय हुई ॥ २३९॥

विधि।

इस मंत्रको पढकर मोर पंखसे झाडदे तो भूतादिक भाग जाय॥

अथ दूसरा मंत्र।

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्षस्थल-विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच शाकिनीकीलोन्मूलनाय स्तभोद्भव समस्तदोषान् हन हन सर सर चल चल कम्प कम्प मथ मथ

हुं फट् हुं फट् हुं फट् ठह ठह महारुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥ २४० ॥

विधि ।

मोरपंखसे झारै ॥

भूतादिकके बकुरानेका मंत्र ।

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल किल रौद्र-दंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनभूषिताय धगधगतिपि-शंगललाटनेत्राय तीव्रकोप्यनलायातितेजसेपापशूल खट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गरभूपदंडत्रासमुद्राव्यग्रद-शदण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटकूटार्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरंजितविग्रहाय उग्रफणिपातिघटाटोपमंडि-तकंठदेशाय जयजय भूतडामरेश आत्मरूपं दर्शय दर्शय नृत्य नृत्य सर सर चल चल पाशे निबंध बंध हुंकारेण त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन हन निशितखड्गेन छिन्धि छिन्धि शूलाग्रेण भिन्धि

भिन्धि मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय ॥ २४१ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे गौके घीमें गगल मिलाय बहत्तीधूपदे अोर इसी मंत्रसे लडोंको आमि- मंत्रित करके उसके मारे तो वह मनुष्य निशाचरके जैसा होय वैसा कहे पीछे उसी मंत्रसे लिखकर नीमके पत्ते और सर्पकी कांचली मिलाकर धूप देवे ॥

विसालीका मंत्र ।

ओं ऐं ह्रीं सुटकीनपातिनपाति स्वाहा॥२४२॥

विधि ।

नीमकी डालीसे झारै ॥

नेत्रकी पीडाको मंत्र ।

सातों रीदा सातों भाई सातों मिलके आंखबराई डुहाई सातों देवकी इन आंखिन पीडा करै तौ

धोबीकी नाद चमारके चूल्हे पडै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्य नाम आदेश गुरूका ॥ २४३ ॥

विधि।

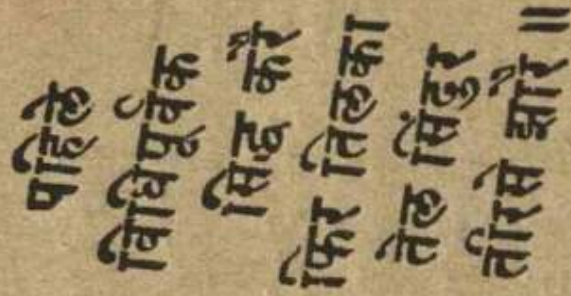
प्रथम बीडा पान इक्कीस लौंग सिंदूर धूप दीप नैवेद्य करके इक्कीस दिनमें सिद्ध करै प्रतिदिन २०८ जप फिर आंखपै इक्कीस बार पढै आराम होजाय तो लौंदिवालीमें २०८ जप करता रहै ॥

डमरू पसलीवायका मंत्र।

सत्यनाम आदेश गुरूका ॐ खंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पखतों गया सवालाख पखतों जाय कहा करैगा सवा भार कोयला करैगा सवा भार कोयला कर कहा करैगा हनुमन्त बीर नव चन्द्रहास खड्ग गढैगा नव चन्द्रहास खड्ग गढ कहा करेगा जानवा डौरू पांसली वाय काट कूट

खारी समुद्र नाखैगा जगतगुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २४४॥

विधि।



प्रेत वस करवाको मंत्र।

ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरी मम वशी कुरु कुरु स्वाहा ॥ २४५ ॥

विधि।

मूलनक्षत्रमें बबूलके नीचे जाके तीन दिन इस मंत्रको प्रति दिन १०८ बार जपै प्रेत प्रगट होय मांग मांग कहै तब वचन लेके जो मनमें विचारीहो तैसे करै ॥

मंत्र पाणीपर चलवाको।

ॐ नमो कालाभैरूं कालिका का पूत पगो

खडाऊं हाथ गुरज चलौ मन प्रभात आक तूं अग्रसूं भरा तेरा न्योंतो में जहां करूं पूजों दिन सात जो तुम मन चीता कारज कर दे मोहि कुमकुम कस्तूरी केसर पूजा करूं तुम्हारी मोर मन चीता मेरा कारज कीजै त्रिलोकीमें यश लीजै चन्द टरै सूरज टरै पर गुरु गोरखनाथकी वाचा फुरै मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २४६ ॥

विधि।

शनिवारको जब छुरा लौर प्रातःकालही रवि- वारको जडमेंतरवाड लावे नक्षत्र हो तब सफेद लावे तब तुम जडकी छाल लावे लाकर कीलिमंत्रणदे लावे डाहे बनवाकर लौर मंत्र जपता जाय छाह पर बैठे नहीं

बीछूके बिष उतारवाको मंत्र।

ॐ नमों सुरहगाय पर्वत परजाय हरी दूब

खाती फिरै ताल तलैया पानी पीयै सुरहगायने गोवर कियौ जामें उपजे बीछू सात काले पीले धौले लाल रं विरंगे हराल उत्तर रे उत्तर बीछूका जाया नहीं गरुडजी उडकै आया सत्यनाम आदेश गुरूको शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २४७ ॥

विधि।

दिवालीकी रा॰ तकोइसमंत्रको २००० क्रम कर सिद्धकरले फेर जिस रो॰ पीकोकाटालो॰ घरसको सात कार मंत्र पढ़ं कार जल प्यावै रोगी अच्छा होय ॥

मंत्र पुतलीवशीकरण।

ॐ नमः क्षिप्रं कामिनीं अमुकीं मे वशमानय हुं फट् स्वाहा ॥ २४८ ॥

तांबेकी एक ऐसी चौकोन मूर्ति बनवावै जिसमें एक रूपवती पुतलीका चित्र बनाहो उस पुतलीका एक हाथ ऊँचा और एक नीचा हो इस मूर्तिका पूजन रक्तचन्दनसे नित्य प्रति

"ॐ ह्रीं ह्रीं क्लं क्लं फट्नमः"



करै चमेलीके फूल चढावै और मौनसाधकर एक सहस्र मंत्र नित्य रातके समय जपै ऐसे इक्कीस दिन करनेसे मंत्र सिद्ध हो जायगा फिर जिसको वस करना चाहै उसकी ओर इनमेंसे फूल लेकर फेंकै वह तत्काल पीछे २ चली आवै॥

अथ मंत्र।

ॐ नमः कालरात्रि शूलहस्ते महिषिवाहिनि रुद्रकालकृतशेखरे आगच्छ आगच्छ भगवति

अतुलवीर्ये सर्वकर्माणि मे वशं कुरु कुरु महेश्वर आज्ञापयति श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ २४९ ॥

विधि ।

हुं फट् हुं फट्



लोहेकी एक ऐसी मूर्ति बनावै जैसी इस चित्रमें है लाल लाल नेत्र, बिखरे हुए बाल, क्रोधसे निकली हुई जिव्हा एक हाथमें खड्ग दूसरेमें खप्पर, भयानक स्वरूप धारण किये हो इसको सूर्यग्रहणकी रातसे सिद्धकरना प्रारम्भ करै हजामत न बनावै नख बढने दे ब्रम्हचर्यसे रहै अपने शत्रुपै सदा ध्यान रक्खै। फिर इस मंत्रको पढ २ कर कडवे तेलमें गुडहरके फुल डुबोकर शत्रुका नाम लेलेकर हवन करता रहै और आठवें दिन मूर्तिका

पूजन करके ढाकके कोयलोंकी अग्निमें डाल दे फिर लाल गरम होनेपर निकालकर कटेरीके रसमें भिगोदें ऐसा करनेसे सवा मासमें कार्य सिद्ध होनेमें संदेह नहीं ॥

मंत्र वशीकरण।

ॐ रों पुरं क्षोभय भगवति गम्भीरयब्लुं स्वाहा ॥ २५० ॥

विधि।

बिदारी कंद और वडकी जड दोनोंको जलके साथ पीसले और इस मंत्रको इक्कीस जप कर मस्तकपर तिलक लगावे जो देखै सोई हाथ जोडने लगै इस मंत्रको दो लाख जपै तौ सिद्ध हो जाता है ॥

रुद्रवंतीकी जड औरजो इनको सात बार मंत्र पढकर हाथमें बांध लेवै जो देखै सोई हाथ जोडने लगै इस मंत्रको दो लाख जपै तौ सिद्ध हो जाता है ॥

दूसरे वशीकरणके मंत्र।

ॐनमोमहायाक्षिणीअमुकंमेवशमानयस्वाहा२५१॥

विधि।

इस मंत्रको पहिले एक सिद्ध कौवा को लेके लिख जपे को लेके लिख हाथ प्रयागगोंपर को लेके जाती है। मंत्र पहनेसे सिद्ध जाता है॥ कमलके पत्र मजीठ, कुंकुम, तगर इन को पीसकर खाने या पीने की वस्तुमें देवे तो अ- वश्य वस जाय॥

स्त्रीपुरुषवशीकरण।

ॐ नमो भैरवी तीरे आज्ञाकाले कमलमुखे राजमोहने वशीकरणे स्त्रीपुरुषरञ्जनि लोकवश्य मोहनि मेऽसोऽहं ॐ गुरु प्रसादेन॥ २५२॥

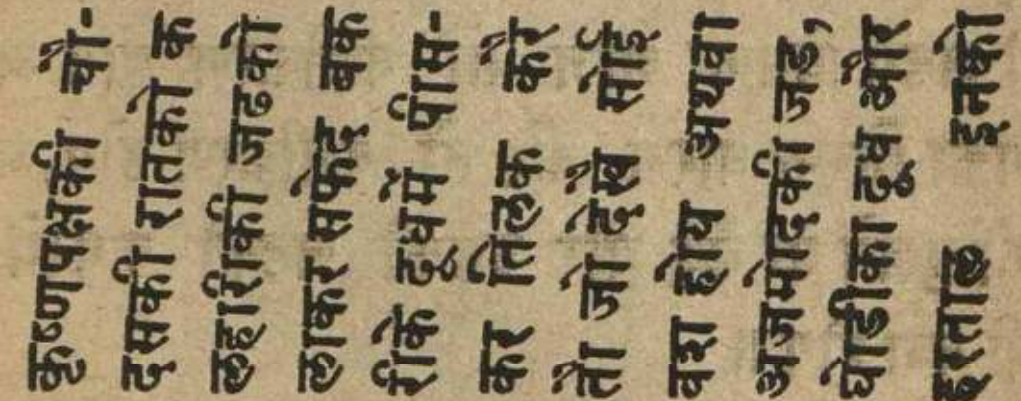
विधि।

आकके फूलको कपडेमें बांधकर तिरायेमें भस्म कर लेवै फिर इस भस्मका तिलक शनीचर या मंगलवारको लगाकर जो राजाके सन्मुख जाय तौ देखतेही वश हो जाय और लोगोंका तो कहनाही क्याहै॥

वस्तु लेलैनेका मंत्र।

ॐ अस्मकर्णेश्वरि दुर्बले आइके शिकजटा-कपाले ढक्कार फेत्कारिणी स्वाहा॥ २५३॥

विधि।

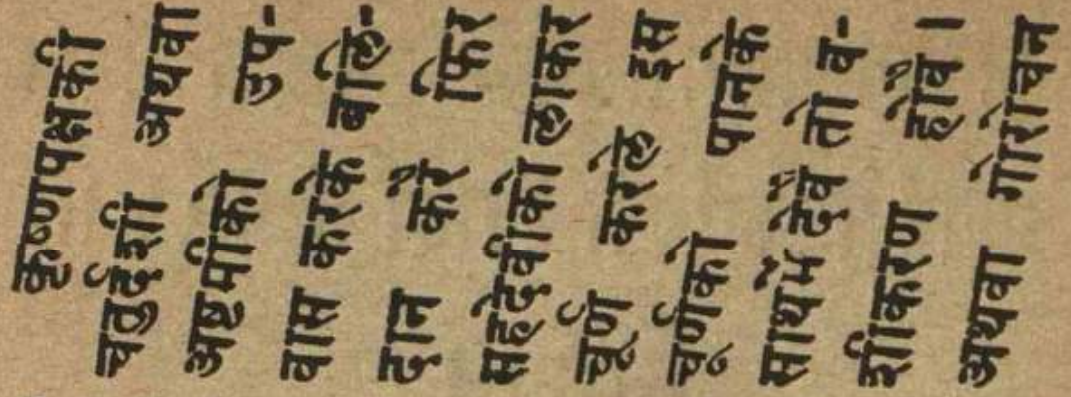


पीसकर मुखमें रख लेवै और फिर जिस किसीसे जो वस्तु मांगै वही उसको दे देवै॥

स्त्रीवशीकरण।

ॐ नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्वमुखरञ्जनि सर्वेषां महामाये मातङ्गकुमारिके लेपे लेपे लघु लघु वशं कुरु करु स्वाहा॥ २५४॥

विधि।



और सहदेवीको घिसकर तिलक लगावै अथवा मनसिलको सहदेवीकी जडमें घिसकर आंजै तौ वशीकरण होय अथवा उसके चूर्णको सिरपर धारण करै तौ वशीकरण होय, अथवा उस चूर्णको मुखमें गेर लेवै और उसकी जडको कमरमें बांध लेवै तौ स्त्री वश होय॥

वशीकरण साबर मंत्र।

ओं नमो भगवति रुद्राणि चामुंडानि देवदत्त मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा॥ २५५॥

विधि।

इस मंत्रका एक लक्ष दो सहस्त्र सोलह जाप करै, धूप, दीप नैवेद्य चढावै और जिसको वश करना हो उसके बालोंको लाकर गूगलमें मिलाकर गोली बनालेवै और सहस्त्रवार

मंत्र पढ २ कर हवन करै इस रीतिसे मंत्रको सिद्ध करनेपर जिसको वश किया चाहो वह उसी जगह आजायगा जहां बैठकर जप करोगे ॥

दूसरा वशीकरण मंत्र।

राजा आया मैं आया अपने कामको मेरा काज न करैगा तो मैं तेरादामनगीरहोऊंगा ॥ २५६ ॥

विधि।

इस मंत्रको सात बार पढ़ कर अपनी जांघमेंसेउठाय और तिलकोंमें होम मिलाकर छाती गांठीमें तत्काल वशीभूत होय.

मंत्र रक्षाका।

ओं अजरासन वज्रद्वार, द्वारा दीया वज्रकावाट वज्रको घाव चलावै उलट वीर वाहीको खावै मेरे हृदय हरवसे जारै देह अनन्त। श्रीराम जीव रक्षा करै चौकी फिर हनुमन्त। वीरक छोटा रणमें जावै। भूतप्रेत पास नहिं आवै। पिंड काचा शब्द सांचा

बीर जल बांधूं आकाश बांधूं बांधूं तारा चंद। जोति बांध सूरजकी लाऊं करूं अगनकूं मन्द। चारों दिशका वीर बुलाऊं चौसठ योगिन आवें। रास नाजकी फिर नहीं पावै मेरे घर सब आवें सत्यनाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २६३ ॥

विधि।

जा खेतपरसूं नाजकी रास उडानी होय ता खेतकी रास पै इस मंत्रको पढकर बकरेकी मेंगनी धर आवै पीछेसे रास घर चली आवैगी और जा चीजकूँ मंगानी होय ताकूँ भी ऐसे ही करै॥

भैरव सिद्ध प्रयोग।

ॐ काली कंकाली महाकालीके पुत्र कंकाल भैरूं हुकुम हाजिर रहै मेरा भेजा काल करै मेरा भेजा रक्षा करै आन बांधूं वान बांधूं चलते फिरतेके औसान बांधूं दसों सुर बांधूं नौ नाडी बहत्तर कोठा बांधूं फूलमें भेजूं फूलमेंजाय कोठे जी पडे थर

थर कांपै हल हल हलै गिर गिर परै उठ उठ भगै वक वक वकै मेरा भेजा सवा घडी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा वरसकू वावला न करै तौ माता काली शय्यापै पग धरै वाचा चूकै तौ ऊभा सूखै वाचा छोड कुवाचा करै तौ धौबीकी नाद चमारके कूडेमें पडे मेरा भेजा बावला न करै तौ रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढै सिरकी लटा टूट भूमिमें गिरै माता पार्वतीके चीर पै चोट पडै विना हुकुम नहीं मारना हो कालिके पुत्र कंकाल भैरूं फुरो मंत्र ईश्वरोंवाच सत्यनाम आदेश गुरूको ॥ २६४ ॥

विधि ।

इस मंत्रको काले रात्रि अथवा सूर्य ग्रहण रात्रिको सिद्ध करे तिरछे दा पांका देकर होमे नाकी ओर मुख करके हुक जाप जाय लोग और मुख इस मंत्रका जाप करे पीछे लाल कनेरके फूल होमे

सिंदुर लोंगका जोडा और चौमुखा दीपक आगे धरै और दशांशका हवन करै जब भैरव भयंकर रूपसे सन्मुख आवै तब डरै नहीं तत्काल फूलकी माला गलेमें गेर लड्डू आगे रक्खै फिर उनसें जो काम करना होय सो करावै तत्काल सिद्धि होयगी ॥

ज्वालामुखीका मंत्र ।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरी ज्वालामुखी जृंभिणी स्तंभनी मोहनी वशीकरणी परधनमोहनी सर्वारिष्टनिवारणी शत्रुगणसंहारिणी सुबुद्धिदायिनी ओं आं क्रों ह्रीं त्राहि त्राहि अक्षोभय अक्षोभय अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २६५ ॥

विधि ।

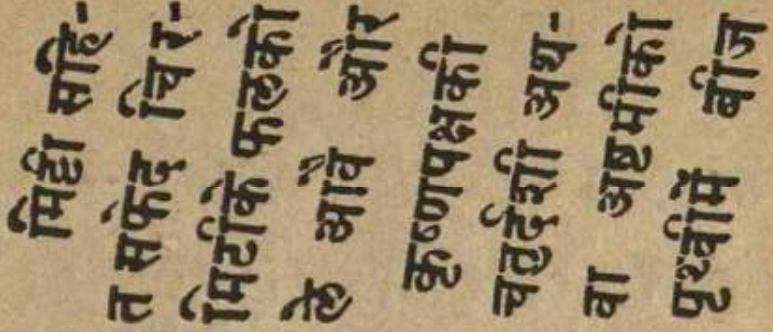
इस मंत्रको दीपमालिकाकी रात्रिको जपै चमेलीके फूल, बरफी, सिंदरफ आदिका भोग धरै फिर दशांशका हवन करै इसी तरह प्रतिदिन जप करता रहै फिर जो कुछ कार्य्य चाहोगे तत्काल ज्वालामुखी सिद्ध करैगी ॥

अथ वशीकरणमाह ।

ॐ श्वेतवर्णे सितपर्वतवासिनि अप्रतिहते मम

कार्य्यं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ॥ २६६ ॥

विधि ।



गेरदेवे और नीचे लिखाहुआ मंत्र पढ पढकर पानी सींचै ॥

अथ सेचन मंत्र ।

ॐ श्वेतवर्णे सितवासिनी श्वेतपर्वतनिवासिनी सर्व कार्याणि कुरु कुरु अप्रतिहिते नमोनमःस्वाहा२६७

इति सेचनमंत्रः ।

विधि ।

पुष्यनक्षत्रमें पवित्र होकर एक दिन उपवास करै और जितेंद्रियतासे धूप दीप उपहारादिसे न्यास करै । ओं श्वेतहृदयाय नमः, ओं पद्ममुखे शिरसे स्वाहा, ओं नमः सर्वज्ञानमये शिखायै वषट्, ॐ नमः सर्वशक्तिमत्यै कवचाय हुं, ओं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्, ओं परमंत्रभेदने अस्त्राय फट्, सर्वाण्यङ्गानि नमोऽन्तादीनि । इस प्रकारसे न्यास करके मूलमंत्रसे उसको उखाड लावै ॥

अथ उत्पाटनमंत्र।

ॐनमोभगवति ह्रीं श्वेतवासेनमोनमःस्वाहा २६८

विधि।

इस मूल मंत्रका प्रथम एक अयुत जप करै, तिल दूध घृत मिलाकर दशांश हवन करै इस विधिसे चिरमिटीकी जड उखाड लावै उसको सपेद चन्दनमें घिसकर लेपकरै तौ वशीकरण होवै.

वशीकरण चूर्ण।

ॐ नमः श्वेतगात्रे सर्वलोकवशङ्करि दुष्टान् वशं कुरु कुरु मे वशमानय स्वाहा ॥ २६९ ॥

विधि।

ऊपर कहेहुए मंत्रसे चिरमिटीको जहांपर मकोई मरा हो वहांकी मिट्टी लाकर उसका पुतला बनावे जिसका मस्तकपर बाल साहित हो उसको जलाय

ग्राममें सुख मिलनेका मत्र।

ॐ घण्टाकर्णायनमः ॥ २७० ॥

विधि।

इस मंत्रको प्रथम एक लक्ष जप कर सिद्ध कर लेवै फिर इस मंत्रको एक पत्थरपर सातबार पढकर गाम या शहरपर गेरदे अथवा गाममें घुसतेसमय वृक्षपर मारै तौ गाममें जानेपर बिना मांगे अनेक प्रकारके सुख मिलें॥

स्पर्श वशीकरणमंत्र।

ॐ क्लीं जनके स्वाहा॥ २७१॥

विधि।

इस मंत्रको प्रथम दो लाख जपकर सिद्ध करले और फिर घृत और गूगल हाथमें लेकर इस मंत्रके सिद्ध होनेपर जिसके ऊपर फेंकै वही वश हो जाय॥

विना प्रार्थना अन्न मिलनेका मंत्र।

ॐ महायक्षसेनाधिपतये मानिभद्राय अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा॥ २७२॥

वडके पेडपर इस मंत्रको सात बार पढकर उसकी लकडीले आवै फिर उसपर इक्कीस बार पढकर दाहिने कानपर लगा लेवै तौ बिना मांगे अन्न मिलै॥

वशीकरण फूल मंत्र ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय सिद्धरूपिणे शिखि बन्ध सर्वेषां शिवमस्तु हन हन रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यश्च नमः ॥ २७३ ॥

विधि ।

पीपलके वृक्षपर चढ़कर प्रथम इस मंत्रको एक लाख जपै और फिर कनेरके फूलपर सात मंत्र पढ़कर अपनेपास रक्खे तिसको देखे सो वश होय ॥

नर नारियोंमें क्षोभकारक मंत्र ।

ॐ नमो भूतनाथाय यं भूपालवशं कुरु कुरु भुवनक्षोभक सर्वलोकान् क्षोभय क्षोभय स्फें व्लीं व्लीं व्लं स्वाहा ॥ २७४ ॥

कसुमके रंगे हुए वस्त्र पहनकर रात्रिके समय इस मंत्रको एक अयुत जपै तौ नर नारी और राजाओंमें क्षोभ उत्पन्न होवै ॥

भोजन मंगवानेका मंत्र।

ॐ उच्छिष्टा चाण्डालिनि बाग्वादिनि राज मोहनि प्रजामोहन स्त्रीमोहन आन आन वे वे वायु वायु उच्छिष्ट चाण्डालि सत्यवादिनीकी शक्ति फुरौ मंत्र ईश्वरोवाच ॥ २७५ ॥

विधि।

भोजन करके जूठे मुखसेही प्रथम इस मंत्रको एक लक्ष जपे फिर जहां कहीं एकान्तमें बैठ कर इस मंत्रका स्मरण करे वहां भोजन अनेक प्रकारका आपने आप उपस्थित होय ॥

त्रैलोक्यवशीकरण भूतनाथ मंत्र।

ॐ नमो भूतनाथाय समस्तभुवनभूतानि साधय हं ॥ २७६ ॥

विधि।

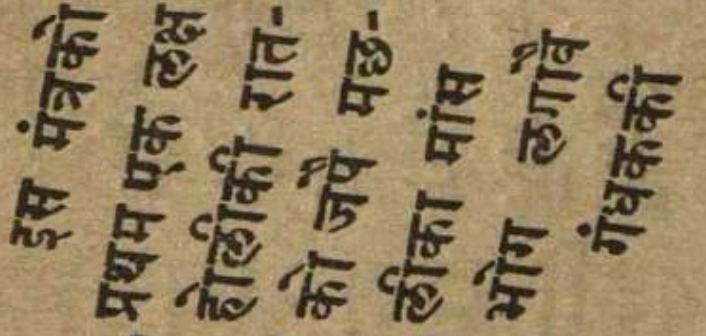
इस मंत्रका एक लक्ष जप करनेसे भूतनाथ सिद्ध हो जाते हैं

फिर इनका स्मरण करनेहीसे आकाश पाताल और पृथ्वीके चराचर प्राणी वशीभूत होजाते हैं ॥

मंत्र अगियावैतालको ।

ॐ नमो आगिया वेताल पैठ सातवें जाहु पताल लाहु अग्निकी जलती झाल बैठ जाहु ब्रह्माके कपाल पहरौ लाल फूलकी माल चढौ ठोककै अपनी ताल चलौ चलौ बुलाऔ आग न बुलाऔ तौ माता कालिकाकी आन ॥ २७७ ॥

विधि ।



धूनी देवै फिर जब अगिया वेताल सिद्ध होजाय तब जहां आग प्रगट करनी होय तहां मंत्र पढ पढकर फूंक मारै अग्नि प्रगट होय ॥

अग्नि शीतल करनेको मंत्र ।

ॐ नमो कोरा करुआ जलसों भरिया लै

गौराके शिरपर धरिया ईश्वर ढौलै गौरा न्हाय जलती आग शीतल हो जाय शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ २७८ ॥

विधि ।

इस मंत्रको प्रथम एक लाख जप कर सि द्ध करलेवै फिर जहांकी आग बुझानी होय तहां यह काम करै कि एक मट्टीका कोरा कलशा जलसे भरकर मंगवावै और स्नान

करके इक्कीस मंत्र पढकर जलके छींटे मारै जहां जहां छींटे लगैंगे आग बुझजायगी अग्निके शान्त होनेपर इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन करावै और अग्निको १०८ आहुति देवै ॥

राजवशीकरण तिलक ।

ओं क्लीं सः अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा२७९

विधि ।

इस मंत्रको एक लक्ष जपकर सिद्ध करले फिर इसको एक

सहस्र जप कर केसर, चन्दन, गोरोचन और कपूर मिलाकर गौके दूधमें घिस लेवै और तिलक लगाकर राजाके सन्मुख जायँ देखते ही वश हो जाय ॥

शास्त्रार्थमें जीतनेका मंत्र ।

ओं सुदर्शनाय हुं फट् स्वाहा ॥ २८० ॥

विधि ।

इस मंत्रको प्रथम एक सहस्र जपै फिर हस्त नक्षत्रमें जड़ चक्रवर्दकी लाकर हाथमें बां धकर राजद्वारमें जाय तौ शास्त्रा- र्थमें जीतै ॥

वेश्यावशीकरण मंत्र ।

ओंद्राविणीस्वाहा ओं हामिले स्वाहा ॥ २८१॥

विधि ।

ओंगाकी सात अंगुलकी कील लाकर उसपर यह मंत्र सात बार पढकर वेश्याके घरमें डाल देवै तौ वेश्या वश होय ॥

स्त्रीवशीकरण मंत्र ।

ओ३म् सह बल्लीं बल्लीं कर वल्लीं काम पिशाच

अमुकीं कामं ग्राहय स्वप्नेन मम रूपेण नखैर्विदारय द्रावय स्वेदेन बन्धय श्री फट्॥ २८२ ॥

विधि।

जिस स्त्रीको वशकरना होय उसपर कामा क्षक्ष हीकार नाम लेकर रां- तको इस मंत्र- को जप तीखी वस्त्र होय ॥

आकर्षण मंत्र।

ओं अलमृत्यु जय मे मे ॥ २८३ ॥

विधि।

इस मंत्रको पढकर कुम्हारकी मिट्टीसे एक प्रतिमा बनावै और मनुष्यके हाडपर एक सहस्त्र आठ मंत्र पढकर प्रतिमाको धीरे २ रिगडै फिर उसपर त्रिकुटा पोत देवै और सब देहमें सुई वेध देवै फिर उस प्रतिमाके ललाटपर अनामिकाके रुधिरसे उस मनुष्यका नाम लिखकर खैरके कोयलोंकी आगमें रख देवै ज्यों ज्यों प्रतिमा गरम होगी त्यों त्यों आकर्षण होगा ॥

शत्रुके मुख स्तम्भनका मंत्र।

ओं सह चरवद शायि अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्वाहा ॥ २८४ ॥

विधि।

इस मंत्रको पढकर शत्रुका नाम लेकर और मन्त्र जपै और धूप करै शत्रुका मुख स्तम्भय =

स्तम्भन गुंजा मंत्र।

ओं गुरुभ्यो नमः। वज्ररूपाय नमः। ओं वज्र किरणे शिवे रक्ष रक्ष भवेद्गाधि अमृतं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २८५ ॥

विधि।

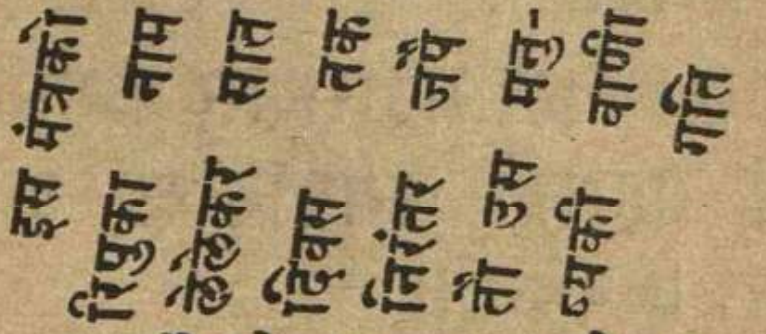
मनुष्यके कपालमें पीली मिट्टी भरकर सफेद चिरमिटीका बीज बोवै यह काम कृष्णपक्षकी चौदसको करै तीन राततक जागरण करै और इस मंत्रको पढ २ कर उसमे नित्य प्रति जल सींचतारहै और पूजा भी करै फिर किसी दिन शुभ नक्षत्रमें इसी मंत्रको पढकर उसकी शाखा और लता ले आवै और

अपने पास रक्खै जिसके आसन पर इसेगैरै उसीका निश्चय स्तम्भन होय ॥

मन वचन गतिके रोकनेका मंत्र।

ओं नमो हुण्डने अमुकस्य मुखं गातिं स्तम्भय ज्वालागई भाग्निमुत्काधिक बन्ध बन्ध स्तम्भय कुरु च ममेप्सितानि ठः ठः हुं फट् स्वाहा ॥२८६॥

विधि।



और चेष्टा सब बन्द होय ॥

दूसरी विधि।

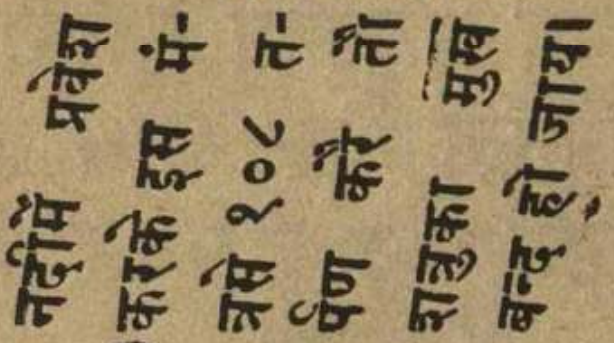
इसी मंत्रको भोजपत्रपर हलदीसे लिखैं और उसे पीले डौरेसे लपेटकर पीले रंगके फूलोंसे पूजै फिर इस मंत्रको दो पत्थरोंके बीचमें दाब देवै तो शत्रुका मुख बन्द होय ॥

नदी स्तम्भन मंत्र।

ओं नमो भगवते विश्वामित्राय नमः सर्वमु-

खिभ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्रोद्दापयति शक्त्या आगच्छतु ॥ २८७ ॥

विधि ।



अग्निस्तम्भन मंत्र ।

ओं अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस केशीगर्भसम्भूत परसैन्यभंजन महारुद्रो भगवान् रुद्र आज्ञा अग्नि स्तम्भय ठः ठः ॥ २८८ ॥

विधि ।

इस मंत्रको दो लाख जपकर सिद्धकरले फिर जहां काम पडै इसका प्रयोग करै अग्निबाधा न करैगी ॥

अग्निसे न जलनेका मंत्र ।

ओं नमो भगवति चन्द्रकान्ते शुभे व्याघ्र चर्म-निवासिनि चलमाणि स्वाहा ॥ २८९ ॥

विधि।

धतूरा, अंडी, नीम और मेंडककी चर्बी इन सबको पीस कर इस मंत्रसे पांवोंपर लेप करले फिर अंगारोंपर फिरा करो कुछ बांधा न होगी अथवा जौके तुष और मेंडककी चर्बी इनकी गोली बनाकर इस मंत्रको पढकर अग्निमें डाल देवै तौ कुछ बाधा न करैगी॥

अग्निपर डोलनेका मंत्र।

ओं नमो भगवते चन्द्ररूपाय विकलांत्विह-न्ति तत्क्रमस्तम्भनत्व चन्द्ररूपेण अग्निपुत्रवरं कट्ट ठः ठः ॥ २९० ॥

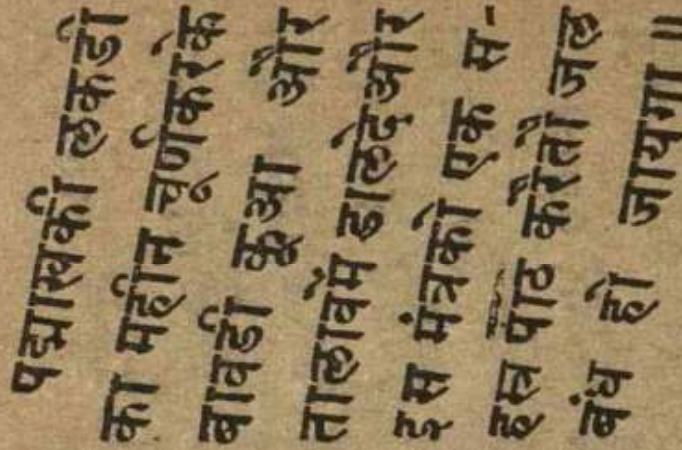
विधि।

धतूरा, अंडी, नीम और मेंडककी चर्बी इन सबको पीस कर इस मंत्रसे पांवोंपर लेप करले फिर अंगारोंपर फिरा करो कुछ बांधा न होगी अथवा जौके तुष और मेंडककी चर्बी इनकी गोली बनाकर इस मंत्रको पढकर अग्निमें डाल देवै तौ कुछ बाधा न करैगी॥

जलस्तम्भन मंत्र।

ओं नमो भगवते जलंस्तम्भय वः पः ॥२९१॥

विधि।



जलस्तम्भन दूसरा मंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय जलंस्तम्भय वः वः वः बः ठः ठः ठः ॥ २९२ ॥

विधि।

इस मंत्रको एक लक्ष जप कर सिद्ध करै फिर सूखे हुए लिहसौडेका चूर्ण बनाकर मिट्टीके घडेमें एक अंगुल गाढा लेप करदेवै फिर सुखा लेवै सूखनेपर उसमें जल भर देवै और थोडी देर पीछे घडेको फोड डालै तौ जल योंका यों बंधा रहेगा ॥

षण्डीकरण मंत्र।

ओं नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रचण्डाय हन हन वैनतेय मुखेन खण्डय खण्डय स्वाहा ॥ २९३ ॥

विधि।

इस मंत्रको ग्रह-
णकी रातको सिद्ध
करके फिर अनुराधा
नक्षत्रमें कलहारीकी
जड़ लावे और जहां कि
उस पुरुषने मूत्र किया
हो उसमें गाड़
दे तो मनुष्य नपुंसक
हो जायगा.

इसको उखाड लेनेपर फिर शांति होजायगी ॥

अंजन सिद्धकरनेका मंत्र।

रुद्रायनमो बहुरूपाय नाशय बिच्छरूपाय नमो विश्वाय विश्वरूपाय नमस्तत्पुरुषाय नमो याक्षिरूपाय नमः एकयक्षाय नमः एक रोमाय नमः एक मणये नमो वरदाय नमस्त्र्यक्षाय नमो रुद्राय स्वाहा

विधि।

उपवास
और जितेन्द्रिय
होकर महादेवका पू-
जन करके इस मंत्र-
को तो सिद्ध
करे। फिर कजाह
पाडनेके लिये किसी
दीक्षित ब्राह्मण या
श्रेष्ठ यतीके घरसे
अथवा

धोवी या सपेरेके घरसे अग्नि लावै ॥

अग्निग्रहण मंत्र ।

ओं ज्वलितद्युतिदेहाय स्वाहा ॥ २९५ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे अग्निको लावै ॥

अग्निरक्षाका मंत्र ।

ओं नमो भगवते वासुदेवाय श्रीपर्वते कुल पर्वते वसुवते स्वाहा ॥ २९६ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे अग्निकी रक्षा करै ॥

बत्तीका मंत्र ।

ओं वर्ति बन्ध दिशं बन्ध पातालं बन्ध मण्डलं बन्ध बन्ध स्वाहा ॥ २९७ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे बत्ती बटै ॥

दीपक जलानेका मंत्र ।

ओं नमो भगवते सिद्धिसाबराय ज्वल ज्वल पत

पत पातय पातय बन्ध बन्ध संहन संहन दर्शय दर्शय निर्धिं नमः ॥ २९८ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे दीपक जलावै ॥

काजल ग्रहणका मंत्र ।

ओं ई सर्वसिद्धिभ्यो नमः ॥ २९९ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे काजल ग्रहण करै ॥

अंजनद्रव्यका मंत्र ।

ओं कालि कालि रक्ष रक्ष मदञ्जनं नमो विच्छे स्वाहा ॥ ३०० ॥

विधि ।

इस मंत्रसे अंजनको अभिमंत्रित करके प्रथम आंखमें केवल फेर सोनेकी सलाई फेर इसी सलाईसे अंजनलगावे पश्चात् दोपलक सात २ पर्व प्रत्येक नेत्रमें बांयें कोर मुख नीचा कोर लेवे

और उसपर सफेद वस्त्रकी पट्टी बांध लेवै फिर पवित्र होकर दो दिवसतक रात्रिके समय दूध शालिचांवलका भोजन करै आंखमें काजल लगानेके पश्चात् इस मंत्रसे शिखाबन्धन करै॥

शिखाबंधन मंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय ओं माहे हुलु हुलु विहुलु विहुलु हा हा यक्ष यक्ष पूजितं यक्षकुमार्यः सुलोचने स्वाहा ॥ ३०१ ॥

विधि।

इस तरहसे विधिपूर्वक सब काम करनेसे अंजन सिद्ध हो जायगा॥

सपेरेकी पूंगी बांधवाकौ मंत्र।

ओं नमो वादी आया वाद करन्ता मेरी अरज सुनौ हनुमन्ता योगी यती सुनो सब सन्ता जो यह वादी वादी करै बांधूं कंठ अरु बोल रुकै बांधूं पूंगी बांधूं नाद योगी बांधूं साद बांधूं बोली कंठकी बांधूं सुर अरु ताल । पूंगी ऊपर बांधै

नरसिंहजी नीचैसे हनुमन्त गाजै मेरी बाधी पूंगी बाजै तौ गुरु गोरखनाथ लाजै शब्द सांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुकौ ॥ ३०२ ॥

विधि ।

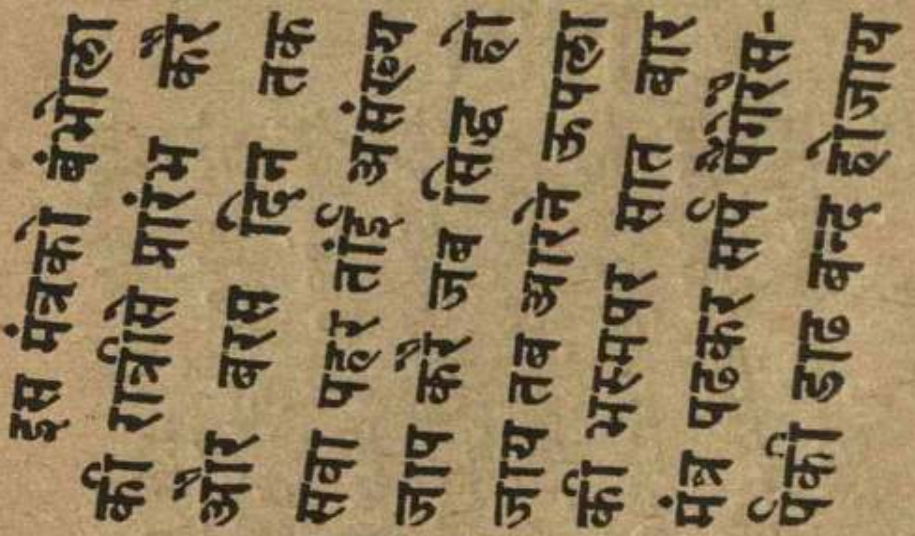
इस मंत्रको प्रथम एक लक्ष जप करके सिद्ध कर राखै फिर जब तब खेलकरना होय तब २१ उडद मोटे २ मंगा कर इक्कीस बार मंत्र पढ़ै और एक २ उडद पर एक २ मंत्र पढकर फूंक मारै तौ बाहै जैसे बजाओ पूंगी बजै नहीं ॥

सांप कीलवाकौ मंत्र ।

ओं नमो सर्प्पारे तू थूलमथूल, मुख तेरा बना कमलका फूल, सर्प्पा रे सर्प्पा बांधूं तेरी दादी भुआ जिनने तोकूं गोदखिलाया सर्प्पारे सर्प्पा बांधू तेरा रतन कटोरा जामें तोकूं दूध पिलाया सर्प्पारे सर्प्पा बीज कीलनी बीज पान, मेरा कील करै जु घाव

तेरी डाढ भस्म होजाय, गुरु गोरखभी जाय लजाय ओं नमो आदेश गुरुको मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ३०३ ॥

विधि ।



खिलौनेकी तरह उठाय लेओ ॥

वैरीकू कष्ट देनेकौ मंत्र ।

ओं काल भैरू झंकालका तीर, हमारे बैरीके उठै कलेजा पीर । चढा छाती दुश्मनकी जाउ, पीऔ रुधिर चीरकलेजा करकै घाउ तोडौ दांत उखाडौ हाड दीजे ताकौ हियरा फाड, पियें जो गनी भर २ खप्पर आंत काढके फेंकें छप्पर मेरा कह्या ना होय तो माता कालकाकी आन शब्द सांचा

पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुका ॥ ३०४ ॥

विधि।

इस मंत्रको शत्रुका नाम लेकर १०००जपै तौ शत्रु कष्ट पावै ॥

मात्रांजन मंत्र।

ओं नमो हंसी हंसजाते क्लीं स्वाहा ॥ ३०५ ॥

विधि।



होकर एक अंजन दे जायगी जिससे पृथ्वीका गडा हुआ धन दीखैगा ॥

मात्रांजन दूसरा मंत्र।

ओं नमो मदनमेखले ठःठःह्रीं स्वाहा ॥३०६॥

विधि।

महुआके वृक्षके नीचै इस मंत्रको चौदह दिनतक जपै रात्रिके

समय एकबार भोजन करै ऐसा करनेसे मेखला देवी प्रसन्न हो कर एक अंजन देगी जिससे पृथ्वीका गडा हुआ धन दीखैगा॥

स्वर्णरेखाका मंत्र ।

ॐ ह्वर्क ह्वर्क शाल्मल स्वर्णरेखे स्वाहा ॥ ३०७॥

विधि ।

इस मंत्रका जपना लक्ष पश्चात् प्रारम्भ करे और घडे न्यास करके एक लक्ष पूजन करे और दशांश

त्यप्रति १००८ मंत्रका जाप करै एक महीने तक इस तरह करके फिर पूजन करै और दशांश हवन करै ऐसा करनेसे स्वर्ण रेखा देवी प्रसन्न होकर एक अंजन दे जायगी जिसके लगानेसे पृथ्वीका गड़ा हुआ धन दीखैगा. अथ षडङ्गन्यास॥ ओं ह्वांहृदयाय नमः । ओं ह्वौं शिरसे स्वाहा। ओं ह्वूं शिखायै वषट् । ओं ह्वैं कवचायहुं । ओं ह्वौं नेत्राभ्यां वौषट् ओं ह्वः अस्त्राय फट् –

प्रमोदाका मंत्र ।

ओं ह्वीं प्रमोदायै स्वाहा ॥ ३०८ ॥

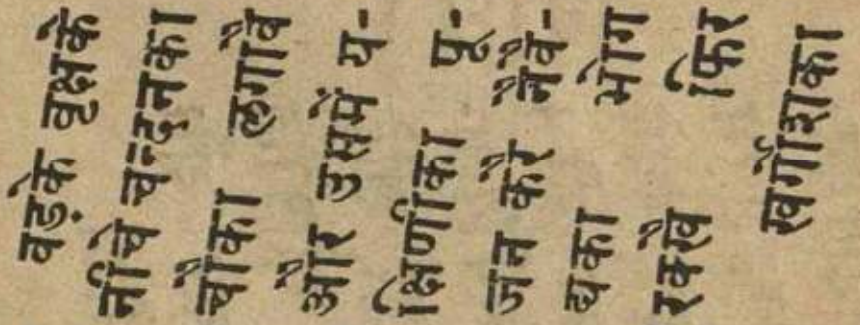
विधि।

आधी रातपर उठकर इस मंत्रको एक सहस्र जपै इसी तरह एक महीने तक करता रहै तौ देवी प्रसन्न होकर पृथ्वीका गडा हुआ धन दिखावैगी ॥

कनकवतीका मंत्र।

ओं ह्रीं आगच्छ कनकावती स्वाहा ॥ ३०९॥

विधि।



सब भेट चढावै इसी तरह एक महिनेतक करै इस तरह प्रसन्न होकर देवी स्वयं आकर एक प्रकारका अंजन देगी जिससे पृथ्वीका गडा हुआ धन दीखैगा ॥

निधिदर्शन मंत्र।

ओं गणपतये नमः। ओं चामुण्डायै नमः ओं भूतं दर्शय दर्शय स्वाहा ॥ ३१० ॥

विधि ।

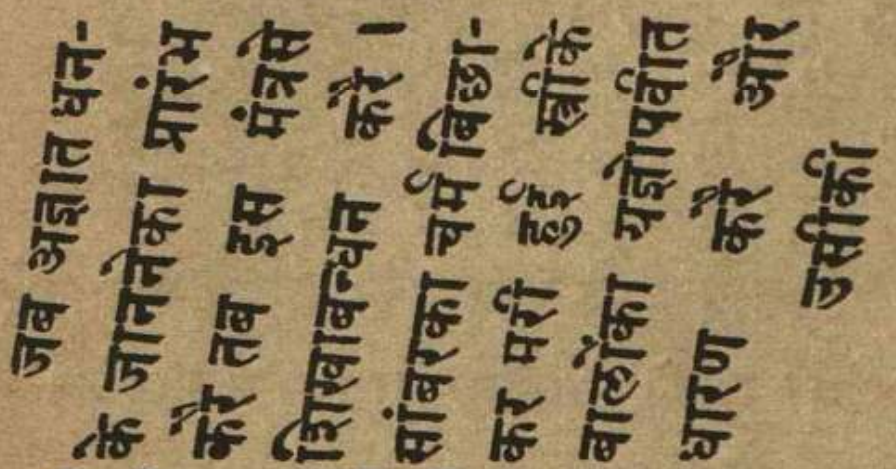
इयारियाकी आंख और कान दोनों लाकर दोनों आंखोंमें आंजै अथवा वन्दालका रस दोनों आंखोंमें आंजै इस मंत्रको जपै तौ पृथ्वीका गडा हुआ धन दीखैगा ॥

अज्ञात निधानके ग्रहणकी विधि ॥

शिखाबंधन मंत्र ।

ओं रक्ष रक्ष विच्चे स्वाहा ॥ ३११ ॥

विधि ।

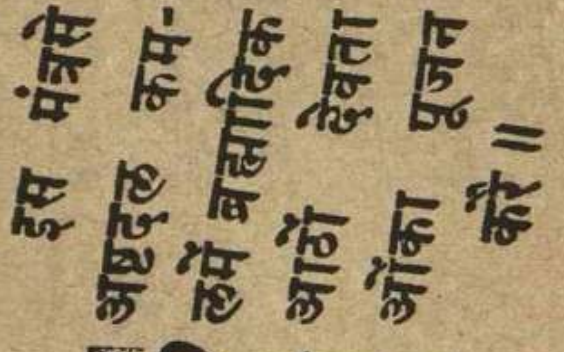


भस्मसे शरीरको धूसरित करै मनुष्यका कपाल पास रक्खै मोरपंखोंको धारण करै फिर निधिस्थलमें एक चार कोण और चार द्वारका मंडल खींचै जिसके बीचमें अष्टदल कमल बनावै केसर अगर चन्दनादिसे पूजन करके उसके बीचमें एक जलका घडा रखदेवै ॥

देवताओंके बुलानेका मंत्र ।

ओं सोमाय विश्वाधिपतये आगच्छ आगच्छ बलिं गृहाण नमो विश्वे स्वाहा ॥ ३१२ ॥

विधि ।



बलिमंत्र ।

ओं बलि सुबलि तृप्यन्तु सिद्धिमादिशन्तु ओं नमो विश्वे स्वाहा ॥ ३१३ ॥

विधि ।

इस मंत्रसे बलिदान करै ॥

अभिषेक मंत्र ।

ओं नमो भगवते आर्भटे पिङ्गलोदराय पापं नाशय नाशय दुराचारं हन हन अभिषिक्तानां रक्ष

रक्ष अभिषेकं पदं उपधारय उपधारय कुरु कुरु समरभीषणे नमो विच्चे वौषट्र ॥ ३१४ ॥

विधि ।

इस मंत्रको हजार पढता कालशर्पोंके जहरसे संपूर्ण देवता ओंका आमे- षक करै ॥

अघोर मंत्र ।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोर तर तर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रकट प्रकट धनेशाय कह कह सम सम जात जात दह दह पातय पातय ओं ह्रौं ह्रौं ह्रूं अघोराय फट्र ॥ ३१५ ॥

विधि ।

द्रव्यके खोदनेके समय इस अघोर मंत्रका जप करता रहै और सर्वभूतभयावह श्री शिवजीके शाबर रूपका ध्यान करता रहै पृथ्वीको खोदने पर बडे२भयंकर सर्प निकलतेहैं वे मंत्रवालाको भी काट खातेहैं इससे उनको औषधिसे जीतै. आक,क-

नेर, पनस इनकी जड़ इनको पीसकर पावों पर लेप करले तौ सर्प दूर भागजाते हैं फिर जब धन दीखने लगै तब इस मंत्रसे कील देवै ॥

कीलक मंत्र ।

ओं पुनन्तु मां देवगणाः पुनन्तु गणकाधिपाः।
पुनन्तु विश्वेदेवाश्च जातुदेवाः पुनीहि माम्३१६॥

विधि ।

'ॐ सर्वभूताधि-
पतये नमः' इस
मंत्रसे पशु और
मांससे भूतबली
देवे । 'ओं फ्रौं
फट्' इस मंत्रसे
निधिस्थानमें ऊं
लेदेवे ॥

द्रव्य निकालनेका मंत्र ।

ओं नमो भगवते केतुमालिने गरुडे शुभे ॐ ह्रीं कपालिनी उद्धाराय गृहाण निधिं स्वाहा ॥ ३१७ ॥

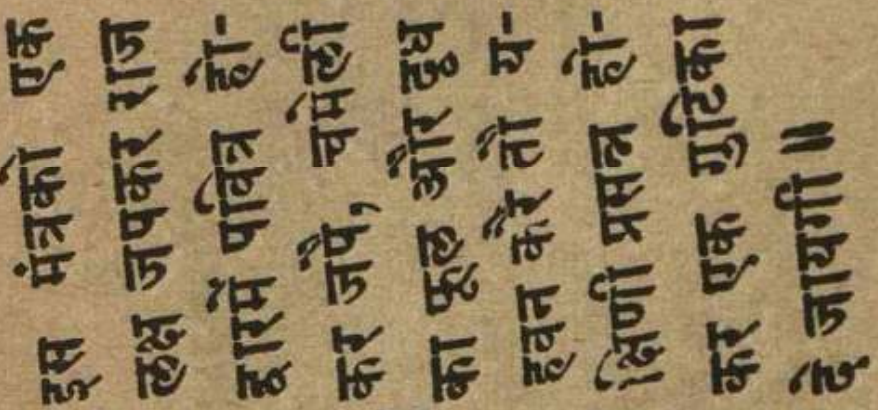
विधि।

इस मंत्रसे द्रव्यको निकाल लेवे यह विधि द्रव्य निकालने-की बहुत उत्तमहै ॥

गुटिकासाधन मंत्र ।

ऐं मदने मदन विडम्बने आत्मसंगं देहि मे देहि श्री स्वाहा ॥ ३१८ ॥

विधि।



जिसको मुखमें धारणकरनेसे अदृश्य होजायगा ॥

श्मशानवासिनीका मंत्र ।

ओं ह्रीं श्मशानवासिनि स्वाहा ॥ ३१९ ॥

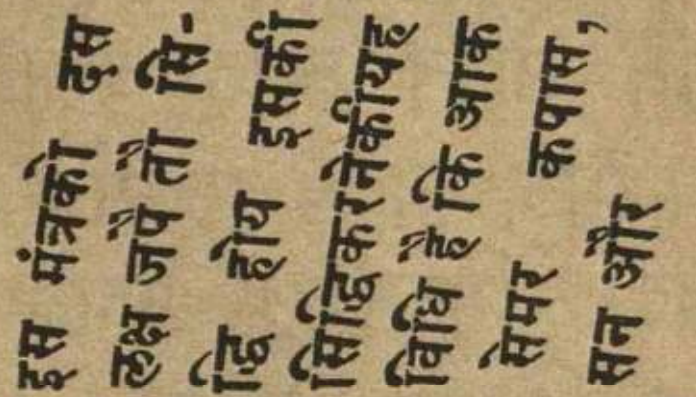
विधि।

इस मंत्रको पवित्र होकर स्मशानमें चार लाख जपै इस तरह

करनेसे यक्षिणी प्रसन्न होकर एक वस्त्र देगी सो उस वस्त्रको ओढ लेनेसे मनुष्य अंतर्धान होकर पृथ्वीमें विचरने लगेगा॥

ओं ह्रीं फट् कालि कालि मांसशोणित भोजने रक्त कृष्णमुखे देवि मामे पश्यति मनुष्ये ति हुं फट् स्वाहा॥ ३२०॥

विधि



कमल इनके तंतुओंकी बत्ती बनाकर मनुष्योंके पांच कपालोंपर काजल पाडै दीपकमें नारियलका तेल जलावै। और यत्नपूर्वक सबका काजल अलग अलग लेकर यत्न पूर्वक मिलालेवे फिर इस मंत्रको पढकर काजल नेत्रमें लगावै तौ मनुष्य अदृश्य होय॥

भूतज्वरपर नृसिंहमंत्र।

ओं नमो भगवते नारसिंहाय अतुलवीरपराक्रमाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याड-

म्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ऱ्हों ऱ्हों कीं कीं कृमीन् ताडय ताडय मोहय मोहय द्रमि द्रमि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ऱ्हीं हृदये आशक्तय प्रीतिललाटे बन्धय ऱ्हीं हृदय स्तम्भय स्तम्भय किलि किलि ईऱ्हीं डाकनी प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अहूति स्वाहा राक्षसंप्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादयते डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय अनेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाचादि एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंचमिक वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सान्निपात केसरी डाकिनी ग्रहादि मुंच मुंच स्वाहा गुरूकी भक्ति मेरी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ३२१ ॥

विधि

इस मंत्रसे २१ वार मोरपंखसे अथवा लोहेकी वस्तुसे अथवा छप्परके पानीसे झाडे तो भूता-दिकके सब उन्मा द दूर होय ॥

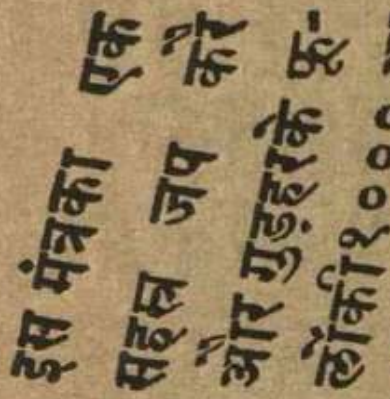
प्रत्यक्ष हाजरायत मंत्र ।

ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धायै अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा ॥ इतिमंत्रः ॥ अस्य मंत्रस्य बन्हिकं ऋषिः जगति छन्दः कामाख्याः देवताः प्रणवः शक्तिः अव्यक्तं कीलकं अमुककर्माणि जपे विनियोगः । ओं अंगुष्ठाभ्यां नमः कामाख्यायै तर्जनीभ्यान्नमः स्वाहा सर्वासिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वौषट् अमुककर्म अनामिकाभ्यां हुं कुरु २ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट् । ओं नमो हृदये कामाख्यायैशिरसेस्वाहा सर्वसिद्धिदायैशिखायै वषट् अमुककर्म कवचायहुं कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ३२२ ॥

अथ ध्यानम् ।

योनिमात्रशरीराय कुंजवासिनि कामदा ॥ रज-
स्वला महातेजाकामाक्षी ध्येयतां सदा ॥ ३२३ ॥

विधि



उस बत्तीके तेलको दीपकमें धैर उस दीपककी पूजा करै दीपकके आगै आठ वर्षका अथवा दस बर्षका बालक पवित्र शुद्ध बंश देवतागणका स्थापन करना और आप भी पवित्र होकर मेढलके फूलके ऊपर इस मंत्रके संकल्पका जल डालै और दीपकके आगे यह मंत्र लिख मंत्रकी पूजा करै और यह मंत्र बालकको दिखावै उसकी हथेलीमें मेढलकी राखको तेलमें सानकर मसलै फिर उससे पूछे जो देखै सो सत्य सत्य समाचार सब कहै ॥

अथवा

आठ दश बर्षकी पवित्र कुलकी देवतागण कन्याको बैठावै उसे दीखै सो कहै दशांश आहुति दशांश तर्पण दशांश मार्जन ब्राह्मणभोजन करावै ॥

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	९	क	र२
७	४	५	४	ली

इति हाजरात विधिः ।

मंत्र आधा शीशीको ।

ओं नमो आधाशीशी हुं हुं कारी पहरपचारी, मुखमूद पाटलै डारी; अमुकारेशीश रहै मुखमहेश्वरीकी आज्ञा फुरै ओं ठं ठं स्वाहा ॥ ३२४ ॥

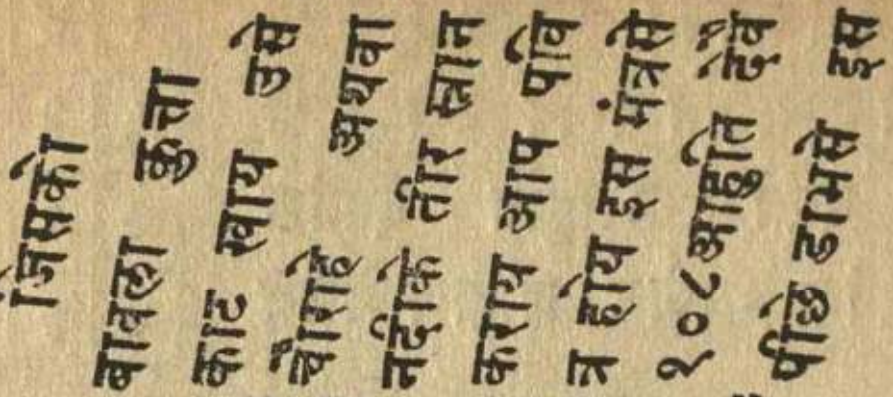
विधि ।

इक्कीस बार इस मंत्रसे उंगली मस्तकके ऊपर फेरै तो आधाशीशी जाय ।

बावलेकुत्तेका मंत्र ।

अलर्काधिपते यक्ष सारमेय गणाधिप ॥
अलर्कजुष्टमेतन्मे निर्विषं कुरु माचिरात् ॥ ३२५ ॥

विधि ।



का झाडा देवै तौ उसका विष उतरै ॥

सुखप्रसवका मंत्र यंत्र ।

मुक्ताःपाशा विमुक्ताश्च मुक्ताःसूर्येण रश्मयः ॥
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिरमाचिर ॥ ३२६ ॥

विधि ।

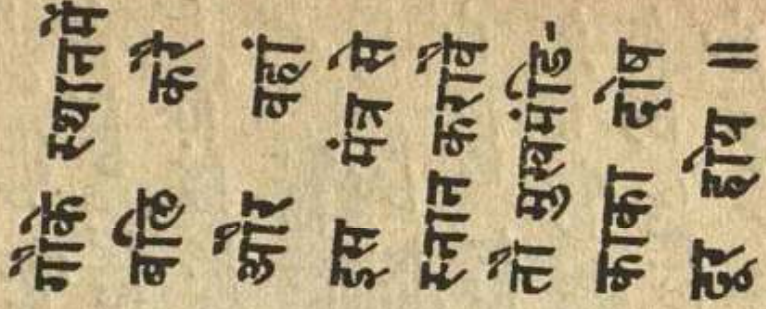
इस मंत्रसे जलको सातबार मंत्रित करके स्त्रीको पान करावै बालक सुखसे होय अथवा इस यंत्रको स्त्री देखै तौ तत्काल प्रसूति होय ॥

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

मुखमण्डिका दूर करवा कौ मंत्र ।

अलँकृता कामवती सुभगा कालरूपिणी । गोष्ठ-
मध्यालयरता पातु त्वां मुखमण्डिका ॥ ३२७ ॥

विधि।



मातृकाके उतारेका मंत्र।

ओं नमो भगवते रावणाय हन हन मुंच मुंच स्वाहा ॥ ३२८ ॥

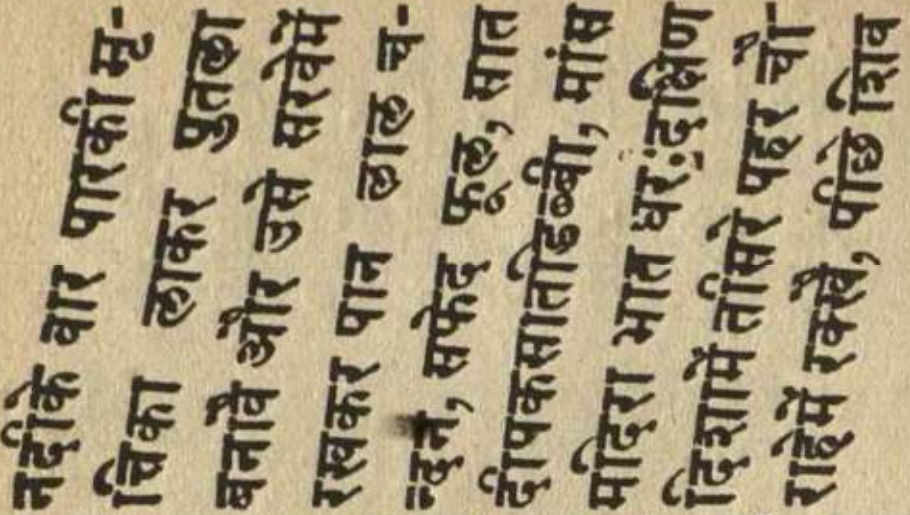
विधि।

यह रावणकी बहिन है इसका उतारा इस तरह करै सवा सेर चांवल, दही, मछलीका मांस, मदिरा, तिलका चूर्ण ये सब सरवेमें धरकर पश्चिम दिशाकी ओर चौहटेमें तीन दिन संध्यासमय बालकके ऊपर उतारा करै पीछे शालिके जलसे बालकको स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य, खस, बिल्लीके रोम, घी, दूब इनकी बालकको धूनी देवै ॥

पूतनाके उतारेका मंत्र।

ओं रावणाय हन हन मुंच मुंच हुं फट् स्वाहा ३२९

विधि।



निर्माल्य गूगल, सरसों नीमके पत्ते, मेंढेकी सींग इनकी तीन दिन धूनी देवै ॥

पूतना मातृकाके उतारेका मंत्र।

ॐ नमो रावणाय नमः चूर्णय चूर्णय स्वाहा ३३०

विधि।

कुम्हारके चाककी मिट्टी लेकर पुतला बनावै उसके आगे गंध, तांबूल, चावल, सफेद फूल पांच ध्वजा पांच दीपक ईशान दिशामें उतारा धरै पीछे शान्तिके लिये जलसे स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य, सर्पकी कांचली, घी, नीमके पत्ते इनकी धूनी देवै ॥

शकुनीके उतारेका मंत्र।

ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हनहन स्वाहा३३१

विधि।

गेहूंके चूर्णका पुतला बनाकर लाल फूल, सफेद फूल, पीले फूल, मदिरा, मांस, दसदीपक, दस ध्वजा दूध इनका उतारा दुपहरके समय अग्निकोणमें धरै, फिर ठंढेजलसे स्नान करावै। फिर शिवनिर्माल्य, लहसन, गूगल, सरसों, सांपकी कांचली, नीमके पत्ते, घी इनकी धूनी देवै ब्राह्मण-भोजन करावै॥



रेवतीके उतारेकौ मंत्र।

ओं नमो रावणाय तत्तेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा॥ ३३२ ॥

विधि।

नदीके किनारेकी मृत्तिकाका पुतला बनाकर उसके आगे लालफूल, तांबूल, लाल चांवलकी खिचडी, दस दीपक, मांस, मदिरा, १३ ध्वजा, पश्चिम दिशामें गांवके बाहर तीसरे पहर उतारा धरै फिर स्नान कराके शिवनिर्माल्य

मेंढेका सींग, सरसों, वृत, खस, इनकी धुनी देवै फिर ब्राह्मण भोजन करावै ॥

मातृकाके उतारेका मंत्र।

ॐनमो रावणाय त्रैलोक्यविद्रावणाय चतुर्दश मोक्षणाय ज्वर हन हन ओं फट् स्वाहा ॥ ३३३ ॥

विधि।

लाल फूल, पीली ध्वजा, रक्तचन्दन, खीर, मांस, मदिरा इन सबका बलिदान देवे ॥

वर्षमूडिकाके उतारेका मंत्र।

ॐ नमो रावणाय हन हन स्वाहा ॥ ३३४ ॥

विधि।

नदीके दोनों तटोंकी मिट्टीका पुतला बनावै सफेद वस्त्र पहरावै. सफेद फूल, गंध, तांबूल १३ दीपक, १३ ध्वजा उत्तर दिशामें गांवके बाहर उतारा करै फिर शान्तिके लिये जलसे स्नान करावै । गूगल नीमके पत्ते गायका सींग, सरसों घी इनकी धूनी देवै ॥

क्रियाके उतारेका मंत्र।

ॐ नमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च२ स्वाहा ३३५

विधि।

नदीके दोनों किनारोंकी मृत्तिकाका पुतला बनावै पीछे गंध, तांबूल, लाल फूल, रक्तचन्दन, पांच ध्वजा, पांच दीपक, पूजा, मांस, मदिरा ये वायव्यकोणमें बलि देवै पीछे कौआकी बीट. गौका सींग, बिल्लीके रोम, नीमके पत्ते, घी इनकी धूनी देवै॥

पिपीलिकाके उतारेका मंत्र।

ॐनमो रावणाय मुञ्चमुञ्च हन हन स्वाहा॥३३६॥

विधि।

गेहूंके आटेका पुतला बनावै, उस पुतलेके, मस्तक पीछे छाती पीछे रक्तचन्दन, पीत पुष्प, गन्ध, तांबूल सात सौ पक्व, ८ माष पूआ मांस

मदिरा इन सबका पूर्व दिशामें उतारा धरै। पीछे शान्तिके लिये जलसे स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य गूगल गौका सींग, सांपकी कांचली घी इनकी धूनी देवै॥

कामुकाके उतारे का मंत्र।

ॐ नमो रावणाय मुञ्चमुञ्च हन हन स्वाहा३३७॥

विधि ।

मावेका पुतला करै पीछे गंध तांबूल सफेद फूल सात ध्वजा मालपुआ इनकी बलि देवै फिर शान्तिके जलसे स्नान करावै पीछे शिवनिर्माल्य, गूगल, सरसों घृत इनकी धूनी देवै ॥

भूतेश्वर मंत्र ।

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलि कलि नखाय रौद्रदंष्ट्रकरालवक्त्राय त्रिनयनधगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूलखट्वांगडमरुकधनुर्बाणमुद्राभयदंडत्रासमुद्राव्ययदसंयदार्द्रदण्डमंडिताय कपिलजटाजूटार्धचंद्रधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणकालकूटाटोपमंडितकण्ठदेशाय जय जय भूतनाथामरात्मने रूपं दर्शय दर्शय नृत्य नृत्य चल चल पाशेन बन्ध बन्ध हुङ्कारेण त्रासय त्रासय वज्रदंडेन हन हन निशितखड्गेन छिन्न छिन्न शूलाग्रेण भिन्न भिन्न मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणामावेशयावेशय स्वाहा ॥ ३३८ ॥

विधि।

गूगल, शहद, छत इनका प्रयोग बनाकर प्रातः और इस मंत्रसे रोगीपर हित मनुष्यको हर दिवावे यह महाघृत हारीत ऋषि मंत्र है ॥

हलाहल विषनाशक मंत्र।

ओं हर हर नीलकण्ठ अमृतं प्लावय प्लावय हुङ्कारेण विषं ग्रसग्रस क्लींकारेण हरहर ह्रौङ्कारेण अमृतं प्लावय प्लावय हर हर नास्ति विष उच्छिरे उच्छिरे ॥ ३३९ ॥

विधि।

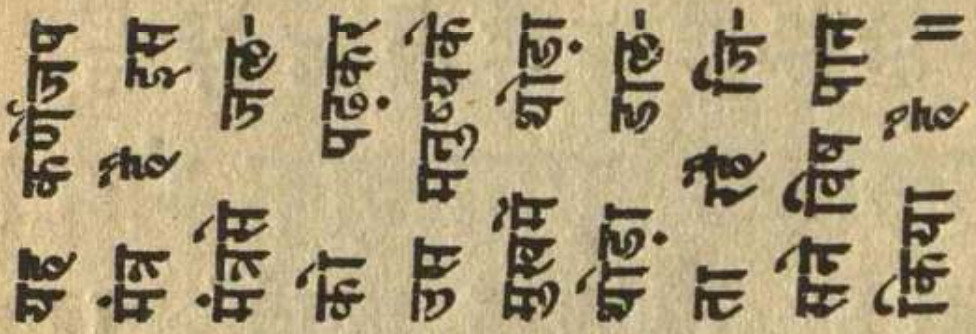
जिस मनुष्यने हलाहल विषपान किया हो उसको वमन करावे और इस उपर लिखे हुए मंत्रसे पढ़ा हुआ जल मुखमें गेरता रहै ॥

दूसरा कर्णेजप विषहर मंत्र।

ॐ नमो हरहर नीलग्रीव श्वेताङ्गसङ्ग जटाग्र-मण्डिखंडेन्दुस्फूर्त्तमंत्ररूपाय विषमुपसंहर उपसंहर

हर हर नास्ति विष विष विष उच्छिरे उच्छिरे उच्छिरे ॥ ३४० ॥

विधि।



विषबंधन मंत्र।

ॐ नमो भगवते सुग्रीवाय सकलविषोपद्रव शमनाय उग्रकालकूटविषकवलिने विषं बन्ध बन्ध हर हर भगवतो नीलकण्ठस्याज्ञा। ॐ नमो हर हर विषं संहर संहर अमृतं प्लावय प्लावय नासि अरेरे विष नीलपर्वतं गच्छ गच्छ नास्ति विषं ॐ हा हा ऊचिरे ३ ॥ ३४१ ॥

विधि।

इस मंत्रको तीन बार पढकर जलके छींटे उस मनुष्यके मुखपर मारता रहै जिसने विषभक्षण किया है॥

दूसरा मंत्र।

ॐ नमो भगवते शिरसि शिखराय अमृत धाराधौतसकलविग्रहाय अमृतकुम्भपरितोऽमृतं प्लावय प्लावय स्वाहा ॥ ३४२ ॥

विधि।

इस मंत्रका अनुष्ठान भी उक्त रीतिसे करै॥

सुख प्रसव मंत्र।

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा ॥ ३४३ ॥

दूसरा मंत्र।

ओं नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्विने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतिभगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा ॥ ३४४ ॥

विधि।

पूर्वोक्त दोनों मंत्रोंमेंसे किसी एकसे दूधको पढकर प्रसूति स्त्री को पान करावै तौ बालकका जन्म सुखपूर्वक होजाताहै॥

तीसरा मंत्र।

ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः ॥ ३४५ ॥

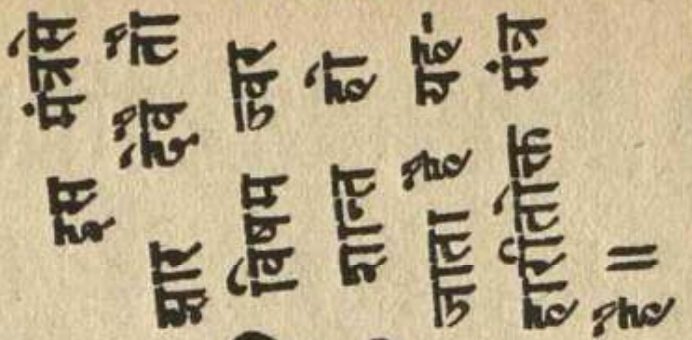
विधि।

इस मंत्रको भोजपत्रपर लिखकर मूढ़ा भंवाली लीको दिखाव फेर उसकी शय्या- के तले रख दिए ऐसा करनेसे बालक सुख पूर्व- क होता है ॥

विषमज्वर नाशक मंत्र।

ओं ह्रां ह्रीं क्ष्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्र- माय सूर्यपुत्रायामिततेजसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृतिज्वराणां दह दह पच प- च अवत अवत वानरराज ज्वराणां बन्ध बन्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा। नास्ति ज्वरः । ज्वराय गमन समर्थज्वरस्त्रास्यते ॥ ३४६ ॥

विधि।



कामरत्नोक्त यक्षिणी साधन मंत्राणि।

विधि।

एकाग्रचित्तसे सम्पूर्ण यक्षिणियोंका ध्यान करै, भगिनी माता अथवा पुत्र बंधू इनमें से किसी रूपसे ध्यान करै, मांस रहित भोजन करै, पानखाना छोड देवै, प्रातःकाल स्नान-करके मृगचर्मपर बैठजाय किसीका स्पर्श न करै और नित्य कर्म से निश्चिन्त होकर एकान्तमें मंत्रको उस समयतक जपै जबतक मनवांछित फलके देनेवाली यक्षिणी प्रत्यक्ष न होवै॥

ओं ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरुकुरु एह्येहि भगवति स्वाहा॥ ३४७॥

विभ्रमा यक्षिणी।

विधि।

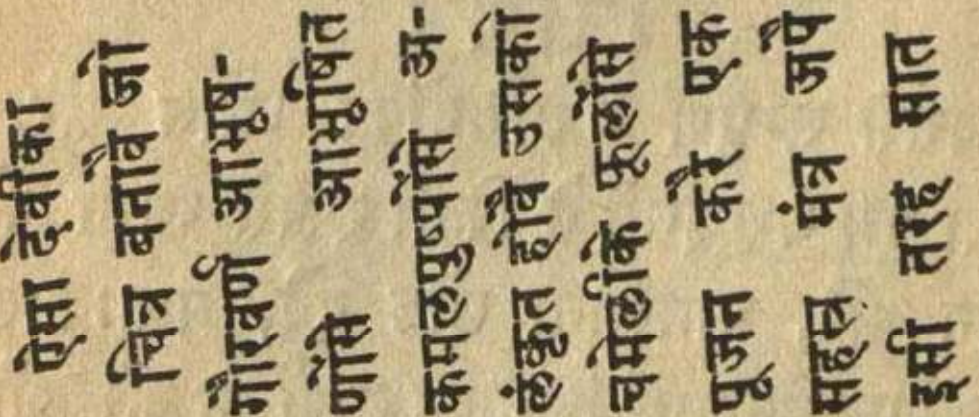
इस मंत्रको श्मशानमें मौन धारण करके जपै डरै नहीं गृ-

गल और घीका दशांश हवन करै तौ विभ्रमा देवी प्रसन्न हो जाती है ॥

रतिप्रिया यक्षिणी ।

ओं ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ ३४८ ॥

विधि



दिवसतक तीनों समय जप करै अर्द्धरात्रिके समय यह देवी आकर पच्चीस स्वर्णमुद्रा देगी ॥

सुरसुन्दरी यक्षिणी ।

ओं ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ॥ ३४९ ॥

एकलिङ्ग महादेवका पूजन दिनमें तीनबार करै और उक्त मंत्रको त्रिकालमें तीन तीन सहस्र जपै एक महीने तक ऐसा करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी प्रसन्न होकर पास आवै तब

जपनेवालेको उचित है कि अर्घ देकर उसे प्रणाम करै और जब देवी यह पूछै कि तैंने मुझे कैसे यादकिया तब उससे प्रार्थना करै कि हे कल्याणकारिणी मैं दरिद्रतासे दग्ध हूं मेरे इस दोषको दूर करो तब देवी प्रसन्न होकर धन और दीर्घायु देगी ॥

अनुरागी यक्षिणी ।

ओं ह्रीं अनुरागिणि मैथुन प्रिये स्वाहा॥३५०॥

विधि।

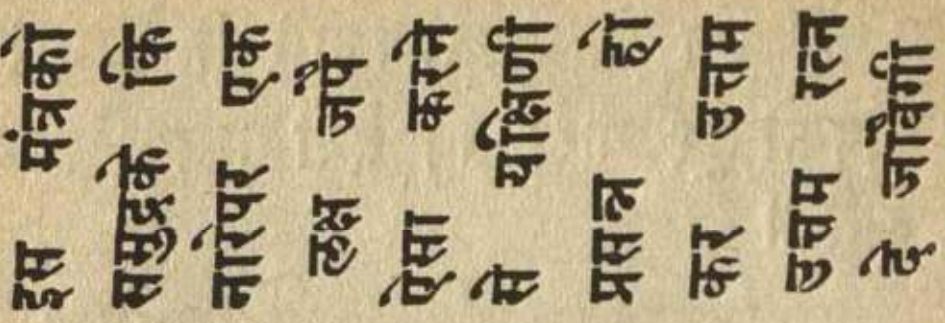
भोजपत्र पर ॐकार्मसे लिखकर प्रति पदासे पूजन करना प्रारम्भकरै, त्रिकालमें तीन सहस्र जापकरै एक महीने पीछे रात्रिं में जपकरै आधी रातके समय यक्षिणी प्रसन्न होकर आवेगी और

एक सहस्र स्वर्णमुद्रा दे जावेगी ॥

जलवासी यक्षिणी ।

ओं भगवान् समुद्रदेहि रत्नानि जलवासो ह्रीं नमोस्तु ते स्वाहा ॥ ३५१ ॥

विधि।



वटबासिनी यक्षिणी।

ओं ह्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा॥ ३५२॥

विधि।

तिराहेमें जहां बटका वृक्ष हो वहां पवित्र होकर इस मंत्रको तीन लक्ष जपै तब वह देवी प्रसन्न होकर वस्त्र अलंकार और दिव्यांजन साधकको दे जायगी॥

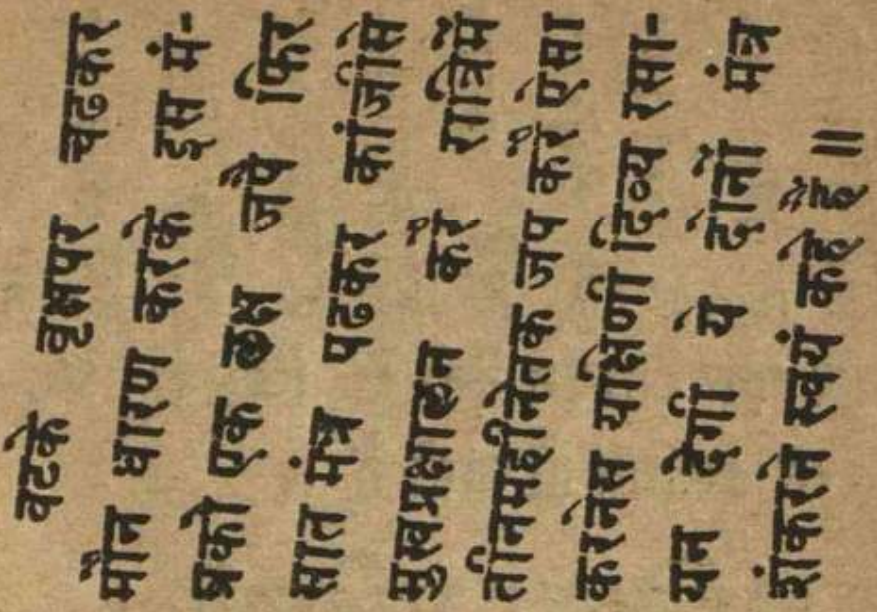
चण्डवेगा यक्षिणी।

ओं नमश्चंद्राद्यावा कर्णकारण स्वाहा॥ ३५३॥

दूसरा मंत्र।

ओं नमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा ३५४

विधि।



विशाला यक्षिणी।

ओं ऐं विशाले क्रीं ह्रीं व्रीं क्लीं क्रीं स्वाहा ॥३५५॥

विधि।

चिरमिठीके वृक्षके नीचे पवित्र होकर इस मंत्रको एक लक्ष जपै सोंफके फूलोंको घीमें मिलाकर हवन करै ऐसा करनेसे बिशाला प्रसन्न होकर दिव्य रसायन देती है ॥

महाभया यक्षिणी।

ॐ क्रीं महाभये क्लीं स्वाहा ॥ ३५६ ॥

विधि ।

मनुष्यकी हड्डीकी माला बनाकर उसे दोनों हाथ और दोनों कान लटका तिमिर होकर पवित्र होकर इस मंत्र को सौ बार जपै देवी प्रसन्न होकर एक रसायन देती है जिसके भक्षण करनेसे सब प्रकारके रत्न हस्तगत हो जाते हैं ॥

चन्द्रिका यक्षिणी ।

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा ॥ ३५७ ॥

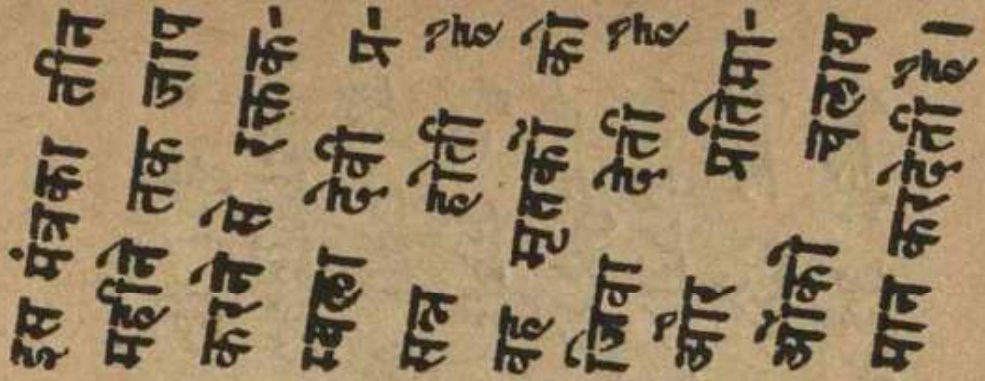
विधि ।

इस मंत्रको शुक्लपक्षमें उस समयतक जपै जबतक चन्द्रमा दीखता रहै. पडवासे पहिले पूर्णमासी पर्यंत ९ लक्ष जपले फिर चन्द्रिका देवी अमृत देतीहै उसे पान करनेसे जीव अमर हो जाताहै.

रक्तकम्बला यक्षिणी ।

ॐ ह्रीं रक्तकम्बले महादेवी । मृतकमुत्थापय प्रतिमाञ्चालय पर्वतान्कम्पय नीलय विलसत् हुं हुं स्वाहा ॥ ३५८ ॥

विधि ।



विद्युज्जिव्हा यक्षिणी ।

ॐकार मुखे विद्युज्जिव्हे ओं हुं चेटके जय जय स्वाहा ॥ ३५९ ॥

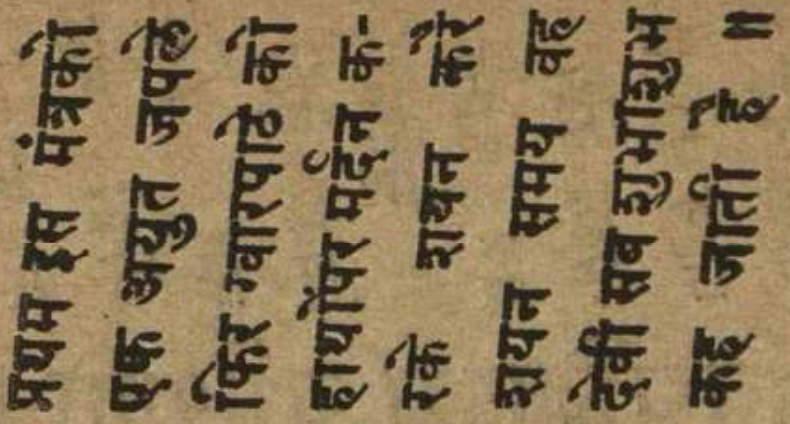
विधि ।

इस मंत्रको १०८ जप कर थोडेसे मीठे भोजनका बलिदान वट वृक्षके नीचे एक महीनेतक करे फिर देवी आकर हाथ-मेंसे भोजनको ग्रहण करती है वह फिर यह वर देजाती है कि मैं सदा तेरे पास रहूंगी और भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालकी बात कह जाती है ॥

कर्णपिशाचिनी यक्षिणी ।

ॐ क्रीं सनामशक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डरोषिणि वद वद स्वाहा ॥ ३६० ॥

विधि।



चामुण्डा यक्षिणी।

ओं क्रीं आगच्छ आगच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा॥ ३६१ ॥

विधि।

मिट्टी और गोबर से पृथ्वीको लीपकर उस पर कुशा बिछा देवै फिर पंचोपचार और नैवेद्यसे देवीका पूजन कर रुद्राक्षकी मालासे दस लक्ष जपै सोते समय आधी रातपर देवी स्वप्नमें सब शुभाशुभ फल कहदेगी॥

चिंचिपिशाची यक्षिणी।

ओं क्रीं चिञ्चि पिशाचिनि स्वाहा॥ ३६२ ॥

विधि।

नीलवर्णके भोजपत्र पर गोरोचन, केसर और [illegible] से अष्टदल कमल बनाके और प्रत्येकदल पर मायाबीज लिखें और सिरमें धारण करे फिर मंत्रको जपते हुए प्रथम यथासंख्य जप करें इस तरह सात दिवसतक यत्न पूर्वक करनेसे वह देवी स्वप्नमें भूत भविष्यत् सब कहदेगी.

विचित्रा यक्षिणी।

ओं विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३६३ ॥

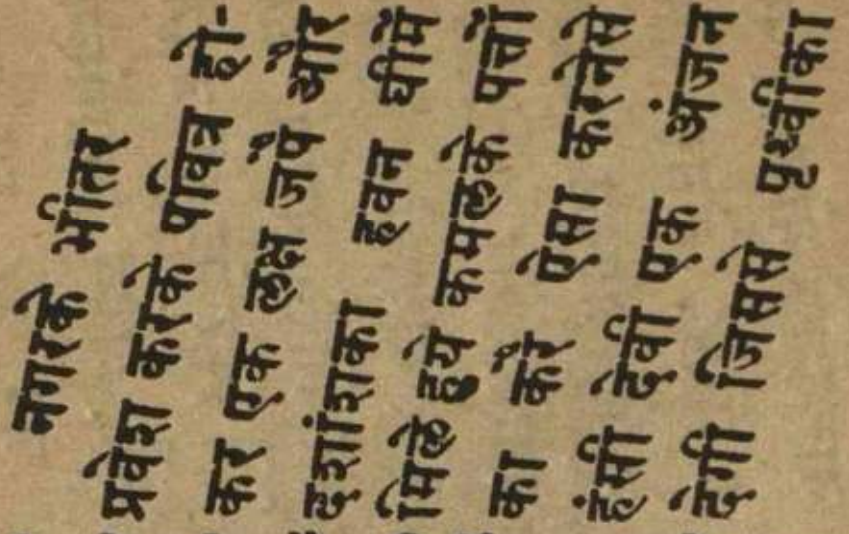
विधि।

बटके वृक्षके नीचे पवित्र होकर इस मंत्रको एक लक्ष जपै बन्धूकके फूल, शहद, अन्न, दूध इनको मिलाकर हवन करै तब वह बिचित्रादेवी प्रसन्न होकर मनवांछित फलको देनेवाली होती है ॥

हंसी यक्षिणी।

ॐ हंसिं हंसिं जने ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥ ३६४ ॥

विधि ।



गडाहुवा धन दीखने लगे और निर्विघ्न उसको ग्रहणभी करलेवै.

मदना यक्षिणी ।

ऐं ओं मदने मदनविडम्बिनि अनङ्गसङ्गं सन्देहि देहि क्लीं क्रीं स्वाहा ॥ ३६५ ॥

विधि ।

पवित्र होकर स्थिर चित्तसे इस मंत्रको एक लक्ष जपै दूध और चमेलीके फूलकी एक सहस्त्र आहुति देवै ऐसा करनेसे मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर एक गुटका देगी जिसको मुखमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य होजायगा ॥

कालकर्णिका यक्षिणी ।

ओं ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठः ठःस्वाहा ॥३६६॥

विधि।

इस मंत्रको एक लक्ष जपै और ढाक-की लकडी घी शहत इनका हवन करै तो कालकर्णी प्रसन्न होकर अनेक प्रकार ऐश्वर्य देगी.

लक्ष्मी यक्षिणी।

ओं ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसः स्वाहा॥ ३६७॥

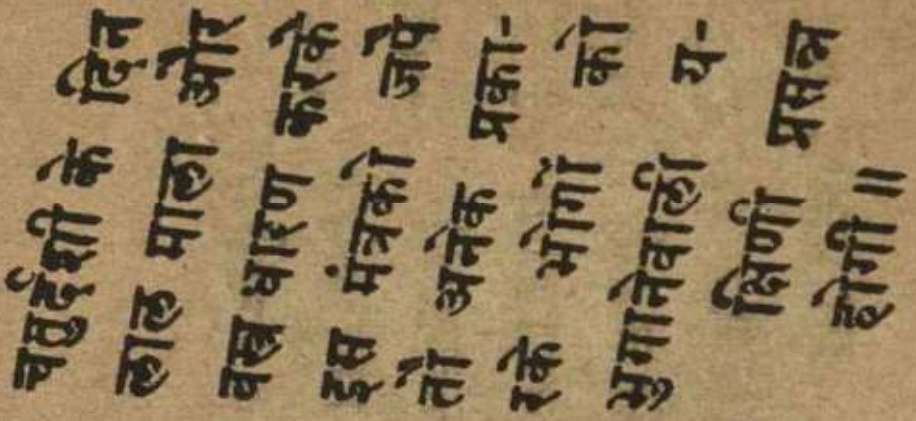
विधि।

इस मंत्रको एक लक्ष जपै फिर अपने घरमें बैठकर लाल कनेरके फूलोंसे दशांशका हवन करै ऐसा करनेसे लक्ष्मी देवी प्रसन्न होकर दिव्य रसायन प्रदान करैगी॥

शोभना यक्षिणी।

ओं अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने श्रीं क्षः स्वाहा॥ ३६८॥

विधि।



नटी यक्षिणी।

ओं ह्रीं क्रीं नटि महानटि रूपवति स्वाहा॥३६९॥

विधि।

अशोकके वृक्षके नीचे जाकर चन्दन का मंडल लगाकर देवीका पूजन करके सहस्रबार धूप देवै एक महिनेतक मंत्रको जपै रात्रिमें एकबार भोजन करै रात्रिमें फिर मंत्र जपके अर्धरात्रपर पूजन करै ऐसा करनेसे नटी देवी आकर रसअंजन और अन्य दिव्य भोगोंको देगी॥

पद्मिनी यक्षिणी।

ओं क्रीं पद्मिनि स्वाहा॥ ३७०॥

विधि।



करके फिर रात्रिमें जाप करै आधी रात पीछे देवी आकर दिव्य योग और धन देगी जिससे जप करनेवाला सुखी होगा.

सर्पोंके भगानेका मंत्र।

ॐ प्लुः सर्पकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा ॥ ३७१ ॥

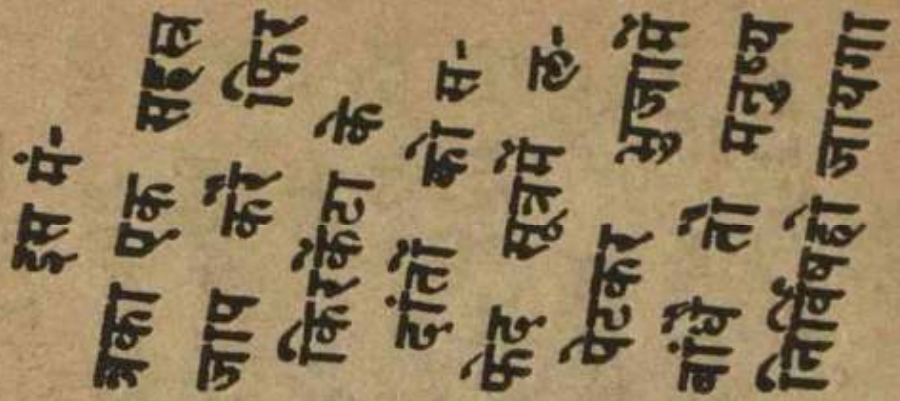
विधि।

इस मंत्रसे सात वार मृत्तिकाको अभिमंत्रित करके घरमें गेरदे तौ सर्प भाग जांय ॥

निषनाशक मंत्र।

ओं शबरि कीर्त्तय कीर्त्तय संजाव संजाव स्वाहा ॥ ३७२ ॥

विधि ।



अदृश्यकरण मंत्र ।

कालि कालि महाकालि मांसशोणित भोजिनि। रक्तकृष्णमुखे देवि मा मे पश्यतु मानुषः॥ॐ हुं फट् स्वाहा ॥ ३७३ ॥

विधि ।

इस मंत्रको दस लक्ष जपै तौ सिद्धि हो जब चाहै अदृश्य- हो जाय ॥

अनावृष्टिनाशक मंत्र ।

हुं श्रीं हुं ॥ ३७४ ॥

विधि ।

इस मंत्रको जलमें घुसकर जपै तौ अनावृष्टि दूर होजाय ॥

कुष्टीकरण मंत्र ।

ओं नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण गृहाण गृहाण पच पच ताडय ताडय क्लेदय क्लेदय हुं फट् ठःठः स्वाहा ॥ ३७५ ॥

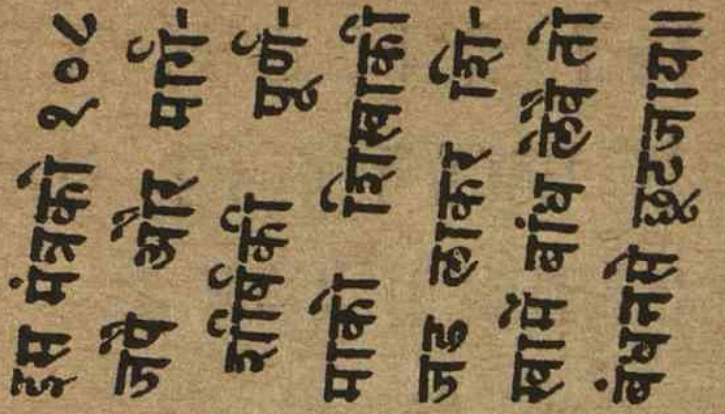
विधि ।

मिलावेके रसमें चिरमिठीको बहुत महीन पीस लेवे और फिर शरीरपर डालदेवे जिसके शरीरपर डाले वह कुष्ठी हो जाय मिश्री दूधका पानकरानें से फिर अच्छा हो जाय ॥

बन्धनमोचन मंत्र ।

ओं नमःकमलपिङ्गले रुद्रहृदयाङ्गे बैताल अस्थिधारिणि तिष्ठ तिष्ठ सर सर सर्वान् मोहय मोहय भगवति शिखाजे तिमिरे महामाये स्वाहा ॥ ३७६ ॥

विधि।



वृष्टिकरण मंत्र।

ॐ बं ॥ ३७७ ॥

विधि।

अस्य मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता एतद्राज्यमभिव्याप्य सुवृष्ट्यर्थंजपे विनियोगः—फिर नीचे लिखा हुआ ध्यान पढकै वरुणका पूजन करके मूलमंत्रका जप करै॥

अथध्यानम्।

ॐ पुष्करावर्त्तकैर्मेघैः प्लावयन्तं वसुन्धराम्।
विद्युद्गर्जितसन्नद्धो तोयात्मानं नमाम्यहम् ॥
यस्यकेशेषु जीमूतो नद्यः सर्वाङ्गसन्धिषु।
कुक्षौ समुद्राश्चत्वारस्तस्मै तोयात्मने नमः ॥

भोजनाकर्षण मंत्र ।

ओं उच्छिष्ट चाण्डालि वाग्वादिनी राजमोहनि प्रजामोहनि स्त्रीमोहन आन आन वे वे वायु वायु उच्छिष्ट चाण्डालि सत्यवादिनकी शक्ति फुरै ॥ ३७८ ॥

विधि ।

भोजन करनेके पश्चात् उच्छिष्ट मुखसे इस मंत्रको ८ दस बार जपै तो कान्त स्थानमें तो उसी जगह भोजन आजावै ॥

वशीकरणप्रयोगाः ।

ओं नमःक्षिप्रं कामिनीं अमुकीं मे वशमानय हुं फट् स्वाहा ॥ ३७९ ॥

विधि ।

प्रातःकाल अपने दांतोंको धोकर इस मंत्रसे सात वार अभिमंत्रित करके जिस स्त्रीके नामसे जल पिये वह स्त्री वश्य होय ॥

दूसरा मंत्र ।

ओं मूलि मूलि महामूलि रक्ष रक्ष सर्वासां क्षेत्रयेभ्यो परेभ्यः स्वाहा ॥ ३८० ॥

विधि ।

नागकेसर चिरोंजी, तगर, कमलकेसर, वच, जटामांसी इन सबको लाकर इन सबको कूट कर मंत्रसे अपने अंगको छुए तो छुए जिसको पर वश हो जाय ॥

तीसरा मंत्र ।

ओं नमः भवायै नमः शर्वाण्यै च अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ॥ ३८१ ॥

विधि ।

जिव्हामल, दंतमल, नाकका मैल, कानका मल इनको मद्यमें मिलाकर पान करावे तो स्त्री वश होय ॥

वेश्याबशीकरण ।

ओं द्राविणी स्वाहा ऊं हामिले स्वाहा ॥३८२॥

विधि ।

औंगाका गूदा बार अंगुल लम्बा निकाल ले और इस मंत्रसे सात बार अभिमंत्रि- त करके वेश्या- के घरमें गारदे तो वशीभूत होजाय ॥

अन्यवशीकरण ।

ॐ ह्रीं ह्रीं प्लुं प्लुं फट् नमः ॥ ३८३ ॥

विधि ।

घुग्घूके नेत्रका मांस, चन्दन, गोरोचन, केसर, मछलीका तेल इनको शरीर पर मालिश करै तौ स्त्री वश होय ॥

अन्यमंत्र ।

ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे तुर तुर अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ॥ ३८४ ॥

विधि।

बकायनके फूलोंको घृतमें मिलाकर हवन करै इस तरह सात राततक करनेसे स्त्री वश होजातीहै ॥

अन्यवशीकरण ।

ॐ पूजिताय स्वाहा॥ ३८५ ॥

विधि।

किरकेटाके दक्षिण नेत्रमें कांजी और शहत मिलाकर दहिने नेत्रमें आंजे तौ अत्यन्तरूपगार्विता स्त्रीभी वशीभूत हो जातीहै ॥

छप्पय।

श्री पलोटत पांयजाके अहर्निश आनन्द भरे
कियेहूं सौ सौ जतन पर नियमजाकौ नहिं टरे॥
शतकोट योगी नित रटैं पर भेद नहिं जान्यो परे।
नरनारि पशुपक्षी चराचर भृकुटिविभ्रम संचरे॥
लावत सदा आनन्द परमानन्द हू चितमें करे।
लहहिं पाठकवृन्द सब सुख दुःख उनके पर हरै॥

इति श्रीकौतुकरत्नभाण्डागारे तृतीयःपादःसमाप्तः।

॥ श्री ओ३म् ॥

कौतुकरत्नभांडागार.

अर्थात्

बृहदिन्द्रजाल.

चतुर्थःपादः ।

मथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल संग्रहीत.

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलालने

बम्बईमें

"ज्ञानसागर" यन्त्रालयमें मुद्रित कराया.

सम्वत् १९६४, शके १८२९.

ॐ

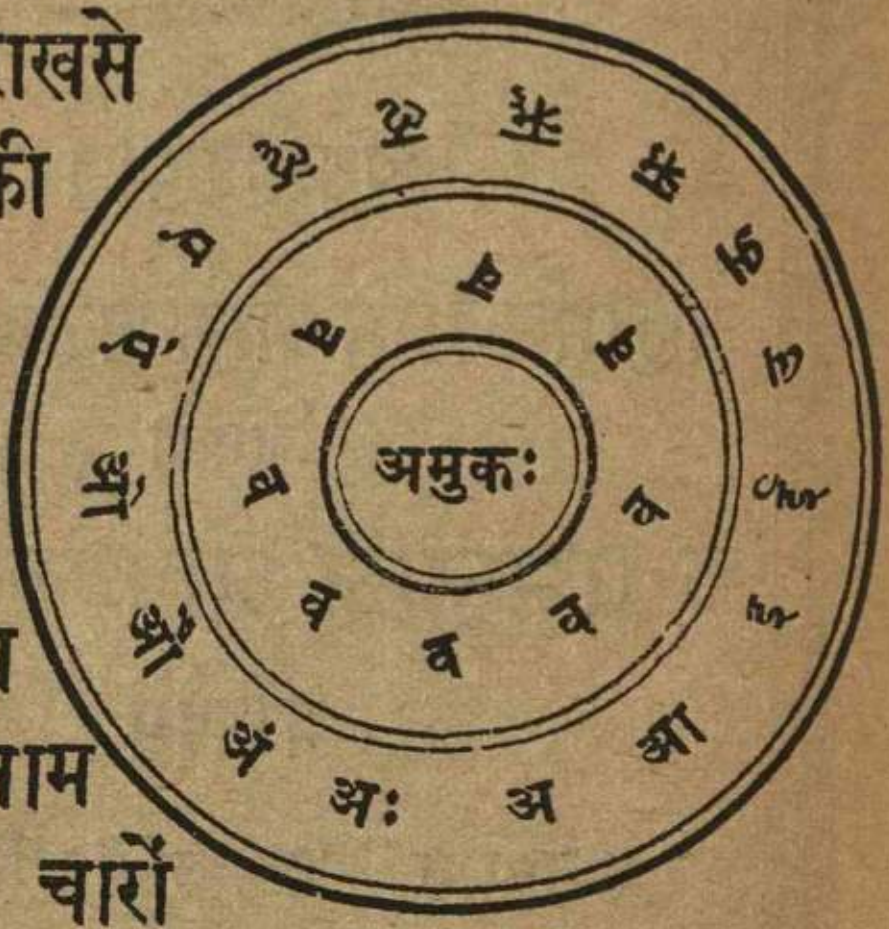
श्रीहरिवन्दे ।

श्रीवृन्दावनविहारिणेनमः ।

॥ कौतुकरत्नभांडागारप्रारम्भः ॥

चतुर्थः पादः ।

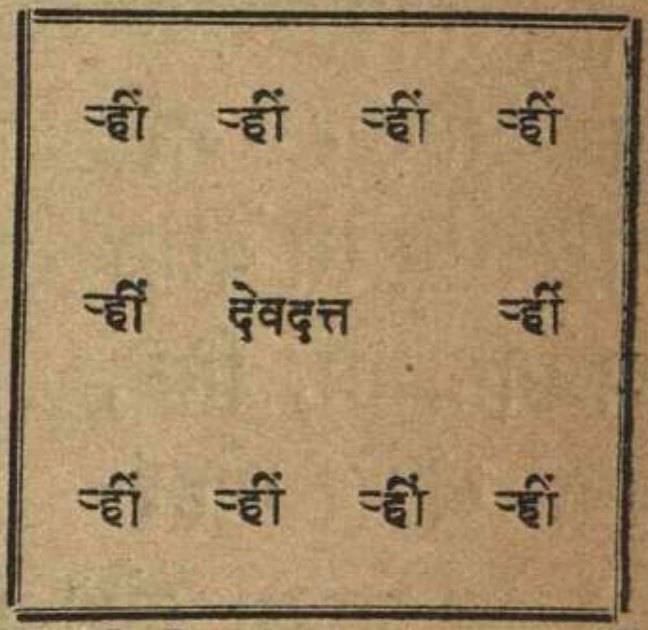
१ राजवशीकरण यंत्र.



कांसीके पात्रको राखसे मांजकर चमेलीकी लकड़ीकी कलम बनाकर गोरोचन और चन्दनसे जिसको वश करना चाहै उसका नाम लिखै और उसके चारों ओर एक गोलाकार खींचदे उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर वकार लिखदे और फिर एक गोल

रेखा खींच देवै उसमें अकारादि सोलह स्वर लिखै और मल्लिका चमेली तथा श्वेत कमलके पुष्पोंसे पूजन करै, सुगंधित द्रव्य साम्हने रक्खै और एक श्वेत वस्त्र उढादे इस यंत्रका नाम महा-मोहन है इसका विधिपूर्वक पूजन करके सुवर्ण अथवा चांदीके तावीजमें मढाकर सिर भुजा अथ-वा गलेमें बांधे चाहै स्त्री हो चाहै पुरुष हो उसके सम्पूर्ण दासकी तरह वश हो जाते हैं.

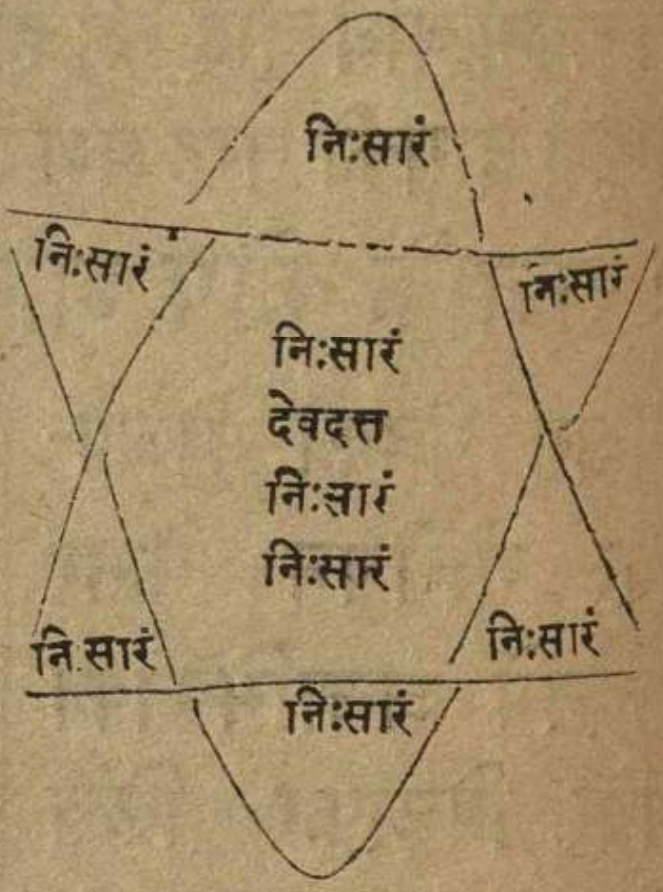
२ राजाके कोप शान्त करनेका यंत्र।



इस यंत्रको भोजप-त्रपर गोरोचन केसर चन्दनमें अनामिकाका रुधिर मिलाकर लिखै और अनेक प्रकारके पुष्प, मिष्टान्न और मांससे विधिवत् पूजन करै

यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मण भोजन करावै यो-गिनीनकूं नमस्कार करके राजदरबारमें जाय और मुठीमें इस यंत्रराजको लेजाय तौ तत्काल राजाका क्रोध शान्त हो जायगा और राजा उसके वश हो जायगा ॥

३ भवबन्धविनाशन यंत्र ।



इस यंत्रको भोज-पत्रपर गोरोचन और चन्दनसे लिखै और लोहेके तावीजमें ध-रकर सिरपर राखै धीरे२ संसारसे वैराग उपजैगा. पुत्र, मित्र, धन, स्त्रीसे मोहबं-धन छूट जायगा और योगी होकर इच्छापूर्वक विचरने लगैगा ॥

४ जूआमें जीतनेका यंत्र ।

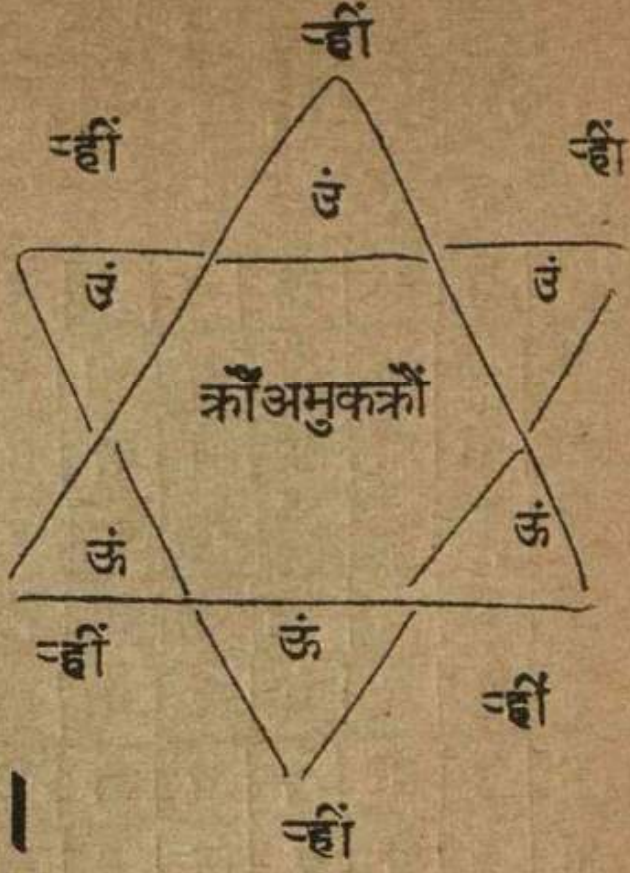
मे	खे	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
छ	दा	वी	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	सा	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	नं	मं	य	वी	दा	छ
नः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खे	मे

इस यंत्रको अंडीके पत्तेपर कौवेकी पंखसे काजलकी स्याही बनाकर रातके समय पवित्र होकर लिखै यह चौंसठ कोष्ठका यंत्र है इसमें इस बत्तीस अक्षरके मंत्रको अनुलोम और प्रतिलोम रीतसे लिखलेवै. " मेखैरक्तंदयेरुपाकजिननंदनीचनः । छदावींयमंत्रंतेषहेष्टिवामोक्षिण पात्रम् ॥ "

५ एकान्तरज्वरनाशन यंत्र ।

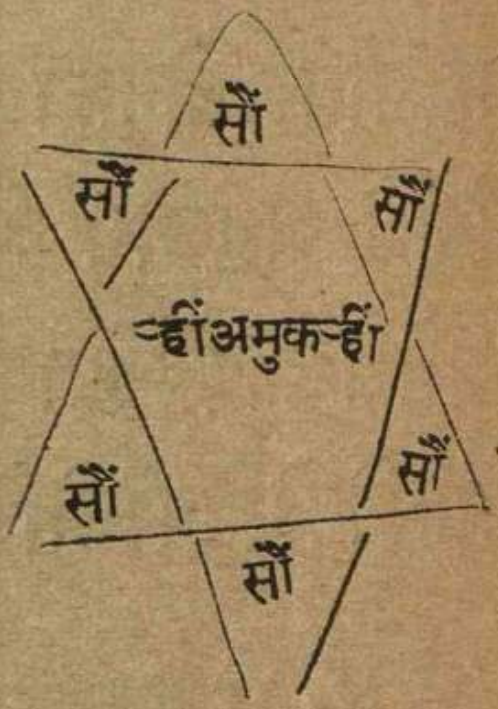
हलदीके रसकी स्याही बनाकर पानपर ब-

बूलके कांटेसे इस यंत्रको लिखै, लिखकर पूजन करै फिर इस पानको रोगीके लिये खवादे एकांतरा ज्वर जाता रहैगा ॥



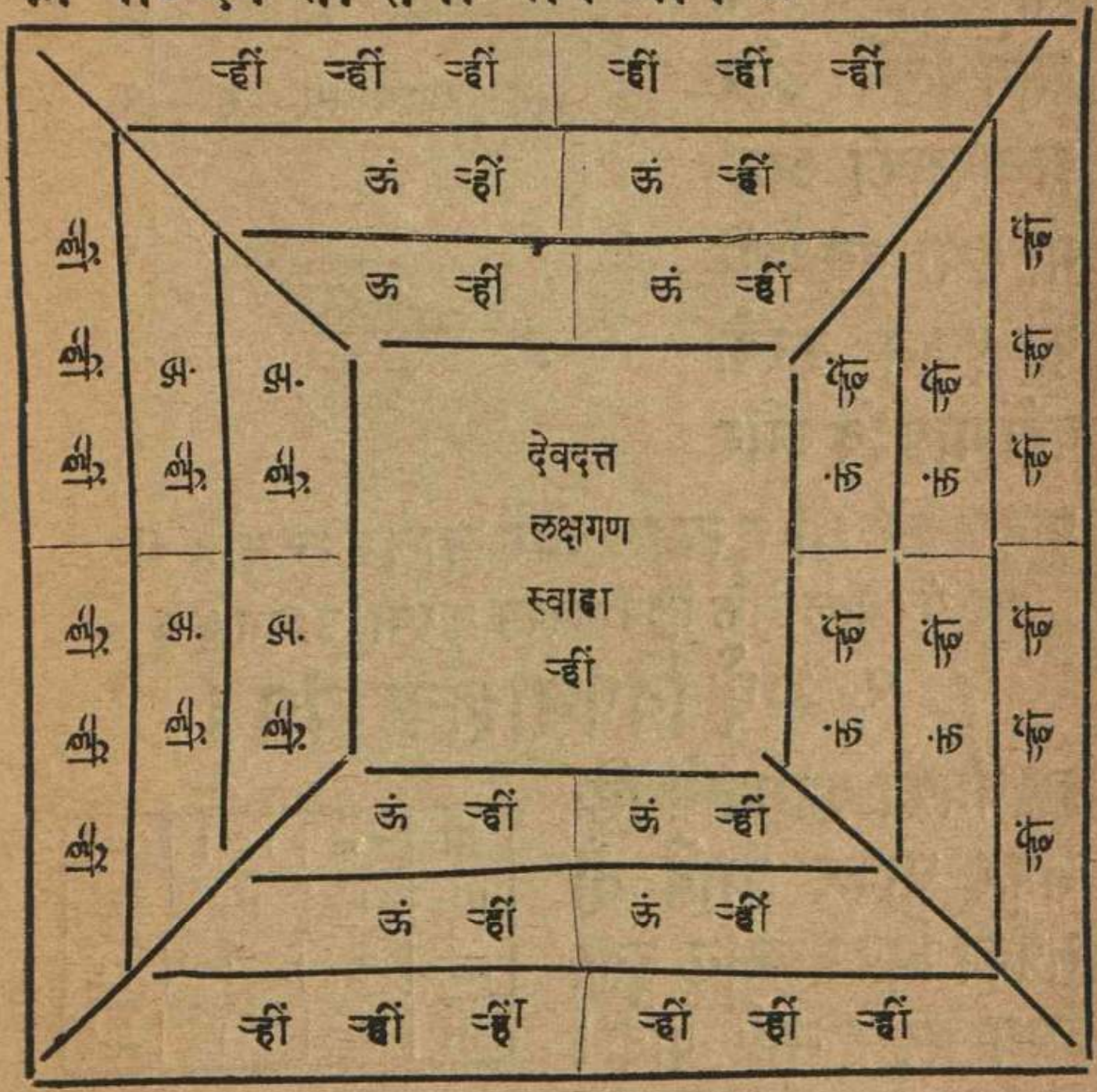
६ आकर्षणयंत्र ।

इस यंत्रको गोरोचनस भोजपत्रपर लिखकर धूप दीपसे पूजन करके घीमें रखदेवै नित्यप्रति पूजन करके त्रिपुराकी प्रार्थना इस मंत्रसे करै, " आकर्षय महादेविदेवदत्तं मम प्रियं । ऐंत्रिपुरेदेवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥



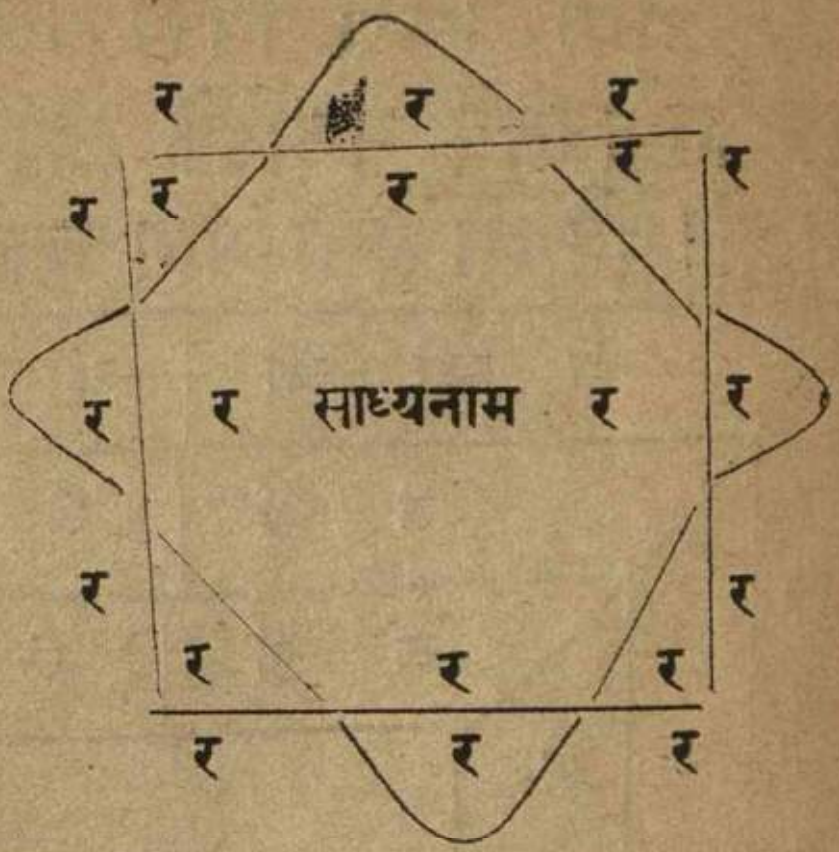
७ सैनाको भगानेका यंत्र।

नीचे लिखे यंत्रको शंखाहुली, सूरजमुखी गुलदौनके रससे नगाडेके ऊपर लिखै और डंकेकी चोट देवै तौ सैना भाग जाय ॥



८ ज्वरनाशकयंत्र।

इस यंत्रको स्मशानमें बैठकर खोपडेपर धतूरेके रससे लिखै और कृष्णपक्षकी अष्टमी तथा चतुर्दशीको पूजन करके वहीं गाडदेवै और



पूजन करै तौ तत्काल ज्वर जाता रहताहै॥

यह यंत्र बालकोंके लिये अवश्य करना उचित है॥

९ सर्प विषनाशक यंत्र।

इस यंत्रको कागजमें लिखकर धोकर प्यावै तौ सर्पका विष तत्काल उतर जाय चढने नहीं पावै।

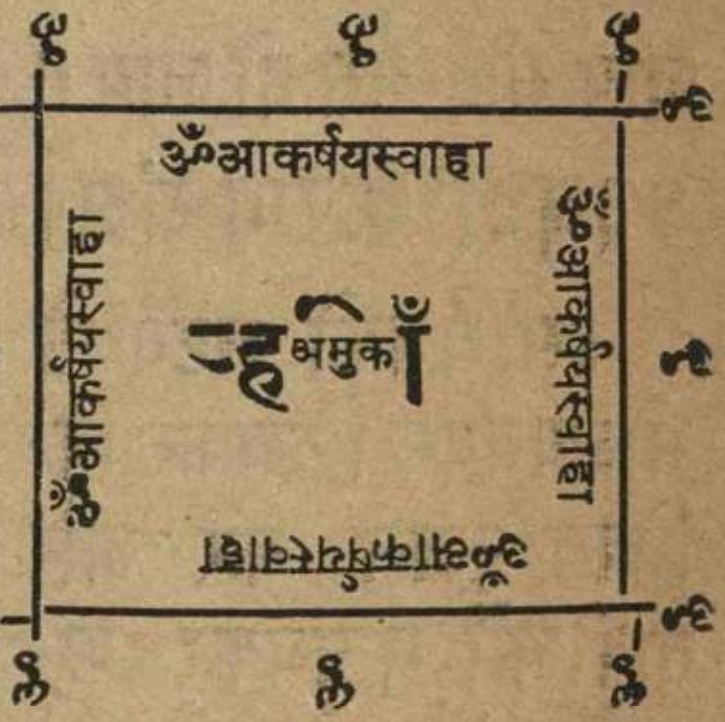
॥॥	=	।=।	=
॥॥	।	॥॥	=
=	२	+	=
॥॥	=	।	=।

१० चिलवाई दूर करवेको यंत्र ।

२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९

इस यंत्रको रक्त चन्दनसे भोजपत्रपर लिखकर बालकके गलेमें बांधै चिलवाई मिटजाय ॥

११ वाणिज्यार्थ वशीकरण यंत्र ।



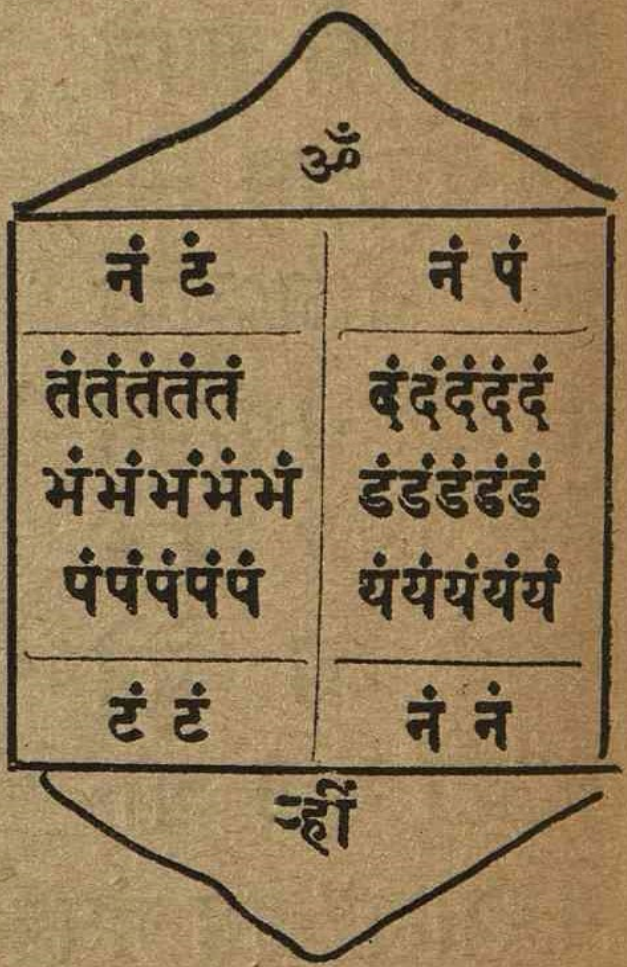
इस यंत्रको अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाकर भोजपत्रपर लिखै और सुगंधित द्रव्योंसे पूजन रकके एकान्तमें रख देवे और "ओ ३ म् आकर्षय स्वाहा" इस मंत्रको जपै तत्काल वस होय॥

१२ जगद्वशीकरण यंत्र ।

ऊं	वं	जें	ह्रीं	डं
दैं	डं	ह्रीं	ऊं	डं
वं	डं	जगत्	वं	डं ह्रीं

इस यंत्रको कपूर, कस्तूरी, चन्दन, गोरोचन इनसे चमेलीकी कलम बनाकर भोजपत्रपर लिखै इसकी तीन दिनतक विधिवत् पूजा करके तावीजमें मढकर बांहमें बांध लेवै जिसके पास जाय सोई बस हो जाय ॥

१३ वशीकरण यंत्र ।



इस यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखकर विधिवत् पूजन करै और तावीजमें मढायकर भुजामें बांधै जो देखै सोई वस हो जाय ॥

१४ पलीताकौ यंत्र ।

इस यंत्रको कागजपर लिखकर सुंघावे तौ प्रेत वक्कुरै और बात करै जो पूछौ उसका जबाब देय ॥

द	मू	सि	ज	जं	त्र	०	०	०
अ	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

१५ यंत्र जूआमें जीतवेकौ ।

इस यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखकर धूप दीजै और बांहमें बांधकर जूआ खेलै कभी हारै नहीं जीतैही जीतै ।

१	२५।	२३।	२३।
३१॥।	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८॥	२४॥	१९॥
२६।	९॥।	५॥।	४॥।

१६ दिव्यस्तम्भन यंत्र ।

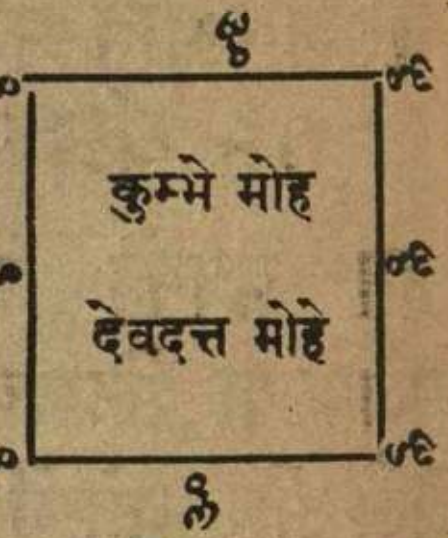
इस यंत्रको गोरोचन, कुंकुमसे भोजपत्रपर लिखै और शराब संपुटमें रखकर भक्तिपूर्वक पूजन करै दूसरे दिन निकालकर शिखामें



बांध लेवै और मौन होकर फलकी चिन्ता करै उसको इस यंत्रराजकी कृपासे कुछ भय नहीं होगा॥

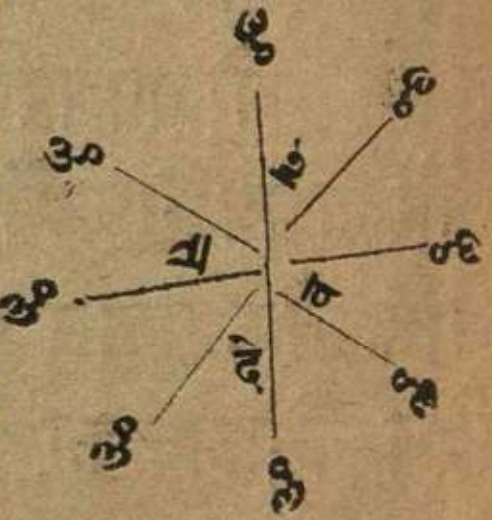
१७ यात्रास्तम्भन यंत्र।

इस यंत्रको शिला संपुट-पर गोरोचन, हरिताल हलदी मनसिल, कुंकुमसे लिखै और पीले फूलोंसे पूजन करके धूप, दीप, नैवेद्य करै और इस यंत्र को सम भूमिमें रखकर मिट्टीसे दाबदे यात्रा बन्द होजाय॥



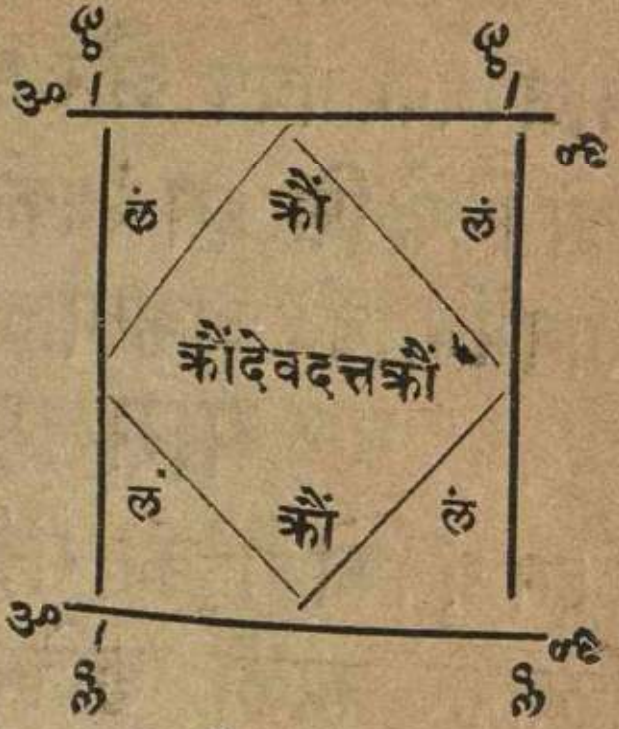
१८ मुखस्तम्भनयंत्र।

इस यंत्रको अपने घरकी भीतिपर खड़ियासे लिखै और बीचमें शत्रुका नाम लिखदेवै सफेद फुल फलसे पूजन करके सफेद बस्त्र उढ़ावै ब्राह्मण भोजन



करावै तौ वादमें शत्रुओंके मुखका स्तम्भन होय ॥

१९ अग्निस्तम्भन यंत्र ।



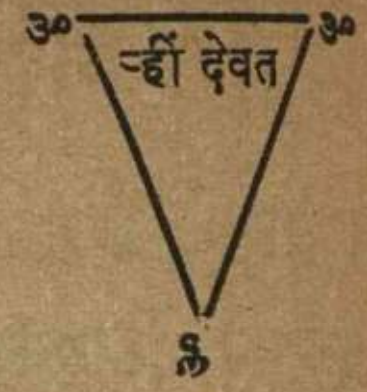
इस यंत्रको भोजपत्रपर पीत द्रव्यसे लिखकर पूजन करै ब्राह्मणभोजनकरावै और इस यंत्रको पृथ्वीमें गाड देवै और उसपर पानीकी धार छोड़ता रहै तौ अग्नि शीघ्र शान्त हो जाती है ॥

२० शत्रुनाशन यंत्र ।

उं	एं	श्रीं	ह्रीं	ह्रां	ह्रां
लों	रं	भ	क्षं	कु	म
म	क्ष	ज्यं	च	जी	कुं
क्ष	ते	म	त्र	द	क्ष
प	ब	ल	ट	र	क्ष
उप	द्र	वी	र	ल	स

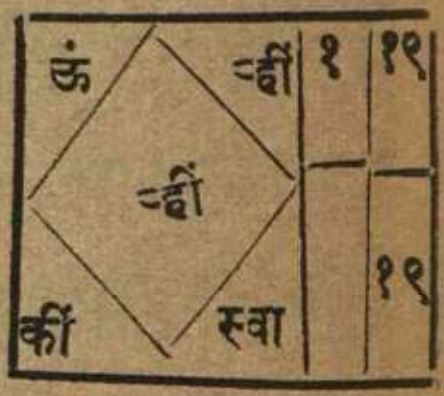
इस यंत्रको गधेके कानके रुधिरसे मरघटकी ईंटपर लिखकर जिसके घरके ऊपर जाकर डालै उसीके घरमें दुख होय और शत्रुका नाश होजाय ॥

२१ शत्रुनाशन यंत्र ।



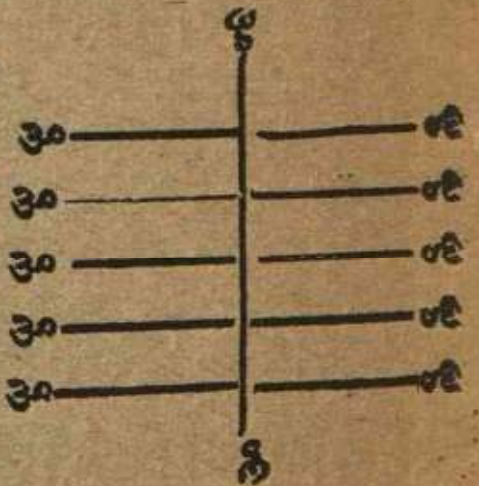
इस यंत्रको कौवेकी पंखसे भोजपत्रपर विष और हरता-लसे लिखै फिर इस यंत्रको श्म-शानमें गाडदे अकस्मात् शत्रुकी मृत्यु होय ।

२२ सासससुरवशीकरण ।



इस यंत्रको गेहूंकी रोटीपर लिखकर काली कुतियाकूं खवावै तौ सास बस होय और कुत्ताकूं खवावै तौ ससुर वश होय ॥

२३ डाकिनी बकुरावाकौ यंत्र।



इस यंत्रको कागजमें लि-खकर लोहबानकी धूप दे और ओखली में धरकै कूटै तौ डाकि-नीकौ माथौ फूटै और बकरै सही

२४ प्रेत दूर करवाकौ यंत्र ।

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रौं	क्लीं
स्य	यं	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

इस यंत्रको गलेमें बांधै तौ प्रेत दूर होजाय ॥

२५ भूत दीखवाकौ यंत्र।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	८	९	१
४	६	९	१२

इस यंत्रको गिलोयके रससे भोजपत्रपर लिखकर सिरहाने धरकर सोवै रातकूं भूतही भूत दीखैं.

२६ यंत्र तिजारीकौ।

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

इस यंत्रको अष्टगंधसे लिखकर भुजामें बांधै तिजारी दूर होय.

२७ यंत्र पानी बन्दकरवाकौ ।

इस यंत्रको कागजमें लिखकर धूप दिखावै तौ पानी बन्द हो जाय

११	१८	२	८
७	३	३४६	३०५
३४८	३४३	९	१
४	६	३४४	३४७

२८ यंत्र बासन फोडवाकौ ।

इस यंत्रको भैंसके सींगके ऊपर लिखकर आवाँमें गाडै तौ बासन फूटै ॥

११	१८	२	७
६	३	१५	१४
१७	१२	८	१
४	५	१३	९६

२९ यंत्र आधाशीशी दूर करवाको ।

इस यंत्रको रबिवारके दिन लिख माथेपर बांधै तो आधाशीशी जाय

३८	४६	२	७
६	३	४३	४२
४५	४०	८	१
४	५	४१	४

३० राजामें सन्मान होयवाको यंत्र ।

इस यंत्रको कपूर और कस्तूरीसे लिखकर पास रक्खै तौ राजा आदर करै.

४३	५०	२	७
६	३०	४७	४६
४८	४४	८	१
४	५	४५	४८

पन्द्रहके मंत्रकी विधि ।

यह यंत्र चार प्रकारका होता है खाकी, बादी, आवी आर आतिशी ।

खाकी			बादी			आवी			आतिशी.		
८	१	६	६	७	२	२	७	६	४	९	२
३	५	७	१	५	९	९	५	१	३	४	४
४	९	२	८	३	४	४	३	८	८	१	६
बृष.	क.	तुल.	मिथु.	मी-	कु.	कर्क.	म.	बृश्चिक	मेष.	सिंह.	धन.

अथ मंत्र ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुंडादेवीं स्वाहा ॥

विधिवर्णन ।

इस यंत्रसे इतनी बातें सिद्ध होतीहैं ॥ बैरी प्रीत करै, वशीकरण होय, शरीरका कष्ट दूर होय, स्त्रीका कष्ट निवारण होय, गई वस्तु मिलै, बिदेश गयो होय सो आय मिलै, रोगी नीको होय, चोरी मिलै बँधुआ छूटें; मसान भूमिमें गाड़ै ॥

सर्वकार्यसिद्धका उपाय।

आकके पत्तेपर पन्द्रह दिनतक पन्द्रह पन्द्रह यंत्र लिख पत्तेके नीचे शत्रुका नाम लिख दे और अग्निमें जला दे तौ बैरीका नाश होय॥ जो कार्यकी सिद्धिके लिये लिखै तौ उत्तर दिशामें बैठके अनारकी कलमसे लिखै बैरीके ऊपर लिखै तौ दक्षिण दिशामें मुख करके लोहेकी कलमसे लिखै और लिख लिखकर एकसौ एकबार मिटावै तौ शत्रु मरै और संकल्प बैरीके नामको करै। इस यंत्रको यदि शुभकार्यके लिये लिखै तौ संकल्प पहिले कर लेवै। इस यंत्रको शुभ कार्यके लिये शुक्लपक्ष और उत्तम दिनसे लिखना प्रारम्भ करै और जो अशुभ कार्यके लिये करै तौ कृष्णपक्षमें किसी निकृष्ट बारसे प्रारम्भ करै इस यंत्रको ब्रह्मचर्यसे लिखै केवल मूंग चांवलका भोजन करै तथा यंत्रको लिख लिखकर नदीमें बहावै जो यंत्र निकलकर बाहर आपडै उसको अपने पास रक्खै तौ सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि होवै॥

कार्य्यके संकल्पकी गिनती।

लक्ष्मीकी प्रसन्नताको २००० लिखै, रोगी अच्छे करनेको ६०००, वशीकरण ३०००, परमेश्वरके प्रसन्न करनेको

४०००, देवता प्रसन्न करनेको ५०००, रोजगार लगनेको ४०००, विदेशीको घर बुलानेके लिये २००० बांझ स्त्रीके बेटा करनेको ५०००, मन इच्छा कार्य करनेको १५००० खेतीको अच्छी उपजानेको २०००, मित्र मिलापको २००० मंत्रकी सिद्धिको २०००, प्रेत दूर करनेको २०००, गईवस्तु प्राप्त करनेको ५०००, शत्रु वश करनेको २०००, बन्दिमोक्षियोंको ६०००, विष नाश करनेको २५०००, सरस्वती प्रसन्न करनेको, १०००, मनुष्यसे शत्रुता दूर करनेको २०००' औषधिकी सिद्धिको १०००, तिजारी दूर करनेको ६०००, दुख दूर करके सुख उपजानेको २०००, राजसभाको मोहनेके लिये २०००, राजाके प्रसन्न करनेको ४०००, अनहोनी बातके करनेको एक लाख यंत्र लिखै । इन यंत्रोंको गेहुंके चूनमें गोली बांध बांधकर मच्छियोंके लिये नदीमें डालै सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि होय ॥

अब हम उस विधिको लिखते हैं कि जो पार्वतीनें शिवजीसे पूछी थी और उत्तरमें शिवजीनें कहा कि हे शिवे ! सम्पूर्ण यंत्र कीले हुएहैं परन्तु यह पंचदशीयंत्र कलियुगमें प्रसिद्ध फलदायक है। यह देवताओंको भी दुर्लभ है । इस यंत्रका उधार यह है " ओं हरिः श्रीहरस्तथा "

रविवारकी प्रयोगविधि।

रवौ वारेऽर्कदुग्धेन स्मशाने भस्मना लिखेत्।
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्।
विक्षिप्तो जायते मर्त्य अष्टोत्तरशतं जपेत्॥

अर्थ—रविवारके दिन आकके दूधमें मरघटकी भस्म मिला कर इस यंत्रको लिखै और नीचे बैरीका नाम लिखकर अग्निमें डाल देवै और उस पुर्वोक्त मंत्रको १०८ जपै तौ वह मनुष्य विक्षिप्त हो जायगा॥

सोमवारकी प्रयोगविधि।

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वा च केशरं।
श्वेतगुंजासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः पंचदशीं विलोमं तु संध्याकाले विशेषतः॥ यंत्रेण लिखते सम्यक् बाव्होः कंठे च धारयेत्। राजानं वशमाप्नोति अन्यलोकेषु का कथा॥

अर्थ—सोमवारके दिन सफेद दूब केसर सफेद चिरमिठी और कापिला गायका दूध इन सबको पीसकर संध्याके समय

इस पन्द्रहके यंत्रको विलोम रीतसे लिखै और लिखकर बाहु और कंठमें बांध देवै तौ राजाभी वशीभूत होजाताहै और मनुष्योंका तौ कहनाही क्याहै॥

मंगलवारकी प्रयोगविधि।

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं च पक्षिकं॥ यंत्रेण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत् ॥ तस्य द्वारे खनद्भूमौ भवेदुच्चाटनं ध्रुवम्॥

अर्थ-मंगलवारके दिन कौवेकी पंखकी कमलसे उसीके रुधिरसे मुर्दैके वस्त्रपर नाम लिखकर उसीके द्वारकी भूमिमें गाड देवै तौ निश्चय उस मनुष्यका उच्चाटन होय॥

बुधवारकी प्रयोगविधि ।

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशररोचनं ॥ यंत्रं लिखित्वा तेनैव तस्य वार्तां समाचरेत् । सर्षपतैलेन प्रज्वाल्य मंत्रमष्टोत्तरं जपेत्। नृपकाले कज्जलंकृत्वा त्वाञ्जयेत् मोहनं जगत् ॥

अर्थ-बुधवारके दिन नागकेसर और गोरोचनसे यंत्रालिख

कर बत्ती बनालेवै और सरसोंके तेलमें उसे जलाकर मनुष्यकी खोपडीपर काजल पाडै और पूर्वोक्त मंत्रको एकसौ आठ बार जपकर काजल लगावै तौ वशीकरण हो जाय ॥

गुरुवारकी प्रयोगविधि।

गुरुवारे हरिद्रादि रोचनं घृतामिश्रितम् । यंत्रराजंसमालिख्य यस्य नाम समध्यकं ॥ आसने निखनेच्चैव सर्व आकर्षणं भवेत् ॥

अर्थ–गुरुवारके दिन हलदी, गोरोचन, घी ये मिलाकर यंत्र लिखै बीचमें नाम लिखदेवै और आसन नीचे दाबले तौ आकर्षण होय ॥

भृगुवारकी प्रयोगविधि।

भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्टमधूनिच ॥ यंत्रराजंतु संलिख्य भूर्जपत्रे सुशोभनं ॥ दृष्ट्वा तु तस्य आयाति प्राणैरपि धनैरपि ॥

अर्थ–शुक्रवारके दिन कपूर, और बच कूट और शहत

मिलाकर इस यंत्रराजको लिखै तौ इसे देखकर धन और प्राण दोंनो लेकर स्त्री चली आती है ॥

शनिवारकी प्रयोगविधि ।

शनिवारे चिताकाष्ठं पंचदशीं विलोमकं । लिखेत यस्य च नामानि स्मशाने निखनेदपि ॥ कुक्कुटस्यातिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः ॥

अर्थ–शनिवारको चिताके काठकी कलमसे मुर्गेके रुधिरसे उलटा यंत्र लिखकर मरघटमें गाडै उसपर जिसका नाम लिखा हो वह अवश्य मर जाय ॥

यंत्र लिखनेकी विधि ।

चन्द्र नेत्र तथा वन्हि वेदबाणरसस्तथा ॥ मुनिनागाग्रहाश्चैव पञ्चदशी प्रकीर्तितः ॥

अर्थ–एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, और नौ ये अंक पन्द्रहका यंत्र बनानेमें काम आते हैं ॥

पन्द्रहके यंत्रकी अन्य विधि ।

बडकी कलमसे कृष्णपक्षकी चौदससे इस यंत्रको लिखना

प्रारम्भ करै तौ धर्म अर्थ काम मोक्ष मिलै । अनारकी कलमसे एक सहस्र पृथ्वीपर लिखै तौ बंधसे छूटै और स्वामीसे मित्रता होय ॥ पीपलकी कलमसे लिखै तो दरिद्रका नाश होय ॥

गोमूत्र, मनसिल, कपूर, तगर, गोरोचन इनकी स्याही बनाकर पीपलकी जड़की कलमसे भोजपत्रपर इस यंत्रको एक सहस्र लिखै तौ मनोवांछित कार्य सिद्ध होय ॥

बेलपत्रका रस. हारिताल मनासिल इनको घोलकर बेलकी कलमसे दो सहस्र मंत्र एकान्त और शुभ स्थानमें बैठ कर पृथ्वीमें लिखै तौ मनोवांछित कार्य सिद्ध होय ॥

आकके पत्तोंके रससे आकके पत्तेपर १०८ यंत्र लिखै और कीकरके वृक्षसे बांध देवै तौ इन्द्रके समान भी जो प्रबल शत्रु होवै तौ भी उसको ज्वर और देहशूल उत्पन्न होगा ॥

हलदीको जलमें घिसकर १०८ यंत्र पत्थरपर लिखकर बैरीकी चौखटमें गाड देवै तौ भाई, बेटे आदि नातेदारोंसे कलह होवै ॥

ओंगाके रससे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें बांधै तौ तिजारी चौथैया आदि सब प्रकारके ज्वर जाते रहते हैं ।

भांगरेके रससे इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर बाहु और हृदयमें धारण करै तौ शास्त्रार्थमें जीते ॥

पन्द्रहके यंत्रका मंत्र ।

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाहा ॥

विधि ।

पन्द्रहके यंत्रकी गोली चूनमें बनाकर सवा लक्ष मछलियों-को डालै और इस मंत्रको पढता रहै सन्तानके अर्थ इस यंत्र को शतावरके पत्तोंपर लिखै । भाग्यवृद्धिके लिये बड़के पत्तों पर । देश अर्थके लिये कमलपत्रपर । काम अर्थके लिये कां-सीके पात्रपर । भोजनके लिये केलेके पत्तेपर इस यंत्रको लिखै॥

यंत्र लिखनेकी कलम ।

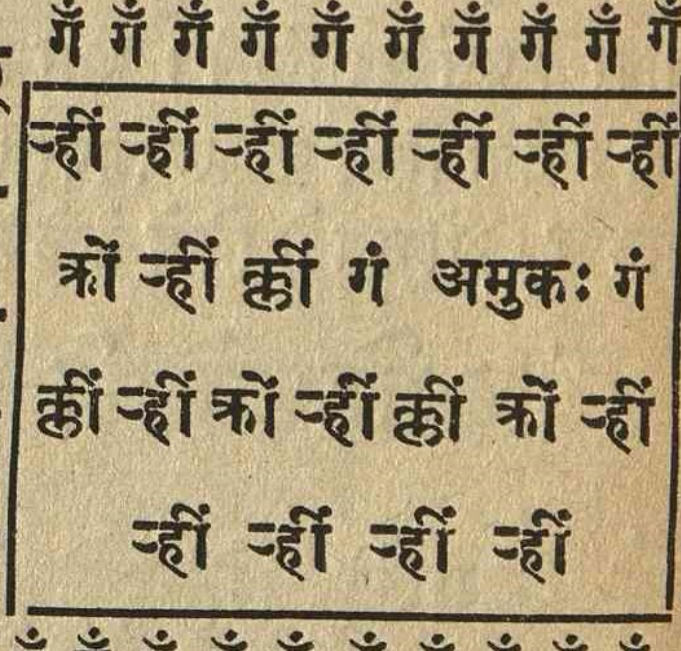
सर्व कामकी सिद्धिके लिये चमेलीका कलम आकर्षणके लिये जामनकी कलम स्तम्भनके लिये बड की कलम, वशीकरणके लिये कुशाकी कलमसे लिखै तथा शुभकामके लिये सोने रूपेकी कलमसे

केसर चन्दन अगर कपूर और कस्तूरीसे लिखै.

पतिवशीकरण यंत्र ।

एक लम्बा चौड़ा ऐसा भोजपत्र लावै जिसमें छेद न हों फिर अनामिका उंगलीका रुधिर और हाथीका मद, जावक और गोरोचन ये चारों चीजें मिलाकर चमेलीके काठकी कलमसे इस यंत्रको लिखै

फिर एक सुन्दर शुद्ध खेतसे कालीमिट्टी लाकर उसकी गणपतिकी मूर्ति बनावै और उस मूर्तिके उदरमें इस यंत्रको रख देवै और धूप, दीप, फूल, माला आदिसे पूजन करके इस मंत्रका उच्चारण करै ॥



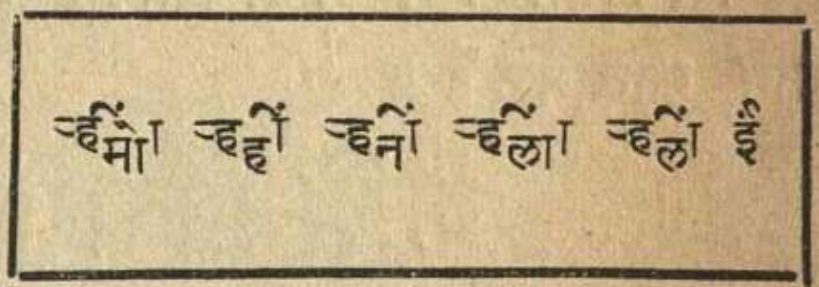
मंत्र ।

देव देवगणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत ॥ देवदत्तं महावश्यं यावज्जीवकुरुं प्रभो ॥

इस मंत्रका उच्चारण करके हाथभर गहरा एक गड्ढा खोदकर उसमें उस मूर्तिको रख देवै ऊपरसेमिट्टी दाब देवै तौ वह मनुष्य गणेसजीकी कृपासे जबतक जीवैगा वशीभूत रहेगा.

कालानल स्वामी वशीकरण मंत्र ।

यह यंत्र इस तरह लिखा जाता है कि एक तीन रेखाओंसे आवृत चतुष्कोणमें उतनी ह्रीं लिखै जितने उस साध्यके नाममें अक्षर होते हैं और नामके हरएक अक्षरको ह्रींके गर्भमें रख देवैं अन्तमें एक ईकार लिख देवै यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखा जाता है इस यंत्रको लिखकर



एक चांदीकी प्रतिमाके हृदयमें रखकर उस मूर्तिका पूजन करै और चौदसकी रातको चूल्हेके रायेमें पृथ्वी खोदकर इसको गाड देवै तथा बकरेका रुधिर, भात और पूजा करके इनका बलिदान करै इस मंत्रको पढता जाय ॥

मंत्र ।

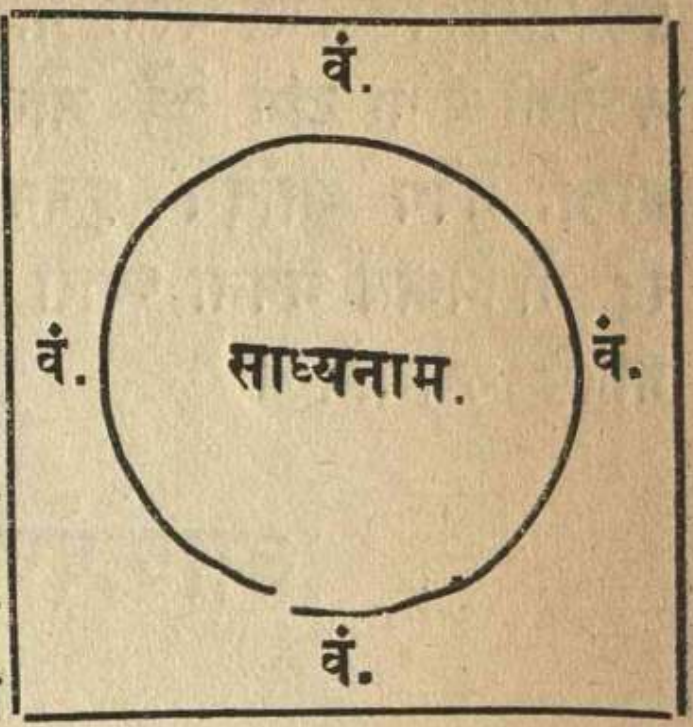
ओं महाकालाय स्वाहा ॥

इस मंत्रसे १०८आहुति देवै तौ कैसाही हठी क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वशीभूत हो जायगा इस यंत्रका नाम कालानल है ॥

अग्नि निवारण यंत्र ।

हे भवानी यह यंत्र वह है कि जहां यह स्थित होता है अग्निका भय नहीं रहताहै जिसके हाथमें यह यंत्र होता है उसको स्वप्नमें भी अग्निका भय नहीं होता है ॥

विधि।



एक लम्बे चौड़े भोजपत्रपर चन्दन, गोरोचन, कपूर, इनसे इस यंत्रको लिखै फिर इसको त्रिलोहके तावीजमें–मढ़वाकर भुजा या गलेमें बांधै अथवा घर के बीचमें दूधमें डाल देवै और नित्य प्रति इसका पूजन करता रहै और एक ब्राह्मणको भोजन करादेवै इससे अग्निका भय कभी नहीं रहता है यह यंत्र देवीयंत्र है ॥

यात्रास्तम्भन यंत्र।

यदि कोई प्यारा हितू परदेशको जाता हो और उसे रोकना चाहै तौ इस यंत्रको करै।

विधि।

इस यंत्रको काठके तख्तेपर खड़ियासे लिखे जिसके नामका यंत्र सिद्ध करना चाहै उसका नाम जकारके

बीचमें लिख देवै इस तरह विधिपूर्वक इस यंत्रको लिखकर घरके बीचमें इस तख्तेको ओंधा टांग देवै और फूल, माला, नैवेद्य आदिसे पूजन करता रहै तौ निश्चय अपना प्यारा यात्रामें जानेसे रुकजाय ॥

लं लं

ज

साध्यनाम

लं लं

आकर्षण यंत्र ।

इस यंत्रको गोरोचन, केसर, चन्दनसे भोजपत्र पर लिखै और फिर धूप, दीप, फूल, माला, नैवेद्य आदिसे विधिवत् पूजा करके ऊपरसे पीला सूत लपेट देवै मनुष्यके शरीरके उबटनेकी मूर्ति बनाकर उसके हृदयमें इस यंत्रको रख देवै और उबटनेहीसे ढककर तीन दिन तक सायंकालके समय खैरकी अग्निसे तपावै । तपाते समय इस मंत्रका उच्चारण करता रहै ॥

सः सः सः सः सः इ०
सः सः क्रों ह्रीं क्रों
साध्यनाम.
ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों
ह्रीं क्रों ह्रीं दर

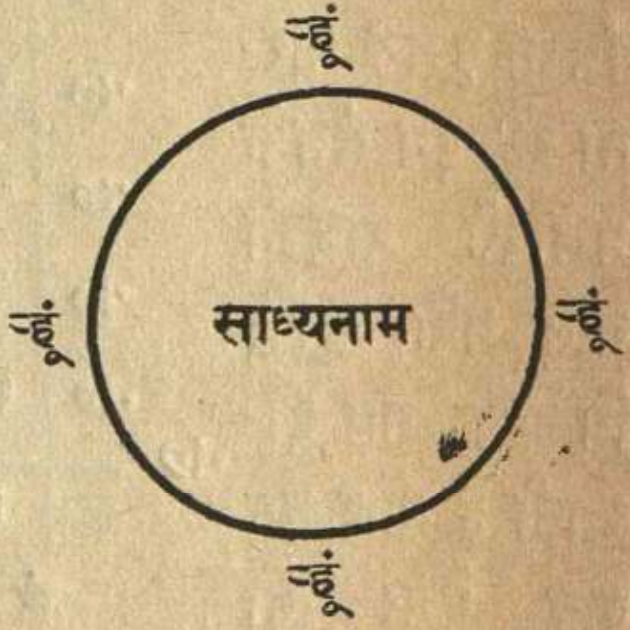
तापन मंत्र ।

ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय आकर्षय माणिभद्र स्वाहा ॥

इस रीतसे करनेपर देशान्तरमें गया हुआ मनुष्य जो चाहै जितनी दूरपर क्यों न हो तत्काल खिचाहुआ चला आताहै ॥

मित्रदर्शन यंत्र ।

लालचन्दन और अपना रुधिर इन दोनोंसे भोजपत्रपर इस यंत्रको लिखकर गंध पुष्पसे पूजन करै धूप दीप नैवेद्य अक्षत पुष्प माला चढावै फिर इस यंत्रको घृतमें डाल देवै तौ तीन दिनके भीतर आकर मिलै यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय है इसे किसीको न देवै न किसीसे इसका भेद कहै ॥



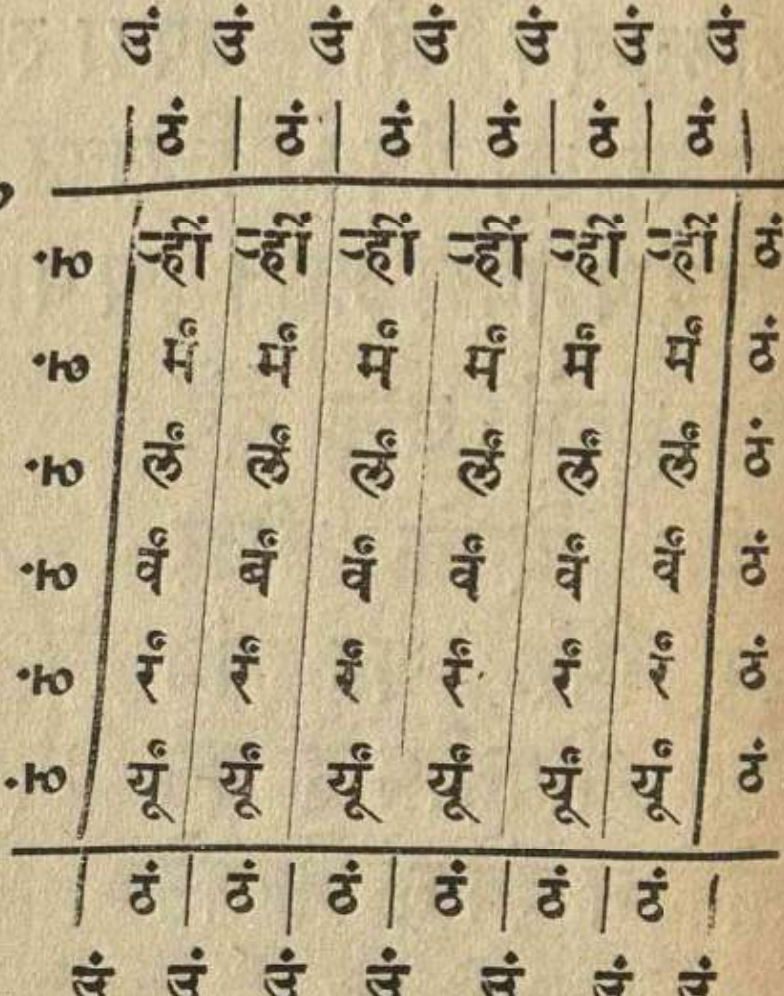
बैरियोंके स्तम्भनका यंत्र।

इस यंत्रको स्वच्छ लम्बे चौडे छिद्ररहित एक भोजपत्र लिखकर विधिवत् पूजन करै और नीचे लिखे हुये मंत्रका जप करै ॥

मंत्र।

अँ ऱ्ह ल्यीं ल ल ल ल अमुकस्य मुखं स्तंभय स्तंभय ठःठःठःठःठःठःस्वाहा ॥

इस मंत्रको सायंकालके समय तीन दिनतक १०८ प्रति दिन जपै और विधिवत् पूजन करता रहै इस यंत्रके प्रभावसे शत्रुकी गति, मति, बुद्धि बिलकुल नष्ट होजाती है और वह शत्रु ऐसा हो



जाताहै जैसा मूढ और गूंगा, और ऐसा मालूम होताहै कि उसपर कोई ग्रह लदगया है ॥

सर्वरक्षा यंत्र ।

इस यंत्रको कस्तूरी चन्दन, कपूरसे भोजपत्र पर लिखकर धूप, दीप, चन्दन, फूल माला अक्षत, नैवेद्यसे पूजन करै और फिर धन, वस्त्र आदिसे ब्राह्मणोंका पूजन करके तांबेके यंत्रमें दाहिनी भुजा और स्त्रीके गलेमें बांधै इस यंत्रके धारण करनेसे मन प्रसन्न रहताहै भाग्य बढताहै सम्पूर्ण भय दूर हो जातेहैं और अष्टासिद्धिकी उसे प्राप्ति होती है.

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

डाकिनीत्रासन यंत्र ।

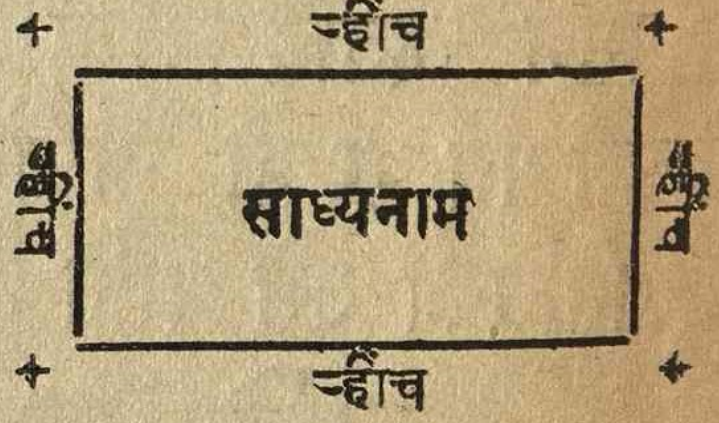
जब किसी मनुष्यको भूत, प्रेत पिशाच, डाकिनी, ब्रह्मराक्षस किसी स्त्री पुरुष या बालकको ग्रसलेवैं तब इस यंत्रको करै ॥

विधि ।



इस यंत्रको एक नवीन स्वपडेपर स्वडियासे लिखै और फल, फूल, उपहारसे पूजन करके धूलसे ढक देवै और अग्निके ऊपर उसको रखकर खैरके कोयलोंसे फूंके तो वह बड़ा भूत रोता हुआ और कांपता हुआ तत्काल भाग जाता है और बालकको तत्क्षण छोड जाता है ॥

बालरक्षाका यंत्र ।



इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर विधिवत् पूजै और त्रिलोहमें इसको मढ़वाकर गलेमें बांध देवै तो शारीरिक और मानासिक सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं, ईर्ष्या, कोप, दोष, दूर होजाते हैं दांत निर्विघ्न निकल आते हैं तथा बालकको

दूधका दोष भी कभी नहीं होनेपाता है ॥

नजरपर २० का यंत्र ।

इस यंत्रको भोजपत्रपर रक्तचन्दनसे लिखकर धूप देकर तांबेके तावीजमें मढवाकर उस बालकके गलेमें बांध देवै जिसको नजर लगगई होय तो नजर तत्काल दूर हो जायगी ॥

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

एकांतरे का रामबाण यंत्र ।

इस यंत्रको ठीकरीपर लिख कर भुजामें बांधै तौ एकान्तरा जाता रहै ॥

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

नित्यज्वरका यंत्र ।

इस यंत्रको ठीकरीपर लिखकर उस मनुष्यके हाथसे कुएमें गिरवावै जिसको

८२	८१	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८७

ज्वर आता होय तौ उसका नित्यका ज्वर जाता रहैगा ॥

बुरेसुपनेका यंत्र ।

इस यंत्रको भोजपत्र पर लिखकर सोते समय सिरहाने धर लेवै तौ बुरा स्वप्न न दीखै ॥

हं	सं	षं	फं
षं	दं	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	दं

मसान दूर करनेका यंत्र ।

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर गलेमें बांधै तौ मसान दूर हो ॥

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

प्रीति उत्पन्न करनेका यंत्र ।

इस यंत्रको लिखकर फुलेलमें जलावै तौ प्रीति उत्पन्न होय ॥

२१	२६	२५
२८	२४	२७
२३	२२	२०

प्रीति नाशका यंत्र ।

इस यंत्रको लिखकर कडवे तेलमें जलावै प्रीति नाश होय ॥

२१	२२	२३
२०	२४	२९
२५	२६	२१

छाया भस्म करनेका यंत्र ।

इस यंत्रका पलीता बनाकर जलावै तौ छाया भस्म हो जाय ॥

२४	१९	२०	१	२८	३९	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	८	६	४६
४५	३६	३४	२५	५६	१४	५
४	५५	४२	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४९	४०	३१	२२

प्रीतिनाशक दूसरा यंत्र ।

इस यंत्रको कंटाईके पत्रपर लिखकर सुखा ले फिर जिस जगह सोवै तब उसके ऊपर डाल देवै प्रीत टूट जाय ॥

४१	१८	२१
२०	३०	४०
३९	४२	१९

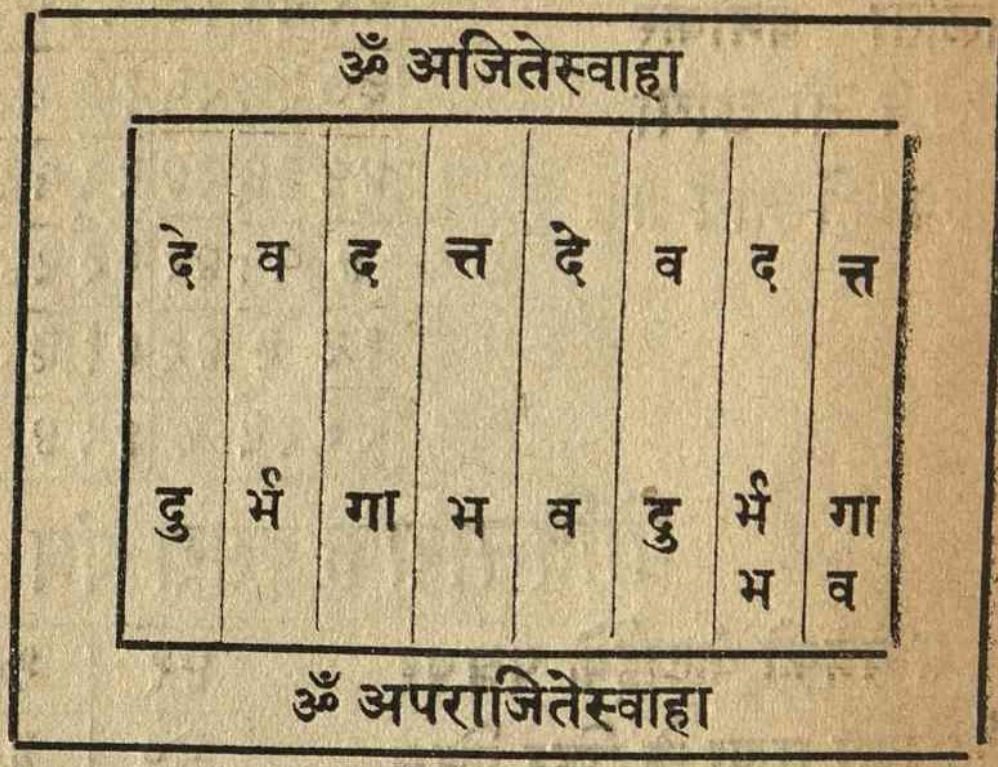
बलाय दूरकरने का यंत्र ।

इस यंत्रको चार भोजपत्र के टुकड़ोंपर जुदे २ चार लिखकर चारों कोनोंमें गाड़ देवै तौ सब बलाय दूर हो जाय ॥

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
२	७५	६८	६
३९	५	४	११

नरनारी विद्वेषण यंत्र ।

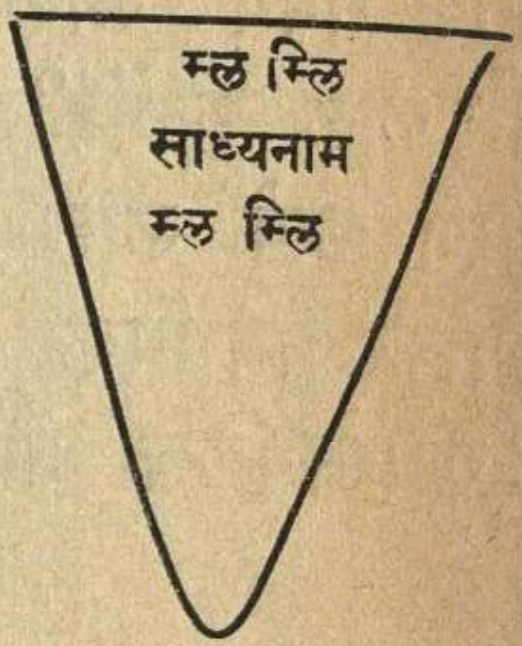
इस यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचन और कुंकुम



की मिट्टीले आवै । उस मिट्टीसे गणपतिकी मूर्ति बनाकर उस यंत्रको उसपर डाल देवै और फिर उस गणपतिकी मूर्तिको गौके दूधसे स्नान करावै अनेक तरहके फल, फूल, धूप, दीप और मोदकोंसे पूजन करके स्तुति करै । इस तरह पूजन करके शराब संपुटमें रखकर संपुटके ऊपर अघोर अघोर दो बार लिख देवै और पृथ्वीमें गाड देवै तो स्त्री पुरुषोंमें परम वैर होवै ॥

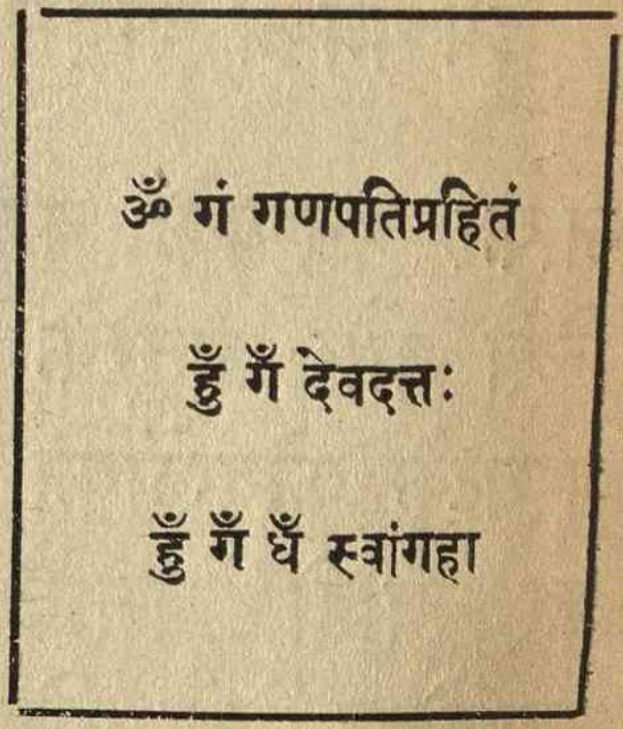
शत्रु वशीकरण यंत्र।

इस यंत्रको चौदसकी रात्रिके समय श्मशानमें जाकर मनुष्यके कपालपर लिखै और धतूरेके रसमें मरघटके कोयलोंको घिस-कर स्याही बनावै और नग्न होकर लिखै फिर शरा-व संपुटमें इस यंत्रको रख



कर बलिमांसादि उपहार और अपने रुधिरसे पूजन करै और उसी जगह गाडकर प्रतिदिन रातके समय उस पर अग्नि जलावै ऐसा करनेसे तीसरे दिन ज्वर होकर बढता चला जाता है॥

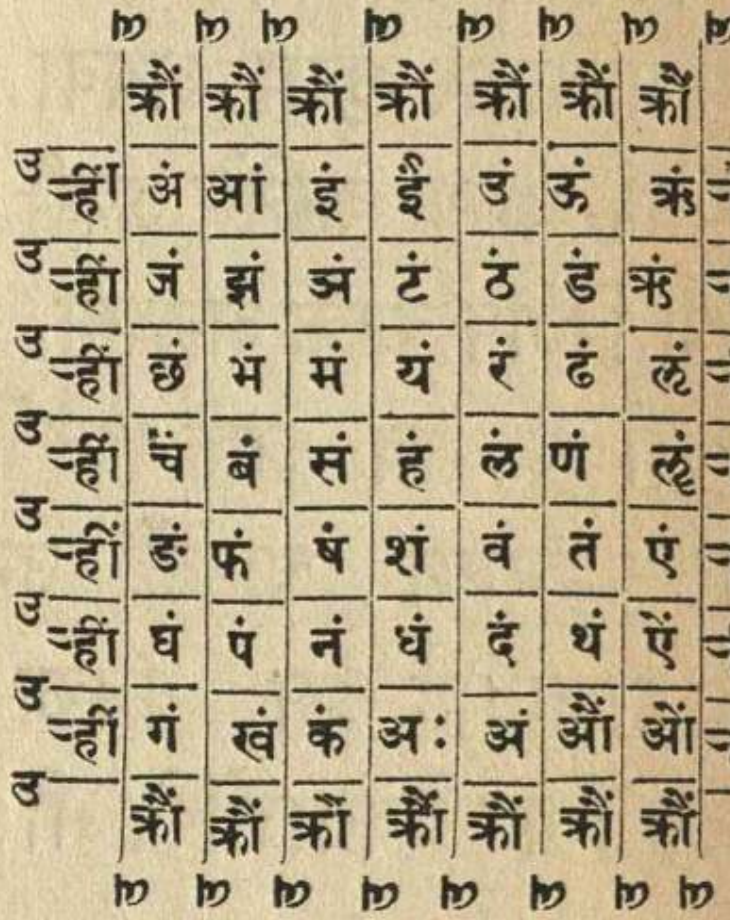
उच्चाटन यत्र ।



इस यंत्रको चतुर्दशीकी रातके समय लाल वस्त्र और लाल फूलोंकी माला धारण करके लाल चन्दन लगाकर अनामिका उंगली के रुधिरसे लिखै. और लाल रंगकेही पुष्पादिकसे पूजन करके ब्राह्मणोंको भोजन करावै दक्षिणा देवै । फिर इस यंत्रके टुकडे करके उच्छिष्ट भातमें मिलाकर श्मशानमें जाकर कौओंको खिला देवै तो उच्चाटन होय ॥

शान्तिक पौष्टिक यंत्र।

सुन्दर तिथि और शुभ दिनमें इस यंत्रको गोरोचन, केसर, कपूर, और कस्तूरीसे चमेलीके काठकी कीलसे कांसी की थाली पर लिखै और फिर अत्यन्त भक्ति पूर्वक कमलके फूल, मालती, केतकी, चमेली, मूषिका, बकुल इनके पुष्पोंसे पूजनकरै, ऋतु के फल चढावै,



कपूर, तांबूल, धूप, दीप और सफेद वस्त्रसे पूजन

करै परन्तु सुगंधरहित और लाल रंगकी कोई वस्तु न चढावै इसी तरह नैवेद्यादिकसे तीन दिनतक पूजन करता रहै, दुर्गापाठ करता रहै, घी और खीरका ब्राह्मणोंको यथेष्ट भोजन तीन-दिनतक करावै और स्वयं तीन दिनतक पृथ्वी-पर सोवै फिर चौथे दिन इस यंत्रको निकालकर जंत्रमें मढवाकर भुजा अथवा गलेमें धारण करै इस यंत्रके धारण करनेसे ऊपरी बाधा दूर होजाती है तथा विशेष करके अलक्ष्मी, कलह और मन्द भाग्यता ये सब जाते रहते हैं तथा अन्य जो बाधा पहुंचाया चाहतेहैं उनकी सब करनी वृथा होजातीहै इस यंत्रका नाम शान्तिक पौष्टिक है यह देवताओंको भी दुर्लभ है ॥

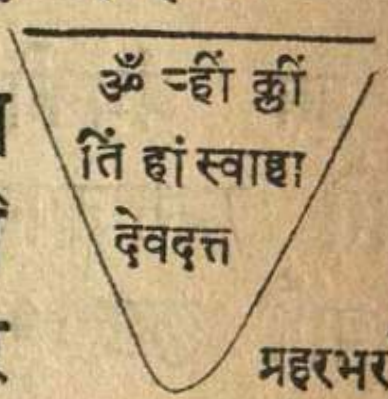
दूरदेशज मारण ।

इस यंत्रको मनुष्यके कपालपर स्मशानमें



यंत्रको शराब सम्पुटमें रखकर राख भर देवै और अग्निके ऊपर रख देवै तो चाहै जिस देशको क्यौं न गयाहो उसको कालज्वर चढैगा ॥

मानिनी आकर्षणका यंत्र ।



इस यंत्रको दाहिने हाथकी अनामिका उंगलीके रुधिरसे बांये हाथकी हथेलीपर लिखले और

प्रहरभरमें

फूल पान, धूप दीपसे पूजन करै तौ वह स्त्री आजाय ॥

मारण यंत्र ।

इस यंत्रको हाथीकेम-दमें लिखकर कागदपर मसानमें गाडै तौ शत्रुके मरनेमें सन्देह नहीं ॥

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

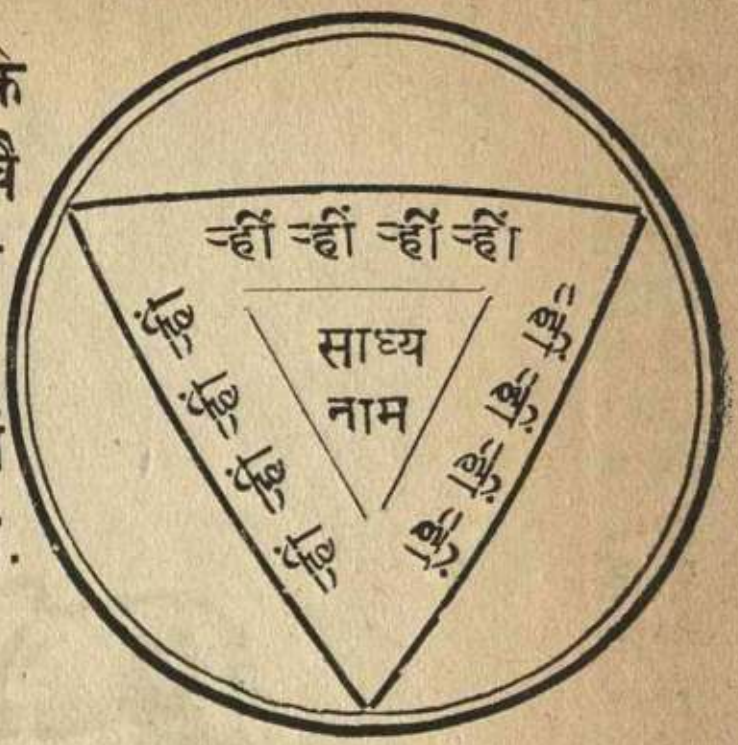
विघ्ननाशक यंत्र ।

इस यंत्रको मालकांगनीके रससे कागजपर लिखकर गले-में बांधै कुछ भय नहीं होय ॥

उं	मं	दे	व
दं	त	को	मं
त	र	लं	ष
तं	गु	र	गो

अन्य उच्चाटन ।

इस यंत्रको काले कुत्तेके रुधिरसे भोजपत्र पर लिखै और विधिवत् पूजनकरके कुत्तेके गलेमें बांध देवै ज्यों ज्यों वह कुत्ता दौडेगा त्यों त्यों वह मनुष्य भी भागेगा.



व्याघ्रादिसे बचनेका यंत्र ।

यदि बनके बीचमें कोई सिंह, व्याघ्र रीछ भेडिया आदि मांसाहारी पशु आ घेरैं तब इस यंत्रको बांये हाथकी हथेली पर थूंकसे लिख लेवै और अनामिका उंगलीमें से थोडासा रुधिर निकालकर उसके चारों ओर लगा देवै तो वह दुष्ट जंतु तत्काल भाग जायगा ॥



चतुर्थः पादः समाप्तः ।



॥ श्रीः ॥

कौतुकरत्नभांडागार.

अर्थात्

बृहदिन्द्रजाल.

पंचमःपादः ।

मथुरानिवासी श्रीकृष्णलाल संगृहीत.

जिसको

श्यामलाल श्रीकृष्णलालने

बम्बईमें

"ज्ञानसागर" यन्त्रालयमें मुद्रित कराया.

सम्वत् १९६४, शके १८२९.

॥ ॐ ॥

श्री हरिम्वन्दे

श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

मैसमैरिज्म प्रारंभः ।

यह एक प्रकारकी योगविद्या है जिसे यूरोपनिवासी मैसमैरिज्म कहते हैं यह हमारे घरकी विद्या है और हमारे ऋषि मुनि महात्मा इस विद्यासे अच्छी तरह परिचित थे अब समयके फेरसे हम इसको यहांतक भूल गये हैं कि कोई इस विद्याका ज्ञाता मिलनाही कठिन होगया है हां अबभी कुछ अंशमें इसका दृष्टान्त प्रति दिन हमारी दृष्टिगोचर हुआ करता है जैसे रोगीको मंत्र पढे जलका पान कराना, मोर पंखके गुच्छेका जिसे मोरछल कहते हैं झाड़ा देना, बुहारीकी सींकोंसे झाडना, रोगीको दिखाकर पृथ्वीपर चाकूसे लकीरें खींचना इत्यादि २ बहुतसी बातें दिखाई देती हैं पर इन बातोंकी यहांतक दुरवस्था है कि न तौ उन बातोंके करनेवालेहीको विश्वास है और न उसहीको पूर्ण विश्वास है जिसपर ये बातें की जाती हैं। जब यह हाल है

तौ फल मिलानाही कठिन है। हां हम तो आपको एक ऐसा दृष्टान्त देते हैं कि जिसे आपको स्वीकार करना पड़ेगा जब श्री स्वामी शङ्कराचार्यका शास्त्रार्थ मण्डणमिश्रकी स्त्रीसे हुआ था और उस स्त्रीसे पराजित हो गये थे तब उन्होंने इसी अपने योगबलसे एक राजाके मृतक देहमें प्रवेश करके कामशास्त्र सीख कर फिर अपने देहमें आकर उस स्त्रीको पराजित किया, राजपूतानेकी डाकन संज्ञक स्त्रियां इस बातका प्रत्यक्ष उदाहरणही हैं कि आंख मिलातेही मनुष्य वशीभूत

अब हम यह दिखाते हैं कि मैसमैरिज्म क्या है और इससे क्या क्या लाभ हैं.

प्रत्येक मनुष्यके शरीरमें ऐलेक्ट्रिसिटी अर्थात् एक प्रकार की तड़ित्शक्तिहै इस शक्तिद्वारा हरएक मनुष्य अपने मनके सब बिचारोंको दूसरेमें प्रवेश कर देताहै इस नियम-के साधनहीको मैसमैरिज्म कहते हैं ॥

जब इस शक्तिकी प्रचालनामें पूरा अभ्यास हो जाताहै तब बाहरी बस्तुओंसे बिजली खींचना जो कि इच्छा शक्ति (विलफोर्स) के द्वारा होताहै सहजमें होने लगताहै। इस कार्यके साधनमें केवल मनको एकही पदार्थपर दृढ करके लगाना पडताहै इस बातका उदाहरण तौ आपने प्रेमियोंकी कहानियोंमें प्रत्यक्ष देखा होगा अर्थात् एक सच्चा

प्रेमी अपने एकान्त मनोयोगके कारण अपने प्रेमपात्रके चित्तका आकर्षण तत्काल करलेताहै.

मैसमैरिज्मके भेद ।

इस विद्याके दो भेद हैं एक क्योरेटिव अर्थात् आरोग्य कारक, दूसरा फैनोमिनैल अर्थात् अलौकिक कार्य साधक,

क्यूरेटिव मैसमैरिज्मके लाभ ।

(१) इस कार्यसे बहुतसे रोग दूर हो जातेहैं (२) इस विद्यासे रोगीको विना दरद किये शस्त्रचिकित्सा हो सक्ती है (३) रोगोंकी पहचान भी होती है (४) गठियावायु हाथ पांवके दर्द पसलीका दर्द आदि बहुतसे रोग शीघ्र दूर होजाते हैं ॥

मैसमैरिज्म करनेवालेको फारसीमें आमिल अंग्रेजीमें औपरेटर और संस्कृतमें प्रयोक्ता कहते हैं. जिसपर इस विद्याका प्रयोग कियाजाताहै उसे मामूल सबजैक्ट या पात्र कहते हैं ॥

मैसमैरिज्मकी अवस्था ।

मैसमैरिज्मकी अवस्था तीन हैं यथा वेकिंगस्टेट अर्थात् जाग्रत् अवस्था, सौम नैम्युलिज्म अर्थात् निद्रा भ्रमणावस्था, क्लेयरवौयैन्स अर्थात परोक्षदर्शिता ॥

जाग्रत् अवस्थाका लक्षण ।

इस अवस्थामें पात्रके बाह्य अवयवोंपर प्रयोक्ताका आधिपत्य होताहै, पात्रका ज्ञान भी ठीक बना रहताहै और समयमें जो कार्य वह करताहै या कहताहै उसका ज्ञान उसे यथावत् रहाताहै इस अवस्थासे पात्र जगता तौ रहताहै परन्तु अपने देहपर अधिकार नहीं रखता इस दशामें रोगीके शस्त्रकर्मभी हो सकताहै. परंतु प्रयोक्ताको उस समय यह इच्छा करनी होगी. कि पात्रपर शस्त्रकर्मकी कोई पीडा या वेदना न हो इस दशामें प्रयोक्ताका पात्रपर इतना अधिकार हो जाताहै कि जो प्रयोक्ताकी इच्छा होतीहै वही पात्र करताहै ॥

निद्राभ्रमणावस्थाका लक्षण ।

इस अवस्थामें शारीरकी गर्मी, रुधिरका घूमना और अन्तर ज्ञान बने रहते हैं परन्तु प्रत्यक्षमें पात्र सोता हुआ दीखताहै । यद्यपि पात्रकी आंखें बन्द रहतीहैं तथापि वह प्रत्येक बातको देख और सुन सक्ताहै और उसकी यहांतक शक्ति होजाती है कि वही भीतरकी वस्तुओंको भी बना सक्ता है यहांतक तौ है कि अत्यन्त दुःसाध्य कामोंको साधन कर सक्ताहै ॥

परोक्षदर्शिताका लक्षण ।

यह अवस्था सबसे प्रथम श्रेणीकी है इस अवस्थाके प्राप्त

योग्यपात्रोंके चिन्ह।

१ ऐसे मनुष्य जिनके केश गुलझट खाये हुए सुन्दर और भूरापन लिये हुएहों। जिनके मुखकी बनावट रंग, ढंग सब सांचे ढाल बनी हो और जो दुर्बल और रोगग्रस्त रहते हों।

२ वे मनुष्य जिनका स्वभाव प्रयोक्तासे विरुद्ध हो और बलमें भी उससे न्यून हों॥

३ वे मनुष्य जिनकी आंखकी पुतलियां कुछ सफेदाई लिये हुएहों॥

४ वह मनुष्य जो परोपकारी, ईश्वरमें श्रद्धालु, दुखियोंपर दया रखनेवाला हो और अपवित्र वस्तुओंसे घृणा करताहो.

५ सुकुमार और कोमलांग स्त्रियां तथा लघुवयस के शिशु॥

प्रयोगकी पहिली रीति।

जिस मनुष्यपर प्रयोग करना चाहै उसे दक्षिणकी ओर मुख करके बिठा देवै और प्रयोक्ता उससे कुछ ऊंचे आसनपर सन्मुखकी ओर बैठजाय और पात्रको अपना मन वसीभूत कर देनेके लिये प्रेरणा करै ऐसा होनेपर प्रयोक्ताको उचित है कि पात्रकी ओर दृष्टि बांधकर देखै और अपने दोनों हाथोंकी उंगलियां फैलाकर पात्रके सिरसे उदर तक उतारै और फिर नीचेतक लेजाय परन्तु प्रयोक्ताके

हाथसे पात्रकी देहका स्पर्श न होने पावै और हाथभी देहके अत्यन्त निकट चिपटा हुआ सा रहै इसी तरह कईबार करते रहो.

प्रयोगकी दूसरी रीति ।

मैसमैरिज्मके प्रयोगकी दूसरी विधि यह है कि मुख और सिरको छोड़कर पसवाड़ेकी ओर हाथोंको उतारे परन्तु अपना चित्त सब ओरसे खींचकर एकाग्र करलेवै, जिस मकानमें यह प्रयोग किया जावै उसमें अधिक भीड़ और शब्द न होता हो इस प्रयोगके करनेसे पात्र थोड़े ही देरमें निद्रालु हो जायगा निद्राके आतेही प्रयोगका बन्द कर देना उचित है ॥

तीसरी रीति ।

तीसरी रीति यह है कि प्रयोक्ता और पात्र दोनों अपने साह्मने बैठ जांय और प्रयोक्ता अपनी उंगलियों और अंगूठेके बीचमें पात्रके अंगूठोंको पकड़कर धीरे २ दाबै इस बातके करते समयही पात्र प्रयोक्ताकी ओर प्रयोक्ता पात्रकी ओर इकटक देखता रहै ऐसा करनेसे दस बारह मिनटहीमें दोनोंके हाथका ताप समान होजायगा । फिर पात्रके अंगूठोंको छोड़कर पूर्व रीतिसे हाथोंको सिरपर लेजाकर धीरे धीरे उतारना प्रारम्भ करै परन्तु इस बातका सदैव ध्यान

बनाही रहना चाहिये कि हाथ पात्रके शरीरसे स्पर्श न करजायँ.

सम्यक् प्रयोगकी परीक्षा।

पात्रपर अच्छी तरह प्रयोग हुआ या नहीं इसकी यह परीक्षा है कि प्रयोग करते २ पात्रकी आंखें झपकी चली जाती हैं और थोड़ी देरमें गाढ निद्राके वशमें पड़कर अचेत होजाता है इस निद्राको कोमा कहतेहैं॥

यदि पात्रके शरीरको कोई अवयव ऊंचा उठाकर छोड़ दो और वह बिना रुकावट ईंट पत्थरकी तरह धड़ाम गिर-पडै तौ जानलौ कि प्रयोग अच्छी तरह होगया॥

यदि शब्द होनेसे चकित होकर जग उठै तौ प्रयोग ठीक नहीं हुआ इस अवस्थामें फिर प्रयोग करना चाहिये।

यदि बोलनेपर गाढ निद्राही बनी रहै तौ प्रयोगका होना ठीक समझो॥

इस तरह प्रयोगके ठीक होनेपर पात्रसे प्रश्न करो कि जो हमने प्रयोग किया है वह उत्तम भी है या नहीं हमारे प्रयोगसे कोई और उत्तम विधि हो तौ बतलाओ इत्यादि प्रश्न का उत्तर पाने पर पात्रके कहनेके अनुसार कार्यसाधनमें त्पर हो जाओ॥

प्रयोगके उतारनेकी रीति।

प्रयोग करनेकी रीतिसे प्रयोग उतारनेकी विधि विपरीत है इसमें पांवकी ओरसे हाथोंको सिरकी ओर लेजाओ इसी रीतिसे पन्द्रा या बीस वार करनेसे पात्र सचेत होजायगा परन्तु यह कामभी बहुत धीरे २ करनेकाहै ॥

यहांतक तो हम अपना संक्षेपसे अपने पाठकोंको मैसमैरिज्म-का परिचय करा चुके ऊपर जो बयान किये हैं इन प्रयोगों-के करनेसे पात्रमें इस तरहकी शक्ति पैदा हो जाती है कि वह परोक्षकी सब बातोंको तत्काल बता सक्ता है। अब हम नीचे कुछ वे प्रयोग लिखते हैं जिससे रोगी मनुष्योंकी रोगसे मुक्ति हो सकती है ॥

रोगनिवारक विधिमें कर्तव्य कर्म।

(१) रोगनिवारक प्रयोग करनेके लिये ऐसा प्रयोक्ता होना चाहिये जो महात्मा जितेन्द्री परोपकारी निरपेक्ष और ईश्वरभक्त हो ॥

(२) यह प्रयोक्ता आत्मश्लाघा करनेवाला न हो और प्रशंसापानेकी इच्छासे चाहै जिसके सामने इसको न करने लगै ॥

(३) रोगीको ऐसे स्थानमें करै जहांपात्र और प्रयोक्ता दोहीहोवें.

(४) रोगके जडसे दूर होने तक प्रयोग करताही रहै बीचमें छोड देनेसे पहिले प्रयोग निष्फल होजाते हैं ॥

(५) चिकित्सा करते समय रोगीको हर प्रकारसे सावधान रक्खो और मधुर वाक्योंसे उसके जीको सन्तुष्ट रक्खो ॥

(६) प्रयोक्ता को उचित है कि सदा सावधान स्थिर चित्त और आनन्दित रहै ॥

(७) यदि रुधिरका संबंध हो तौ तत्काल आरोग्यता होतीहै ॥

(८) यह चिकित्सा सदा एकही नियमित समय पर करना उचित है क्योंकि समय बदलनेसे भी विपरीतिता होतीहै ॥

(९) रोग निवारण प्रयोग दो घंटेसे प्रतिदिन अधिक न करना चाहिये इस समयमें चाहे एकही मनुष्य पर प्रयोग या अधिक पर होवे ॥

(१०) चिकित्सा करनेके समय निडर, स्वस्थचित्त, विश्वास संयुक्त, दृढ, सज्ञान, धैर्यावलंबी कार्य्यक्षमहोना चाहिये ॥

मैसमैरिज्मद्वारा चिकित्साकी विधि।

(१) सिरके दर्दमें कुछ प्रयोक्ता ऐसा कियो करता है कि कुछ रग, नस या शिराओंको दबाकर अपना प्रयोग पहुंचाते हैं.

२ कुछलोग मोरछलसे झाड़ते हैं, ३ कोईचाकूसे झाड़ते हैं, ४ कोई बुहारीकी सींकसे झाड़ते हैं, ५ मंत्रपढाहुआ जल

पान कराके रोगको दूर करते हैं। कोई मंत्रपढकर रुजित स्थानपर फूंक मारते हैं॥

गठियाकी चिकित्सा।

इस रोगकी चिकित्सामें रोगीके शिरसे उसके हाथों की उंगलियों तक अपने हाथोंको उतारे और फिर हाथोंको फैलाये रहै फिर हाथ हटाकर बगलकी ओर हाथोंको फिर रीढ़की हड्डीकी तरफ उतारे इसी तरह प्रतिदिन नियमित समयपर करते रहनेसे रोग शांत हो जायगा॥

श्वास चिकित्सा।

जिस मनुष्य के श्वास रोग होवे उसे ओंधामुख करके लिटा देवै और एक आधा गज फलालैन लेकर उसकी चार तह करके उसकी पीठपर रख देवै इस फलालैनका एक सिरा उसके कंधोंपर लेजावै और जोरसे उसमें फूंक मारै इसी समय अपना दाहिना हाथ रोगीके पेटपर लगा देवै फिर दस मिटन तक इसी तरहसे करके उसके हाथोंके नीचे हाथोंका उतारना प्रारम्भ करै तथा रोगीके अन्तःकरणस्थानता को दत्तचित्त होकर देखते रहौ और फिर घुटनेसे लेकर पैरकी उंगलियोंतक पास कर चलो इस तरह करनेसे थोडे ही दिनमें श्वासरोग जाता रहैगा॥

उदररोगकी चिकित्सा।

जिस रोगी के पेट, हाथ, कमर, छाती आदिमें वेदना होती हो उसकी चिकित्सा इस प्रकारसे करै कि रोगीको अपने सामने बिठा लेवै और उसकी आंखमें आंख मिलाके हाथके अंगुठोंको अपने हाथोंसे धीरे २ मसलकर सब देहपर पास देना प्रारम्भ करै और थोडी देर तक अपनी हथेली भी उस रोगीके उस स्थानपर रक्खी रहने देवै जहां उसके दरद होताहो थोडीही देरमें दरद कम हो जायगा ॥

इस रीतिसे इस मैसमैरिज्म विद्यामें पूरा २ अभ्यास प्राप्त करलेनेपर बडे २ लाभ होते हैं दुर्घट घटनाओंको करने-लगताहै जिनको देखकर मनुष्य चकित होने लग जातेहैं. बडे २ रोग जो सैंकडों औषधियोंके करनेपर भी अच्छे होना असंभवहै, बातकी बातमें बिना किसी अधिक परिश्रमके उठाये मिट सकते हैं ॥

इति श्रीकृष्णलालसंकलित

मैसमैरिज्मभाग समाप्त ।

जाहिरात.

किस्सा तोतामैना—आठों भाग इसमें मैनाको तोतेने और तोते को मैनाने उपदेशरूपी ऐसी २ मनोहर कहानियां सुनाई हैं जिससे दुष्ट मर्द वा दुष्ट औरतके फंदेमें मनुष्य नहीं पड सकता है, मूल्य १ रु.

योगचिंतामणि भा. टी.—यह वैद्यकका ग्रन्थ किसीसे छिपा नहीं है परन्तु अबकी बार यह बहुतही शुद्ध करके छापा गया है देखनेपरही मालूम होगा मूल्य १। रु. डा. म. ४ आना.

शिक्षाभूषण—आजकल धनी साहूकार और व्यौपारियोंका कार्य बहुतायतसे अंग्रेजोंके साथ रहता है परन्तु अंग्रेजी न पढनेके कारण इनके साथ वार्तालापादिमें मुंह ताकते रह जाते हैं सो इस पुस्तकके याद कर लेनेसे बातचीत करना तार लिखना पढना आदि आवश्यकीय बातें आ सकतीं हैं २५० पृष्ठकी चिकने मोटे कागजपर विलायती कपडेकी जिल्दकी बंधीहुई पुस्तकका दाम २ रुपये हैं.

पत्रीवर्षदीपक मूल भाषाटीकासहित—इसमें जन्मपत्र और वर्ष पत्र बनानेकी विधि उत्तम प्रकारसे दी गई है यह पुस्तक ज्योतिषियोंको परमोपयोगी है मूल्य १। रुपया ट. ख. २ आना.

भर्तृहरिशतकत्रय—श्लोकके ऊपर अन्वयके अंक नीचे संस्कृत टीका फिर भाषाटीका दी है. एक बात औरभी विशेष की है कि महाराज प्रतापसिंहजीने जो इसके प्रत्येक श्लोकोंके दोहा छप्पय कुंडलिया आदि रचे थे वेभी प्रत्येक श्लोकके नीचे लगा दिये हैं जो खरीदले चुके हैं वेभी एकबार इसे अवश्य खरीदैंगे मूल्यभी वहीहै रु. १ डा. म. ४ आ.

निर्णयसिंधुमूल भाषाटीका सहित.

बृहत्स्तोत्ररत्नाकर—इसमें १८१ स्तोत्र हैं फिर अधिकता यह है. प्रवासमेंभी पाकिटमें रखसक्ते हैं देखिये १८१ स्तोत्रोंके दाम सिर्फ ८ आ. डा. म. १ आना.

नवग्रहस्तोत्र—जिसमें स्तोत्रके सिवाय नवग्रह जाप और सूर्यकवच हैं मू. १ आना. डा. म.) ॥ आना.

चौवीसगायत्री–भाषाटीका–जिसमें चौवीसों गायत्रियोंकी अत्युत्तम प्रकारसे भाषाटीका–बनाई गई है गायत्रीका जप सभी महाशय करते हैं परंच जब उसका भलीभांतिसे मतलब नहीं जानेंगे तो क्या है इसमें साक्षात् परब्रह्म गायत्रीका अर्थ सुगमताके साथ दर्शाया गया है जिसको सर्व छोटे बडे समझकर परम पदवी पानेकी कांक्षा रक्खेंगे दाम ६ आ. ट म. १ आना.

हिन्दीगणितप्रकाश– जिसमें हिसाब गणित बालकोंके लिये अति लाभदायक है मूल्य ४ आ. ट. स. १ आ.

शीघ्रबोध–भाषाटीकासह इसके याद करलेनेसे पाठकोंको पूरा अभ्यास ज्योतिषविषयमें हो जायगा. की० ५ आ. ट. स. १ आ.

वर्षज्ञान–भाषाटीकासहित यह ग्रन्थ तेजी मंदी बतानेकेलिये सर्वोपरि है इसमें तेजीमंदी आदिका फल पूर्णरीतिसे लिखागया है. मू. ८ आना.

हनुमानज्योतिष—इसमें जो चाहो प्रश्न कर फल तुरत मिला देखिये,

सामुद्रिक भा. टी.–इसमें हस्तरेखा देखनेका भलीभांति वर्णन किया गयाहै मू. ४ आ. ट. १ आना.

गुलबकावली–यह भी बडी मनोहर कहानी है मूल्य ८ आना.

मोहनीचरित्र–कहानीकी उत्तम पुस्तक मूल्य ८ आना.

जिव्हागुरुगणित–इसके द्वारा बालक जबानी हिसाब निकाल सकते हैं मूल्य ३ आना. दूसरा भागका मूल्य ४ आना.

तु. रामायण बडा अक्षर– बिनाटीका बहुतही उत्तम मोटा काजग ग्लेज कागज का मूल्य ५ रु. है रफ कागज का ४ रु. ट. १ रु.

पद्मकोश–भाषाटीका सहित ज्योतिषका ग्रन्थ है मूल्य २ आना.

बृहद् विश्रामसागर- इस पुस्तकका नाम किसीसे छिपा नहीं है, इसमें श्रीकृष्ण चरित्र और रामचरित्र बहुतही ललित दोहा चौपाइयों में वर्णन

किया गया है यह साधु महात्मा और गृहस्थी सबहीको बहुत उपयोगीहै. छापा बंबई मू. २ रु. डा. म. ८ आना.

नासिकेत भाषाटीकासह—कथा कहनेमें उपयोगीमूल्य ८ आना.

पांडवगीता भा. टी. सह—पाठके कामकी है मूल्य २ आना.

राघाव्याहमंगल छोटा—मूल्य २ आना.

हातिमताई—यह किस्सा किसीसे छिपा नहींहै, इसमें हातिमकी बडी २ बहादुरियोंके कामोंकी कथा है कीमत १२ आना डा. ४ आ.

शृंगारशक्तिचिंतामणि—यह नायका भेदकी रसभरी कविता ऐसी मनोहर है कि बस बांचनेसे जी नहीं अघाता है. की. ८ आ.

गोवर्द्धनोद्धरणकथावर्णन—यह ग्रन्थभी भागवतकथा कहनेवालोंको परमोपयोगी है मूल्य १ रुपया डा. म. ३ आना.

मथुराप्रवेशवर्णन—मूलभाषाटीकासह—यहभी श्रीमद्भागवतकी कथा कहनेवालोंको परमोपयोगी है मू. ४ आ. डा. म. १ आना.

गोचारणकथा भा. टी.—यहभी श्रीमद्भागवतकी कथा कहनेवालोंको परमोपयोगी है मूल्य ६ आना. डाक महसूल १ आना.

चहार दर्वेश—इसमें चार फकीरोंनें अपनी २ कहानी सुनाई है जिन्हें पढकर मन अत्यन्तप्रसन्न होताहै मूल्य १२ आना.

ताजिकनीलकंठी भाषाटीकासह—यह ग्रंथ ताजिक विषयमें सर्वोत्तम है, अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है मू. १॥ रु.

गर्भविचार—यह पुस्तक गृहस्थियोंके बडे उपयोगका है इसमें स्त्रियोंकी रक्षा, गर्भाधान, बालककी रक्षाआदि अनेक उपयोगी विषय हैं मू. १२ आ.

डाकके पोष्टकार्ड— ३॥ इंच चौडे और ५॥ इंच लंबे पोष्टकार्ड तरहतरहके रंगीन चिकने मोटे कागजपर छपेहुए जिनपर एक ओर अनेकों देवताओंके चित्र छपे हुएहैं मू. ४ आ. सैकडा है डा. म. जुदा देना होगा.

श्रावणमाहात्म्य भा. टी.—श्रावण मासकी कथा लेने योग्यहै मू. १ रु.

पशुचिकित्सा--इसमें सर्व पशुओंकी उत्तम २ दवायें अति उपयोगी हैं मू. १। रु. जिसके भैंस गौ बैल हों उसको अवश्यही लेना चाहिये.

मनुस्मृति--सान्वय भाषाटीका ग्लेज सर्वोत्तम ३) रु. तथा रफ २॥) रु.

ज्योतिषसार--भाषाटीका सहित जिसमें २३० श्लोक अधिक बढाये गये हैं इसके पढनेसे पाठकोंको कोई ग्रंथकी आवश्यकता न रहेगी. बल्कि भाषा बहुतही मनोहर है. १ रु. ट. २ आ.

वैष्णव सुरद्रुम मंजरी--इसमें वैष्णवोंके संप्रदायके अनुसार सर्वत्र व्रतोंका निर्णय है मूल्य ॥) आना." तथा रफका ६) रु.

शिवस्वरोदय भाषाटीका सहित--यह योगसाधनमें सर्वोपरि है मूल्य ॥) आना.

श्राद्धप्रयोगावली सब श्राद्धोंके प्रयोग हैं १) रुपया.

भागवतदशमस्कंध--भाषाटीका दृष्टांत ग्लेज ४) रु.

श्रीमद्भागवतएकादशस्कंध--भा. टी. सहित रफ ३॥) रु.

अध्यात्मप्रकाश--भाषा (वेदान्त) की. ॥) आना.

राशिमाला--मूल्य २ आना.

संतानगोपाल भाषाटीका-- मू. १ आना.

योगवासिष्ठ--सम्पूर्ण छः प्रकरण भाषाटीका छपकर तैयार है मूल्य १६) रुपया.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

पं. श्रीधर शिवलाल, } श्यामलाल श्रीकृष्णलाल,
ज्ञानसागर छा० मुंबई. } श्यामकाशी प्रेस--मथुरा.